Translation of "The Beloved" Vol.-2

अनुक्रम

1. जड़ें और फूल एक ही है 2
2. जब संदेह न होकर विश्वास होता है 20
3. अपनी आंखें बंद करो और उसे पकडने का प्रयास करो 34
4. मध्य में रूकने का स्मरण रहे 53
5. जीवन रहते हुए मरना 71
6. अभी यह क्षण समय का भाग नहीं है 94
7. वे वासना को वासना से ही मारते हैं 111
8. केवल तुम्हारे लिए ही अस्तित्व में बना हुआ हूं 132
9. अपने अंदर के अरूप में स्थित हो जाओ 151
10. प्रेम है एक मृत्यु 172

पहला प्रवचन

जड़ें और फूल एक ही है

सूत्र—

बाउल गाते हैं
उत्सव आनंद में डूबे साहसी दीवानों का
रस और माधुर्य जब एक स्वर्णपात्र में इकट्ठा हो जाता है
तभी उसका मूल्य समझ में आता है कि
वह श्रेष्ठतम है। पूजा प्रार्थना फलप्रद होकर तभी
विकसित करती है
जब तुम्हारा पात्र तैयार और शुद्ध हो। वही प्रेमी सत्य को
उपलब्ध होता है
जो समग्रता से प्रेम करता है।
इसे बार—बार प्रयास कर असफल होने वाला व्यक्ति ही
पूरी तरह समझता है। जब उसके आगे मृत्यु के रहस्य खुलते हैं
वह पूरी तरह जीवंत होता है।
जीवन के दूसरे तलों में ऐसा है ही क्या
जिसकी वह फिक्र करे.....?

मनुष्य विभाजित है। अपनी पराकाष्ठा पर पहुंचे दो जीवन—दर्शनों के कारण मनुष्य का मन भी विभाजित और खण्डित है। दोनों ही दर्शनों में अतिरंजना है, दोनों ही दो तार्किक छोरों पर हैं।

कभी लोग इस दर्शन को—'खाओ, पियो और मौज करो' के नाम से पुकारते हैं, जो संयोगवश जीवन का भौतिकवादी दृष्टिकोण है। यह कहीं भी पहुंचाता नहीं, और न इसमें कुछ स्थायित्व है। तुम किसी चीज के लिए कोई साधन नहीं जुटा रहे हो और न ही कुछ घटने जा रहा है, इसीलिए तुम उस क्षण में छोड़ दिए गए हो, जिससे अधिकतम तुम उसे अपना बना लो। मृत्यु पूरी तरह से सब कुछ नष्ट कर देगी, और कुछ भी न बचेगा, इसलिए दूसरे किनारे की फिक्र ही मत करो। कुछ भी यहां लक्ष्य जैसा है, इस बारे में सोचो ही मत। न विचार करो—परमात्मा, सत्य, मुक्ति, मोक्ष या निर्वाण को प्राप्त करने के बारे में। ये सभी मात्र भ्रम हैं, इनका कहीं कोई अस्तित्व है ही नहीं—यह सभी मनुष्य मन के मात्र खोखले सपने हैं। वे जरा भी महत्त्वपूर्ण नहीं हैं, इसलिए उस क्षण से तुम जितना भी रस निचोड सकते हो, निचोड़ लो। जीवन में अंतर्प्रवाह जैसा वहां कुछ भी नहीं है, जो सार्थक हो। यह जीवन तो एक संयोग से मिला है : तुम किसी लक्ष्य या किसी कारण से उत्पन्न नहीं हुए हो।

बहुत अधिक लोग इसी तरह से जीते हैं, और बहुत कुछ ऐसा है, जिससे वे चूक जाते हैं—क्योंकि जीवन मात्र एक संयोग नहीं है, वहां उसका कुछ कारण और उद्देश्य है, क्योंकि प्रत्येक क्षण की शाश्वतता में वहां एक धागा दौड़ रहा है, क्योंकि जीवन एक फैलाव या एक विस्तार है। कोई चीज घटने जा रही है। भविष्य बंजर या बांझ नहीं है, उसमें कुछ सृजित होने जा रहा है। एक तैयारी की जरूरत है, जिससे तुम विस्तीर्ण हो सको,

जिससे तुम्हारा बीज अपने उद्देश्य को प्रकट कर सके, जिससे तुम अपने स्वभाव और सारभूत तत्व को उपलब्ध हो सको, जिससे तुम जान सको कि तुम कौन हो और यह अस्तित्व है क्या?

जीवन एक पागल व्यक्ति का केवल एक विचार मात्र नहीं है। वह बहुत अधिक व्यवस्थित है। वह मात्र एक अव्यवस्था न होकर, पूरा ब्रह्माण्ड है। वहां सभी कुछ एक क्रम में है। अव्यवस्था के पीछे भी वहां एक व्यवस्था है, केवल उसे गहराई तक देखने के लिए आंखों की जरूरत है। सतह या परिधि पर तुम कुछ क्षणों को ही एक क्रम में देख सकते हो उसे, पर उसकी निरंतरता या शाश्वतता नहीं देख सकते। यह हो सकता है कि तुम परिधि पर शरीर के सिवा और कुछ अधिक न देख सको। ठीक उसी तरह जब तुम सागर के निकट जाते हो, तो उसके तट पर खड़े हुए तुम सागर की गहराई को नहीं देख सकते, केवल तुम उसकी लहरें ही देखते हो। लेकिन सागर मात्र लहरें ही नहीं है। बिना सागर के लहरों का कोई अस्तित्व नहीं है, और बिना लहरों के भी सागर अस्तित्व में नहीं रह सकता। लहरें सागर से पृथक नहीं हैं। लहरें और कुछ भी नहीं, बल्कि वह सागर का आलोड़न मात्र हैं और सागर में बहुत अधिक गहराई है। लेकिन उसकी गहराई को जानने के लिए किसी व्यक्ति को गहरे में गोता लगाकर उसकी गहराइयों में जाना होगा।

भौतिकवादी दृष्टिकोण ने जीवन को पूरी तरह अर्थहीन बना दिया है। तब तुम भले ही जीवित रहो अथवा तुम आत्महत्या कर लो, इससे कोई भी अंतर नहीं पड़ता, क्योंकि जीवन और मृत्यु दोनों ठीक एक जैसे हैं। जीवन और कुछ भी नहीं, बल्कि मरने का एक ढंग है। तुम मरने जा रहे हो, तुम कैसे मरते हो इससे कोई भी फर्क नहीं पड़ता। जब तुम मर जाते हो, तो उससे भी कोई अंतर नहीं पड़ता। इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम कितनी अवधि तक जीये और फिर मर गये। कुछ भी फर्क पड़ता ही नहीं। यह दृष्टिकोण एक अर्द्धसत्य है—और आधा सच बहुत खतरनाक होता है, झूठ से भी कहीं अधिक खतरनाक, क्योंकि उसमें थोड़ा सा सत्य होता है। किसी चीज का थोड़ा सा होना बहुत बहुत धोखा दे सकता है। पूरा झूठ इतना खतरनाक नहीं होता, क्योंकि वह अधिक समय तक धोखा नहीं दे सकता। देर—सवेर तुम जानोगे ही कि वह झूठ है। आधे सच या अर्द्धसत्य बहुत खतरनाक होते हैं, क्योंकि यदि कुछ चीज सत्य है तो वह थोड़ा सा सत्य तुम्हें हिलगाये रख सकता है और झूठ को जानने में तुम कभी भी समर्थ न हो सकोगे।

दूसरा विपरीत छोर है आध्यात्मिक लोगों का। वह कहता है—'' यह क्षण व्यर्थ है। यह समय व्यर्थ है, केवल शाश्वतता ही अर्थपूर्ण है। इसलिए इस क्षण आनंद मनाने में समय व्यर्थ नष्ट मत करो। इस क्षण को नष्ट न करते हुए भविष्य के लिए तैयारी करो। भविष्य के लिए वर्तमान का बलिदान कर दो। तुम्हारे पास जो कुछ भी है, उस सभी का उस भविष्य के लिए त्याग कर दो, जो अपने आप में एक पक्का आश्वासन देता है। जीवन को निरंतर सत्य की ओर गतिशील रखो। पूरा जीवन परमात्मा, अथवा निर्वाण अथवा स्वयं को उपलब्ध होने का एक निरंतर प्रयास बन जाये। 'यह' नहीं, बल्कि 'वह' महत्त्वपूर्ण है। यहां कुछ भी महत्त्वपूर्ण नहीं है, जो कुछ है वह,' वहां ' है। दूसरा किनारा ही महत्त्वपूर्ण है। इस किनारे का तो एक छलांग लगाने वाले बोर्ड की तरह प्रयोग करना है, लेकिन तुम्हें जाना दूसरे किनारे पर ही है। वास्तविक जीवन तो दूसरे किनारे पर ही है। इस किनारे पर तो केवल भ्रम और भुलावे हैं, सब कुछ माया है। इसलिए ऐसी किसी भी चीज में समय नष्ट मत करो, जो तुम्हें इसी किनारे पर ही बनाये रखती है। इस तट पर प्रसन्न मत रहो, क्योंकि यदि तुम इसी तट पर आनंद मनाते रहे, फिर तुम इसे छोड़ोगे कैसे? उदास और गम्भीर रहो। यह तट, दुःखों और पीड़ाओं का तट है। यह तट जीवन का नहीं, मृत्यु का तट है। इस तट पर पापों के ढेर के सिवा और कुछ भी नहीं है, इसलिए यहां तो उदास बन कर ही रहना है। यह तट तुम्हें जो कुछ भी दे सकता है, उसके प्रति तटस्थ बने रहो। यहां किसी भी चीज के प्रति आसक्ति मत रखो। किसी भी व्यक्ति के प्रेम में पड़ो ही मत। इस तट के सौंदर्य के साथ प्रेम करो ही मत।

सदा सजग बने रहकर उस दूसरे तट का ही स्मरण करो। अपनी दृष्टि सदा उस दूसरे किनारे की ओर ही लगाये रखो।''

यह भी एक दूसरी अति या पराकाष्ठा है। यह भी अपने साथ अर्द्धसत्य लिए चल रही है, और यह भी पहली अति की ही भांति उतनी ही खतरनाक है।

यह क्षण भी उस शाश्वतता का एक भाग है, और यह किनारा भी, इस नदी के दूसरे किनारे की भांति ही महत्त्वपूर्ण है। इस तट का सौंदर्य और इस तट के गीत और काव्य भी, दूसरे तट के गीतों और काव्य जितने ही दिव्य हैं। यह क्षण जो तुम्हें उपलब्ध है, वह भी शाश्वत है। इसलिए इस क्षण का भविष्य के लिए बलिदान करना मूर्खता है, क्योंकि इसी क्षण जैसा ही भविष्य भी होगा। दूसरा तट भी हमेशा इस तट जैसा ही आयेगा। और यदि तुमने वह चाल सीख ली, जो अध्यात्मवादियों ने सीख कर पूरी मनुष्यता के मन को प्रदूषित कर दिया है, और उन्होंने पूरी मनुष्यता को यह सिखला कर कि कैसे इस क्षण को नष्ट किया जाये, कैसे इस तट के प्रति नकारात्मक बना जाये, तब तुम किसी भी जगह जाओगे तो तुम नकार से भरे होगे। तुम जहां भी होगे, तुम नकार से भरे होगे। तुम जहां कहीं भी होगे तुम विध्वंसात्मक ही होगे। तुम जहां कहीं भी रहोगे, तुम दुःखी और उदास ही रहोगे। यह धर्म नहीं

बाउलों का दृष्टिकोण इन दोनों दो विपरीत ध्रुवों के मध्य एक महान संश्लेषण है। बाउलों की समझ दोनों ही अर्द्धसत्यों का प्रयोग कर उनसे ही पूर्ण सत्य निर्मित करती है। बाउल कहते हैं—'' यह क्षण ही सब कुछ नहीं है, ठीक; लेकिन यह कहना भी गलत है कि यह क्षण कुछ भी नहीं है।'' वे कहते हैं—'' जीवन एक तैयारी है, लेकिन यह तैयारी और कुछ भी नहीं, बल्कि इस क्षण के प्रति आनंदित बने रहना है।'' वे न तो भौतिकवादी हैं और न अध्यात्मवादी। वे धार्मिक लोग हैं। धर्म एक महान संश्लेषण है। और यदि तुम इसे नहीं समझते हो, तो तुम या तो इस छोर की अति के अथवा उस अति के शिकार बन जाओगे। अथवा तुम आधे— आधे, दोनों के ही शिकार हो जाओगे। इसी तरह से मनुष्य का मन विचारों, अनुभवों और कार्यों के मध्य सम्बंध न जोड़ पाने से दुविधाग्रस्त हो जाता है। इस स्थिति को 'सीजोफ्रेनिया' कहते हैं। यह कोई मानसिक बीमारी न होकर, थोड़े से लोगों में घटने वाली व्याधि है और यह मनुष्यता की अब एक सामान्य स्थिति है। यहां प्रत्येक व्यक्ति विभाजित और खण्डित है। तुम इसे अपने ही जीवन में देख सकते हो। जब तुम किसी स्त्री या किसी पुरुष के साथ प्रेम में नहीं होते, तो तुम प्रेम के बारे में दिवास्वप्न देखने लगते हो। कल्पना में प्रेम ही जैसे लक्ष्य बन जाता है। जैसे वही जीवन का लक्ष्य बन जाता है। और जब तुम किसी स्त्री या किसी पुरुष से प्रेम कर रहे होते हो, तो अचानक तुम अध्यात्म की भाषा में सोचना शुरू कर देते हो : यह आसक्ति है, यह परिग्रह है, यह वासना है।'' उसके प्रति निंदा का भाव उठने लगता

तुम अकेले भी नहीं रह सकते, और तुम किसी के साथ भी नहीं रह सकते। यदि तुम अकेले होते हो तो तुम्हारी उत्कंठा दूसरों या भीड़ के लिए होती है। यदि तुम किसी व्यक्ति के साथ होते हो तो तुम अकेले रहने के लिए व्यग्र होना शुरू हो जाते हो। इसमें कुछ चीज समझने जैसी है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति को इस समस्या का सामना करना पड़ता है।

तुम इस दुविधाभरे ' सीजोफ्रेनिक ' संसार में ही उत्पन्न हुए हो। तुम्हें दोहरे मानदण्ड दिए गये हैं। तुम्हें भौतिकतावाद और आध्यात्मिकता दोनों साथ—साथ सिखाई गई हैं। पूरा समाज तुम्हें परस्पर विरोधी चीजें सिखाये चला जा रहा है। मैं एक बार एक उपकुलपति के साथ ठहरा हुआ था और उन्होंने कहा कि वे नई पीढ़ी के बारे में बहुत अधिक चिंतित हैं। उनके दो युवा पुत्र थे और वे उन दोनों के बारे में ही परेशान थे। वह चाहते थे कि वे विनम्र बनें। वह चाहते थे कि वे सच्चे, ईमानदार, धार्मिक और प्रार्थनापूर्ण बनें।

मैंने कहा—'' यह तो ठीक है। लेकिन आप उनसे और क्या चाहते हैं? "उन्होंने उत्तर दिया—'' निश्चित ही मैं यह भी चाहता हूं कि वे जीवन में भी सफल हों।''

मैंने जोर देकर पूछा—'' सफल होने से आपका क्या अर्थ है?"

उन्होंने कहा—'' कम से कम मैं तो उपकुलपति बन ही गया हूं। मैं चाहूंगा कि वे लोग भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर, ऊंचे पदों पर पहुंचे, भौतिक दृष्टि से सफल होकर जहां तक धन सम्पत्ति का सम्बंध है— उन लोगों के पास भी एक अच्छा बंगला, एक अच्छी कार हो, सुंदर पत्नी हो और समाज में भी प्रतिष्ठा हो।''

और तब वह थोड़े से असहज होकर बोले—'' लेकिन आप यह सब कुछ क्यों पूछ रहे हैं?"

मैंने कहा—'' मैं इसलिए पूछ रहा हूं क्योंकि आपकी दोनों ही चाहें परस्पर विरोधी हैं। एक ओर तो आप चाहते हैं कि आपका पुत्र विनम्र हो और दूसरी ओर आप यह भी चाहते हैं कि वह महत्त्वाकांक्षी भी बने। अब यह दोनों चीजें उसे विभाजित कर देंगी। एक ओर तो वह मनुष्यता, विनम्रता, और सादगी का आदर्श लेकर चलेगा और दूसरी ओर उसका आदर्श होगा—सफल होना, महत्त्वाकांक्षी बन कर, सब कुछ प्राप्त करना। एक महत्वाकांक्षी मनुष्य विनम्र नहीं हो सकता — और एक विनम्र व्यक्ति, महत्त्वाकांक्षी नहीं हो सकता। और आप चाहते हैं कि वह प्रार्थनापूर्ण भी हो। आप चाहते हैं कि वह सच्चा और ईमानदार भी हो। एक व्यक्ति जो संसार में सफल होने का प्रयास कर रहा है, उसे बेईमान बनना ही होगा। और वास्तव में वह बेईमान भी इस तरह का होगा कि कोई कभी भी उसकी बेईमानी पकड़ न सकेगा। उसे बहुत चालाक बेईमान बनना होगा। उसे बेईमान होते हुए भी ईमानदार होने का बहाना बनाना होगा। उसे अहंकारी होते हुए भी विनम्र होने का ढोंग करना होगा। लेकिन ये दोनों इतने अधिक भिन्न, ठीक एक दूसरे के धुर विरोधी लक्ष्य हैं, और आप इन्हें एक ही व्यक्ति के अंदर समाविष्ट करना चाहते हैं—ऐसा व्यक्ति हमेशा विभाजित और खण्डित रहेगा। यदि वह सफल होता है तो वह

सोचेगा—''मेरी विनम्रता का क्या हुआ और क्या कुछ हुआ मेरी करुणा विकसित करने की भावना का?" और यदि वह विनम्र बनता है तो वह सोचेगा—'' आखिर क्या हुआ मेरी महत्त्वाकांक्षाओं का? मैं तो अब कहीं भी नहीं हूं।''

तुम्हारा जन्म एक द्विविधाग्रस्त संसार में हुआ है। तुम्हारे माता—पिता द्विविधाग्रस्त थे, तुम्हारे सभी शिक्षक, तुम्हारे पुरोहित और तुम्हारे सभी राजनीतिज्ञ भी द्विविधाग्रस्त ही हैं। वे सभी दो धुर विरोधी लक्ष्यों की बातें किए चले जाते हैं और वे तुम्हें खण्डित और विभाजित व्यक्तित्व का बनाते जा रहे हैं।

बाउल बहुत स्वस्थ लोग हैं। वे द्विविधाग्रस्त और खण्डित नहीं हैं। उनका विश्लेषण समझ लेने जैसा है : यह समझ ही तुम्हारे लिए अत्यधिक सहायक होगी।

वे कहते हैं : "यह संसार और उसके पार का दूसरा संसार, परस्पर विरोधी नहीं है।'' वे कहते हैं—'' खाओ, पियो और मौज उड़ाओ, और साथ ही साथ प्रार्थनापूर्ण भी बने रहो, इन दोनों में कोई विरोध नहीं है।'' वे कहते हैं—'' यह तट और दूसरा तट, दोनों परमात्मा रूपी नदी के ही दो किनारे हैं।'' इसलिए वे कहते हैं कि प्रत्येक क्षण को भौतिकतावादी बनकर जीना है और प्रत्येक क्षण को अध्यात्म की ओर उन्मुख भी करना है। प्रत्येक क्षण एक व्यक्ति को प्रसन्न और उत्सवपूर्ण होना है और इसी के साथ—साथ उसे भविष्य में विकसित और विस्तीर्ण होने के लिए सजग होशपूर्ण और पूरी तरह सचेत भी बने रहना है। यह विकसित होना इस क्षण के उत्सवपूर्ण होने के विरुद्ध नहीं है। वास्तव में, क्योंकि तुम इस क्षण में आनंदित हो, तो अगले क्षण तुम्हारा हृदय कमल कहीं अधिक खिलेगा। इस क्षण तुम जितने अधिक प्रसन्न होगे, अगले क्षण तुम और अधिक आनंदित होने में समर्थ हो सकोगे। यदि आज स्वर्ग बन गया है तो आने वाला कल भी नर्क नहीं बन सकता क्योंकि उसका जन्म

आज के ही गर्भ से होगा। यदि आज का दिन गीत, नृत्य और हास्य से परिपूर्ण अत्यधिक सुंदर बीता है, तो कल भी कैसे उदास हो सकता है? उदासी उसमें कहां से प्रविष्ट हो सकती है? वह तुम्हारा आने वाला कल बनने जा रहा है, और जब वह आयेगा, वह आज जैसा ही आयेगा, क्योंकि तुमने आज किस तरह जीया जाये, यह राज जान लिया है।

बाउल कहते हैं—'' किसी सांसारिक व्यक्ति से जीवन जीने का ढंग सीखो, इपीक्यूरियन या चारवाक से सीखो कि इस क्षण को कैसे जिया जाये। असली और प्रामाणिक धार्मिक लोगों से दिशा निर्देश लेना सीखो, बुद्ध, महावीर और कृष्ण का संश्लेषण करो। इस क्षण और शाश्वतता को विभाजित मत करो, पदार्थ और मन को विभाजित और खण्डित मत करो और न आकाश और पृथ्वी को अलग— अलग जानो। जड़ों और फूलों में विभाजन मत करो, वे दोनों एक साथ ही हैं।

सहभागिता अथवा दो विरोधों को एक साथ लेकर चलना ही बाउलों का लक्ष्य है। और जब अंदर सारे विभाज विसर्जित हो जाते हैं और जब वहां अंदर कोई संघर्ष नहीं रह जाता, तब अंदर तुममें एकत्व और अखण्डता घटती है, तुम दीसिवान हो उठते हो। तुममें एक महान गरिमा का जन्म होता है। तब तुम उतने ही प्रसन्न होगे जितना इपीक्यूरस था और तुम बुद्ध की भांति मौन भी हो जाओगे।

एक बाउल की आत्मा में, बुद्ध और इपीक्यूरस दोनों एक दूसरे का आलिंगन कर रहे हैं, और यही मेरा भी लक्ष्य है, यही मेरी भी सिखावन है। यदि किसी भांति तुम बिना इपीक्यूरस हुए बुद्ध बन जाओ, तो बहुत कुछ चूक जाओगे। तुम बुद्ध की पत्थर प्रतिमा की भांति बनकर रह जाओगे, तुम जीवंत न रहोगे। अथवा यदि तुम बिना बुद्ध बने इपीक्यूरस बन जाते हो, तुम तब भी बहुत कुछ चूक जाओगे। तुम क्षणिक जीवन के कुछ क्षणों का ही आनंद ले सकते हो, लेकिन यह पर्याप्त नहीं है। जीवन के पास तुम्हें देने के लिए और भी बहुत कुछ है और तुम केवल सतह की लहरों पर ही जीवन बिता रहे हो, तुम कभी भी गहराई तक पहुंचते ही नहीं।

मैं तुम्हें इतना समर्थ बनाना चाहता हूं कि तुम लहरों पर रहते हुए चमकती धूप के साथ बहती हुई प्रचण्ड हवाओं और गर्जते तूफान का भी सामना करते हुए सागर की गहराई में भी उतर सको, जहां सभी तूफान मिट जाते हैं, जहां केवल ऐसा गहरा अंधकार होता है जिसमें सूरज की एक किरण भी नहीं पहुंच पाती और जहां हर चीज बिना किसी शोर या व्यवधान के शांत और मौन होती है। लेकिन मैं चाहता हूं कि तुम दोनों के योग्य बन सको। यदि एक तुम्हें दूसरे के लिए असमर्थ बनाता है तो तुम अपार सम्पदा वाले मनुष्य नहीं हो, तब तुम आधे अधूरे मनुष्य हो। तब तुम्हारा आधा अस्तित्व मृत है। तब तुम लकवाग्रस्त हो : तब तुम पूरी तरह जीवंत नहीं हो।''

तुमने जरूर सुना होगा कि अस्तित्ववादी क्या कहते हैं। उनकी आधारभूत घोषणा है : आत्मा से पहले मनुष्य का शरीर अस्तित्व में आया। वे कहते हैं— "मनुष्य पहले जन्मा, और तब धीमे— धीमे उसने स्वयं अपनी आत्मा का सृजन किया। मनुष्य एक खाली बोतल की तरह रिक्त ही जन्मा था, उसके अंदर कुछ भी न था, वह ठीक एक कोरे कागज की तरह था। तब धीमे— धीमे उसे अपनी आत्मकथा स्वयं लिखनी पड़ी। वह कुछ भी साथ लेकर नहीं आया था, उसे हर चीज पर अपने हस्ताक्षर स्वयं करने पड़े। वह एक खालीपन या रिक्तता लेकर ही जन्मा था।'' बाउल इससे ठीक विरोधी बात कहते हैं। वे कहते हैं : मनुष्य का जन्म आत्मा के ही साथ हुआ, आत्मा अर्थात् 'आधार मनुष्य '। ' सारभूत मनुष्य ' अथवा आत्मा वहां सदा से ही है, यह हो सकता है वह प्रकट हो या अप्रकट हो। बीज में वृक्ष पहले ही से छिपा होता है। शरीर से पहले आत्मा होती है, उससे अन्यथा नहीं होता। बाउल कहते हैं कि जीवन किसी नई चीज का सृजन नहीं है, वह केवल एक फैलाव है। तुम्हारे पास वह पहले ही से है, केवल उसे विकसित होना है, उसके बीच में आने वाले अवरोधों को हटाना भर है। बाधाएं

या अवरोध हटाकर उन्हें केवल एक ओर रख देना है और जीवन विकसित होना शुरू हो जाता है। तुम एक कली की भांति हो 'जब उसके खिलने में कोई बाधाएं नहीं आतीं, तो खिलावट होना शुरू हो जाती है और तुम्हारा कमल खिल जाता है।

लेकिन तुम जो कुछ बनने जा रहे हो, तुम सारतत्व के रूप में वह पहले ही से हो—" क्योंकि यदि तुम पहले ही से ' वह ' न रहे होते ", बाउल कहते हैं, तब तुम बन ही नहीं सकते थे। तुम्हारे बनने का और कोई दूसरा रास्ता है ही नहीं, वहां कुछ भी ऐसा नहीं है जिससे तुम कुछ और बन सकते। गुलाब की झाड़ी में गुलाब खिलेंगे ही, कमल की बेल कमल ही उपयेगी। तुम अपनी नियति पहले ही से अपने साथ लिए चल रहे हो, केवल उनके रास्ते की रुकावटें हटा देनी हैं।

यही है वह चीज, जिसे बाउल तैयारी करना कहते हैं। अपने आप को तैयार करने का अर्थ है, अपने रास्ते की रुकावटों को दूर हटाना। यदि तुम घृणा को मिटा दो, तो प्रेम का झरना बहना शुरू हो जायेगा। तुम्हें प्रेम पैदा करने की जरूरत नहीं है, कोई भी व्यक्ति प्रेम उत्पन्न नहीं कर सकता। यदि तुम प्रेम को उत्पन्न कर सकते तो वह असम्भव होता। केवल घृणा को हटा दो और तुम देखोगे, प्रेम प्रवाहित होने लगा। मूर्च्छा दूर करो और तुम देखोगे, समझ का उदय होने लगा। नकारात्मक चीजों को हटाओं, विधायक विकसित होना शुरू हो जायेगा। तब पूरी तैयारी ही केवल नकारात्मक चीजों को हटाने की है। यह लगभग ऐसा है, जैसे नदी की धारा के प्रवाह को कोई छोटी सी चट्टान रोक रही हो ' तुम चट्टान हटा देते हो और नदी प्रवाहित होने लगती है। चट्टान ही उसके मार्ग का अवरोध बन रही थी और धारा के लिए यह कभी सम्भव ही न था कि वह आगे बढ़कर प्रकट हो पाती। हम अपने अस्तित्व के साथ बहुत सी चट्टानें लिए चल रहे हैं—इन्हें तुम अपनी बहती ऊर्जा का अवरोध कह सकते हो—लेकिन उन अवरोधों को हटाना और विसर्जित करना होगा।

बाउलों की विधियां बहुत सरल हैं। वे कहते हैं कि यदि नाच सकते हो तो तुम्हारे अस्तित्व से बहुत से अवरोध विसर्जित हो जायेंगे—क्योंकि जब कोई व्यक्ति नृत्य करता है और नृत्य में सच्चाई से गति करता हुआ, केवल घूमना ही बन जाता है, तो वह तरल हो जाता है। क्या तुमने इसे देखा नहीं है? यदि तुमने किसी को नृत्य में खोते हुए देखा है, तो तुम इसे क्यों नहीं समझ पाते? तब वह अधिक समय तक शिला जैसा ठोस और कठोर रह ही नहीं सकता। नाचते हुए वह घुल रहा है, बह रहा है। वह ठोस से तरल हो रहा है। यह तरलता ही अवरोधों को पिघलाती है। इसलिए बाउलों के लिए नृत्य करना ही योग है। वह एक दूसरे के साथ घंटों नाचते हैं। जब आकाश में रात्रि को चंद्रमा की चांदनी छिटकी हुई होती है, तो बाउल रात भर नाचते ही रहते हैं, क्योंकि उनके लिए चंद्रमा ही उनके प्रियतम कृष्ण का प्रतीक है। वे अपने कृष्ण को पूर्ण चंद्र ही कहते हैं। जब रात्रि का अधिपति पूरा चंद्रमा वहां होता है, वे नाचेंगे ही। और यह नृत्य कोई प्रस्तुति या कार्यक्रम नहीं है उनके लिए यह किसी और को दिखाने के लिए नहीं है। यदि कोई इसे देखता है, तो वह दूसरी बात है। बाउल स्वयं अपने ही लिए अपने आनंद के लिए नाचते हैं।

अवधी के महान कवि तुलसीदास से किसी ने पूछा— आपने रामायण क्यों लिखी ?—क्योंकि उन्होंने अपना पूरा जीवन उसमें ही लगा दिया।

तुलसीदास ने कहा—'' स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा " : अपने स्वयं के आनंद के लिए ही मैं राम कथा गाता रहा—स्वान्तः सुखाय, केवल स्वयं अपने आनंद के लिए ही, केवल मात्र अपने आनंद की खातिर यह किसी और के लिए उनकी कोई प्रस्तुति न थी।

बाउल नाचते हैं स्वान्तः सुखाय, स्वयं अपने आनंद के लिए। गीत गाना उनकी दूसरी विधि है। उन्होंने बहुत कोमल, स्त्रैण, ताओवादी और सौंदर्यबोध को उत्पन्न करने वाली विधियां चुनी हैं, वे सख्त या कठोर नहीं

हैं। वे गीत गाते हैं और गीत गाते हुए पूरी तरह उसमें डूब जाते हैं, खो जाते हैं। गीत गाना उनके लिए मंत्र दोहराने जैसा है, गीत गाना उनके लिए प्रार्थना करने जैसा है। और वे गीत गाते हैं— अपने प्रीतम प्यारे के लिए वे गीत गाते हैं— अपने मालिक के बारे में, अपने परमात्मा के बारे में। यदि तुम गीत गाने में खो गये तो तुम नाद ब्रह्म में खो गये, तुम ध्वनिरहित ध्वनि में खो गये। और उनका गीत गाना और नाचना कोई संस्कारित चीज नहीं है। उसमें किसी संस्कार सम्पन्न करने जैसा कुछ नहीं है। प्रत्येक बाउल वैयक्तिक है। तुम दो बाउलों को एक ही नृत्य करते अथवा एक ही तरह से नाचते भी नहीं पाओगे। वे किसी कर्मकाण्ड का पालन या अनुसरण नहीं करते।

यह बात समझने जैसी है, क्योंकि यह उनके लिए बहुत बहुत बुनियादी बात है। और मैं चाहूंगा कि तुम इसे निरंतर याद रखो। यदि कोई चीज कर्मकाण्ड या संस्कार बन जाती है, तब उसे छोड़ देना, वह अब व्यर्थ हो गई, क्योंकि कर्मकाण्ड का अर्थ ही है—उसे दोहराना। मुसलमान, एक विशेष ढंग से प्रतिदिन नमाज पढ़ते हैं, वह एक संस्कार या कर्मकाण्ड बन गई है। ईसाई जो प्रार्थना करते हैं, एक ही प्रार्थना वह बार—बार दोहराते हैं। वे उसे करने के इतने अधिक अभ्यस्त हो गये हैं, कि उसमें किसी चेतना की कोई आवश्यकता नहीं पड़ती। वे उसे औपचारिक रूप में कर सकते हैं और उसके ही साथ उसके पीछे पृष्ठभूमि में बहुत से विचार चलते रहते हैं। उनकी प्रार्थना रोबोट की तरह यंत्रचालित बन गई है। वे शब्दों को दोहरा सकते हैं। वे प्रार्थना के शब्दों को जानते हैं, वे उन्हें कई बार दोहरा चुके हैं। वह उनके लिए एक मृत संस्कार भर रह गया है।

बाउल कहते हैं— अपनी प्रार्थना को प्रत्येक क्षण से उठने दो। अपने अतीत को ढोये चले जाने की आवश्यकता क्या है? क्या तुम अपने परमात्मा से सीधे ही बातचीत नहीं कर सकते? एक ही बात को बार—बार दोहराने की आखिर क्या तुक है? आज, कल से भिन्न है—प्रार्थना भी नई होनी चाहिए उतनी ही नूतन और नवीन, जितना कि सुबह का उगता हुआ सूरज और ओस की बूंदें नई हैं। कुछ ऐसा कहो, जो तुम्हारे हृदय से उमड़ रहा हो। यदि उसमें कुछ नहीं उमग रहा तो गहन मौन में झुक जाओ, क्योंकि वह सब कुछ जानता है। वह तुम्हारा मौन निवेदन भी समझ जाएगा। किसी दिन यदि नाचने जैसा लगे तो नाचो। अब उस क्षण के लिए वही प्रार्थना होगी। किसी दिन यदि तुम गीत गाना चाहो—लेकिन किसी और के गीत को दोहराना मत क्योंकि वह तुम्हारे हृदय में से नहीं उमगा है और उन दिव्य चरणों में अपने हृदय को उड़ेलने का यह कोई तरीका नहीं है। अपने गीत को कंठ से स्वयं फूटने दो। उसके छंद और व्याकरण की बात भूल ही जाओ। परमात्मा कोई बहुत बड़ा व्याकरण का आचार्य नहीं है और न वह उन शब्दों की फिक्र करता है, जिनका तुम प्रयोग कर रहे हो। उसका अधिक सम्बंध तो तुम्हारे हृदय से है। उसका' मुख्य सम्बंध तो तुम्हारे इरादों और भाव से है। वह समझ ही जाएगा।

इसलिए बाउल अपने गीत उस क्षण की अन्तर्प्रेरणा से रचते हैं। वे सहज स्वाभाविक होते हैं। उस क्षण वे परम विश्राम में होते हैं, वे नृत्य को अपने से होने देते हैं, वे गीत को स्वयं अपने से उमगने देते हैं। यही वजह है कि वे लोग पागल जैसे जाने जाते हैं, क्योंकि किसी दिन वे परमात्मा से झाड़ भी सकते हैं। और ऐसा होना ठीक भी है। जब तुम परमात्मा से प्रेम करते हो तो उससे झगड़ा भी कर सकते हो। किसी दिन वे उससे बहुत नाराज होकर कहेंगे—'' नहीं, आज मैं तेरी प्रार्थना करने नहीं जा रहा हूं। तूने मेरे लिए किया ही क्या है? मैं तुझसे बहुत नाराज़ हूं।'' लेकिन यह प्रार्थना बहुत सुंदर है। यह सुनी जायेगी, यह अस्तित्व के केंद्र तक पहुंचेगी। जब तुम प्रेम करते हो तो कभी—कभी तुम खीज भी हो जाते जब तुम प्रेम करते हो, तो कभी तुम नाराज भी हो जाते हो, कभी—कभी तुम शिकायतें करने लगते हो और कभी केवल नाचते हो। मनुष्य बहुत असहाय है और बाउल पूरी तरह निःसहाय होकर जीता है। यही कारण है कि वह सभी वस्तुओं की पकड छोड़ देता है और सड़क का

भिखारी बनकर रहता है। वह अपने को परमात्मा के हाथों में छोड़ देता है और कहता है—'' मुझे तुम पर पूरा भरोसा है।''

ठीक दूसरे ही दिन मैं एक बाउल द्वारा गाया हुआ गीत या प्रार्थना पढ़ रहा था, जिसमें बाउल कहता है—'' फिर ठीक है, यदि तू मेरी परीक्षा ही लेना चाहता है तो जरूर ले परीक्षा। यदि तू मुझे दुःख और पीड़ाएं ही देना चाहता है, तो वही दे। जितना अधिक मैं सह सकता हूं उन्हें सहूंगा। ठीक है न?''

लेकिन उसकी यह बातचीत, महज बात भर ही नहीं है। यह उसका प्रियतम से संवाद है। और वह किसी शास्त्र के वचन नहीं दोहरा रहा है, वह अपना शास्त्र स्वयं गढ़ रहा है। और जब तुम स्वयं अपना शास्त्र सृजित करते हो केवल तभी तुम सही अर्थ में जीते हो। यदि वह उधार लिया हुआ है तो तुम उसे जी नहीं सकते। उधार लिया गया गीत भी कोई गाता है? उधार लिया नाच कोई नृत्य नहीं होता। उसे स्वयं अंदर से प्रकट होने दो। उसके सम्पादित होने के बारे में फिक्र ही मत करो, क्योंकि हम लोग जो कुछ भी प्रस्तुति करते हैं, उसके बारे में दूसरे लोगों की राय के बाबत बहुत अधिक चिंता करते हैं। बाउल लोग नृत्य गान की प्रस्तुति जैसी कोई चीज नहीं कर रहे हैं, उनकी पहुंच प्रत्यक्ष है। वह परमात्मा से उसी तरह सीधी बातचीत कर रहे हैं, जैसा एक छोटा बच्चा, अपने माता—पिता से बातचीत करता है, जैसे कोई प्रेमी अपनी प्रेमिका से बातचीत करता है : वह बात जीवंत होती है। आज के लिए जो गीत है, वह बहुत प्यारा है।

उत्सव आनंद में डूबे साहसी दीवानों का
रस और माधुर्य
जब एक स्वर्णपात्र में इकट्ठा हो जाता है
तभी उसका मूल्य समझ में आता है,
कि वह श्रेष्ठतम है।
पूजा प्रार्थना भी तभी फलप्रद होती है
जब तुम्हारा पात्र तैयार और शुद्ध हो
वह तभी तुम्हें विकसित करती है।

इसलिए बाउल कहते हैं—'' तुम अपने आप को तैयार करो।'' लेकिन जब वह तुम्हें अपने को तैयार करने के लिए कहते हैं, तो उसका अर्थ संसार के विरोध में तैयार होने से नहीं है। उनकी तैयारी जीवन समर्थित है। जब वे कहते हैं—' तैयारी करो ' तो दूसरे आध्यात्मिक लोगों के अर्थ जैसा उनका अर्थ नहीं होता। जब दूसरे आध्यात्मिक लोग पूजा प्रार्थना के लिए तैयार होने की बात कहते हैं तो उसका अर्थ होता है—जीवन में प्रसन्न और प्रमुदित होना छोड़ दो जीवन के विरुद्ध चलो।

और उत्सव आनंद के प्रति अपने लगाव को नष्ट करना शुरू कर दो। ऐसे धार्मिक लोग गहरे अर्थों में, स्वयं अपने शरीर को कष्ट देने वाले स्वपीड़क हैं। स्वयं को सताना उनके लिए बहुत मूल्यवान बन जाता है। वे स्वयं अपने लिए दुःखों और कष्टों को सृजित करते हैं। नहीं, बाउल तो जीवन प्रेमी होता है। जब वह कहता है—'अपने को तैयार करो, तो वह कह रहा है—इस क्षण का आनंद लो, जिससे तुम अगले क्षण के लिए तैयार हो सको। इस क्षण को स्वर्णिम बना लो। अपने सभी क्षणों को सुनहरे पलों की एक शृंखला बना लो, और तुम स्वर्ण पात्र जैसे बन जाओगे। और तुम स्वर्णपात्र जैसे बन जाओगे।'

उत्सव आनंद में डूबे साहसी दीवानों का
रस और माधुर्य
जब एक स्वर्णपात्र में इकट्ठा हो जाता है

तभी उसका मूल्य समझ में आता है

कि वह श्रेष्ठतम है।

परमात्मा को आमंत्रित करने से पूर्व, तुम्हें एक स्वर्ण पात्र बनना होगा, जिससे वह अपने को तुम्हारे पात्र में उड़ेल सके। प्रसन्न, प्रमुदित और हर्षित रहो, जिससे तुम परम आनंदित बनने में समर्थ हो सको। इस तट पर उत्सव आनंद मनाओ जिससे जिसे तुम दूसरा तट कहते हो, वहां उत्सव आनंद मनाने के तरीके सीख सको। केवल वे लोग जो पहले ही से तैयार हैं, उसके द्वारा बुलाये जायेंगे। यदि तुम उदास, दुखी, स्वपीड़ूक और स्वयं को ही सताने वाले हो, तुम दूसरे तट को अपने से और दूर कर रहे हो। क्योंकि दूसरा तट उन्हीं लोगों के अधिकार में हो सकता है, जो उसे भली भांति समझ सकते हैं। तुम जितने अधिक उत्सवमय होते हो, दूसरा तट उतना ही अधिक तुम्हारे निकट आ जाता है। और वास्तव में जब तुम्हारा उत्सव— आनंद अपने सर्वोच्च शिखर पर होता है, यह तट ही दूसरे तट में बदल जाता है। जब तुम वास्तव में अपने समारोह के सर्वोच्च शिखर पर होते हो, जब तुम्हारा नृत्य चरम सीमा पर होता है, तो तुरंत ही यह तट फिर यह तट रह ही नहीं जाता, और तुम दूसरे तट पर ही होते हो। फिर तुम इस संसार में रहते ही नहीं, तुम परमात्मा में ही होते हो।

पूजा प्रार्थना तभी फलप्रद होती है

जब तुम्हारा पात्र तैयार और शुद्ध है

वह तभी तुम्हें विकसित करती है।

एक योग्य पात्र की आवश्यकता होती है। यदि तुम परमात्मा को धारण करने वाले पात्र बनना चाहते हो, यदि तुमने ' उसे ' अतिथि के रूप में आमंत्रित किया है और तुम उसका मेजबान बनना चाहते हो, तब तुम्हें स्वर्ग के राज्य में रहने के ढंग सीखने होंगे। तुम्हें यहां और अभी इस ढंग से रहना होगा कि यह क्षण ही स्वर्ग बन जाये, और केवल तभी तुम परमात्मा को आमंत्रित कर सकते हो। बहुत से लोग बिना यह विचार किये हुए उसे आमंत्रित किये चले जाते हैं, कि जैसे वह उसका स्वागत कर उसे ग्रहण करने को पहले से तैयार हों। यदि वह आता है, क्या वह तुम्हें पहले से ही तैयार पायेगा? यदि वह आता है तो क्या तुम उसका स्वागत करने में समर्थ होगे? यदि वह अपने को तुममें उड़ेलता है तो क्या तुम्हारा स्वर्ण पात्र पहले से तैयार है? यदि नहीं, तो तुम उसकी दिव्यता को कैसे इकट्ठा करोगे? क्या तुम्हारे हृदय का पात्र पहले ही से खुला हुआ उसे ग्रहण करने को तैयार है? कोई भी व्यक्ति इस बारे में पूछता ही नहीं।

मेरे पास बहुत से लोग आते हैं और वे पूछते हैं—कहां है परमात्मा ?—जैसे मानो यह परमात्मा का कर्त्तव्य हो कि वह अपने आपको सिद्ध करे कि वह कहां है। यदि वह स्वयं अपनी उपस्थिति सिद्ध नहीं कर सकता तो वे लोग विश्वास भी नहीं कर सकते। अभी और यहीं, परमात्मा तुम्हारे चारों ओर है। वह तुम्हारे अंदर ही है तुम उसके बिना हो ही नहीं सकते। उसके सिवा और कुछ है ही नहीं, केवल परमात्मा ही है। लेकिन तुम ही पहले से तैयार नहीं हो। तुम स्वर्णपात्र बने बिना चूक रहे हो उसे। तुम्हारे पास उसे देखने की दृष्टि ही नहीं है, उसे सुनने के लिए तुम्हारे पास कान ही नहीं है और उसका स्पर्श महसूस करने के लिए तुम्हारे पास वे हाथ ही नहीं है। तुम तैयार हो ही नहीं, और तुम उसका स्वागत उसी से कर सकते हो, जो तुम्हारे पास पहले ही से तैयार हो। एक भी क्षण खोने जैसा नहीं है। एक बार तुम तैयार हो जाओ, तो तुरंत—बिना एक भी क्षण के अंतराल के जिस क्षण तुम तैयार होते हो, तुरंत वह प्रकट हो जाता है और घटना घट जाती है। क्योंकि वह तो पहले ही से प्रकट है, केवल तुम्हारी तैयारी ही घटित होनी थी।

यदि जब कभी हम तैयार होने की कोशिश भी करते हैं, हमारे प्रयास आधे अधूरे हृदय से किए गए प्रयास होते हैं।

एक कवि बॉब डाय ने अपनी एक बोध कथा में इसे भली भांति व्यक्त किया है और मैं तुम्हें उसी के बाबत बताना चाहता हूं।

जॉन वेस्ले हार्डिंग के संगीत एलबम के पीछे की ओर हम तीन व्यापारियों का विवरण पाते हैं जिनमें से एक व्यापारी ने फ्रैंक से भेंट करते हुए अपने मिशन को स्पष्ट करते हुए कहा—'' मि. ड्यालन के गीतों का एक नया रिकार्ड आया है, जिसमें कोई विशिष्टता न भी हो, लेकिन वह उनके लिखे गीत हैं और हम समझते हैं कि उनकी सफलता की कुंजी आपके पास हैं। फेंक ने कहा—'' आप ठीक कह रहे हैं।

कुंजी मैं हूं।'' व्यापारी ने कुछ और उत्तेजित होकर कहा—'' ठीक है, फिर कृपा कर उसे हमारे लिए आप स्पष्ट करें।''

फ्रैंक जो पूरे समय आंखें बंद किए लेटा हुआ था, उसने अचानक अपनी दोनों आंखें फाड़ते हुए कहा—'' और आप कितनी दूर तक साथ चल कर मुझे सहयोग गे?"

उन तीनों व्यापारियों के प्रमुख ने उत्तर दिया—'' बहुत अधिक दूर तक नहीं, सिर्फ उतनी ही दूर तक, जिससे हम कह सकें कि हम लोग भी वहां थे।''

जो लोग परमात्मा को खोज रहे हैं, वे लोग भी केवल उतनी ही दूर तक चलना चाहते हैं—जिससे वे संसार को यह बता सकें कि उन्होंने भी परमात्मा को देखा है। लेकिन वे काफी दूर तक चलना ही नहीं चाहते—क्योंकि यदि तुम परमात्मा में बहुत अधिक दूर तक बढ़ गये तो तुम कभी वापस नहीं लौट सकते। वे लोग अगला कदम उठाना ही नहीं चाहते—क्योंकि यदि तुम गहरे उतर गये, तब वहां एक बिंदु ऐसा आ जाता है, जहां से तुम वापस नहीं लौट सकते। वे केवल थोडी ही दूर तक चलना चाहते हैं, जिससे वे संसार में वापस लौटकर लोगों से यह कह सकें—'' हमने भी परमात्मा को देखा है।'' लेकिन उनकी पूरी दिलचस्पी इस संसार में और उस सम्मान पर है, जो संसार उन्हें दे सकता है। बैंक में उनकी अच्छी खासी रकम जमा है, आज उनके पास एक महलनुमा विशाल कोठी है और अब वे अपने घरों में ही परमात्मा को भी प्राप्त कर सकते हैं।

यह एक सुंदर कथा है।

व्यापारियों का प्रमुख उत्तर में कहता है—'' बहुत अधिक दूर तक नहीं, सिर्फ उतनी ही दूर तक जिससे हम कह सकें कि हम लोग भी वहां थे।''

जब तुम मंदिर में जाते हो, तो तुम जाकर भी वहां वास्तव में नहीं जाते, तुम्हारा चेहरा बाजार की ओर ही रहता है। क्या तुमने कभी इसे अपने आप में अथवा दूसरों में देखा है ?—यदि तुम मंदिर में अकेले ही होते हो, तो तुम्हें प्रार्थना करने में अधिक आनंद नहीं आता। यदि वहां बहुत से लोग तुम्हें देख रहे होते हैं, तब तुममें बहुत उत्साह होता है, तुम अपने को बहुत उच्च समझते हो— अपनी प्रार्थना के कारण नहीं, बल्कि केवल इसलिए क्योंकि पूरा शहर तुम्हें वहां देख रहा है। और वे लोग सोचेगे कि तुम कितने अधिक धार्मिक कितने अधिक सदाचारी और कितने अधिक परमात्मा के निकट हो। तुम चाहोगे कि लोग तुम्हें देखकर ईर्ष्या का अनुभव करें। यह तुम्हारी प्रस्तुति है। लेकिन तुम्हारी यह प्रस्तुति लोगों के सामने उनके ही लिए है, और परमात्मा इसके बाहर है। तुम्हारा उससे कोई भी सम्पर्क नहीं हो रहा है।

उससे अकेले में ही सम्पर्क करो, क्योंकि तब वह कोई प्रस्तुति नहीं होगी। तुम्हें किसी भी व्यक्ति के आगे कुछ भी सिद्ध नहीं करना है, तुम्हें तो उसके आगे अपना हृदय खोलना है।

बाउल गाते हैं—

अकेले बैठे हुए

तुम जैसे ही विस्मयविमूढ़ होते हो

कि मृत्यु का समय आ पहुंचता है।
ओ मेरे पागल हृदय!
सभी से बेखबर होकर
तूने अस्सी लाख योनियों में
अनंत पीड़ाओं से गुजरते हुए
जन्म से मृत्यु की यात्राएं पूरी करते हुए
जनम—जनमों में खोज करते हुए
यह मानुष देह प्राप्त की है।
इस मानुष तन की पावन भूमि को
तूने क्यों बंजर बना डाला?
यदि तूने उसे गोडा औ जोता होता
तो इसी से सोने जैसी फसल उग सकती थी।
ओ मेरे हृदय!
प्रेम का फावड़ा उठाकर
पापों के खर—पतवार को उखाड़कर
और सारे अवरोधों को अलग हटाकर,
तू आस्था के बीज बो,
जो विकसित हो सकें।

तुम वे बीज अपने साथ लिए चल रहे हो। तुम्हारे अस्तित्व के गहरे केंद्र में वह खजाना पहले ही से प्रतीक्षा कर रहा है, वह प्रतीक्षा कर रहा है उन अवरोधों के हटने की, जिससे वह चारों ओर फैलकर विकसित हो सके। परमात्मा होना तुम्हारा अंतर्निहित गुण और स्वभाव है : परमात्मा ही तुम्हारी नियति है। तुम्हीं वह बीज हो, और तुम्हारा बीज ही विकसित होकर परमात्मा का पुष्प बनने जा रहा है।

मनुष्य के सभी अंग
खिले कमलों के एक जोड़े से जुड़े हैं।
एक कमल नीचे की ओर खिला है
और दूसरा शरीर के ऊपर के भाग में
लेकिन इन कमलों को खिलने के लिए
तेरी ही तलाश है।
यह तेरे शरीर में
सूरज के उगने और अस्त होने की भांति ही
खिलते और बंद होते हैं।

जैसे ही तुम्हारा होश जागता और सोता है, तुम्हारे अंदर का कमल भी।ग्वलता और बंद होता है। ठीक जैसे सूरज आकाश में पूरब के क्षितिज पर उदित होता है, यह कंवल भी खिल जाते हैं और पश्चिम में सूरज जब अस्त होता है और रात आ जाती है तो यह कंवल भी फिर बंद हो जाते हैं।

बाउल कहते हैं—
मनुष्य के सभी अंग

खिलते कमल के एक जोड़े से जुड़े हैं.....

जिसे योगी चक्र कहते हैं, पानी की भंवर जैसे ऊर्जा के यह सात चक्र होते हैं। बाउल इन्हीं को सात कमल के पुष्प कहते हैं।

एक कमल नीचे की ओर उग रहा है
और दूसरा—शरीर के ऊपर के भाग में
लेकिन इन कमलों को खिलने के लिए
तेरी ही तलाश है।
यह तेरे शरीर में सूरज के उदय और अस्त होने की भांति ही
खिलते और बंद होते हैं।
जिनमें यह कमल खिलते हैं
उनकी अमावस जैसी काली रात में
पूर्ण चंद्र का उदय हो जाता है।

सबसे नीचे का कमल सेक्स का कमल है। जब तुम वहीं बने रहते हो तो अमावस की काली रात होती है। सबसे अंतिम सातवां कमल है—सहस्रार यह वह कमल है जहां चंद्रमा पूर्ण होकर चमकता है। सेक्स से प्रेम की ओर गतिशील होना है। वह मनुष्य जो सहस्रार तक आ पहुंचा है—उसका गुण है प्रेम, उसके सभी कार्य प्रेमपूर्ण होते हैं। और जो व्यक्ति सबसे नीचे के चक्र अथवा कमल पर बना रहता है, उसके गुण अथवा कार्य, सेक्स से सम्बंधित होते हैं।

और जरा भी चिंता मत करो। बाउल गाते हैं—

अपनी इस टूटी नाव के लिए
मेरी चिंताओं का अंत नहीं
क्योंकि यह नाव अब मुझे और आगे नहीं ले जा सकती,
इसमें अब सारा जल तेजी से भरता जाता है
और नमक ने इसके ढांचे को जर्जर बना दिया है
यह मेरी जीवन नौका
सारे जल का बोझ अब और नहीं ढो सकती।
ओ मेरे जीवन के स्वामी।
अपनी दृष्टि मेरी ओर उठाकर
मुझ पर अपनी करुणा बरसा
और जैसे ही मैं मरने लग
तू मेरा हाथ थाम ले।
क्रोध और घृणा के लुटेरों ने
मेरी जीवन नौका पर आक्रमण कर
सब कुछ लूट लिया है।
तट से बंधी रस्सी को काटकर
उन्होंने उसे तेज हवा और लहरों की दया पर
छोड़ दिया है।

सद्गुरु कहते हैं—

तू अपने हृदय पर लगे दागों को धो डाल

तेरी नाव शांत जल में फिर से तैरने लगेगी।

केवल हृदय के दागों को धोना है। हृदय से केवल संदेहों को गिराना है, हृदय से अविश्वास को हटाना है। एक बार विश्वास और श्रद्धा का जन्म हो जाये, तुम धुलकर साफ हो जाओगे। विश्वास और श्रद्धा हृदय को पूरी तरह से शुद्ध और साफ कर देते हैं, और तब कमल चक्र खिल उठते हैं।

पत्थर की चट्टान पर

आस्था का बोया हुआ बीज

दिन प्रतिदिन सूखता ही जाता है

वह कभी भी अंकुरित हो ही नहीं सकता।

तुम बंजर पृथ्वी को चाहे कितना ही

गोड़ो, जोतो

लेकिन सूखे सख्त बीजों से

फसल उग ही नहीं सकती।

वह अरण्य महान है

जिसमें चंदन के वृक्ष उगते हैं

और उनसे स्पर्श कर बहती हवा के झोंकों में

चंदन की सुबास होती है

जो आसपास के सभी वृक्षों को सुवासित कर

उन्हें भी चंदन बना देती है।

यदि तुम किसी बहुत कठोर हृदय में परमात्मा के बीज बोना चाहो, तो वे उ—गेगे नहीं। पहले अपने हृदय को कोमल बनाओ, उसे ग्राह्यशील बनने दो। तब वह उस अरण्य की मुलायम मिट्टी की तरह हो जायेगा, जहां चंदन के वृक्ष उगते हैं। और गीत की ये पंक्तियां बहुत सुंदर हैं—

महान है वह अरण्य

जिसमें चंदन के वृक्ष उगते हैं

और उनसे स्पर्श कर बहती हवा के झोंकों में

चंदन की सुवास होती है,

जो आसपास के सभी वृक्षों को सुवासित कर

उन्हें भी चंदन बना देती है।

और जब एक मनुष्य का बीज प्रस्कुटित होकर फलता फूलता और महकता है, तो जो भी लोग उसके संपर्क में आते हैं वे चंदन ही हो जाते हैं। इसीलिए सत्संग की इतनी ख्याति है, इसीलिए सद्गुरु की उपस्थिति का इतना अधिक गौरव है। वह चंदन का वृक्ष बन जाता है। केवल उसके सम्पर्क में आने भर से तुम सुवासित हो उठते हो, और तुम्हारा अपना बीज अंकुरित और विकसित होना शुरू हो जाता है। लकड़ी के तख्तों और धातुओं के टुकड़ों को जोड़कर

तुम सागर पर तैरने के लिए नाव बनाते हो,

लेकिन पानी के लिए

यह सभी तत्व अजनबी हैं।

उस पर तैरती नाव यात्रा पर भी ले जाती है

और डूब भी जाती है।

लेकिन प्रेम की गांठ कभी नहीं टूटती।

यदि वाहन ठीक नहीं है, यदि तैयारियां पूरी नहीं हैं, तो पूरा प्रयास व्यर्थ हो जाता है। तुम एक बड़ी और वजनी नाव भी बना सकते हो, लेकिन तब वह डूब जायेगी। वह सागर में तैरेगी नहीं।

बाउल कहते हैं कि केवल प्रेम की नाव पर बैठकर वही व्यक्ति, जो कोमल हो, जिसमें स्त्रैण ग्राह्यता हो, जिसमें गीत और नृत्य का उत्सव आनंद हो, केवल उस दूसरे किनारे पर पहुंच सकता है। इतने अधिक कोमल और स्त्रैण बन जाओ, ठीक मिट्टी की तरह मुलायम और अपने हृदय से सभी कठोर पत्थरों को बीन—बीन कर बाहर फेंक दो। सामान्य रूप से हम ठीक इसका उल्टा करते हैं, हम लोग संदेह और अविश्वास इकट्ठा किए जाते हैं और अपनी ही जमीन को पथरीला बनाकर नष्ट किए जाते हैं।

पूजा प्रार्थना तभी फलप्रद होकर

विकसित करती है

जब तुम्हारा पात्र तैयार और शुद्ध हो

वही प्रेमी सत्य को उपलब्ध होता है

जो समग्रता से प्रेम करता है,

वही अनुपलब्धि की पीड़ा

भली भांति समझता है।

वह प्रेमी जो समग्रता से प्रेम करता है, वही सत्य को उपलब्ध हो सकता है। वही अनुपलब्धि की पीड़ा समझ सकता है..... बाउल का मार्ग प्रेम है : प्रेम और उसके अतिरिक्त और कुछ भी नहीं—समग्रता से प्रेम, प्रेम की परिपूर्णता में पूरी तरह डूबकर प्रेम और पूरी श्रद्धा।

अमृत पाने के लिए

हृदय के शीरे में

प्रेम भरे कृत्यों को मिलाकर

प्रेम की तीव्र भावना से

उसे देह की देग में भरकर

आग पर रखकर मथना होता है।

सामान्यत: लोग प्रेम तो करते हैं, लेकिन उनमें प्रेम की तीव्र भावना और अहसास नहीं होता। वे प्रेम का भी शोषण करते हैं। वे प्रेमियों की भांति व्यवहार तो करते हैं, लेकिन उनका प्रेम अपने को संतुष्ट और प्रसन्न करने के लिए ही होता है। उनमें प्रेम की तीव्र भावना और अहसास नहीं होता। वे प्रेम करने के लिए प्रेम नहीं करते। उनमें प्रेम के प्रति सम्मान और श्रद्धा नहीं होती। प्रेम एक वासना बनकर रह जाता है, वह कभी भी एक पूजा और प्रार्थना नहीं बनता।

अमृत पाने के लिए

हृदय के शीरे में

प्रेम भरे कृत्यों को मिलाकर

प्रेम की तीव्र भावना से

उसे देह की देग में भरकर

आग पर रखकर मथना होता है।

हृदय के माधुर्य को वाष्प बनाना होता है

तुम स्वयं से ही प्रेम करते हुए

उस अमृत की सम्पदा के कोष को

प्राप्त कर सकते हो।

यदि तुम ऐसा व्यक्ति खोज सको, जो पूरी तरह से परमात्मा के प्रेम में डूबा हो, तब अपने को उस व्यक्ति में डुबो लो—क्योंकि प्रेम सिखाया नहीं जा सकता, उसमें तो केवल डूबा जा सकता है। तुम्हें कोई भी प्रेम करने के ढंग सिखा नहीं सकता, तुम्हें इसके लिए एक प्रेमी के निकट सान्निध्य में रहना होगा। तुम्हें कोई भी नहीं सिखा सकता कि प्रार्थना कैसे की जाए उसका निरीक्षण करते हुए उन्हें अनुभव करते हुए उनके आसपास घूमते हुए उनके अस्तित्व के होने का स्वाद और सुवास लेते हुए ही तुम सीख सकोगे कि प्रार्थना क्या होती है। तब प्रार्थना करना एक कर्मकाण्ड न होगा। तब प्रार्थना तुम्हारे अंदर एक खिलावट करेगी, तुममें एक सहज स्वाभाविक नूतन दृष्टि उदित होगी।

हृदय की मधुरता को वाष्प बनाओ

और स्वयं से प्रेम करते हुए

पूरी तरह प्रेम रस में डूबकर

तुम उस अमृत के कोष और आंतरिक सम्पदा को

प्राप्त कर सकते हो।

ऐसा ही रिश्ता, सद्गुरु और शिष्य के मध्य घटित होता है। बाउल सद्गुरु को खोजते भ्रमण करते रहते हैं। जब भी वे ऐसा कोई व्यक्ति पाते हैं, जिसके गीत और जिसका नृत्य प्रार्थनापूर्ण हो. और इसे जानने का कोई बौद्धिक मापदण्ड नहीं हैं, तुम्हें बस किसी के सान्निध्य में रहना होता है। तुम कैसे जानोगे कि कोई व्यक्ति प्रेम में दीवाना है? उसकी कसौटी क्या है? केवल उसके साथ रहते हुए उसे देखना और समझना कि कैसे वह आचरण करता है, कैसे उससे उत्तर आता है। गीत गाते उसके बहते प्रेमाश्रुओं को देखना और समझना, भिन्न—भिन्न क्षणों में उसकी चित्तवृत्ति का निरीक्षण करना। धीमे— धीमे तुम यह अनुभव करने में समर्थ होते जाओगे कि क्या पूजा होती है, क्या प्रेम और क्या प्रार्थना होती है। हां! इसे सिखाया नहीं जा सकता बल्कि इसे पकड़ा जा सकता है,

वह दिन कब आयेगा

जब मेरे हृदय में विराजमान

वह अनमोल खजाना, वह मनमानुष

मेरा अपना बनेगा?

यद्यपि उस मनमानुष का कोई रूप

या कोई आकृति नहीं है।

लेकिन जिस मनुष्य ने प्रेम की राहों पर चलकर

उसका स्वाद लिया

जिससे उसकी सुवास का अनुभव कर उसे अपने

में अवशोषित कर लिया

वह मनुष्य
जिसे मृत्यु का बोध हो गया है
उसके होने का वह स्वयं ही सबसे बड़ा प्रमाण है।
जिसने अहंकार और ईर्ष्या
वासना और क्रोध
अज्ञान और लोभ के शत्रुओं को जीत लिया है
उसका पूरा जीवन ही
उसके होने का प्रमाण है।
यदि तुम्हारा जीवन, उस आधार मनुष्य के लिए
जीवंतता से प्रवाहित हो रहा है
तो वह अनुग्रह पूर्ण कदमों से चलकर
स्वयं तुम्हारे पास आयेगा।
देखो, तुम्हारी अपनी ही देह में
देवताओं, दानवों और मनुष्यों
इन सभी के संसार हैं
और वह वहां पहले ही से विराजमान है।

परमात्मा तुझमें पहले ही से गहरे पैठा हुआ है, यह खबर तुझे भले ही अब तक न हुई हो, तूने भले ही अब तक ईसामसीह का उपदेश अथवा 'गोस्पेल ' न सुना हो। अंग्रेजी का यह शब्द Gosel बहुत सुंदर है। पुरानी अंग्रेजी में यह Godspeel है, जिसका अर्थ होता है—परमात्मा का जादू। 'गॉड स्पेल' कहीं अधिक सुंदर शब्द है। 'वह' पहले ही से तुझमें गहरे पैठा हुआ है। वह पहले ही वहां है, लेकिन अभी तक तुझको उसकी खबर नहीं हुई। तुम्हारा सिर, तुम्हारे हृदय से बहुत दूर है। अपने सिर को जरा उसके निकट लाओ।

प्रेम करने के तरीकों में ही मनुष्य अपनी पूरी खबर स्वयं देता है। और तुम्हारे ही शरीर में देवताओं, दानवों और मनुष्य के सभी संसार समाये हुए हैं। ' वह ' पहले ही वहां विराजमान हैं, और तीन संसारों को संभाले हुए हैं। बाउल रोते और बिलखते हैं और उनके बहते प्रेमाश्रु ही उसका प्रमाण हैं। उनका रोना इतना अधिक प्रामाणिक है और उनका बिलखना और व्याकुल होना भी इतना अधिक प्रामाणिक है कि यदि एक बार भी तुम किसी बाउल के सम्पर्क में आओ, तो तुम उससे कभी यह पूछोगे ही नहीं कि परमात्मा का अस्तित्व है अथवा नहीं।

यदि पहली ही दृष्टि में मैं उसके दर्शन न कर सका
तो फिर मैं अपने नयनों को कभी खोलूंगा ही नहीं।
तब क्या तुम उसकी गंध शंकर
कानों से उसकी पदचाप सुनकर मुझे बता सकोगे
कि वह आ गया है।
कि वह आ गया है पूरब के आकाश में
कि तुम्हारा मित्र छा गया है पूरब की पूरी दिशा में।

यदि पहली ही दृष्टि में, मैं उसके दर्शन न कर सका, तो फिर मैं अपने नयनों को कभी खोलूंगा ही नहीं वे गाये चले जाते हैं, प्रार्थना किए चले जाते हैं। उनका गीत इतना अधिक प्रामाणिक और सच्चा होता है उनकी

प्रार्थना इतनी अधिक मर्मभेदी होती है, और यह बिना परमात्मा के कैसे सम्भव है? हां! प्रेम के रास्तों में परमात्मा ही उसका प्रमाण होता है।

वह प्रेमी, जो समग्रता से प्रेम करता है
वही सत्य को उपलब्ध हो सकता है।
इसे बार—बार प्रयास कर असफल होने वाला व्यक्ति ही
भली भांति समझता है।

पूरा जोर है समग्रता, पूर्णता, पूरी सावधानी और सम्पूर्णता पर। तुरंत ही जब तुम समग्रता से तैयार हो जाते हो, स्वर्णपात्र भी तैयार हो जाता है।

मृत्यु के रहस्य
उसके आगे उद्घाटित हो जाते हैं।
जब वह पूरी तरह जीवंत होता है।
फिर वह जीवन के दूसरे किनारे के लिए
किसी बात की कोई फिक्र करता ही नहीं।

"जबकि वह पूरी तरह जीवंत है, मृत्यु के रहस्य उसके आगे स्वयं खुल जाते हैं "..... और प्रेमी भली भांति जानता है कि मृत्यु क्या होती है। प्रेमी जानता है कि जड़ें और कुल एक ही हैं मृत्यु होती ही नहीं है। केवल प्रेमी ही यह जानता है कि इस आस्तित्व में सबसे अधिक झूठी चीज मृत्यु ही है। क्यों? प्रेमी यह कैसे जान पाता है कि मृत्यु होती ही नहीं है? क्योंकि अपने प्रेम में प्रेमी तो पहले ही मर जाता है। और वह पाता है कि वह वहां अभी भी है—केवल वहां है ही नहीं, बल्कि इतना अधिक है वहां, कि उतना अधिक तो इससे पहले वह कभी रहा ही नहीं। मरकर भी, पहली बार ही वह इतनी समग्रता से जी रहा है। वह मरता है—परमात्मा के ही प्रेम में, अपने प्रीतम प्यारे के प्रेम में। वह पूरी तरह से, उसे बिना शर्त अपना समर्पण कर देता है।

केवल कुछ ही दिनों पूर्व गिरीश ने मुझे एक पत्र लिखा। वह सोचती है कि आश्रम में उसके करने के लिए बहुत अधिक कार्य है। यह सच हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। लेकिन अपने पत्र में उसने कुछ ऐसी चीज लिखी है जो बहुत अर्थपूर्ण है। उसने अपने पत्र में लिखा है—'' मेरे पास करने को बहुत अधिक कार्य है, और यह समर्पण नहीं है, यह बलिदान है " अब समर्पण तो बलिदान करने के बारे में कुछ जानता ही नहीं।

यदि तुमने समर्पण को ठीक से जाना है तो तुमने पहले ही से अपना बलिदान दे दिया। समर्पण का अर्थ ही है कि तुम पहले ही मर गये। यदि तुमने मुझे अपना समर्पण किया है, तब वहां कोई समस्या है ही नहीं। तब कार्य अधिक हो या कम— तुम्हारा इससे कुछ लेना देना है ही नहीं। यह बात ही असंगत है। तब यह मुझे देखना होगा, तब मुझे यह तय करना होगा कि कौन सा कार्य अधिक है और कौन सा कम? और यह मुझे ही तय करना होगा कि तुम्हें करने को कितना अधिक कार्य कितनी अवधि के लिए दिया जाये और तुम्हें कितना अधिक कार्य करने के लिए एक विशिष्ट दिशा में शक्ति लगाने के लिए प्रेरित किया जाए। लेकिन तुम्हारे लिए अब कोई समस्या रही ही नहीं—तुम तो समर्पित हो। लेकिन यदि तुम सोचती हो कि तुम बलिदान देने जा रही हो, तो यह समर्पण नहीं है, तब तुमने कभी समर्पण किया ही नहीं। तब कोई भी चीज बलिदान करने जैसी ही दिखाई देगी।

एक प्रेमी ही जानता है कि बलिदान करने जैसा कुछ है ही नहीं। जब तुम समर्पित हो, तो जहां तक तुम्हारे अहंकार का सम्बंध है, तुम मृत हो। तब जो कुछ भी घटता है, तुम न केवल उसे स्वीकार करते हो, तुम उसे गहन कृतज्ञता के साथ स्वीकार करते हो।

एक प्रेमी मृत्यु का रहस्य जानता है, क्योंकि अपने प्रेम के द्वारा वह पहले ही मृत्यु की ओर गतिशील हो जाता है। वहां दो मृत्यु घटित होती है, एक मृत्यु तो होती है—तुम्हारे जीवन के अंत पर और दूसरी जो जीवन और मृत्यु के मध्य घट सकती है—वह प्रेम की मृत्यु है, प्रेम में मरना। जो व्यक्ति प्रेम में मरता है, फिर उसकी कभी मृत्यु होती ही नहीं। तब उसके लिए सभी तरह की मृत्यु का अंत हो जाता है। उसका पहले ही पुनर्जन्म हो गया। वह यह भली भांति जान गया कि केवल अहंकार की ही मृत्यु होती है। यदि तुम अहंकार छोड़ते हो, तो तुम अमर हो जाते हो। मृत्यु के रहस्य उसके आगे

स्वयं खुल जाते हैं

जब वह पूरी तरह जीवंत होता है।

फिर वह जीवन के दूसरे किनारे की

कोई फिक्र करता ही नहीं।

समर्पण के उस आत्यंतिक क्षण में—यह तट, दूसरे तट में ही बदल जाता है, यह संसार ही दूसरा संसार बन जाता है—फिर दूसरे किनारे की कौन परवाह करता है?

मैं एक बहुत महत्त्वपूर्ण कहानी पढ़ रहा था

चार सौ वर्ष पूर्व एक माली ने एक उथले गमले में चीड़ का एक इंच का पौधा रोपा। ज्यों—ज्यों पौधा बढ़ता गया, वह प्रत्येक जड़ और शाखा को सुव्यवस्थित करता रहा। जब उसकी मृत्यु हुई, तो उसकी देखभाल उसका पुत्र करने लगा और इसी तरह यह क्रम उन्नीस पीढ़ियों तक चलता रहा। आज भी वह वृक्ष टोकियो के कोवाला उद्यान में खड़ा हुआ है, वह कभी मूल गमले से पृथक विकसित ही नहीं हुआ। चार सौ वर्षों बाद भी वह केवल बीस इंच ही ऊंचा है और शीर्ष पर भी उसका फैलाव करीब छत्तीस इंच है। यह छोटा वृक्ष प्रत्येक को चीख—चीख कर चेतावनी दे रहा है। ठीक उस वृक्ष की ही तरह मन और आत्मा भी कतर कर छोटे किए जा सकते हैं, हमेशा परिणाम एक ही होगा, वह मनुष्य बौना बन जाएगा।

यदि तुम अपनी जड़ों को जीवन में विकसित नहीं कर रहे हो, यदि तुम अपनी जड़ों को विकसित करते हुए उन्हें प्रेम और विश्वास में नहीं फैलने दे रहे हो तो तुम बौने ही बने रहोगे। तुम कभी भी 'सारभूत मनुष्य' या ' आधार मानुष ' न बन सकोगे। विकसित होते हुए गहराइयों की ओर बढ़ो, क्योंकि जब तुम्हारी जड़ें विकसित होती हुई गहराइयों में पहुंचेगी, तुम्हारी शाखें विकसित होकर ऊंचाइयों की ओर बढ़ेगी। गहराई और ऊंचाई दोनों साथ—साथ बढ़ती हैं। पृथ्वी में जितनी तुम गहराई में जाते हो उतने ही ऊंचे आकाश की ओर भी जाते हो। इस तट की जितनी अधिक गहराई में तुम जाते हो, तुम दूसरे तट के और अधिक निकट पहुंचते हो।

प्रेम, जीवन से प्रेम करो, वह सब कुछ, जो तुम्हारे चारों ओर है, उससे प्रेम करो और अपनी जड़ों को जितनी अधिक दूर तक फैलाना सम्भव है, फैलाओ। तुम परमात्मा के ही चरण स्पर्श करना शुरू कर दोगे। तुम्हारे श्रद्धा सुमन, दिव्य चरणों पर बरसना शुरू हो जाएंगे। अन्यथा स्मरण रहे, तुम एक बौने ही बने रहोगे।

प्रेम करना एक अनिवार्यता है। यह आत्मा का एक मात्र पोषक तत्व है।

शरीर, भोजन करने से ही जीवित रह सकता है और आत्मा का अस्तित्व भी प्रेम ही

से है। यह केवल शब्द मात्र बनकर न रह जाये, इसे एक गहरा अनुभव बनने दो।

बाउलों के लिए प्रेम ही पूजा है। बाउलों के लिए प्रेम ही प्रार्थना है और बाउलों के लिए प्रेम ही परमात्मा है।

आज इतना ही।

दूसरा प्रवचन

जब संदेह न होकर विश्वास होता है

पहला प्रश्न — विश्वास करने के निर्णय मे विश्वास उत्पन्न क्यों नहीं होता?

तुम्हारी ओर से विश्वास करना, एक निर्णय नहीं है। तुम उसके लिए निर्णय नहीं ले सकते हो। जब तुम्हारे संदेह समाप्त हो जाते हैं, जब तुम संदेह को संदेह की दृष्टि से देखने लगते हो, और तुम संदेह करने की व्यर्थता के प्रति पूरी तरह से आश्वस्त हो जाते हो, विश्वास का जन्म होता है। तुम्हें संदेह के साथ कुछ करना होगा, तुम्हें विश्वास के लिए कुछ भी करने की जरूरत ही नहीं है। तुम्हारे विश्वास का अधिक महत्त्व न होगा, क्योंकि तुम्हारा विश्वास और तुम्हारा निर्णय हमेशा संदेह के विरुद्ध ही होगा। और विश्वास, संदेह के विपरीत नहीं होता, विश्वास केवल संदेह की अनुपस्थिति होता है। जब संदेह नहीं होता, विश्वास ही होता है। स्मरण रहे, विश्वास किसी के प्रतिकूल या विपरीत नहीं है। शब्दकोष भले ही कुछ भी कहें, विश्वास, संदेह के विपरीत नहीं है ठीक वैसे ही, जैसे अंधकार, प्रकाश के विपरीत नहीं है। वह विपरीत होना प्रतीत होता है, लेकिन है नहीं, क्योंकि अंधकार लाकर तुम प्रकाश को नष्ट नहीं कर सकते। तुम अंधकार को अंदर नहीं ला सकते। प्रकाश के ऊपर अंधकार उडेल कर उसे नष्ट करने का कोई उपाय नहीं है। एक छोटी सी मोमबत्ती की छोटी सी ज्योति को भी, अंधकार नष्ट करने में कभी भी सफल नहीं हो सका है। एक छोटी सी मोमबत्ती के प्रकाश के सामने, पूरे अस्तित्व का अंधकार भी नपुंसक है। ऐसा क्यों होता है? यदि अंधकार, विपरीत है, शत्रुतापूर्ण और विरोधी है, तो प्रकाश को हराने में उसे कभी भी समर्थ होना ही चाहिए। वह केवल अनुपस्थित है। अंधकार इसीलिए है, क्योंकि प्रकाश नहीं है। जब प्रकाश होता है तो अंधकार नहीं होता। जब तुम अपने कमरे में प्रकाश करते हो, क्या तुमने निरीक्षण किया है कि तब क्या होता है? अंधकार कमरे के बाहर नहीं जाता, ऐसा नहीं होता कि अंधकार कमरे से पलायन कर जाता है। साधारण रूप से हम पाते हैं कि वह वहां है ही नहीं। वह कभी वहां था ही नहीं—वह एक शुद्ध नकारात्मकता है।

संदेह भी अंधकार के समान होता है और विश्वास, प्रकाश के समान होता है। यदि तुम्हारे अंदर है, तभी तुम विश्वास करने का निश्चय करोगे, अन्यथा विश्वास का निश्चय करने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। फिर उसके लिए निश्चय क्यों करना? तुम्हारे अंदर अत्यधिक संदेह होना ही चाहिए। जितना अधिक बड़ा संदेह होता है, उतनी ही बड़ी जरूरत, विश्वास सृजित करने की अनुभव की जाती है। इसलिए जब कभी कोई भी व्यक्ति यह कहता है—"मैं बहुत दृढ़ता से विश्वास करता हूं", स्मरण रहे, कि वह एक बहुत मजबूत संदेह के विरुद्ध संघर्ष कर रहा है। इसी तरह से लोग कट्टर धार्मिक बन जाते हैं। उनमें कट्टर धार्मिकता का जन्म इसीलिए होता है क्योंकि उन्होंने झूठा विश्वास उत्पन्न कर लिया है। उनका संदेह अभी तक जीवित है, उनका संदेह अभी समाप्त नहीं हुआ है। संदेह अभी तिरोहित नहीं हुआ है, वह अभी भी वहां है। और संदेह से लड़ने के लिए ही उन्होंने उसके विरुद्ध विश्वास सृजित कर लिया है। यदि संदेह बहुत मजबूत है तो उन्हें विश्वास के साथ एक उन्मादी की भांति अपने को लपेटना होगा। जब कभी कोई व्यक्ति यह कहता है—" मैं एक बहुत निष्ठावान विश्वासी हूं ", तो स्मरण रखना, अपने हृदय में कहीं गहरे में वह बहुत बड़ा अविश्वास लिए चल रहा है। अन्यथा उसे निष्ठावान विश्वासी कहने की जरूरत क्या थी। साधारण विश्वास ही यथेष्ट है—दृढ़ विश्वास ही क्यों? जब तुम किसी भी व्यक्ति से यह कहते हो—" मैं तुम्हें बहुत दृढ़तापूर्वक प्रेम करता हूं ", तो कहीं कोई चीज गलत है। प्रेम, काफी है।

प्रेम परिमाण में नहीं होता। जब कोई व्यक्ति यह कहता है—'' मैं तुम्हें बहुत अधिक प्रेम करता हूं '', तो कहीं कुछ चीज गलत है, क्योंकि प्रेम में कोई परिमाण नहीं होता। तुम कम या अधिक प्रेम नहीं कर सकते। या तो तुम प्रेम करते हो अथवा नहीं करते, प्रेम। यह विभाजन बहुत अधिक स्पष्ट है।

कुछ दिन पूर्व एक नई पुस्तक प्रकाशित होकर आई और मैं हमेशा उसकी प्रथम प्रति विवेक को दिया करता था। मैंने उस पर लिखा—'' विवेक को प्रेम सहित भेंट।'' उसने मुझसे कहा—'' अत्यधिक प्रेम सहित क्यों नहीं?" मैंने उत्तर दिया— " यह लिखना असम्भव है। मैं उसे नहीं लिख सकता—क्योंकि मेरे लिए कम या अधिक सम्भव ही नहीं है। मैं तो सामान्य रूप से 'प्रेम सहित' ही लिख सकता हूं 'अत्यधिक प्रेम ' तो निरर्थक है। प्रश्न परिमाण का नहीं है, बल्कि केवल गुण का है। जब तुम ' अधिक 'कहते हो तो तुम उस 'अधिक ' के पीछे जरूर कोई चीज छिपा रहे हो, थोड़ी सी घृणा, थोड़ा सा क्रोध, थोड़ी सी ईर्ष्या, लेकिन कुछ ऐसी चीज जरूर है, जो प्रेम नहीं है। उसे छिपाने के लिए ही तुम इतने अधिक उत्साह का प्रदर्शन कर रहे हो, जिसे तुम 'अत्यधिक प्रेम '' दृढ़ विश्वास' कहते हो। जब तुम 'बहुत अधिक' या कट्टर ईसाई होते हो, तो तुम ईसाई जरा भी नहीं होते। यदि तुम बहुत अधिक कट्टर हिंदू होते हो, तो तुम अभी तक हिंदू होना समझे ही नहीं।

ठीक पिछली रात ही एक युवती मुझे बता रही थी कि वह भयभीत है। वह मुझसे संन्यास लेना चाहती थी, लेकिन वह भयभीत थी।'' क्योंकि जीसस क्राइस्ट को अब नम्बर दो पर रखना होगा और आप प्रथम हो जायेंगे।'' वह बहुत उलझन में थी। यह तो क्राइस्ट को आपके पीछे रखना हो जायेगा ''—उसकी इस बात के प्रत्युत्तर में मैंने उससे कहा—'' यदि तुम वास्तव में क्राइस्ट को प्रेम करती हो तो तुम मुझमें ही क्राइस्ट को देखोगी। तब तुम दो भिन्न व्यक्ति नहीं खोज सकोगी। लेकिन यदि तुम ईसाई हो तब ऐसा कठिन होगा। तब तुम संन्यास लेने के बारे में भूल ही जाओ।''

जो क्राइस्ट से प्रेम करता है, वह मुझसे प्रेम कर सकता है, वहां इसमें कहीं संघर्ष है ही नहीं। जो कृष्ण से प्रेम करता है, वह मुझसे भी प्रेम कर सकता है, वहां इसमें संघर्ष जैसी कोई बात ही नहीं है। लेकिन यदि कोई हिंदू मुसलमान या ईसाई है, तब ऐसा करना कठिन है। एक ईसाई, क्राइस्ट का प्रेमी नहीं है। ईसाई बनना तुम्हारी ओर से लिया गया एक निर्णय है, अभी संदेह पूरी तरह विसर्जित नहीं हुआ है, उस संदेह को दबा दिया गया है। संदेह का दमन मत करो। वस्तुत— इसके विपरीत निरीक्षण करो, गहराई से देखो, उसका विश्लेषण करो।

उसके किसी भी भाग को अनजाना और बिना विश्लेषण के मत छोड़ो। संदेह करने वाले मन की सभी पर्तों के साथ पहचान बनाओ। संदेह में गहरी पैठ करने से, उनसे पहचान बढ़ाने से, संदेह विसर्जित होंगे। एक दिन अचानक जब तुम सुबह जागोगे, तुम विश्वास से भरे हुए होगे—लेकिन अपने निर्णय जैसे नहीं। वह निर्णय लेने जैसा कुछ हो ही नहीं सकता, क्योंकि विश्वास तो कुछ ऐसी चीज है, जिसके साथ तुम जन्मते हो, संदेह तो सीखी हुई चीज होती है, और विश्वास होता है मौन, मूक और जन्मजात।

प्रत्येक बच्चा विश्वास करता है। जैसे—जैसे वह बड़ा होता है, संदेह उठने लगते हैं। संदेह करना सीखा जाता है। इसलिए विश्वास तो तुम्हारे अस्तित्व में एक अंतर्प्रवाह की तरह वहां हमेशा रहता है। तुम बस संदेह गिरा दो, विश्वास उठ खड़ा होगा। और तब विश्वास का अपना एक अनुपम सौंदर्य होता है, क्योंकि वह शुद्ध होता है। वह संदेह के विरुद्ध नहीं होता, वह बस संदेह की अनुपस्थिति होता है। चट्टान हटा दी गई, और झरना उफनता हुआ प्रवाहित होने लगा है।

इसलिए कृपया, उसके बारे में कोई निर्णय लेने का प्रयास मत करें। तुम्हारे निर्णय लेने में देर होगी; और निर्णय लेने में तुम जितना अधिक समय लोगे, उतने ही अधिक तुम अपने अंदर संदेह के बढ़ते कीड़ों को रेंगते

हुए पाओगे। तब तुम दो भागों में विभाजित हो जाओगे, और कभी भी विश्राममय नहीं रहोगे, और वहां निरंतर एक पीड़ा बनी रहेगी।

इसीलिए बहुत से लोग परमात्मा में विश्वास करते हैं और उनके गहरे में कहीं संदेह जीवित बना उस अवसर की प्रतीक्षा में धड़कता रहता है, जब वह विश्वास को नष्ट कर दे। ऐसा विश्वास निरर्थक होता है क्योंकि विश्वास परिधि पर होता है और संदेह तुम्हारे अस्तित्व के लगभग केंद्र तक पहुंच गया होता है। प्रेम के बारे में, विश्वास के बारे में और परमात्मा के बारे में कभी कोई निर्णय लेना ही नहीं। ये चीजें तुम्हारे किये गये निर्णय से नहीं होतीं। ये सभी कोई तार्किक निष्पत्ति नहीं हैं, ये निष्कर्ष नहीं हैं। जब वहां कोई भी संदेह नहीं होता, तभी विश्वास होता है।

वह स्वयं से छूटता है। वह प्रवाहित होता है। वह तुम्हारे आंतरिक केंद्र और आंतरिक समाधि से उमगता है। तुम अपने अस्तित्व का एक नूतन संगीत सुनना शुरू कर देते हो। तुम्हारे होने की एक नूतन शैली और फिर एक नया ढंग होता है। वह मन का नहीं, अस्तित्वगत होता है।

दूसरा प्रश्न : एक बाउल? एक तांत्रिक एक भक्त और एक सूफी के मध्य वास्तव में क्या अंतर होत? है? क्या यह सभी लोग प्रेम पथ के ही पथिक हैं? ये सभी अंदर से मिले—जुले एक जैसे ही लगते हैं कृपया बोध देने की अनुकम्पा करो।

किसी हद तक ये सीमाएं एक दूसरे को आच्छादित करती हुई बाहर से अलग भी दिखाई देती हैं। इन सभी का मार्ग प्रेम ही है, लेकिन फिर भी इन सभी में कुछ सूक्ष्म विशेषताएं हैं। एक दूसरे को आच्छादित करती सीमाओं के साथ—साथ, तांत्रिक बाउल और भक्त, इन तीनों में कुछ चीजें विशिष्ट हैं। सूफी भी एक भक्त से अलग नहीं होता। सूफी भक्त है—इस्लाम के मार्ग का और एक भक्त, सूफी होता है हिंदुत्व के मार्ग का। भक्ति और सूफी में कोई अंतर होता ही नहीं, इसलिए हम इसका जिक्र करेंगे ही नहीं। अंतर केवल पारिभाषिक शब्दावली का है। सूफी इस्लाम के पारिभाषिक शब्दों का और एक भक्त, हिंदू परिभाषिक शब्दों का प्रयोग करते हैं। अंतर केवल भाषा का है, और किसी अंतर का कोई महत्त्व नहीं है। बाउल, तांत्रिक और भक्त, इन तीनों को ही समझना है।

प्रेम की तीन सम्भावनाएं हैं — सबसे निम्न तल पर सेक्स या कामवासना, सेक्स से ऊंचा तल है प्रेम, और प्रार्थना है सर्वोच्च शिखर। तांत्रिक सेक्स की दिशा की ओर ही उन्मुख है। तांत्रिक वास्तव में प्रेम से दूर रहते हैं, क्योंकि प्रेम फंसाने वाला जंजाल बन जाएगा। वे सेक्स की शुद्ध तकनीक के विशेषज्ञ बने रहते हैं। सेक्स की ऊर्जा के प्रति वे तटस्थ वैज्ञानिक की भांति कार्य करते हैं। वे इसके बीच प्रेम को नहीं लाते हैं। वे ऊर्जा का रूपांतरण करते हैं। उनमें प्रेम भी उमगता है, प्रार्थना भी जन्मती है, लेकिन ये केवल परिणाम होते हैं। वे छाया की तरह उसका अनुगमन करते हैं, लेकिन वे सेक्स ऊर्जा की ओर ही उन्मुख होते हैं। तांत्रिक का पूरा कार्य और उसकी पूरी प्रयोगशाला सेक्स केंद्रित ही होती है। वह वहीं, उस व्यक्ति से निरासक्त, अलग और लगभग तटस्थ होकर ही रहता है। जिस किसी के भी साथ वह प्रेम या संभोग करता है, वह पूरी तरह उससे पृथक और निरासक्त बना रहता है। तंत्र की विधि का यह एक भाग है कि तुम्हें उस व्यक्ति से कोई जुड़ाव या आसक्ति नहीं होनी चाहिए। इसी वजह से तांत्रिक कहते हैं : तंत्र की विधियां अपनी पत्नी या प्रेमिका के साथ मत करो। किसी ऐसी स्त्री की खोज करो, जिसके साथ तुम्हारा कोई भी सम्बंध न हो, जिससे तुम एक शुद्ध तकनीशियन बने रह सको। यह विधि पूर्ण वैज्ञानिक है।

यह ठीक इस तरह है : जैसे तुम एक महान सर्जन या शल्य चिकित्सक होकर हजारों आपरेशन कर सकते हो, लेकिन जब तुम्हें अपने ही हाथों से अपनी पत्नी का आपरेशन करना पड़े, तो तुम्हारे हाथ कापना शुरू हो

जाते हैं। यदि तुम्हें अपने ही लड़के का आपरेशन करना पड़े, तो तुम्हें किसी दूसरे सर्जन को बुलाना पडेगा। वह भले ही तुम्हारा जितना होशियार न हो, लेकिन फिर भी तुम्हें किसी दूसरे को ही बुलाना पड़ेगा—क्योंकि आवश्यकता ऐसे सर्जन की है, जो मरीज से पूरी तरह असम्बंधित और निरासक्त हो। केवल तभी शल्य क्रिया पूर्णता से वैज्ञानिक हो सकता है।

तांत्रिक को पूरी तरह से वैज्ञानिक दृष्टिकोण का होना होता है। वह किसी ऐसी स्त्री या ऐसे पुरुष को खोजेगा, जो उससे किसी भी तरह सम्बंधित न हो। और तांत्रिक प्रक्रियाओं में किसी के साथ जाने से पूर्व, महीनों तैयारी की जरूरत होती है। और पूरी तैयारी यही है कि कैसे प्रेम की भावना से दूर रहा जाए कैसे उस दूसरे व्यक्ति के साथ गहरे सम्बंधों में गिरने से अपने को रोक कर तटस्थ रहा जाये। अन्यथा पूरी विधि का कोई भी उपयोग न हो सकेगा।

बाउल प्रेम की ओर उन्मुख है। बाउल के जीवन में यदि सेक्स आता है तो वह केवल एक छाया की भांति आता है। वह उसके प्रेम का ही एक भाग है। वह सेक्स से भयभीत नहीं होता, लेकिन वह सेक्स की ओर उन्मुख नहीं है। वह एक स्त्री से प्रेम करता है : क्योंकि वह उस स्त्री से प्रेम करता है, वह उसके साथ वह सब कुछ बांटना चाहता है, जो उसके पास है, जिसमें सेक्स ऊर्जा भी सम्मिलित है। लेकिन सेक्स उसकी प्रयोगशाला नहीं है; उसकी प्रयोगशाला प्रेम है, गहरा सम्बंध है, दूसरे व्यक्ति की पूरी देखभाल और फिक्र है—इतनी अधिक फिक्र कि तुम स्वयं कम महत्त्वपूर्ण और दूसरा अधिक महत्त्वपूर्ण बन जाता है। तांत्रिक के मार्ग में जो कुछ बाधा है, वही बाउल का मार्ग है। यदि बीच में सेक्स आता है, तो ठीक है, यदि वह नहीं आता है, तो वह भी ठीक है। सेक्स कोई लक्ष्य नहीं है। और वह सेक्स के स्वाभाविक प्रवाह पर कार्य नहीं कर रहा है, वह प्रेम की सूक्ष्म ऊर्जा पर कार्य कर रहा है। जैसे एक तांत्रिक बीज पर कार्य कर रहा है, बाउल फूल पर कार्य कर रहा है, और भक्त अथवा सूफी, सुगंध अथवा प्रेम पुष्प की सुवास पर कार्य कर रहे हैं। प्रार्थना, सेक्स ऊर्जा का उच्चतम रूप है, प्रेम से भी ऊंचा। यह प्रेम पुष्प की सुवास है, अति सूक्ष्म, सारी स्थूलता चली गई। भक्त या सूफी प्रार्थना पर ही कार्य करता है। यदि प्रार्थना का अनुसरण करते हुए प्रेम प्रविष्ट होता है, तो उसकी इजाजत होती है। उस बारे में कोई भी समस्या नहीं है। यहां तक कि यदि प्रेम का अनुसरण करते हुए सेक्स भी प्रविष्ट होता है, तो उसकी भी इजाजत होती है—लेकिन पूरा ध्यान, प्रार्थना पर ही केन्द्रित रहता है। इसलिए यदि एक भक्त किसी दूसरे व्यक्ति से प्रेम करता है, तो वह प्रार्थना का ही एक रूप है। दूसरा व्यक्ति दिव्य है, दूसरा व्यक्ति देवता या देवी है। वह पवित्र प्रेम करता है।

बाउल ठीक इन दोनों के मध्य में है। वह तांत्रिक, भक्त अथवा सूफी इन दोनों के मध्य एक सेतु है।

कठिनाइयां तो तांत्रिक के साथ हैं। वह कठिनाई है—क्योंकि वह अधिक स्थूल है, और सम्भावना इस बात की है कि तुम इस स्थूलता में ही खो न जाओ। वह कहीं तुम्हें अपने नियंत्रण में न ले ले, तुम पर हावी न हो जाए। सेक्स की ऊर्जा अति भयंकर है, वह आदिम ऊर्जा हे, बहुत तूफानी है वह, और तुम एक सागर में गतिशील हो रहे हो। सागर में प्रचण्ड तूफान उठ रहे हैं, और तुम्हारे पास एक छोटी सी डोंगी है, और सफर बहुत खतरनाक है। तंत्र के मार्ग में प्रवेश करना तो बहुत सरल है, लेकिन उससे बाहर आना उतना ही कठिन है। यदि सौ लोग प्रविष्ट होते हैं, तो केवल एक ही बच पाता है—क्योंकि तुम आदिम ऊर्जा के साथ खेल रहे हो। यह ऊर्जा इतनी अधिक प्रचण्ड है कि वहां इस बात की सम्भावना अधिक है कि वह तुम्हें अपने नियंत्रण में कर ले।

प्रार्थना का, सुवास का मार्ग भी कठिन है। तुम सुवास को देख नहीं सकते, वह पकड़ में नहीं आती। प्रार्थना के मार्ग में प्रवेश करना बहुत कठिन है। यदि तुम प्रविष्ट हो जाते हो, तो तुम उससे सरलता से बाहर आ जाते हो। तंत्र के मार्ग में प्रविष्ट होना तो बहुत आसान है, लेकिन उससे बाहर आना बहुत कठिन है। प्रार्थना में

प्रवेश करना बहुत कठिन है, लेकिन उसके बाहर आना बहुत आसान है। उसमें प्रविष्ट होना लगभग असम्भव है—तुम जब प्रेम के बारे में ही कुछ नहीं जानते, तो प्रार्थना के बारे में तो क्या कहा जाए? यह तुम्हारे लिए मात्र एक शब्द है, जिसके साथ कोई विषय—सामग्री नहीं है, वह वास्तविकता से पृथक बहुत बहुत सूक्ष्म और दूर है। जो प्रार्थना है, तुम उसके साथ कोई सम्बंध या सम्पर्क नहीं बना सकते। इसलिए तुम अधिक से अधिक एक विशिष्ट कर्मकाण्ड के शिकार बन जाते हो। तुम एक प्रार्थना को दोहरा सकते हो : वह केवल मौखिक उच्चारण मात्र होगा, वह मन की ही एक सामग्री और मन का ही एक खेल है। सामान्यत: प्रार्थना के पथ पर प्रवेश करना ही कठिन होगा।

बाउल का मार्ग ठीक मध्य में है। इसमें प्रवेश करना, तंत्र के मार्ग जितना सरल नहीं है, और न प्रार्थना के मार्ग जितना कठिन है। यह मनुष्य के लिए सम्भव है। बाउल बहुत यथार्थवादी हैं, जमीन से बहुत अधिक जुड़े हैं, और उनका मार्ग यथासम्भव सबसे अधिक सुरक्षित मार्ग है। ठीक मध्य में, दोनों में एक संतुलन स्थापित करने वाला—एक हाथ सेक्स की ओर उन्मुख और दूसरा हाथ प्रार्थना में उठा हुआ। बाउल ठीक मध्य में चलने वाले यात्री हैं।

तीसरा प्रश्न : आप कहते हैं— तुम अपने अनुभवों और अनुभूतियों का अनुसरण करो, और जब मैं अंतिम रूप से साहस कर अधिक स्वतंत्रता प्रसन्नता और सरलता से अपनी अनुभूतियों और अनुभवों का अनुसरण करती हूं तो आप कहते हैं कि मैं अपरिपक्व हूं। आखिर इसका क्या अर्थ है?

तुम्हारे प्रश्न का ठीक यही अर्थ है, जो स्वयं कह रहा है—कि तुम अपरिपक्व हो। अपरिपक्वता और होती ही क्या है? तुम जो कुछ भी कर रही हो, तुम लगभग उसे मूर्च्छा में ही कर रही हो। हां, मैं यह कहता हूं—सहज स्वाभाविक बनकर रहो, लेकिन मेरे कहने का अर्थ यह नहीं है कि मूर्च्छित बनो। मेरा अर्थ है—सजग बने रहकर सहज स्वाभाविक बनो। सहज स्वाभाविक बनने से तुम तुरंत यह समझ लेती हो कि नदी में बहने वाला लकड़ी का स्लीपर बन जाना है, जिससे तुम्हारे मन की धारा तुम्हें जहां भी बहा ले जाये, तुमसे जो कुछ भी कराये, वह होने देना है। तुम अप्रत्याशित अथवा एक संयोग बन कर रह गई हो।

अपरिपक्वता एक मनुष्य को संयोग से होने वाली एक घटना बना देती है, और परिपक्वता व्यक्ति को एक दिशा देती है।

'मेच्योरिटी' अर्थात परिपक्वता शब्द का लेटिन मूल शब्द है—' मेचुरस ' जिसका अर्थ है —पकना। एक फल तभी परिपक्व होता है, जब वह पक जाता है, जब वह मीठा बन जाता है और खाने तथा पचने के लिए तैयार होता है, जब वह किसी के जीवन का भाग बन सकता है। परिपक्व व्यक्ति वह होता है जो यह जान लेता है कि प्रेम क्या है और प्रेम ही ने उसे मधुर और मीठा बनाया है।

अब माधुरी जो कुछ कर रही है, वह प्रेम नहीं है, वह केवल एक सनक है कामवासना की—इसलिए एक दिन वह एक पुरुष के साथ घूमती है, और दूसरे दिन दूसरे पुरुष के साथ। यह बहुत विध्वंसक और विनाशक है। स्मरण रहे, जो कुछ मैं कहता हूं उसे ठीक से समझने की जरूरत है, अन्यथा मेरा कहना सहायक न हो सकेगा। वह हानिकारक ही बन जायेगा।

एक बार ऐसा हुआ:

मुल्ला नसरुद्दीन घर आया। उसकी पत्नी ने उससे पूछा—'' नसरुद्दीन! जब तुमने अपने बॉस से वेतन बढ़ाने को कहा, तो आखिर उसका हुआ क्या?"

मुल्ला नसरुद्दीन ने कहा—'' वह एक भेड़ के मेमने की तरह है।''

" क्या सचमुच, ऐसा है वह? लेकिन उसे कहा क्या?"

— " बा..... बा.....।"

जो कुछ मैं कहता हूं कृपया उसे सावधानी से सुनो और उससे अपने अलग अर्थ न निकालो उसके अर्थ को विकृत न करो। सहज स्वाभाविक बनो। लेकिन तुम सहज स्वाभाविक केवल तभी बन सकती हो, जब तुम बहुत सजग बनी रहो। अन्यथा तुम एक संयोग या दुर्घटना बन जाओगी—एक क्षण तुम उत्तर दिशा की ओर जा रही होगी और दूसरे ही क्षण दक्षिण दिशा की ओर। तुम दिशा ज्ञान ही खो दोगी। एक सहज स्वाभाविक व्यक्ति प्रत्येक क्षण प्रत्युत्तर में स्वयं तैयार रहता है। कभी उसे उत्तर की ओर कभी दूसरे लोग उसे दक्षिण दिशा की ओर जाते देख सकते हैं, लेकिन उसकी आंतरिक दिशा पूरी तरह से निश्चित बनी रहती है। उसकी आंतरिक दिशा लक्ष्य की ओर जाते तीर की भांति होती है। परिस्थितियों के अनुसार वह समायोजन कर सकता है, लेकिन जब एक बार वह व्यवस्थित हो जाता है, वह फिर से ऊर्जा प्राप्त कर अपनी दिशा की ओर गतिशील होने की शुरुआत करता है। दिशा के लिए उसके पास अपनी अनुभूति होती है, लेकिन वह अनुभूति तभी होती है जब तुम अत्यंत सजग होते हो अन्यथा तुम्हारी स्वाभाविकता तुम्हारा कद घटा कर तुम्हें केवल एक पशु बना देती है। पशु सहजता स्वाभाविक होकर जीते हैं, लेकिन वे बुद्ध नहीं होते। इसलिए केवल सहजता और स्वाभाविक किसी व्यक्ति को बुद्ध नहीं बना सकती, इससे कुछ अधिक और, किसी और चीज को जोड़ने की आवश्यकता होती है सहजता और स्वाभाविकता में सजगता जोड़नी होती है। तब तुम एक यांत्रिकता बनकर नहीं रह जाते और न तुम नदी की धारा के साथ बहने वाला लकड़ी का एक स्लीपर होते हो।

सागर पर तैरने वाले एक जहाज के डॉक्टर ने परिचारक को सूचना दी कि शयनकक्ष नम्बर पैंतालीस में एक व्यक्ति मर गया है। शव को दफनाने के सामान्य निर्देश दे दिए गए। कुछ समय पश्चात डॉक्टर ने उस केबिन में झांक कर देखा तो पाया कि शव अब भी वहां पड़ा हुआ है। उन्होंने परिचारक को बुलाकर उसका ध्यान उस ओर जब आकर्षित किया तो उसने उत्तर दिया—" मेरा खयाल था कि आपने केबिन नम्बर उन्चास के बाबत कहा था। मैं उस केबिन में गया, तो मैंने देखा कि उन लोगों में से एक व्यक्ति अपनी बर्थ पर लेटा है। मैंने उससे पूछा—क्या तुम मर गये हो?" उसने कहा—" करीब करीब एक सीमा तक मरा ही समझो।" इसलिए मैंने उसे दफना दिया।"

फिर भी यदि कोई व्यक्ति यह कहता है—" करीब करीब एक सीमा तक मरा ही समझो, तो इसका अर्थ है कि वह जीवित है। बहुत अधिक भाषा पर मत जाओ, बहुत अधिक शाब्दिक मत बनो। मैं तुम्हें अपनी भावनाओं और अनुभूतियों की बात सुनने के लिए कहता हूं लेकिन मेरे कहने का यह अर्थ नहीं है कि तुम्हें खण्डित बन जाना चाहिए। मेरे कहने का अर्थ है कि तुम अपनी अनुभूतियों की बात तो सुनो, लेकिन तुम्हारे सभी अनुभव और अनुभूतियों एक गुंथी हुई माला बन जायें। उन्हें फूलों के एक ढेर की तरह नहीं होना चाहिए। तुम्हारे अनुभव और अनुभूतियां एक फूलों की माला की तरह होनी चाहिए और सभी फूलों के अंदर एक दौड़ता धागा हो जो उन्हें एक दूसरे से बांधे रहे। हो सकता है कि कोई भी उसे न देख सके लेकिन उन्हें जोड़ने वाला धागा एक निरंतरता देता है — यह निरंतरता ही दिशा है। जब तक तुम्हारी अनुभूतियां एक फूलों का हार नहीं बनतीं, तुम टुकड़ों में बिखर जाओगी, तुम खण्ड—खण्ड हो जाओगी, तुम अपनी सहभागिता खो दोगी।"

हां! मैंने माधुरी से अपने अनुभवों और अनुभूतियों के अनुसार सहजता और स्वाभाविकता से जीवन में गतिशील होने को कहा था। लेकिन मैं निरंतर सब कुछ करने पर जोर तो देता रहा हूं लेकिन सदा यह भी स्मरण रखना है कि इसके साथ सजगता रखना भी आवश्यक है, जो बुनियादी जरूरत है—तब तुम जो कुछ करना चाहो, करो। तुम जो कुछ भी कर रही हो, यदि उसे करने में कुछ चीज ऐसी है, जिसमें सजगता बाधा बन

रही हो, तो उसे मत करना। यदि वहां तुम कोई काम ऐसा कर रही हो, जिसमें सजगता बाधा न बन कर, उसके विपरीत तुम्हारी सहायता कर रही हो, तो उसे जरूर करना।

ठीक और गलत की पूरी परिभाषा ही यही है। गलत वही है जो सजगता के साथ न किया जा सकता हो, जिसके लिए मूर्च्छा जरूरी हो। ठीक वह है, जो केवल सजगता के साथ ही किया जा सकता हो, जिसके लिए मूर्च्छा को हटाना हो, अन्यथा उसे किया ही न जा सकता हो। सजगता अत्यंत आवश्यक है। ठीक वही है, जिसके लिए सजगता आवश्यक हो, और गलत वही है, जिसके लिए मूर्च्छा जरूरी हो। मेरी यही परिभाषा पाप और पुण्य के लिए भी है। और तय तुम्हें करना है; सारी जिम्मेदारी तुम्हारी ही है।

एक बार ऐसा हुआ : एक चिंतित स्त्री अपने डॉक्टर के पास गई और उससे कहा कि उसके पति में पौरुष की कुछ कमी प्रतीत होती है क्योंकि वह उसमें कोई रुचि लेता ही नहीं। उसने उसे दवा देते हुए कहा—'' यह गोलियां तुम्हारी सहायता करेंगी। अगली बार जब तुम और तुम्हारे पति शांति से साथ—साथ भोजन करें तो इनमें से दो गोलियां उसकी काफी में मिला देना और वे अपने सहज स्वाभाविक रूप में आ जायेंगे। इसके बाद मुझे फिर आकर बताना।''

दो सप्ताह बाद वह स्त्री फिर डॉक्टर के पास गई और डॉक्टर ने पूछा कि उसका उपचार सफल सिद्ध हुआ या नहीं?

उसने उत्तर दिया—'' ओह! पूरी तरह से लाजवाब। मैंने रेस्तरां में उसकी कॉफी में दो गोलियां मिला दीं और उसके दो सिप लेने के बाद ही वह मुझसे प्रेम करने लगा।''

डॉक्टर ने मुस्कराते हुए कहा—'' बढ़िया! अब तो आपको कोई शिकायत नहीं?"

उसने उत्तर दिया—'' ठीक है, फिर भी एक शिकायत है। मेरे पति और मैं अब कभी अपने को उस रेस्तरां में अपना मुंह नहीं दिखा सकते।''

स्मरण रहे माधुरी! मैं जो कुछ भी कहता हूं उसे ध्यान से समझना है, क्योंकि अंत में तुम्हीं को यह निर्णय लेना है कि उन दो गोलियों का प्रयोग कहां किया जाये मैं तुम्हारा पीछा नहीं कर सकता। यह तुम ही तय करोगी कि कहां स्वाभाविक हुआ जाये, कैसे सहज और स्वाभाविक बना जाए। और कोई मूर्च्छा नहीं है सहजता और स्वाभाविकता। सहजता स्वाभाविकता में बहुत सजग बहुत सावधान और बहुत दायित्वपूर्ण होना है। तुम केवल चारों ओर बेवकूफ बनी घूम रही हो।

तुमने पूछा है—'' आप कहते हैं—तुम अपने अनुभवों और अनुभूतियों का अनुसरण करो, और जब मैं अंत में साहस कर अधिक स्वतंत्रता, प्रसन्नता और सरलता से अपने अनुभवों और अनुभूतियों का अनुसरण करती हूं तो आप कहते हैं कि मैं अपरिपक्व हूं। आखिर इसका क्या अर्थ है?"

अपने दिए गये वक्तव्य के साथ मैं तुम्हें देखने के लिए एक खास रस्सी भी देता हूं। मैं तुम्हें वह विशिष्ट रस्सी इसीलिए देता हूं जिससे जब मैं देखूं कि तुम पागल बन रहे हो, तब मुझे तुम्हें वापस खींचना होता है। मैं निरीक्षण करते हुए देखता रहता हूं कि माधुरी क्या कर रही है, लेकिन अब बहुत, कुछ बहुत अधिक हो चुका है।

मैं तुम्हें एक प्रसंग के बारे में बताना चाहता हूं : अब्दुल, अरब के भूरे रेगिस्तान में यात्रा कर रहा था। उसका ऊंट रेत पर बैठ गया और उसने उठने से साफ इंकार कर दिया। आखिर लम्बी प्रतीक्षा के बाद एक दूसरा अरब उसे मिला और अब्दुल ने उसे अपनी समस्या बतलाई।

दूसरे अरब ने उससे कहा—'' मैं उसे ठीक कर सकता हूं। केवल तुम्हें इसके लिए चांदी के पांच सिक्के खर्च करने होंगे।

अब्दुल ने कहा—'' यह सस्ता सौदा है, इसलिए तुम आगे बढ़कर इस ऊंट को उठाओ।''

इसलिए बिना बात का बतंगड़ बनाये वह अरब झुककर अब्दुल के ऊंट के निकट आया और उसके कान में फुसफुसाते हुए कुछ शब्द कहे। अचानक ऊंट उछल कर अपने पैरों पर खड़ा हो गया और एक शिकारी कुत्ते की तरह रेगिस्तान में दौड़ पड़ा।

अब्दुल आश्चर्यचकित होकर प्रसन्नता से बोला—'' तुम्हारी इस तरकीब की कीमत वाकई पांच चांदी के सिक्कों से काफी अधिक है।''

उस दूसरे अरब ने उत्तर दिया—'' मैं जानता हूं। और मैं वह जादू भरे शब्द तुम्हें बताऊं, मैं तुमसे पांच सौ चांदी के सिक्के चाहता हूं जिससे तुम अपने ऊंट को वापस पकड सको।''

यह केवल आधी कहानी है : अब तुम्हें उस ऊंट को पकड़ना होगा..... अब पांच सौ चांदी के सिक्कों की जरूरत है। जब तक वह दूसरा अरब उसी मंत्र को अब्दुल के कानों को नहीं सुनाता, वह अपना ऊंट नहीं पकड़ सकता।

माधुरी! तुम्हारी कामनाएं भी शिकारी कुत्तों की तरह दौड़ रही हैं। यह आसान था, इसकी कीमत केवल पांच सौ रुपये है, तभी तुम अपना ऊंट पकड़ सकोगी, और इसकी कीमत पांच सौ रुपये होगी। यह तुम्हारे लिए अधिक स्कूर्तिदायक होगा।

कामनाओं के साथ गति करते हुए किसी को भी हमेशा पूर्णता का अनुभव होता है, क्योंकि कोई भी लगभग पशु के समान ही बन जाता है। इसमें प्रसन्नता जैसा ही अनुभव होता है क्योंकि वहां कोई तनाव नहीं होता, कोई जिम्मेदारी नहीं होती। तुम इस बारे में दूसरे व्यक्ति के बारे में कोई भी फिक्र नहीं करते। अब तुम्हें ऊंट को पकड़ना है।

हां, मैंने मैं तुमसे अपने अनुभवों और अनुभूतियों के साथ स्वतंत्र होने के लिए कहा था, अब मैं तुमसे सजग बनने के लिए भी कह रहा हूं। यह अधिक श्रमपूर्ण होगा, लेकिन यदि तुम सजग रह सकीं तो तुम वास्तव में सरल और पूर्ण बन सकोगी। यह सरलता और कुछ भी नहीं है, यह केवल अपने बचपन में पीछे लौटना अथवा अपने पशुत्व में पीछे लौटना है। मैं तुमसे जिस सरलता को उपलब्ध होने के लिए कहता हूं वह सहजता और सरलता एक बुद्ध की है, वह पशुत्व की ओर पीछे न लौटकर, जीवन के चरम शिखर पर पहुंचने की है। तुम्हारी यह सरलता और सहजता तुम्हारी अधिक सहायता करने नहीं जा रही है। इसने किसी की भी सहायता नहीं की है। यह सरलता बहुत आदिम, छिछली और अपरिपक्व है।

लेकिन मैं यह देखना चाहता हूं कि तुम क्या करती हो, और मैंने यह देखा भी है कि तुम क्या कर रही हो। अब तुम्हें अधिक सजग बनना है। अपने जीवन में एक अनुशासन लाओ, उसे एक दिशा दो। अधिक सावधान, अधिक प्रेमपूर्ण और अधिक जिम्मेदार बनो। तुम्हें अपने शरीर को पूरा सम्मान देना है, यह परमात्मा का मंदिर है। तुम्हें इसके साथ इस तरह का व्यवहार नहीं करना है, जिस तरह का तुम कर रही हो, यह उसका अनादर करना है। लेकिन यह कठोरता होगी, यह मैं जानता हूं। लेकिन मैं स्थितियां निर्मित करता हूं जिनके लिए कठोर चीजें करनी ही होती हैं क्योंकि विकसित होने का केवल यही एक ढंग है।

चौथा प्रश्न : सहिष्णुता में, स्थगित करने में और मात्र मूढ़ता के मध्य क्या अंतर है?

हां, यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण है क्योंकि लोग इन तीनों के बारे में भ्रमित हो सकते है।

सहिष्णुता में बहुत सजगता होती है, बहुत सक्रियता होती है और सहिष्णुता में अत्यंत धैर्य और प्रतीक्षा होती है। यदि तुम किसी की प्रतीक्षा कर रहे हो—जिसे तुम अपना मित्र कहते हो—तो तुम बस दरवाजे पर बैठे रहते हो, लेकिन तुम बहुत सजग और सावधान रहते हो। सड़क से कोई भी आवाज आती है, कोई कार गुजरती है, और तुरंत तुम उस ओर देखना शुरू कर देते हो, शायद तुम्हारा मित्र आ गया हो। हवा से दरवाजा खड़कता

है, और अचानक तुम सजग हो जाते हो, हो सकता है उसने दरवाजा खटखटाया हो..... .उद्यान में सूखी पत्तियां इधर—उधर उडती हुई खड़खड़ाती हैं और तुम घर के बाहर आ जाते हो, शायद वह आ गया है..... .सहिष्णुता बहुत सक्रिय होती है। उसमें प्रतीक्षा होती है। उसमें सुस्ती न होकर उसकी दृष्टि में प्रेम, आशा और आनंद की दीप्ति होती है। उसमें मूर्च्छा नहीं होती और न गफलत जैसी ही कोई चीज होती है। वह एक द्युतिवान जलती हुई ज्योति की भांति होती है। इसमें कोई प्रतीक्षा करता है। कोई भी अनंत प्रतीक्षा कर सकता है, लेकिन वह प्रेम, आशा और आनंद से प्रतीक्षा करता है, वह सक्रिय, सजग और निरीक्षणकर्ता बना रहता है।

इसके ठीक विपरीत है—मात्र मूढ़ता। तुम बस सुस्त, बेवकूफ और मूढ़ बने एक गफलत में होते हो और तुम सोच सकते हो कि तुम सहनशील या संतोषी हो। तुम यह सोच कर प्रसन्न हो सकते हो कि जो दूसरे लोग कठिन परिश्रम करते हुए कहीं पहुंचने का प्रयास कर रहे हैं, वे असंतोषी हैं, जब कि तुम एक संतोषी व्यक्ति हो। लेकिन स्मरण रहे, सहिष्णुता को कार्य की आवश्यकता होती है। सहिष्णुता, निष्क्रिय नहीं होती। एक सक्रिय व्यक्ति धैर्यपूर्वक कार्य करता है। वह कोई मांग नहीं करता, उसकी जरूरतें बहुत अधिक नहीं होतीं, उसमें कोई जल्दबाजी नहीं होती, उसे तुरंत या शीघ्र सतोरी या समाधि घट जाये, ऐसी उसकी कोई चाह नहीं होती। वह जानता है कि यह श्रमपूर्ण और बहुत कठोर मार्ग है। वह जानता है कि मार्ग बहुत कठिन है और एक हजार एक बार गड्ढों में गिरने की सम्भावनाएं हैं। खोना बहुत आसान है, और प्राप्त करना बहुत कठिन। वह जानता है कि 'उसे' पाना लगभग असम्भव है—लेकिन यही उसका आकर्षण है और यही उसके लिए एक चुनौती है। परमात्मा को पाना लगभग असम्भव है, लेकिन यही उसका सौंदर्य है, और यही चुनौती है। उस चुनौती को स्वीकार करना होता है। वह कठोर श्रम करता है और फिर भी यह भली भांति जानते हुए भी कि उसकी चाह असम्भव को पाने की है, और उसकी अपनी सीमाएं हैं, वह कोई शिकायत नहीं करता।

परमात्मा को जानना और परमात्मा ही हो जाना, यह उत्कंठा लगभग असम्भव है। यह अविश्वसनीय है पर यह घटती है। यही कारण है कि लोग इंकार किए चले जाते हैं कि बुद्ध कभी हुए भी थे, जीसस केवल एक काल्पनिक कथा के पात्र हैं, और कृष्ण, कवियों की कल्पना भर हैं। इतने अधिक लोग इस बात का आग्रह क्यों करते हैं कि बुद्ध केवल काल्पनिक कथा के एक चरित्र हैं और जीसस और कृष्ण कभी हुए ही नहीं। आखिर क्यों? वे लोग केवल यही कह रहे हैं कि यह पूरी बात असम्भव प्रतीत होती है और ऐसा हो ही नहीं सकता।

एक तरह से ये लोग ठीक ही हैं, ऐसा नहीं हो सकता, लेकिन फिर भी ऐसा होता है। पर ऐसा बहुत कम होता है। यह इतना अधिक दुर्लभ या कम है कि तुम यह कह सकते हो कि ऐसा बिलकुल होता ही नहीं। जब कभी हजारों वर्ष गुजरने के बाद, कोई कभी बुद्धत्व को उपलब्ध होता है—जैसे मानो लगभग ऐसा कभी होता ही नहीं।

इसे जानते हुए ही एक कोई प्रतीक्षा करता है, लेकिन वह निष्क्रिय होकर प्रतीक्षा नहीं करता, क्योंकि तब प्रतीक्षा करना निरर्थक होगा।

वह प्रतीक्षा ठीक किसान की प्रतीक्षा की भांति होती है। वह बीज बोता है कि वह मौसम आने पर अंकुरित होगे। उसमें जल्दबाजी नहीं की जा सकती। बार—बार खेत में जाकर खोदकर यह देखने की कोई जरूरत ही नहीं है कि बीज अभी तक अंकुरित हुए अथवा नहीं, क्योंकि वह बहुत ही विनाशक होगा। ऐसा करना बीजों को अंकुरित ही नहीं होने देगा। यह अधैर्य ही बीजों को नष्ट कर देगा। वह प्रतीक्षा करता है, वह जल से उन्हें सींचता है—महीनों तक कुछ भी दिखाई ही नहीं देता। पृथ्वी के ऊपर कुछ भी नहीं आता, लेकिन वह गहरे धैर्य के साथ प्रतीक्षा करता रहता है, अपना काम किए चला जाता है, खेत की देखभाल करता है,

प्रार्थना करता है और उनके अंकुरित होने की आशा करता है कि वे अंकुरित होने की राह पर हैं। और एक दिन वे वहां होते हैं।

मात्र छूता तुम्हारी निष्क्रियता, तुम्हारे आलस्य और तुम्हारी सुस्ती को छिपाने के सुंदर शब्द हैं। एक आलसी व्यक्ति ही यह कह सकता है—'' मुझे कोई जल्दी नहीं है, मैं प्रतीक्षा कर रहा हूं ', और वह कोई भी काम नहीं करेगा। तब तुम व्यर्थ ही प्रतीक्षा कर रहे हो, कुछ भी होने नहीं जा रहा। हां, मौसम आने पर बीज अंकुरित तो होगे, लेकिन बीजों को बोना और सींचना होता है, अन्यथा वे अंकुरित न होगे। इसलिए तुम अपने ही अंदर निरीक्षण करो। यह भेदभाव एक ही व्यक्ति की विशेषता नहीं है, यह विशेषताएं प्रत्येक व्यक्ति में होती हैं। ये श्रेणियां नहीं हैं कि कोई व्यक्ति ' निरा मूर्ख ' होता है और कोई व्यक्ति बहुत सहिष्णु। नहीं, यह चित्तवृत्तियां, प्रत्येक व्यक्ति में साथ—साथ होती हैं। कभी तुम्हारे जीवन में मूर्खतापूर्ण क्षण आते हैं और कभी तुम्हारे जीवन में सहिष्णुता के भी क्षण आते हैं, और इन दोनों के ठीक मध्य में है—स्थगन। किसी कार्य को आगे के लिए स्थगित करना या टालना, बहुत बड़ी चालाकी अथवा बेईमानी है।

सहिष्णुता सजग है, मूर्च्छित है। सहिष्णुता सचेतन है, और स्थगन अचेतन है। स्थगन या टालने में दो मोड होते हैं, तुम कुछ काम करना चाहते हो, और फिर भी तुम उसके लिए कुछ भी करने को तैयार नहीं हो। यह बहुत बेईमानी की स्थिति है, तुम मध्यस्थ रहना चाहते हो, लेकिन तुम कहते हो—'' कल करेंगे।'' यदि तुम वास्तव में करना ही चाहते हो तो आज ही वह सही समय है, क्योंकि कल कभी आता ही नहीं। यदि तुम वास्तव में करना ही चाहते हो, तो ठीक अभी उस पर ध्यान दो, क्योंकि उसके टालने की जरूरत क्या है? तुम कैसे निश्चित हो सकते हो कि कल आयेगा ही? हो सकता है कि वह कभी न आये। और यदि वह वास्तव में तुम्हारे लिए महत्त्वपूर्ण है और उसके लिए तुम्हारी तीव्र चाह है, तब तुम उसे एक क्षण के लिए भी न टालोगे। तुम अन्य सभी चीजें टाल दोगे लेकिन तुम ध्यान करोगे। तुम केवल वही आगे के लिए स्थगित करोगे जो तुम्हारे लिए महत्त्वपूर्ण नहीं है अथवा तुम बेईमान बने हुए स्वयं अपने ही साथ खिलवाड़ कर रहे हो। तुम्हारे मन का एक भाग कहता है—'' हां। यह महत्त्वपूर्ण तो है—यह मैं जानता हूं इसी वजह से तो मैं इसे कल से शुरू करूंगा।'' तुम संतुष्ट हो जाते हो।

एक व्यक्ति को उसके एक अच्छे मित्र ने यह चुनौती दी, कि उनमें कौन व्यक्ति अधिक ऊर्जावान है, यह सुनकर पहले व्यक्ति ने कहा कि वह सुबह छ: बजे उठ बैठा, टहलने चला गया। आठ बजे नाश्ते के बाद उसने एक घंटा कार्य किया और तब ऑफिस चला गया। वहां उसने सिर्फ आधे घंटे का लंच किया और इसी तरह उसने किये गये कार्यों का बारी—बारी से ग्यारह बजे रात तक की कसरत का पूरा फैलाव भरा विस्तृत विवरण सुना डाला।''

उसके मित्र ने कहा—'' यह तो ठीक है लेकिन तुम यह सभी कुछ कितनी अवधि से कर रहे हो?"

—'' मैं इसे सोमवार से शुरू करूंगा।''

परमात्मा का ध्यान हमेशा स्थगित कर दिया जाता है, प्रेम हमेशा स्थगित कर दिया जाता है, ध्यान हमेशा आगे के लिए टाल दिया जाता है। क्रोध, लोभ, और घृणा कभी स्थगित नहीं किये जाते, शैतान को कभी नहीं टाला जाता। जब शैतान तुम्हें आमंत्रित करता है तुम हमेशा पहले ही से तैयार रहते हो। तुम तुरंत, उसी समय खड़े हो जाते हो। तुम कहते हो ' मैं आ रहा हूं '। जब कभी कोई तुम्हारा अपमान करता है, तुम उससे यह नहीं कहते—'' मैं कल क्रोध करूंगा, " लेकिन प्रेम के लिए तुम हमेशा उसे कल के लिए स्थगित कर देते हो। प्रार्थना के लिए तुम कहते हो— " हां! उसे मुझे करना है ''—यह बहुत बेईमान स्थिति है। तुम इस तथ्य को पहचानना ही नहीं चाहते कि प्रार्थना करने की तुम्हारी इच्छा है ही नहीं, प्रेम तुम करना ही नहीं चाहते, ध्यान

तुम करना ही नहीं चाहते। तुम इस तथ्य को जानना ही नहीं चाहते कि तुम्हें परमात्मा के प्रति व्यग्रता है ही नहीं, इसलिए तुम उसे इस तरह टालना चाहते हो। तुम इसकी भली भांति व्यवस्था कर लेते हो—तुम उस काम को किए चले जाते हो, जिसकी तुम्हें वास्तव में चाह होती है, और उस काम को टाले चले जाते हो जिसकी तुम्हें चाह होती ही नहीं, लेकिन तुम्हें उस तथ्य को पहचानने का साहस नहीं होता। कम से कम ईमानदार बनी। टालना, बेईमानी है, बहुत बड़ी बेईमानी। अपने आप का अंदर से निरीक्षण करो और तुम पाओगे कि जो कुछ सुंदर है, उसे तुम स्थगित करते रहे हो।

यह दुहरा मोड़ है, तुम विभाजित हो अथवा तुम स्वयं के साथ ही चालाकी भरा खेल, खेल रहे हो।

मैंने सुना है : एक रबी के दुर्भाग्य से उसने अपनी दौड़ती कार, फादर मर्फी की कार से टकरा दी। वह उछल कर कार से बाहर आया और ऊंची आवाज में क्षमा याचना करता हुआ बोला—'' मेरे प्रिय फादर मर्फी! मुझे इतना अफसोस है कि मैं बयान नहीं कर सकता। मैंने परमात्मा के प्रिय साथी के साथ ऐसा कर आपके और आपके सभी लोगों के साथ बहुत बड़ी बेवकूफी भरा काम किया है। आप ठीक तो हैं न फादर?"

फादर मर्फी ने कहा—'' हां मैं ठीक हूं रबी! मुझे कोई भी चोट नहीं लगी, लेकिन मैं थोड़ा सा कांप जरूर गया।''

रबी ने नम्रतापूर्वक निवेदन किया—'' आप ठीक कह रहे हैं। यहां मेरे पास एक उम्दा व्हिस्की है, क्या उसका आप एक सिप लेना चाहेंगे?"

और उसने पतलून के पीछे की जेब से फ्लास्क में व्हिस्की निकालकर फादर को दी, जिसे पादरी ने हृदय से स्वीकार किया। उसने फ्लास्क फादर को देते हुए कहा—'' आप दूसरा पेग भी लीजिए। यह सब कुछ मेरी ही तो गलती से हुआ। आप मजे से पीजिए। इस बाबत फिक्र ही मत कीजिए कि यह कितनी महंगी है? पादरी को दूसरे आमंत्रण की आवश्यकता नहीं थी और उसने दूसरा गहरा सिप लेते हुए कहा—'' रबी! आप भी तो एक सिप लीजिए?"

रबी ने हर्ष से चीखते हुए कहा—'' लो पुलिस तो पहले ही से आ पहुंची।''

मन बहुत चालबाज है। प्रत्येक मनुष्य का मन एक यहूदी का ही मन है। यहूदी कोई जाति नहीं है, यह सभी के मनों के अंदर का केंद्र है, यह एक चित्तवृत्ति है। जब तुम दूसरों के साथ बेईमानी से खेल खेलते हो तो धीमे— धीमे तुम स्वयं चालाकियां सीखते हो। मनुष्य जाति के लिए यह सबसे बड़ी समस्या है, जिसका उसे सामना करना है। तुम दूसरों के साथ चालाकियां करते हो, और इस संसार में तुम्हें इससे फायदा होता है। धीमे— धीमे तुमने इतनी गहराई से वे चालें सीख ली हैं, कि तुम यह भूल ही गए हो कि तुम स्वयं अपने आप ही से चालाकी का खेल, खेल रहे हो। मन बहुत अधिक सांसारिक है, बहुत अधिक यहूदी चित्तवृत्ति का है। वह व्यापार के अतिरिक्त अन्य कोई व्यवहार जानता ही नहीं।

मैंने सुना है :

एबे जब रिटायर होने लगा तो वह बहुत अधिक चिंतित था। अपने अधिकतम जीवन में उसने खूब मौज मजा ही किया था। उसकी ढेर सारी इच्छाएं थीं, पर बचत उसने कुछ भी नहीं की थी। अपने रिटायर होने की सुबह चढ़ी चिंतित त्यौरियों के साथ उसने अपनी पत्नी रशेल की ओर मुड़ते हुए कहा—'' मैं नहीं जानता कि अब हम लोगों की गुजर कैसे होगी?"

रशेल ने आलमारी की तली वाली दराज को खींचकर बैंक की पास बुक निकाली, जिसमें पिछले चालीस वर्षों से नियमित जमा धनराशि का विवरण था। वह भले ही रिटायर हो चुका था, लेकिन वे लोग धनी थे।

एबे ने पूछा—'' लेकिन तुमने ऐसा किया कैसे?"

रशेल ने शर्माते हुए कहा—'' अपने विवाहित जीवन में हर बार जब आप खर्च को अग्रिम धनराशि देते थे, मैं उसमें से दस शिलिंग अलग रख देती थी और देख लो, कैसे वह धनराशि इतनी अधिक इकट्ठी हो गई?"

पुलकित होकर उसने अपनी पत्नी को आलिंगन में भरते हुए कहा—'' ओह! यह कितना आश्चर्यजनक है? लेकिन प्रिय रशेल! तुमने यह बात मुझे पहले क्यों नहीं बतलाई? यदि मैं ऐसा जान पाता तो मैंने तुम्हें अपना पूरा काम धंधा सौंप दिया होता।''

बस कुछ पाना है।

मन हमेशा व्यापार की भाषा में ही सोच रहा है। भले ही तुम प्रेम भी कर रहे हो, वह भी व्यापार ही है। जब तुम प्रार्थना भी करते हो, वह भी एक व्यापार होता है। और यदि वह परमात्मा भी हो, तब भी वह एक व्यापार है। और एक बार जब तुम इस व्यापारिक संसार के अभ्यस्त बन जाते हो, तुम स्वयं अपने आपसे चालाकी भरा खेल खेलना शुरू कर देते हो। सजग हो जाओ। टालना, सबसे अधिक खतरनाक खेलों में से एक है, जो कोई भी मनुष्य स्वयं के साथ खेल सकता है। यदि तुम चाहते हो तो उस काम को करो। यदि तुम नहीं चाहते हो, तो ईमानदार बने रहो, कौन तुम्हें विवश कर रहा है? सिर्फ ईमानदार बने रहो। उस काम को मत करो, बल्कि इसे भली भांति जानो कि तुम उसे इसलिए नहीं कर रहे हो, क्योंकि तुम उसे नहीं करना चाहते हो? धोखेबाज क्यों बनो? यह ईमानदारी तुम्हारी सहायता करेगी।

जैसा मैं देखता हूं कोई भी मनुष्य बिना प्रेम किए नहीं रह सकता है, यदि वह वास्तव में ईमानदार है। लेकिन लाखों लोग बिना प्रेम किए इसलिए जी रहे हैं क्योंकि वे उसे टालते चले जाते हैं। एक दिन वे मर जायेंगे और उनका जीवन पूरी तरह मरुस्थल जैसा शुष्क होगा।

जैसा कि मैं देखता हूं कोई भी व्यक्ति बिना परमात्मा के भी जीवित नहीं रह सकता—लेकिन लाखों लोग जी रहे हैं, क्योंकि उन्होंने नकली परमात्मा सृजित कर लिया है, परमात्मा का एक प्रतिस्थापन, एक ऐसा परमात्मा, जिसे हमेशा टाल दिया जाता है। अब यह बहुत आसान है, तुम बिना परमात्मा के जी सकते हो क्योंकि परमात्मा के वहां होने का तुम्हारे पास झूठा अनुभव है, तुम उस पर विश्वास करते हो, और एक दिन तुम उसके लिए अपना पूरा जीवन लगाने जा रहे हो। लेकिन वह एक दिन कभी नहीं आयेगा। यदि तुम चाहते हो कि वह एक दिन आये, तो वह पहले से आया ही हुआ है—वह दिन आज ही है। यह क्षण ही तुम्हारे रूपांतरण का ही लक्षण है।

पांचवां प्रश्न : किसी ने मुझसे यह अशोभनीय और गुस्ताखी भरा प्रश्न पूछने का साहस किया कि आपका व्यवहार विवेक के प्रति कैसा होता हे? आपके बताने के द्वारा कोई मेरे द्वारा कोई भी बात समझना सम्भव हो सकता है।

इस बारे में कुछ भी कहना कठिन होगा।

विवेक मेरे इतने अधिक निकट है, कि वह जैसे निरंतर सलीब पर चढ़ी रहती है। मेरे इतने अधिक निकट रहना बहुत श्रमपूर्ण और चढ़ाई पर चढ़ने जैसा कार्य है। तुम मेरे जितने अधिक निकट होते हो, तुम्हारा उतना ही अधिक दायित्व बढ़ जाता है। तुम मेरे जितने अधिक निकट होते हो, तुम्हें अपने आपको उतना ही अधिक रूपांतरित करना होता है। तुम अपनी अयोग्यता का जितना अधिक अनुभव करते हो, तुम्हें उतना ही अधिक यह महसूस होना शुरू हो जाता है कि कैसे अधिक योग्य बना जाये— और यह लक्ष्य लगभग असम्भव प्रतीत होता है। और मैं बहुत सी स्थितियां निर्मित किए चले जाता हूं। मुझे उन्हें निर्मित करना ही होता है क्योंकि मेरे भीर उसके स्वभाव के घर्षण या टकराने से ही एकीकरण घटित होता है। केवल कठिन से कठिन परिस्थिति के

द्वारा ही कोई विकसित होता है। यह विकास बिना कष्ट के नहीं होता, विकास पीड़ायुक्त होता है। तुम पूछ रहे हो—मैं विवेक के प्रति कैसा व्यवहार करता हूं?

मैं उसे धीमे— धीमे मार रहा हूं। केवल यही एक रास्ता है जिससे पूरी तरह वह एक नया अस्तित्व ले, उसका पुनर्जन्म हो। उसके लिए एक सलीब पर चढ़े हुए चलने जैसा है, और यह काम बहुत सख्त है।

मैं इस बारे में एक प्रसंग बताना चाहता हूं : एक यहूदी परिवार में अपने पुत्र के उद्दण्ड व्यवहार के कारण, माता—पिता के हृदय को बहुत आघात पहुंचा। सरकारी स्कूल से उसका नाम काट दिया गया इसलिए अंत में निराश होकर उन्होंने उसे एक रोमन कैथोलिक स्कूल में पढ़ने के लिए भेजा। पहले ही दिन स्कूल से घर लौटते ही वह सीधे अपने कमरे में चला गया अपना होमवर्क करना शुरू कर दिया।

जब काम से उसका पिता घर लौटा तो उसने उसकी मम्मी से पूछा—'' अब मुझे बताओ, पुत्र के बाबत बुरी खबर क्या है?''

मोम्मा ने उत्तर दिया—'' पोप्पा! कोई बुरी खबर नहीं है। वह स्कूल से भेड़ के मेमने की तरह खामोश लौटा और वह अपने कमरे में बैठा हुआ अब भी होमवर्क कर रहा है।''

पोप्पा आश्चर्य से चीखता हुआ बोला—'' वह और होमवर्क! उसने अपने पूरे जीवन में कभी होमवर्क किया ही नहीं। उसे जरूर अस्वस्थ होना चाहिए।''

इसलिए पोप्पा अपने पुत्र के कमरे में जाकर उससे बोला—'' यह तुम्हारी मम्मी मुझे क्या बता रही हैं कि तुम होमवर्क कर रहे हो? यह अचानक तुम्हारे हृदय का परिवर्तन हो कैसे गया?''

लड़के ने उत्तर दिया—'' पोप्पा! मैं ही उस स्कूल में अकेला यहूदी हूं। मेरी डेस्क के सामने वाली दीवार पर जो तस्वीर लगी है वह वहां आखिरी यहूदी युवा की है। उई मां! आपको भी उसे जरूर देखना चाहिए कि उन्होंने उसके साथ किया क्या?

जीसस को क्रॉस पर लटका दिया गया। मेरे बहुत अधिक निकट रहना, क्रॉस पर बने रहना होता है। सब कुछ इतना ही है। यही है वह सब कुछ, जो मैं उसे करने के लिए कहे चला जाता हूं। वास्तव में उसे तुम सभी लोगों की अपेक्षा कहीं अधिक होम वर्क करना होता है।

छठवां प्रश्न : अभी हाल ही के प्रवचन में आप कह रहे थे— "प्रेम के मार्ग पर: ध्यान के बारे में सब कुछ भूल जाओ और ध्यान के मार्ग पर, प्रेम के बारे में सब कुछ भूल जाओ! " अब आप कह रहे हैं कि प्रेम का मूल्य आवश्यक और अपरिहार्य है। वस्तुत: ध्यान के पथ पर चलते हुए मैं स्वयं अपने को बहुत उलझन में या रहा हूं, यह मैं समझता हूं कि बाउलो पर बोलते हुए आप बाउल ही बन जाते हैं और यूरी तरह से प्रेम के मार्ग पर ही होते है, मुझे इन प्रवचनो को फिर कैसे सुनना चाहिए? और ध्यान के मार्ग पर, प्रेम, अनुभव और भावनाओं का क्या महत्व है?

उत्तर : यदि मैं बाउलों के बाबत, और प्रेम, भक्ति तथा प्रार्थना के सम्बंध में चर्चा कर रहा हूं और तुम ध्यान के पथ पर चल रहे हो, तो मुझे ध्यानपूर्वक सुनो, बस इतना ही यथेष्ट है। केवल मुझे पूरे ध्यान से सुनो, तब सुनते हुए ही तुम ध्यान में भी विकसित होने लगोगे। लेकिन बुद्धि के द्वारा मत सुनो, क्योंकि उसकी वहां कोई जरूरत ही नहीं है। तुम ध्यान के मार्ग पर चल रहे हो, इसलिए तुम्हें उसके विवरण या विस्तार के बारे में फिक्र करने की जरूरत ही नहीं है। जो कुछ मैं कह रहा हूं उसे तुम खामोशी से बिना इस बात की चिंता किए कि मैं क्या कह रहा हूं मौन होकर बस सुनो। तुम उसे गहरे ध्यान में सुन सकते हो। सुनने को ही अपना ध्यान बना लो और उससे ही सब कुछ हो जायेगा। लेकिन यदि तुम उसे बुद्धि से सुनते हो, तो उससे भ्रम और उलझनें उत्पन्न होगीं। यदि मैं ध्यान के पथ पर बोल रहा हूं और तुम प्रेम के पथ पर चल रहे हो तो मुझे परिपूर्ण प्रेम से

सुनो। तुम अपने मार्ग की लीक से हटोगे नहीं। और तब मैं भले ही प्रेम या ध्यान किसी पर भी बोलूं तुम परिपूर्ण और तृप्त हो जाओगे। तुम्हारा अपना पथ और भी अधिक सुदृढ़ और समृद्ध होगा। तुम्हारी संकल्प शक्ति और भी अधिक दृढ़ होगी।

अंतिम प्रश्न : प्यारे भगवान? कृपया मेरी सहायता करो मुझे मेरा मार्ग दिखलाये : वह प्रेम है अथवा ध्यान? मुझे मेरे स्वभाव के अनुसार एक सूत्र देने की कृपा करें!

यह प्रश्न नीलम का है। मैं उसे जानता हूं। मैं उसे बहुत लम्बी अवधि से काफी कुछ जानता हूं केवल इसी जीवन में नहीं, बल्कि मैं उसे पिछले जन्मों से जानता हूं। उसका मार्ग पूरी तरह से निश्चित ही प्रेम का है। प्रेम के द्वारा ही वह 'उसे' प्राप्त करने जा रही है। प्रेम के द्वारा ही उसे अपने 'होने' का अनुभव होगा, प्रेम के द्वारा ही वह जो सब कुछ घट सकता है, उसे घटेगा। और यह मैं निश्चित रूप से परिपूर्णता से कह सकता हूं। जब दूसरे लोग मुझसे पूछते हैं तो मैं इतना निश्चित नहीं होता हूं। कोई व्यक्ति जो अभी हाल ही में यहां आया है, मुझे उसे भली भांति जानना होता है, उसके अंदर अधिक गहराई से झांकना होता है, विभिन्न स्थितियों में उसका निरीक्षण करना होता है, उसकी चित्तवृत्तियों को देखना होता है, उसके अस्तित्व की पर्त दर पर्त को सूक्ष्मता से समझना होता है, तभी….. .लेकिन नीलम के बारे में यह पूर्ण रूप से निश्चित है। मैंने उसे इस जीवन में जाना है, और मैंने उसे पूर्व के जन्मों में भी जाना है। उसकी दिशा पूरी तरह से स्पष्ट है, प्रेम ही उसका ध्यान है।

आज इतना ही।

तीसरा प्रवचन

अपनी आंखें बंद करो और उसे पकडने का प्रयास करो

बाउल गाते हैं—
वासना की सरिता में
कभी डुबकी लगाना ही मत
अन्यथा तुम किनारे तक पहुंचोगे ही नहीं,
यह उग्र तूफानों से भरी हुई वह नदी है—
जिसके किनारे हैं ही नहीं।
क्या तुम उस मानुष को
अपने ही अंदर देखना चाहते हो?
यदि हां, तो अपने ही घर के अंदर जाओ
जो अत्यंत सुंदर और रूपमान है।
उस तक जाने के सभी मार्ग
जहां जीवन और मृत्यु दोनों एक साथ रहते हैं
जिसे बोध और समझ से ही जाना जा सकता है
वह आकाश मंडल के भी पार है।
अपनी आंखें मूंद कर
उसे पकड़ने का प्रयास करो
देखो, वह फिसलता हुआ निकला जा रहा है।

ज्यां पॉल सार्त्र कहता है कि यह मनुष्य एक अनुपयोगी व्यग्रता है, अर्थहीन और व्यर्थ है। वह ठीक ही कहता है, यदि वहां मनुष्य के पार और कुछ भी नहीं है, यदि वहां ऐसा कुछ भी नहीं है, जो मनुष्य का अतिक्रमण कर जाए। वह ठीक कहता है, क्योंकि अर्थ हमेशा किसी उच्चतम स्रोत से ही आता है। किसी भी वस्तु या व्यक्ति में स्वयं कभी कोई अर्थ नहीं होता, वह हमेशा कहीं पार से या अज्ञात से आता है।

उदाहरण के लिए तुम एक बीज का निरीक्षण कर सकते हो : अपने आप में वह अर्थहीन है, जब तक कि वह अंकुरित नहीं होता। एक बार जब वह अंकुरित होता है, वह अर्थपूर्ण हो जाता है। बीज के लिए वृक्ष होना ही उसका अर्थ है। अब बीज का अस्तित्व एक निश्चित कारण से होता है। उसका अस्तित्व मात्र एक संयोग नहीं है। वह अर्थपूर्ण है। उसे जन्म देना है। उसे कोई चीज सृजित करनी है : कुछ ऐसी चीज़ जो उसके पार है, कुछ ऐसी चीज जो उसकी अपेक्षा कहीं अधिक बड़ी है, कुछ ऐसी चीज जो कहीं अधिक उच्चतम सोपान की है।

लेकिन तब, वृक्ष का अपने आप में क्या अर्थ है? फिर उसका अर्थ खो जाता है, जब तक कि वृक्ष पुष्पित न हो सके। वृक्ष का अर्थ ही उसके फलने फूलने में है। जब वह पुष्पित पल्लवित होता है, तभी उसका कुछ अर्थ होता है : वृक्ष अब मां बन गया है, वृक्ष ने अब कुछ नया जन्म दिया है, अब वृक्ष महत्त्वपूर्ण बन गया है। वह वहां बिना किसी उद्देश्य के नहीं था, क्योंकि फूल उसका प्रमाण है। उसका वहां होना अर्थपूर्ण था, वह वहां प्रतीक्षा कर रहा था—फूलों के आने की।

लेकिन अपने आप में फूल का क्या महत्त्व है, जब तक कि उसकी सुवास, हवाओं द्वारा दूर—दूर तक न फैले? एक बार वह सुगंध बिखरा दे, तो फूल अर्थपूर्ण हो जाता है, और इसी तरह यह क्रम आगे चलता रहता है।

अर्थ होता है हमेशा, उच्चतर स्थिति में पहुंचने का। हमेशा अर्थ होता है— उसके पार जाने में, अर्थ हमेशा अतिक्रमण करने में होता है। यदि मनुष्य के पार कुछ भी नहीं है वहां, तो स्पर्श बिछल ठीक कहता है : तब मनुष्य एक व्यर्थ व्यग्रता भर है, इधर—उधर भागते रहने की, लेकिन असफलता और उसका नष्ट होना निश्चित है। वह कभी पहुंच ही नहीं सकता वहां, क्योंकि वहां ऐसा कोई भी स्थान है ही नहीं, जहां पहुंचना हो। वह कुछ बन ही नहीं सकता क्योंकि उस बनने के पार कुछ भी नहीं है। उसका फैलाव और विकास नहीं हो सकता, वह खिलकर फूल नहीं बन सकता, जिससे उसकी सुवास चारों ओर फैल सके। यदि मनुष्य का अंत स्वयं अपने आप में सीमित होकर रह जाता है, तब निश्चित रूप से उसका जीवन व्यर्थ है। लेकिन मनुष्य स्वयं अपने आप में समाप्त नहीं होता, वह एक विकास है। मनुष्य है एक होना, कुछ बनना, विकसित होना, निरंतर उस पार जाना। फ्रीड्रिक नीत्यो ने कहा है, " वह दिन सबसे अधिक दुर्भाग्यशाली दिन होगा, जब मनुष्य में उच्चतम बनने की आकांक्षा नहीं होगी, जब मनुष्य में स्वयं के पार जाने की आकांक्षा नहीं होगी। वह दिन सबसे अधिक दुर्भाग्यशाली होगा, जब मनुष्य की आकांक्षा का तीर मनुष्य की अपेक्षा उससे भी उच्चतम लक्ष्य की ओर गतिशील न होगा, जब मनुष्य अपने आप में सीमित होकर अपने में सिमट कर रह जायेगा और उसके पहुंचने को कोई लक्ष्य ही न होगा।"

ऐसा प्रतीत होता है कि आधुनिक मनुष्य उस दुर्भाग्यशाली दिन के अधिक से अधिक निकट आता जा रहा है। वह मृत्यु का क्षण प्रतिपल निकट से निकट आता जा रहा है और सार्त्र का कथन सत्य होने जा रहा है, यदि तुम उसे सत्य होने की स्वीकृति दो। यदि तुम मनुष्य को एक बीज ही बने रहने दो और उसे अंकुरित होने की अनुमति न दो, यदि तुम उसे एक ऐसा वृक्ष ही बने रहने तक सीमित कर दो जो पुष्पित न हो सके, यदि तुम फूलों को अनुमति न दो कि वे अपनी सुवास चारों ओर फैला सकें, तब वास्तव में जीवन केवल एक नर्क है वह जीने योग्य न होकर निरर्थक है। तब जन्म लेना दुःखों में ही जन्म लेने जैसा है। तब मृत्यु एक आशीर्वाद और जीवन एक अभिशाप है।

लेकिन ऐसा है नहीं, यह तुम पर ही निर्भर है कि तुम्हारा जीवन अर्थपूर्ण होगा अथवा अर्थहीन। यह सब कुछ तुम्हीं पर निर्भर है। धर्म की पूरी दिशा ही यही है कि जीवन को पहले ही से कोई अर्थ नहीं दिया गया है, जिसे निर्मित करना है। वह अर्थ तुम्हें पहले से हस्तांतरित नहीं किया गया है, केवल वहां सम्भावना और अवसर है, वह सम्भावित शक्ति है मनुष्य के पास। तुम फूल बनकर एक अर्थपूर्ण अस्तित्व बन सकते हो अथवा तुम शुल्क और व्यर्थ हो सकते हो। तुम पर ही महान उत्तरदायित्व है, यदि तुम उसे पूरा नहीं करते हो तो तुम्हारे लिए कोई दूसरा उसे पूरा नहीं कर सकता। तुम सेवकों पर निर्भर नहीं हो सकते। जीवन इतना अधिक मूल्यवान है कि तुम किसी दूसरे पर विश्वास नहीं कर सकते। तुम्हें ही पूरी स्थिति नियंत्रित करनी होगी और तुम्हें ही अपने कंधों पर जिम्मेदारी लेनी होगी।

तुम वास्तव में मनुष्य उसी दिन बनोगे जिस दिन तुम अपने विकास के लिए जिम्मेदार बन जाओगे। जिस दिन वास्तव में एक मनुष्य बन जाओगे तुम उसी दिन निर्णय लोगे कि तुम्हें अपने जीवन का अर्थ सृजित करना है। तुम्हें एक कोरा कागज दिया गया है : तुम्हें उस पर अपने हस्ताक्षर करने होंगे, और तुम्हें उस पर अपने गीत लिखने होंगे। वहां गीत पहले से नहीं हैं। तुम ही वहां हो, उसकी सम्भावना है वहां—लेकिन गीत तो तुम्हें ही गाना और गुनगुनाना है, नृत्य तो तुम्हें ही करना है। नर्तक है वहां, लेकिन उस नर्तक के होने का क्या अर्थ है, यदि उसने अभी तक नृत्य किया ही नहीं? उसे नर्तक पुकारना भी अर्थहीन है क्योंकि जब तक वह नाचता नहीं,

तुम उसे नर्तक कैसे कह सकते हो? जब तक एक बीज वृक्ष नहीं बन जाता, वह केवल एक नाम है, वह बीज है ही नहीं। और जब तक एक वृक्ष फलता फूलता नहीं, वह केवल नाम भर का वृक्ष है, वह वृक्ष कहने योग्य है ही नहीं। और जब तक एक फूल सुवास नहीं बिखेरता, वह केवल नाम भर के लिए फूल है, वह अभी फूल बना ही नहीं।

तुम अपना अस्तित्व निरंतर सृजित कर रहे हो। और यदि तुम सृजित नहीं करते हो तो तुम दुर्योग से धाराओं में बहने वाले लकड़ी के तने जैसे बन जाओगे, जो बिना दिशा के यहां—वहां बहता रहता है।

बाउल पहले कदम से शुरुआत करते हैं। उनके पास मनुष्य की सभी सम्भावनाओं और सीडी की सभी पायदानों पर चढ़ने के लिए पूरी समझ और एक अखण्ड दृष्टिकोण होता है। सीढ़ी का पहला पायदान या डंडा है—वासना, सेक्स के प्रति भावोद्वेग और सेक्स ऊर्जा। और सेक्स ऊर्जा ने निरंतर मनुष्य को भ्रमित किया है। यदि वह केवल सेक्स मात्र ही बनी रहती है, तो वह अर्थहीन बन जाएगी। तब तुम केवल एक ही लीक पर चलते रहोगे।

सेक्स तभी अर्थपूर्ण है, जब वासना से प्रेम उत्पन्न हो। केवल प्रेम भी तभी अर्थपूर्ण है, जब उससे प्रार्थना का जन्म हो। यदि तुम्हारा सेक्स केवल एक कामुकता मात्र है, एक दोहराने वाला चक्र और एक यांत्रिक प्रक्रिया है जो तुम बस किए चले जा रहे हो, तब तुम अर्थहीन होकर रह जाओगे। क्योंकि सेक्स तुम्हारी ही ऊर्जा है और उसे रूपांतरित किए जाना है। वह बहुत अपरिपक्व और कच्ची सामग्री की भांति है। उस पर बहुत कुछ काम किये जाना है। वह खान से निकला हीरा है, और तुम्हें उसे तराश कर उस पर पालिश करनी है, तुम्हें उसे एक सुंदर रूप और आकृति देनी है। तुम्हें उसे एक नूतन सौंदर्य देना है। यह तुम पर निर्भर करता है। यदि तुम खदान से निकले कच्चे हीरे के पत्थर को साथ लिए घूमोगे तो वह मूल्यहीन होगा और केवल इतना ही नहीं, वह तुम्हारे लिए एक भार होगा। उसे ढोये चले जाने से बेहतर है उसे फेंक दो। उसे व्यर्थ में क्यों ढोये चले जा रहे हो, कुछ चीज उससे भी उच्चतम विकसित हो सकती है।

इसे सदा स्मरण रखना, बाउल, वासना या सेक्स के विरुद्ध नहीं है, लेकिन उनका कहना है कि यदि तुम केवल वासना तक ही सीमित होकर रह गये तो तुम नष्ट हो जाओगे। उसी में खोकर रह जाओगे।

वासना की सरिता में
कभी डुबकी लगाना ही मत
अन्यथा तुम कभी किनारे तक पहुंचोगे ही नहीं
यह उग्र तूफानों से भरी हुई वह नदी है—
जिसके किनारे हैं ही नहीं।

इससे उनका क्या अर्थ है ?—वासना की नदी में तट या किनारे होते ही नहीं और यदि तुमने उसमें डुबकी लगाई तो तुम उसी में खो जाओगे। एक व्यक्ति को उससे ऊपर उठना है। ऐसा नहीं कि उसमें कुछ चीज गलत है, यह आवश्यक बात याद रखने की है। यह निष्कर्ष मत निकालो कि बाउल यह कह रहे हैं कि सेक्स के साथ कुछ चीज गलत है। वे केवल यह कह रहे हैं कि गलत तब होता है, जब तुम उसी में सीमित होकर रह जाते हो। यदि तुम उसका उपयोग कर सकते हो, यदि तुम उसे ऊपर चढने वाली सीढ़ी का पत्थर बना सकते हो, यदि तुम उससे उच्चतम तल की ओर गति कर सकते हो, तब वह बहुत सुंदर है। वह एक बड़ी सहायता बन जाती है। बिना उसके उससे ऊपर उठना असम्भव होता।

वासना अपने आप में एक बीज की भांति है — उसमें पूरी सम्भावना है, वह ठीक मिट्टी, उचित मौसम और योग्य माली की प्रतीक्षा कर रही है, उसे उस कुशल मनुष्य की प्रतीक्षा है जो अंकुरित होने में उसकी

सहायता करे। एक बीज वास्तव में और कुछ भी नहीं, यह केवल एक सम्भावना है। उसके लिए वृक्ष बनने की कोई अनिवार्यता नहीं है। यह हो सकता है कि वह कभी कुछ बन ही न सके और पूरी तरह नष्ट ही हो जाए। यदि तुम उस बीज को पत्थर में दबा दो तो वह बीज ही बना रहेगा। सदियां गुजर सकती हैं और बीज अंकुरित नहीं होगा।

बहुत से लोग ऐसे ही बीज की भांति है। उन लोगों ने अभी अपनी भूमि ही नहीं खोजी—उन लोगों को सही मौसम ही नहीं मिला अभी तक। ये सभी सांसारिक लोग हैं।

एक धार्मिक मनुष्य वह होता है, जिसका बीज ठीक भूमि तक पहुंच जाता है और उसमें विलुप्त हो जाता है। जब बीज मिटता है, तभी वृक्ष का जन्म होता है। जब ' तुम ' विसर्जित हो जाते हो, तभी आत्मा का जन्म होता है। जब आत्मा विलुप्त होती है तो परमात्मा का जन्म होता है।

तुम्हारा अस्तित्व बीज के सख्त आवरण या छिलके जैसा है..... .यही मनुष्य का अहंकार है। सांसारिक मनुष्य अहंकारी मनुष्य ही होता है, जो सांसारिक मनुष्य नहीं होता, वही विनम्र होता है। विनम्र होने का साधारण सा यही अर्थ है — वह बीज की भांति भूमि में विलुप्त हो गया है, वह पृथ्वी के अंदर जाकर मर जाने को तैयार है। अंग्रेजी का Humble (विनम्र) शब्द Humus से निकला है। Humous का अर्थ होता है—' पृथ्वी '। विनम्र मनुष्य वह है जो पृथ्वी के अंदर जाकर मिटने को पहले ही से तैयार है। विनम्र व्यक्ति वह है, जो अपने आप को खो देने को तैयार है। जीसस बार—बार कहते हैं, यदि तुम अपने को मिटाते नहीं, खोते नहीं, तो तुम ' उसे ' प्राप्त न कर सकोगे, यदि तुम अपने को खोते नहीं तो कभी भी ' होने ' की अनुभूति न कर सकोगे — धन्य हैं वे लोग, जो खोने और मिटने को तैयार हैं "। आखिर उनके कहने का अर्थ क्या है? उनके कहने का अर्थ है—धन्यभागी है वह बीज, जो अपने सख्त छिलके के खोल को मिटाने के लिए आघात सहने को तैयार हो जाता है, मिट्टी के लिए अपने कोमल हृदय का द्वार खोल देता है, जिससे मिट्टी उस पर अपना कार्य कर सके और उसे अज्ञात की ओर ले जाए जो ज्ञात के साथ बंधन तोड़ देता है, जो ज्ञात के साथ अपनी प्रतिबद्धता समाप्त कर अज्ञात के प्रति प्रतिबद्ध हो जाता है। खतरे हैं वहां—वहां तूफान भी होंगे, बादलों की गरज और बिजली की कौंध होगी वहां।

एक छोटे से पौधे के लिए पूरा संसार एक खतरे का समय है, उसके लिए एक हजार एक जोखिम हैं। लेकिन बीज के लिए वहां कोई खतरा नहीं होता। बीज बंद होता है, बिना किसी खिड़की दरवाजे के पूरी तरह सुरक्षित, वह एक सुरक्षित कैद होती है।

लेकिन एक नन्हा सा पौधा बहुत नाजुक है इसका निरीक्षण करें : एक बीज है बहुत कठोर और सुरक्षित, और पौधा है—बहुत कोमल और नाजुक, जो आसानी से नष्ट हो सकता है। और एक फूल और भी अधिक नाजुक है—एक सपने जैसा नाजुक एक कविता की तरह नाजुक। और उसकी सुवास और अधिक सूक्ष्म तथा नाजुक होती है—वह लगभग अदृश्य होती है, वह अव्याख्य बन जाती है। यह सारा विकास अज्ञात की ओर उन्मुख है, कोमल, नाजुक और अव्याख्य की ओर उन्मुख है।

सारा विकास अदृश्य की ओर उन्मुख है। केवल स्थूल ही दिखाई देता है। परमात्मा अदृश्य है। केवल पदार्थ ही दृश्यमान है, मन अदृश्य है। केवल स्थूल का ही स्पर्श किया जा सकता है, केवल वही स्पष्ट और निश्चित होता है, लेकिन सूक्ष्म का स्पर्श नहीं किया जा सकता, वह अस्पष्ट और अनिश्चित होता है। यही कारण है कि परमात्मा को देखा नहीं जा सकता—क्योंकि परमात्मा फूलों की सुवास है, अति सूक्ष्म, बहुत—बहुत सूक्ष्म।

स्मरण रहे, स्थूल के साथ सुरक्षा होती है। प्रेम की अपेक्षा वासना अधिक सुरक्षित है, प्रार्थना की अपेक्षा प्रेम कहीं अधिक सुरक्षित है। और यदि तुम सुरक्षा की ओर देख रहे हो, तो तुम वासना तक ही सीमित रह जाओगे।

बहुत से लोग सेक्स में ही जन्मते हैं। इसमें कुछ भी गलत नहीं है : प्रत्येक को सेक्स में ही जन्म लेना होता है। समस्या तब होती है जब बहुत से लोग केवल सेक्स में ही जीते हैं और सेक्स में ही मर जाते हैं। इसका अर्थ है कि उनका कोई फैलाव और विकास हुआ ही नहीं। सेक्स में जन्म लेना पूरी तरह स्वाभाविक है, लेकिन उसमें मरना? तब क्या है इसका दिशा संकेत? तब क्या अर्थ है उत्पन्न होने का? तब यदि तुम विकसित नहीं हुए तो कुछ भी तो नहीं घटा तुम्हारे साथ?

मैं एक वृद्ध व्यक्ति के बारे में पढ़ रहा था, एक ऐसे वृद्ध के सम्बंध में जो लगभग पचासी वर्ष का था? वह अपने डॉक्टर के पास गया और उससे कहा— " डॉक्टर! मैं नपुंसक हो गया हूं।''

डॉक्टर ने उसकी ओर देखा और पूछा—'' लेकिन आपने इस बात को पहली बार कब नोट किया?"

उस वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया—''पिछली रात और आज फिर इस सुबह।'' लोग जिए चले जा रहे हैं.....तुम वासना में जितनी लम्बी अवधि तक जीते रहोगे, तुम्हारा अस्तित्व उतना ही अधिक कुरूप होता जायेगा। और यदि तुम्हें उसी में मरना भी पड़े तब तो पूरा जीवन ही व्यर्थ बरबाद हो गया। तुम जन्म से आगे कभी एक कदम भी न गए। वास्तव में जन्म तो स्वाभाविक रूप से सेक्स में होगा ही लेकिन उसी में मृत्यु नहीं होनी चाहिए।

मैंने सुना है :

अपनी मम्मी के प्रसूति क्लिनिक में प्रतीक्षा करता हुआ नन्हा मुन्ना सामी अपना ' होमवर्क ' करने में व्यस्त था। जब वह मम्मी से मिला तो उसने पूछा— " मम्मी! मेरा जन्म कैसे और कहां से हुआ?"

उसने उत्तर दिया—'' आह डार्लिंग, सफेद परों वाला स्ट्रोक पक्षी तुम्हें इस दुनिया में लाया।''

" और आप कहां से जन्मीं मम्मी?"

" ओह! स्ट्रोक पक्षी मुझे भी इस दुनिया में लाया।''

" और दादी कहां से आईं?"

" क्यों, तेरी दादी तो स्ट्राबेरी की झाड़ी के नीचे पाई गई।''

इसलिए होमवर्क करते हुए उसने अपने निबंध में लिखा—'' ऐसा लगता है जैसे तीन पीढ़ियों से मेरे परिवार में किसी का भी स्वाभाविक रूप से जन्म हुआ ही नहीं।"

सेक्स में जन्म लेना स्वाभाविक है, किसी को इस बारे में रक्षात्मक होने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। लेकिन सेक्स में ही मृत्यु होना अस्वाभिक है। सेक्स से एक एक कर उच्चतम की ओर कदम उठना ही चाहिए। बीज से प्रारम्भ कर सुवास तक की यात्रा ही विकास है।

लेकिन बहुत अधिक लोग, सेक्स के दोहराने वाले चक्र में ही जीते हैं: वे एक ही दिनचर्या के साथ परिभ्रमण करते रहते हैं। वे बिना सजग हुए वही चीजें, जिनके बारे में उन्हें स्वयं यह होश नहीं कि वे एक ही चीज को जाने कितनी अधिक बार कर चुके हैं, और बिना सजग हुए कि उनसे कुछ भी नहीं मिला, वे उन्हें किए चले जा रहे हैं। लेकिन वे, बिना यह जाने हुए कि उन्हें उसके अलावा और क्या करना चाहिए बस उन्हीं चीजों को किए चले जा रहे हैं। वे लोग एक ही चक्राकार मार्ग पर घूमते हुए व्यस्त बने रहते हैं। यही कारण है कि हम पूरब में इसे 'संसार' या चक्र कहते हैं। यह संसार एक चक्र के नाम से ही पुकारा जाता है। ठीक वैसे ही जैसे एक पहिया घूमे चला जाता है तो उसकी वही तानें घूमती हुई ऊपर नीचे आती—जाती हैं, यदि तुम्हारा जीवन भी

एक पहिए जैसा ही है तो वही चीजें बार बार घूम कर आती जाती हैं, इस तरह तुम्हारे जीवन का कोई अर्थ होगा ही नहीं— क्योंकि अर्थ तो केवल तभी होता है, जब तुम स्वयं अपने ही पार कोई कदम उठाते हो। और यह भी स्मरण रखना यदि तुम पार के लिए कोई कदम उठाते हो तब तुम वहां भी जाकर जड़ हो जाते हो, और अर्थ फिर खो जाता है।

इसलिए अर्थ तो नूतनता में है। यदि तुम निरंतर अर्थपूर्ण बने रहना चाहते हो, शाश्वत रूप से अर्थपूर्ण, तब तुम्हें विकसित, विकसित और विकसित ही होते चले जाना है। यदि तुम कहीं भी रुककर जड़ हो गये, तो अर्थ तुरंत मिट जाता है। रुककर जड़ होना अर्थपूर्ण होना नहीं है, अर्थ है प्रवाह में, अर्थ है विकसित होने में, इसे निरंतर स्मरण रखना है। तुम प्रेम में भी रुककर जड़ बन सकते हो और अर्थ फिर खो जायेगा, तब तुम फिर बासी और पुराने हो जाओगे, तब नदी फिर प्रवाहित नहीं हो रही है। प्रवाह रुक जाने से तुम फिर गंदे हो जाओगे। और जब नदी बह रही होती है वह साफ और ताजी होती है, जब नदी का प्रवाह रुक जाता है, वह स्थिर और प्रवाहहीन हो जाती है।

ऐसा ही सत्य जीवन के बारे में भी है। यदि तुम प्रेम में रुक कर स्थिर हो गये, प्रवाह फिर से खो गया। तुम फिर से उसी लीक पर चल पड़े।

प्रार्थना जरूरी है..... और यहां प्रार्थना से भी कहीं अधिक ऊंची चीजें हैं। प्रार्थना ही अंतिम है जिसके बारे में कुछ कहा जा सकता है, जिसे कुछ परिभाषित किया जा सकता है, पर वह भी संतोषजनक रूप से नहीं, बल्कि आधा अधूरा ही। लेकिन प्रार्थना ही अंत है—वह जैसे क्षितिज है। ऐसा नहीं है, कि क्षितिज पर जाकर पृथ्वी समाप्त हो जाती है और ऐसा भी नहीं है कि क्षितिज पर जाकर आकाश समाप्त हो जाता है। क्षितिज केवल हमें अपनी सीमा का दिग्दर्शन कराता है : हमारी दृष्टि उससे और आगे नहीं जाती, उतना ही सब कुछ होता है। प्रार्थना, सेक्स ऊर्जा का क्षितिज है, लेकिन वह अंत नहीं है। प्रार्थना से कुछ चीजें और उच्चतम तल पर हैं, लेकिन उन चीजों को अभिव्यक्त करने के लिए शब्द हैं ही नहीं। जब तुम प्रार्थना तक पहुंचते हो, तुम तभी जानोगे कि वहां प्रार्थना से भी उच्चतम तल पर कुछ और चीजें हैं क्योंकि विकास शाश्वत है।

लोग लगभग मृत हैं क्योंकि वे रुक कर और जड़ होकर रह गये हैं। वे एक ही चीज की बार—बार खोज में लगे हैं। जरा इसका निरीक्षण करें।

एक व्यक्ति को तलाश होना चाहिए नये की। यह खोज ही जैसे तुम्हें नया और ताज़ा बना देती है, तुम्हें फिर से युवा बना देती है। यदि आज तुम्हें कोई सुंदर अनुभव हुआ है, तो कल उसे फिर मांगो ही मत, क्योंकि अब तुमने चूंकि उसे जान लिया, वह अर्थहीन हो गया, जैसे समाप्त हो गया। कोई और चीज मांगो, किसी और नई चीज की खोज करो, किसी अज्ञात और अपरिचित को टटोलो। उसके घर जाओ। वह सुंदर था, लेकिन उसकी पुनरुक्ति मत करो, क्योंकि पुनरुक्ति सुंदरता की हत्या कर देती है। पुनरुक्ति प्रत्येक वस्तु से ऊब उत्पन्न करती है। और एक बार तुम ऊबने के अभ्यस्त हो जाते हो, तो तुम मृत हो जाते हो। तब तुम उसी घेरे में चक्कर लगाते रहते हो।

मैंने सुना है.....

एक आमोद—प्रमोद भरी पार्टी हो रही थी। शराब, व्हिस्की के साथ हंसी मजाक स्वतंत्रता से जैसे प्रवाहित हो रहा था। एक आज्ञाकारी वेटर ने ट्रे में रखी शराब एक सख्त मिजाज और गम्भीर व्यक्ति को पेश की, वह व्यक्ति निश्चित रूप से एक पादरी था। पादरी ने उसकी ओर कठोर दृष्टि से देखते हुए कहा—'' नहीं धन्यवाद। मैं शराब नहीं पीता।''

वेटर उन्हें छोड़कर आगे बढ गया। लेकिन शीघ्र ही ड्रिंक्स की दूसरी ट्रे लेकर दूसरा वेटर प्रकट हुआ। परमात्मा के योग्य मनुष्य ने उसे शुष्क दृष्टि से देखते हुए कहा—'' क्या तुम नहीं जानते कि मैं शराब बिल्कुल भी पीता ही नहीं।'' और उसने अपने कथन में बाद में सोचा गया विचार जोड़ते हुए कहा— '' मैं शराब पीने की अपेक्षा किसी स्त्री से अवैध सम्बंध जोड़ना बेहतर समझता हूं।''

मुल्ला नसरुद्दीन अपने पडोसी के साथ आराम से बैठा हुआ स्कॉच व्हिस्की के घूंट—घूंट का आनंद ले रहा था। अचानक प्रसन्नता से चीखते हुए अपना गिलास नीचे रखकर वह बोला—'' सुंदर है स्वर्ग। मुझे कभी यह खयाल भी नहीं आया कि वहां का चुनाव इतना सुंदर था।''

लोगों के मन में सेक्स का ही विचार घूमता रहता है। और यहां सेक्स के साथ आवेशित हो जाने के दो तरीके हैं : पहला रास्ता है सामान्य मनुष्यों का—प्ले बॉय की तरह ऐश करने का और दूसरा रास्ता है—तथाकथित धार्मिक लोगों का। लेकिन दोनों के मनों पर वासना का ही अधिकार है—एक उसके पक्ष में और दूसरा उसके विपक्ष में। उनके खयालों में सेक्स ही जड़ जमाये बैठा है, वे कभी भी उसके पार नहीं जा पाते।

बाउल इनमें से किसी भी श्रेणी में नहीं आते। वे सांसारिक मनुष्यों जैसे नहीं हैं, क्योंकि वे सेक्स के पार जाते हैं। वे साधु संन्यासियों जैसे भी नहीं हैं, क्योंकि वे सेक्स के विरुद्ध नहीं हैं। वे लोग तथाकथित धार्मिक साधुओं और फकीरों जैसे भी नहीं हैं, क्योंकि वे कहते हैं—'' सेक्स तुम्हारी ऊर्जा है, जिसका प्रयोग करना है। निश्चित रूप से उसे शुद्ध करना है, लेकिन उसे निंदित नहीं करना है।'' तुम एक खान से निकले पत्थर को हीरा कैसे बनाओगे, यदि तुम उसके बारे में निंदा के भाव से भरे हुए हो, और सोच रहे हो कि तुम उसे फेंक ही दो। और यदि तुम उससे दूर भागना शुरू कर दोगे तो तुम उसे कैसे तराश सकते हो, तुम उस पर कैसे पालिश कर सकते हो, तुम उसे कैसे मूल्यवान बना सकते हो? संसार में दो तरह की जड़ताएं हैं : एक ओर वे लोग हैं—जो सोचते हैं कि सेक्स ही जीवन है और दूसरे वे लोग, जिनकी सोच है कि सेक्स से लड़ना ही जीवन है और दोनों ही लोग गलत हैं। सेक्स का सृजनात्मक प्रयोग करना ही बाउलों का लक्ष्य है।

अपने शाश्वत आशावाद के कारण अपने मित्रों को निरंतर उत्तेजित करता रहता था। कितनी भी खराब स्थिति क्यों न हो, वह हमेशा कहता था—'' इससे भी खराब स्थिति हो सकती थी।'' उसकी इस चिढाने वाली आदत को ठीक करने के लिए उसके मित्रों ने एक ऐसी स्थिति को निर्मित करने का निर्णय किया जो पूरी तरह से इतनी मृत और घोर अंधकारमय हो कि नसरुद्दीन उसमें आशा की एक किरण भी न पा सके।

एक दिन कब्र के मैखाने में पहुंचकर उनमें से एक ने कहा—'' मुल्ला! क्या तुमने सुना कि जार्ज के साथ क्या घटना घटी? कल रात जब वह घर गया तो उसने बिस्तरे पर अपनी पत्नी को दूसरे मर्द के साथ पाया और दोनों को गोली से मार दिया, और तब बंदूक की नली अपनी ओर घुमाकर खुद भी गोली खाकर मर गया।''' भयानक हादसा हो गया।'' मुल्ला ने कहा—'' लेकिन यह इससे भी कहीं अधिक भयानक हो सकता था।''

स्तब्ध होकर उसके मित्र ने कहा—'' इससे बुरा तो नर्क में भी नहीं हो सकता था। इससे अधिक बुरा और क्या होना सम्भव था।''

नसरुद्दीन ने कहा—'' यदि यह हादसा एक दिन और पहले हुआ होता, तब आज मैं मुर्दा ही होता।''

लोग एक ही लीक पर चले जा रहे हैं, फिर फिर वही दोहराये चले जा रहे हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी आंखें पूरी तरह बंद हैं। ऐसा लगता है कि कुछ और होना भी सम्भव है, उसकी उनके पास कोई योजना या विचार ही नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने उन्हें कभी भी उस पार की कोई झलक भी नहीं दी है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे उन्होंने कभी भी ऊंचाइयों की ओर देखा ही नहीं। उन्होंने। कभी आकाश की ओर भी

नहीं देखा, वे लोग कीचड़ में ही रेंगते जा रहे हैं। सारभूत रूप से यदि तुम उसमें खड़े हो सकी उसके अंदर अपनी जड़ें जमा सको और आंखें ऊंचाइयों की ओर उन्मुख हो सकें। तब कीचड़ के गुणों का भी रूपांतरण हो जायेगी।

वासना की सरिता में
कभी डुबकी लगाना ही मत
तुम किनारे तक न पहुंच सकोगे।
यह नदी बिना तटों वाली है
जहां तूफान उमड़ रहे हैं।

और तुम सभी ने यह जरूर महसूस किया होगा कि जिसे तुम प्रेम कहते हो वह तुम्हारे लिए पीड़ाओं के सिवा और कुछ भी नहीं लाता। तुम जिसे भी प्रेम कहकर पुकारते हो, वह तुम्हें नर्क के सिवा और कुछ भी नहीं देता। लेकिन फिर भी तुम किसी तरह उसमें बने रहने की व्यवस्था कर लेते हो, पर तुम उसके पार देखने की व्यवस्था नहीं कर पाते।

एक बार ऐसा हुआ:

एक बहुत ही बुद्धिमान वृद्ध व्यक्ति के पास उसके पुत्र ने जाकर कहा— " पिताजी! मैं विवाह करना चाहता हूं।"

वृद्ध ने कहा—" नहीं मेरे बच्चे। तुम अभी काफी बुद्धिमान नहीं हो।"

लड़के ने पूछा—" मैं काफी बुद्धिमान कब बनूंगा?"

वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया—" जब तुम इस विचार से पीछा छुड़ा लोगे कि तुम विवाह करना चाहते हो, तभी तुम यथेष्ट बुद्धिमान बनोगे, और तब तुम विवाह कर सकते हो।"

यह परस्पर विरोधी प्रतीत होता है, लेकिन यही सत्य है : जब तुम्हारा ध्यान और समय अब सेक्स के साथ नहीं रहता, जब तुम्हारी चाह आवेश और मानसिक रुग्णता नहीं रह जाती, तुम उसमें प्रवेश करने के लिए पर्याप्त प्रज्ञावान बन जाते हो— क्योंकि तब तुम उसकी सभी सम्भावनाओं का प्रयोग करते हुए उसके द्वारा उसे प्राप्त करने योग्य बनते हो। तब वह केवल एक खेल नहीं रह जाता, तब वह केवल समय गुजारने का साधन नहीं होता और तब वह केवल अपने को भुलाने का उपाय नहीं रह जाता। तब वह तुम्हारे लिए एक सृजनात्मक कृत्य बन जाता है। तब तुम उसकी अत्यधिक ऊर्जा से कुछ नई चीज का सृजन करते हो। वह परमात्मा का उपहार होता है। यदि तुम उसी में सीमित होकर रह जाते हो तो बाउल उसी को वासना कहते हैं। यदि तुम उसके पार जा सकते हो तो वह अपना रूप बदलना शुरू कर देता है, उसके गुण बदलना शुरू हो जाते हैं।

बाउल गीत है :

अरे हलवाहे! क्या तुझे इतनी भी समझ नहीं है
कि तू अपने ही खेत की जरा भी देखभाल नहीं करता?
छ: पक्षियों का झुण्ड तेरी ही देह के खेत में उगी
धान की सुनहरी फसल का चावल चुग रहे हैं
इस मानुष देह की अमूल्य भूमि
पर परमात्मा की अनुकम्पा से जो फसल उगी है
उसे कामना, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या और अहंकार
की छ: गौरेया हो जा रही हैं।
चेतना की मेड

जहां से टूट कर नीचे धसक गई है
उन खुले स्थानों से
तेरी फसल की दावत उड़ाने
पशुओं का लंड चढता चला आ रहा है।
ओ मेरे बेशर्म हृदय!
क्या तुझे लजा नहीं आती?
अब मैं तुझसे कहूं तो क्या कहूं?
तूने स्वर्ण का मूल्य चुकाकर
कांच के टुकड़े खरीद लिए हैं।
दो—दो आंखों के होने के बावजूद भी
तूमूल्यवान हीरों से चूककर
नकली कांच के पत्थर उठा लाया है।
तू आंखें बंद कर भटक गया
और देख न सका
कि तेरा ही घर
चुने हुए हीरों और मणिकों से भरा पड़ा है।
अपनी कमर के बंधे फेंटे में हंसिया खोंसे
तू एक खेत से दूसरे खेत में
आखिर क्या खोज रहा है?
जिसे खोज रहा है—उसका क्या है उपयोग?
ओ मेरे हृदय!
क्या तू एक बार
उस परम सुंदर घर की खोज नहीं करेगा.....?

कामुकता की यांत्रिक राहों में तुम जो कुछ भी खोजे चले जा रहे हो, वह सौंदर्य की खोज नहीं है। वह प्रेम की भी खोज नहीं है और न वह परमात्मा की ही खोज है। अधिक से अधिक वह एक प्राकृतिक और जैविक विधि भर है, जिससे तुम अपने आप को उसमें डुबाकर भुला सको। वह तुम्हारे शरीर में एक प्राकृतिक व्यवस्था है, तुम अपने आप को उसमें डुबा सकते हो। वह तुम्हारे लिए एक शराब एक ड्रग बन सकता है। वह तुम्हारा तीखा तेज स्वाद भी बन सकता है।

सेक्स एक रसायन है, वह तुम्हारे शरीर में विशिष्ट हारमोन्स छोड़ता है। वह तुम्हें एक विशिष्ट भ्रमपूर्ण अच्छा लगने का भाव देता है। वह तुम्हें कुछ ऐसे क्षण देता है जिनमें तुम संसार का शिखर अनुभव कर सकते हो। लेकिन तब फिर तुम घाटी में वापस लौटते हो और घाटी पहले से भी कहीं अधिक अंधेरी और कुरूप लगती है, जैसे मानो तुम्हें चालाकी से ठग लिया गया है। सेक्स तुम्हें एक ऐसा भ्रम देता है जैसे मानो कोई चीज घट रही हो। यदि तुम सेक्स में ही सीमित होकर रह जाते हो, तब तुम अपनी ऊर्जा का मात्र अपव्यय करते हो। धीमे— धीमे ऊर्जा तुममें से निकलती चली जायेगी और तुम केवल एक मृत खोल भर रह जाओगे।

बाउल कहते हैं:

इस व्यर्थ संसार तट पर खड़ी

तेरी कुटिया का कैसा है रंग रूप?
तेरी कुटिया का ढांचा हड्डियों से बना है
और तेरी खाल से मढ़ी छत पर बालों की घास फूस है
लेकिन उन पर बैठे मोर के जोड़े को
इस बात की खबर ही नहीं
कि एक दिन उनका भी अंत आने वाला है।
जैसे बचपन खेल—खेल में ही गुजर गया
यौवन काम, क्रोध, लोभ, मोह और दम्भ में बीत गया
और अब बुढ़ापा भी बीता जा रहा है
अपने स्वामी को बुलाते और पुकारते हुए
अब तुम्हारे दांत भी गिरते जा रहे हैं
और बाल अब भूरे और सफेद होते जा रहे हैं।
अब पौरुष और साहस की आयु बीत चुकी
ज्वार के बाद अब भाटे का समय है
तेरे घर का रंग रोगन और प्लास्टर
अब धीमे— धीमे चटकता जा रहा है।

ऊर्जा धीमे— धीमे रिसती जा रही है। संसार में बहुत थोड़े से लोग ऐसे हैं जो इस महान अवसर का उपयोग अपने विकास के लिए कर पाते हैं। अपने उठाये गये कदमों का निरीक्षण करो। तुम्हें विकसित होने के लिए एक विशिष्ट अवसर दिया गया है। यदि तुम विकसित नहीं होते हो, तो तुम जीवन को व्यर्थ बरबाद कर एक थकाने वाला नीरस जीवन जीते हो। तुम अपने को जीवंत नहीं कह सकते, यदि तुम सजग नहीं हो। यदि तुम्हारी बहती तरल चेतना एकीकृत होकर ठोस स्फटिक जैसी नहीं बनती तो तुम गहरी नींद में ही सोये हुए हो, एक मूर्च्छा में हो, तुम जैसे सोये हुए ही चलते फिरते और काम करते हो। और सेक्स सबसे बड़ी नींद लाने वाली औषधि है। बहुत से लोग ठीक इसका नींद की गोली की तरह ही उपयोग करते हैं : वे प्रेम करते हैं और तब वे सो जाते हैं। तब वे अधिक अच्छी तरह से सो पाते हैं। ऊर्जा निष्कासित होने के बाद वे खाली होकर गहरी बेहोशी में डूब जाते हैं। वह नींद असली नींद नहीं है—वह केवल थकावट की मूर्च्छा है, वह ठीक एक रिक्तता है। यह ऊर्जा से भरी नींद नहीं है। यह नींद जीवन जैसी न होकर मृत्यु के समान है।

बलखाती नदी के घुमाव और मोड़
तुम्हारी पकड़ से फिसल—फिसल जाते हैं।
सावधान हो जाओ मेरे बंधु!
उफनती तेज धारा में कदम मत रखो।
काले बादलों से घिरी पहाड़ियों को चीरती
नदी की जलधार प्रचण्ड गति से बढ़ती ही आ रही है।
तब नदी सूखी थी
जब बाढ़ का पानी प्रचण्ड जलधारा बनकर नीचे आ रहा है
अब तुम इस नदी को कैसे पार कर सकते हो?

जब भी तुम सेक्स के साथ पहले ही से व्यस्त नहीं हो, और शांत भी हो, फिर भी इस नदी को पार करना कठिन है। जब नदी में बाढ़ भी नहीं आई हुई है, और जब नदी गर्मी में बहुत उथली है, उसकी धारा बहुत छोटी और पतली है, तब भी उससे गुजरते हुए उसके पार जाना कठिन है। और जब वर्षा ऋतु आ जाती है और नदी में बाढ़ आ जाती है और जब तुम वासना से पूरी तरह भरे होते हो, तब तो इस नदी को पार कर पाना असम्भव है।

तब नदी शुष्क थी
जब बाढ़ का पानी, प्रचण्ड जलधारा बनकर नीचे आया
अब तुम इस नदी को कैसे पार कर सकते हो?
ओ नाविक! सावधान होकर अपनी रक्षा स्वयं करो
पतवार को मजबूती से थामे रहो
और यदि नाव उलटने लगे
तो सद्गुरु का स्मरण करो।

बाउल कहते हैं कि इस मूर्च्छा से बाहर आने का केवल एक ही मार्ग है और वह है—परमात्मा को याद करना : नाम स्मरण। उसके नाम को सदा याद रखना। प्रेम के पथ पर यह हमेशा ही एक बुनियादी विधि रही है—' उसे ' स्मरण करना। और जब एक भक्त गहरी श्रद्धा से परमात्मा के नाम का स्मरण करता है, उसका पूरा अस्तित्व पुलकित और रोमांचित हो उठता है, और उसकी ऊर्जा तेजी से ऊर्ध्वगामी होने लगती है। सामान्य रूप से ऊर्जा नीचे की ओर प्रवाहित होती है, वही सेक्स ऊर्जा के निष्कासन का मार्ग है। यदि तुम वास्तव में अश्रुपूरित नेत्रों से परमात्मा का नाम लेते हो चाहे वह कोई भी नाम हो—राम अल्लाह अथवा कोई भी नाम हो क्योंकि सभी नाम उसके ही नाम है—तो उसी पुकार और उसी स्मरण की सातवें चक्र सहस्रार में सिर के आसपास कहीं चोट होती है। यदि उसका स्मरण मात्र औपचारिक संस्कार नहीं है, यदि गहरे प्रेम, श्रद्धा और भक्ति के साथ तुमने उसका नाम पुकारा है तो अकस्मात् तुम्हारे शरीर की ऊर्जा में एक परिवर्तन होता है। वह ऊर्जा जो सेक्स की ओर गतिशील थी, उसका ऊपर उठना प्रारम्भ हो जाता है।

बाउल कहते हैं:

परमात्मा ने खेल के सभी कार्यकलापों को—
उल्टा कर दिया है।
अब पृथ्वी विरोधाभासी असंगत भाषा में बतियाने लगी है।
अब फूल, फलों के शीर्ष पर उग रहे हैं
और सौम्य अगर की बेल गर्जती हुई वृक्ष का गला पकड़ रही है
चंद्रमा दिन में उगने लगा है
और रात में उदय होकर चमकता है।
और रक्त सफेद बन गया है
और इस रक्त की झील में हंसों का जोड़ा तैरता है।
वासना और प्रेम के अरण्य में
निरंतर गोते लगाता
वह संभोग में रत रहता है।

सभी महान रहस्यदर्शियों ने इस स्थिति का वर्णन किया है : जब काम की यह ऊर्जा वेग से ऊपर की ओर उठना शुरू होती है, जब तुम्हारी इस ऊर्जा पर गुरुत्वाकर्षण शक्ति का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, जब तुम्हारी

ऊर्जा एक दूसरे नियम के अधीन कार्य करती है, यह नियम है— अनुग्रह का, जब तुम ऊपर की ओर खींच लिए जाते हो, जब तुम ऊपर की ओर जाने लगते हो, जब तुम ऊपर की ओर तेजी से आगे बढते हो, जैसे मानो आकाश ही तुम्हें ऊपर खींच रहा है, तब व्यक्ति पूरी तरह से भिन्न एक दूसरे संसार को जानता है। प्रत्येक चीज ऊपर से नीचे आती है— अथवा वह वास्तव में ठीक ऊपर की ओर ही हो सकती है, लेकिन हर चीज बदलती है। कबीर ने कहा है कि उन्हें जब ऐसा घटा तो उन्होंने देखा कि सागर जल रहा है और वह अग्नि बहुत शीतल है। उन्होंने देखा मछलियां सूखी जमीन पर दौड रही हैं और उन्होंने ऐसे वृक्ष देखे, जिनकी जड़ें आकाश में थीं और जिनकी शाखाएं पृथ्वी की ओर आ रही थीं। ये सभी केवल प्रतीक के रूप में की गई अभिव्यक्तियां हैं।

जब काम ऊर्जा तेजी से नीचे की ओर प्रवहित होती है तो उसके प्रभाव के सम्बंध में हम प्रत्येक चीज भली भांति जानते हैं। जब कामऊर्जा ऊर्ध्वगामी होकर ऊपर की ओर उठती है तो पूरी तरह से एक नये संसार का भरोसा खुलता है। तब तुम इस संसार को नहीं देखते, क्योंकि तुम्हारे नेत्र धुर विरोधी एक नये आयाम में होते हैं।

लेकिन सामान्यतया हमारे पूरे जीवन की धारणा और विचार सेक्स केंद्रित हैं। हम जो कुछ भी करते हैं : हम धन कमाते हैं, तो हम धन भी सेक्स के लिए ही अर्जित करते हैं, हम प्रसिद्धि पाने का प्रयास करते हैं, लेकिन हम प्रसिद्धि भी सेक्स के लिए ही अर्जित करते हैं। कभी—कभी बहुत निर्दोष क्रियाकलाप भी जिन्हें तुम सेक्स के साथ नहीं जोड़ सकते, लेकिन यदि वह व्यक्ति अभी भी असाधारण वासना से उद्दीप्त हो, वे भी सेक्स से ही सम्बंधित होते हैं। यह समझना थोड़ा सा कठिन है कि एक व्यक्ति जो प्रसिद्धि के पीछे भाग रहा है, वह सेक्स के पीछे कैसे दौड़ रहा

मनोवैज्ञानिकों से पूछो। वे कहते हैं कि स्त्रियां किसी अन्य चीज की अपेक्षा प्रसिद्धि से अधिक आकर्षित होती हैं। वे सुंदर चेहरे की ओर उतनी अधिक आकर्षित नहीं होतीं, जितनी, जितनी वे उपलब्धि से आकर्षित होती हैं। एक प्राप्तकर्ता, एक व्यक्ति जिसके पास अधिक धन हो, शक्ति हो, प्रतिष्ठा हो, किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा स्त्री को अधिक आकर्षित करता है, क्योंकि एक स्त्री निरंतर किसी ऐसे ही व्यक्ति की खोज में रहती है जिसके आगे वह झुक सके। तुम सुंदर हो सकते हो, लेकिन यदि तुम्हारे पास कोई शक्ति नहीं है, तो तुम स्त्री को सुरक्षा की कोई गारंटी नहीं दे सकते। यदि तुम शक्ति सम्पन्न हो, भले ही तुम सुंदर न हो बुद्धिमान भी न हो, लेकिन इससे कोई भी फर्क नहीं पड़ता। लेकिन यदि तुम शक्तिशाली हो, विश्वसनीय हो, तो स्त्री तुम्हारे कंधों पर झुक सकती है। तुममें वहां उसके लिए एक निश्चित गारंटी है।

पुरुष स्त्री की ओर आकर्षित होते हैं उसके शारीरिक सौंदर्य और शरीर के अंगों के संतुलन से, जबकि स्त्री अधिक आकर्षित होती है—प्रसिद्धि, प्रतिष्ठा, शक्ति और पुरुष की उपलब्धियों से। इसलिए यदि पुरुष शक्ति और सत्ता के पीछे पागल हैं, तो गणित बहुत सरल है। यदि मृत्यु भी सामने खड़ी हो अथवा खतरा सामने खड़ा हो, फिर भी लोग सेक्स में ही लगे रहते हैं।

जीवन ने मुझे एक बहुत सुंदर जोक भेजा है।

ईसाडोर गिन्सबर्ग को उसके डॉक्टर ने कुछ अवकाश लेने का परामर्श दिया, क्योंकि अपने व्यवसाय को खड़ा करने में उसने वर्षों तक कठिन परिश्रम किया था। अपने अवकाश के दौरान उसकी भेंट एक सुंदर युवती से हुई जिसके साथ उसने काफी समय आमोद—प्रमोद में व्यतीत किया।"

अपने कार्यालय लौटने पर उसने अनुभव किया कि जैसे वह एक नये व्यक्ति लगने लगा है : क्योंकि उसके जीवन में प्रेम प्रविष्ट हो चुका था।

कुछ सप्ताह गुजरने के बाद एक जाने—माने भद्र पुरुष, मि. ईसाडोर गिन्सबर्ग से मिलने आए और उनसे अकेले में बात करने की इच्छा व्यक्त की। मुस्कराते हुए गर्मजोशी से उसने वह कार्ड पढ़ा, जो उसे दिया गया था। वह कार्ड एक प्रसिद्ध कानूनी विशेषज्ञता वाली फर्म के एडवोकेट का था।

उसने कहा—''मैं मिस मैमी लोटरगी का प्रतिनिधि हूं। आपको उनका स्मरण होगा, जिनसे आप होटल कार्लटन में मिले थे।''

"हां, हां।'' ईसाडोर ने उत्तेजित और लालायित भाव से कहा।

"फिर ठीक है मित्र गिन्सबर्ग, आपका इनके बारे में क्या ख्याल है?" यह कहते हुए उसने सामने रखी डेस्क पर ईसाडोर और मैमी के कई फोटोग्राफ रख दिए जिनका विवाद निश्चित रूप से बातचीत द्वारा ही सुलझ सकता था।

फोटो देखकर ईसाडोर पर पूरी तरह से नशा जैसा छा गया। आश्चर्य से आंखें फैलाकर वह उन फोटो को उलट—पुलट कर मुग्ध भाव से देखता रहा। कई मिनटों तक खामोशी छाई रही, जैसे हवा का बहना रुक गया हो। अंत में वह एडवोकेट की ओर मुड़कर दृढ़ आदेश देने वाले स्वर से बोला—ठीक है। मैं इस फोटो की दो प्रतियां इस फोटो की तीन इसकी और चार प्रतियां तथा अन्य दूसरे फोटोग्राफ लेना चाहूंगा।''

वासना की पकड़ ऐसी होती है कि तुम आसन्न खतरे को भी नहीं देख सकते। वासना की पकड़ ऐसी होती है, कि तुम सामने खड़ी मृत्यु को भी नहीं देख सकते। वास्तव में बहुत अजीब घटना घटती है। एक व्यक्ति मृत्यु के जितने अधिक निकट आता है वह उतना ही अधिक वासनामय हो जाता है। क्योंकि सेक्स जीवन का अनुभव देता है इसीलिए कोई भी व्यक्ति कामुकता से अधिक बंध जाता है। वृद्ध लोग सेक्स में गतिशील होने में भले ही समर्थ न हों, लेकिन वे तब भी अपनी कल्पनाओं में सेक्स का ही चिंतन शुरू कर गतिशील हो जाते हैं। ऐसा लगभग सदैव होता ही है।

मैंने बहुत से लोगों को मरते हुए देखा है। ऐसा बहुत कम होता है कि यह व्यक्ति अपने मन में परमात्मा का चिंतन करते हुए मरे। लगभग हमेशा ही दस में से नौ लोग जब मरते हैं तब उनके मनों में सेक्स ही होता है और यही दूसरे जन्म का प्रारम्भ बन जाता है। मन पर छाया सेक्स ही दूसरे जन्म में दूसरे सेक्स जीवन की शुरुआत बन जाता है।

लेकिन ऐसा होना ही है, यदि तुम सेक्स के पार जाने के लिए उसकी पकड़ के पार होने के लिए कठिन श्रम नहीं कर रहे हो। यदि तुम उसके पंजों से अपने को मुक्त करने के लिए कठिन संघर्ष नहीं कर रहे हो, तब ऐसा होना ही है—क्योंकि मृत्यु के क्षण तुम सेक्स के सम्बंध में ही अधिक सोचना शुरू कर दोगे, क्योंकि सेक्स ठीक मृत्यु के विपरीत प्रतीत होता है। सेक्स से ही जन्म होता है, इसीलिए मन सेक्स की ही कल्पना करता है। और जब अंतिम क्षण आ ही गया है, जब शरीर विसर्जित होने जा रहा है, यह ऊर्जा का अंतिम शक्ति परीक्षण है, यह ध्यान ऊर्जा एक प्रवाह की भांति तुम्हारे सिर की ओर जाती तुम्हें अपने नियंत्रण में लेती है। यदि तुम मन में सेक्स के चिंतन के साथ मरे, तो तुम जीवन चक्र में घूमते हुए फिर आओगे—इसी आने—जाने, जाने— आने के दोहराने वाले चक्र को हिंदू आवागमन कहते हैं।

यदि तुम मनुष्य के अंदर देखना चाहते हो

तो तुम्हें रूप और सौंदर्य के घर में जाना चाहिए। बाउल कहते हैं—यदि तुम मनुष्य का अन्तर्तम देखना चाहते हो तो तुम्हें रूप

और सौंदर्य के शाश्वत घर में प्रवेश करना होगा। प्रेम में अधिक सौंदर्य बोध है, वासना में लगभग सौंदर्य—बोध है ही नहीं। वासना कुरूप है, और तुम इसका निरीक्षण कर सकते हो। जब कोई तुम्हारी ओ

वासना की दृष्टि से देखता है, तो क्या तुमने उसका चेहरा देखा है? वह कुरूप हो जाता है। जब वहां आंखों में वासना होती है तो एक सुंदर चेहरा भी कुरूप बन जाता है। और इसके ठीक विपरीत भी घटता है : एक कुरूप चेहरा भी जब आंखों में प्रेम होता है, सुंदर बन जाता है। आंखों में प्रेम के होने से चेहरे को पूरी तरह से भिन्न एक नया रंग मिल जाता है, एक भिन्न प्रभा मण्डल उत्पन्न हो जाता है। वासना का आभा मण्डल काला और कुत्सित होता है। किसी की ओर वासना से देखना ही कुरूपता है। यह सौंदर्य की खोज नहीं है।

भारत के महानतम कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है—"सौंदर्य ही सत्य है " और उन्होंने ठीक ही कहा है। और वह बाउलों से बहुत अधिक प्रभावित थे। वास्तव में वह ही प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने बाउलों को पश्चिम से परिचित कराया, वह ही प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने बाउलों के कुछ गीतों का अंग्रेजी में अनुवाद किया। वह स्वयं ही एक तरह के बाउल थे। वह कहते हैं—सौंदर्य ही सत्य है।" यदि तुम सुंदरता की खोज करोगे तुम सत्य को उपलब्ध हो जाओगे। तम्हारे अंदर जितना अधिक सौंदर्यबोध होगा, तुम सुंदरता के प्रति जितने अधिक संवेदनशील होगे, तुम उतने ही अधिक संतुलित और लयबद्ध होते जाओगे क्योंकि अंततोगत्वा सुंदरता परमात्मा की ही सम्पत्ति है।

एक उदाहरण से तुम्हारे लिए यह और स्पष्ट हो जायेगा।

तुम एक स्त्री देखते हो, यदि तुम उसे वासना की दृष्टि से देखते हो, तो तुम केवल शरीर देखते हो, पदार्थ अथवा उसका कोई भाग देखते हो, यदि तुम उसे प्रेम से देखते हो, तो तुम कुछ चीज उसमें ऐसी देखते हो, जो पदार्थ नहीं है, जो आत्मिक है, और यदि तुम एक स्त्री को प्रार्थना के भाव से देखते हो, तो तुम पूरी तरह से किसी दिव्य रूप को या देवी को ही देख रहे हो। यह तुम्हारी दृष्टि पर निर्भर करता है। वासनापूर्ण दृष्टि से तुम स्त्री के शरीर के कुछ भाग देखते हो, प्रेमपूर्ण दृष्टि से तुम स्त्री की आत्मा को देखते हो, और प्रार्थनापूर्ण नेत्रों से वह दिव्य दिखाई देती है, स्वयं परमात्मा के ही रूप में दिखाई देती है। सौंदर्य के प्रति जहां कहीं भी तुम्हारी संवेदनशीलता परिपूर्ण हो जाती है, दिव्यता प्रकट हो जाती है।

यदि तुम मनुष्य का अंतर्तम देखना चाहते हो
तो तुम्हें रूप और सौंदर्य के शाश्वत घर में प्रवेश करना होगा।
उसके सभी मार्ग ब्रह्माण्ड में एक दूसरे को काटते हुए
जहां जीवन, मृत्यु के साथ रहता है
और होश, पागलपन के साथ, सभी के पार चले जाते हैं।

उसके सभी रास्ते सभी सीमाओं का अतिक्रमण करते हैं, जहां जीवन और मृत्यु साथ—साथ रहते हैं, और होश, पागलपन के साथ। परमात्मा में मृत्यु और जीवन दो चीजें नहीं हैं। परमात्मा के लिए अंधकार और प्रकाश दो चीजें नहीं हैं। परमात्मा के लिए प्रारम्भ और अंत भी दो चीजें नहीं हैं। परमात्मा का अर्थ है समग्रता : परमात्मा सभी की चिंता करता है। इसलिए जब तुम परमात्मा के निकट जाते हो, तुम खोओगे कुछ भी नहीं, और सब कुछ पा लोगे। शुरू में ऐसा लग सकता है कि तुम कुछ चीज खो रहे हो, लेकिन परमात्मा में सभी कुछ समाहित है। परमात्मा में वासना भी रहती है लेकिन पूरी तरह से रूपांतरित स्थिति में। परमात्मा में पदार्थ भी रहता है लेकिन वह शुद्ध और पवित्र बन जाता है। कोई भी एक रहता तो संसार में है, लेकिन उसका होकर नहीं रहता। परमात्मा स्वयं है इस संसार में, पर सांसारिक नहीं है। संसार उसी के अधिकार और नियंत्रण में रहता है लेकिन वह संसार के नियंत्रण में नहीं रहता।

यह विपरीत ध्रुवों की स्थिति भी समझ लेने जैसी है।

बाउल का परमात्मा, ईसाइयों, यहूदियों और मुसलमानों के परमात्मा की तुलना में कहीं अधिक महान है, क्योंकि उनके परमात्मा तो धर्मशास्त्रों में वर्णित परमात्मा जैसे हैं। बाउलों का परमात्मा कहीं अधिक काव्यात्मक है, जबकि अन्य धर्मों के परमात्मा तर्कपूर्ण हैं। बाउलों का परमात्मा तर्कविहीन होने से अधिक सच्चा और प्रामाणिक है। ईसाई कहते हैं—परमात्मा ' गुड ' है, सुंदर और भला है। यह शब्द गॉड (God), गुड (Good) से ही निकला है। ' गुड ' शब्द ही उसका मूल है। परमात्मा ' गुड ', भला या सुंदर है, तब बुरे का क्या होगा, बुरा आखिर जायेगा कहां? तब बुरे का अस्तित्व है कहां? वे स्पष्ट करते हैं कि इस बुरे के कारण ही उन्हें शैतान बनाना पड़ा। लेकिन ऐसी सैद्धान्तिक चालबाजी पर बाउल हंसते हैं। वे कहते हैं— यदि परमात्मा ही शैतान का सृजन करता है और शैतान का सृजनहार बनकर रहता है, और यदि तुम कहते हो कि शैतान, परमात्मा के विरुद्ध चला गया, तब वहां दो ही सम्भावनाएं हैं। पहली यह कि परमात्मा सर्वशक्तिमान नहीं है और शैतान उसके विरुद्ध जा सकता है— और दूसरी सम्भावना यह है कि परमात्मा उसे अपने विरुद्ध स्वयं उकसाता है—तभी वह सर्वशक्तिमान है, लेकिन तब शैतान के होने का वही कारण है।

बाउल कहते हैं कि परमात्मा दोनों एक साथ हैं, और जब वे कहते हैं कि परमात्मा दोनों है, तो उनके कहने का अर्थ है कि परमात्मा समझ के पार है। वह परस्पर विरोधी है। परमात्मा में सभी कुछ समाहित है। प्रत्येक चीज उसमें रूप और आकृति बदल रही है, सभी विपरीतताए उसमें लयबद्ध हो रही हैं। परमात्मा एक आरकेस्ट्रा है, उसमें सभी स्वर—वाद्य लयबद्ध होकर एक साथ बज रहे हैं। वह अनेक में एक है। वह सभी का एकीकृत रूप है।

उसके रास्ते ब्रह्माण्ड में
एक दूसरे को काटते हुए पार चले जाते हैं
जहां जीवन, मृत्यु के साथ
और समझ तथा पागलपन साथ—साथ रहते हैं।

बाउल कहते हैं—'वह' ही श्रेष्ठतम कारण, और श्रेष्ठतम अकारण एक साथ है। वे कहते हैं कि परमात्मा ही सभी का कारण है और परमात्मा पागलपन भी है। एक तर्कनिष्ठ मन के लिए यह समझना कठिन हो जाता है। लेकिन बाउल कहते हैं कि जीवन कोई तर्क नहीं है। वे कहते हैं—'' हम तो जो भी कुछ हैं, उसका केवल वर्णन कर रहे हैं। यही वह तरीका है, जिससे हमने उस परमात्मा को जाना है।'' वह बहुत तर्कपूर्ण और बहुत अतर्कपूर्ण, दोनों ही एक साथ है। वह अनंत करुणावान और अनंत न्यायकर्ता दोनों एक साथ है। उसके अंदर सभी विपरीत ध्रुव मिलकर एक हो गये हैं। उसे समझने के लिए किसी को उस एक में समग्रता के समाहित होने की बात समझनी होगी। तुम इस दावे और वक्तव्य को अपनी बुद्धि द्वारा नहीं समझ सकते। तब यह निरर्थक प्रतीत होता है। लेकिन जरा जीवन का निरीक्षण करें : वह सभी कुछ जो जीवंत है, किसी न किसी तरह उसका ही होना चाहिए और वह सभी कुछ जो मरता है, किसी न किसी तरह उसमें ही मर रहा है। हां! वह बहुत न्यायसंगत होकर रहता है, लेकिन तब पागल व्यक्तियों में कौन रहता है? पागल व्यक्ति में भी ' वह ' ही रहता है, और सभी सम्भव तरीकों से वही प्रेम करता है।

इसलिए बाउल कहते हैं—'' भयभीत मत हो, तुम केवल अपने आप में होना भर रह जाओ और तुम उसे खोज लोगे। उसे खोजने के लिए तुम्हें कुछ और बनने की कोई आवश्यकता नहीं है, तुम केवल स्वयं में ही बने रहो। यदि तुम पागल हो, तो केवल पागल बनकर ही रहो, तब वही उसे खोजने का तुम्हारा मार्ग होगा। यदि तुम एक गायक हो, तो गीत ही गाये जाओ। वह सब कुछ एक साथ है, और सभी कुछ उसी में समाहित है। तुम्हारा गीत गाना एक प्रार्थना बन जायेगा, एक मार्ग बन जायेगा, यदि तुम गीत नहीं गा सकते तो भी फिक्र

मत करना, फिक्र करने की कोई भी जरूरत नहीं। यदि तुम अनुभव करते हो कि केवल शांत बैठे हुए ही तुम अपने मौन अस्तित्व में पूरी तरह आनंदित हो, तब वही तुम्हारा मार्ग है। सभी मार्ग उसी के हैं। बाउल कहते हैं—'' तुम जहां कहीं भी हो, तुम कहीं से भी यात्रा करो, तुम उसी की ओर यात्रा करते हो। बस कहीं भी चूको मत, यात्रा पथ पर बढ़ते ही जाओ। गतिशील बने ही रहो गतिशीलता रुकने न पाए क्योंकि गति का रुकना ही मृत्यु है। जब कभी तुममें जड़ता आ जाती है, तुम रुक जाते हो, तभी दूरी सामने आती है। बस चलते ही रहो और चलना ही बन जाओ। वे तुम्हें कोई नीति या नैतिकता नहीं देते, वे तुम्हें कोई विशिष्ट आदर्श नहीं देते, वे तुम्हें कोई नियम नहीं देते कि तुम्हें क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए। न वे कर्त्तव्य निभाने की फिक्र करते हैं। वे कहते हैं— अच्छा तो यह है कि वह प्रकरण—'' वे सभी को, जैसे वे हैं, उससे प्रेम करते हैं।'' बस तुम्हें चलते ही चले जाना है, कहीं रुककर जड़ होकर बैठना नहीं है।

अपने नेत्र मूंद कर

उसे पकड़ने का प्रयास करो

वह फिसल—फिसल जाता है।

बहुत सुंदर " अपने नेत्र मूंद लो और उसे पकड़ने का प्रयास करो, वह फिसल—फिसल जाता है।''

यदि तुम कहीं भी जड़ हो जाते हो, तो तुम उससे चूक जाओगे। तुम्हें गतिशील बने रहना है, क्योंकि वह भी परिभ्रमण कर रहा है। वह हमेशा फिसल जाता है। वह सदा नूतन और अज्ञात में परिभ्रमण कर रहा है। यदि तुम किसी ज्ञात के साथ बंधे तो ' उसे ' चूक जाओगे। अपनी आंखें मूंद लो और अपने ही अंदर निरीक्षण करो कि वह कितनी तेजी से घूमता हुआ निरंतर नाच रहा है। वह पुराने स्थान से निरंतर फिसलते हुए सरक रहा है। वह निरंतर नवीन है। वह सर्प की भांति है जो पुरानी केंचुल छोड़ते हुए सरक कर बाहर आ जाता है। परमात्मा निरंतर इतिहास से सरकता हुआ बाहर आ रहा है, क्योंकि वह शाश्वत है, परमात्मा निरंतर सरकते हुए बाहर आ रहा है, और यह घटना पहले ही घट चुकी है, क्योंकि वह कभी अपने को दोहराता नहीं। और यदि तुम इतिहास के पन्नों से ही चिपके रहे तो तुम उससे चूक जाओगे, क्योंकि तब तुम भूतकाल में ही देखते रहोगे, और वह हमेशा भविष्य में परिभ्रमण कर रहा है। परमात्मा भविष्य है और मन है अतीत, तभी अंतर उत्पन्न होता है।

एक असली धार्मिक व्यक्ति वह होता है जिसका कोई अतीत नहीं होता, जिसकी कोई आत्मकथा नहीं होती, जो निरंतर नया होता है, उसका प्रत्येक क्षण परमात्मा के साथ फिसलते हुए चलता है। वह फिक्र करता ही नहीं, जो घटना घट चुकी वह घट चुकी, मामला खत्म हुआ। अब वहां पूर्ण विराम लगा दो, पीछे मुड़कर देखो ही मत। बढ़ते चलो..... .वह हमेशा तुम्हें तुमसे आगे खड़ा होकर पुकार रहा है। वह हमेशा तुम्हें अपने अस्तित्व के नवीन क्षेत्रों की ओर, वासना से प्रेम की ओर, और प्रेम से प्रार्थना की ओर गतिशील होने के लिए तुम्हें प्रेरित कर तुम्हें विश्वस्त कर रहा है, और वहां प्रार्थना से भी उच्चतम क्षेत्र है, और वह निरंतर गतिशील है। यदि तुम उसका अनुसरण करोगे, तो इसके लिए केवल एक ही रास्ता है कि तुम्हें भी निरंतर गतिशील रहना होगा।

एक नदी बन जाओ। नदी की भांति प्रवाहित होते रहो। हां! वे ठीक कहते

अपने नेत्र मूंदो

और उसे पकड़ने का प्रयास करो

वह हाथों से फिसला जा रहा है।

अपनी आंखें बंद क्यों करो ?—क्योंकि प्रारम्भ में तो उसे बिना आंखों के देख पाना बहुत कठिन होगा। वहां इतने अधिक रूप और आकृतियां हैं कि तुम उसे खो सकते हो। तुम्हारे चारों ओर सब इतना अधिक है और

यह संसार इतना अधिक जटिल है कि तुम उसमें भटक सकते हो। इसलिए सरलतम से प्रारम्भ करो—तुम स्वयं अपने ही से शुरुआत करो। अपनी आंखें बंद कर लो, तब वहां केवल एक तुम ही रह जाते हो। इस रास्ते से परिचित होने में यह सरल होगा। अपनी आंखें बंद करो और उसे देखो, वह निरंतर फिसलता जा रहा है। वह तुम्हारी ही अपनी चेतना है, वही सारभूत मनुष्य है, बाउल जिसे ' आधार मानुष ' कहते हैं। वह तुम्हारे ही अंदर है, वही तुम्हारा अन्तर्निहित स्वभाव अथवा अस्तित्व है, लेकिन ' वह ' निरंतर आगे की ओर फिसलता जा रहा है। इसी तरह से वह अपने को विकसित और प्रकट करता है।

परमात्मा एक विकास भी है और एक विद्रोह भी, क्योंकि कभी ' वह ' बहुत धीमी गति से और कभी वह तेजी से गतिशील होता है। एक व्यक्ति को सजग होकर उससे कदम से कदम मिलाकर चलना होता है। यदि तुम अपनी सजगता खो देते हो तो वह आगे निकल जाता है। तब कोई कभी नहीं जानता कि वह फिर से लौटकर कब आयेगा। यदि मूर्च्छा में एक भी क्षण नष्ट हो गया तो वह संसार के सबसे दूर वाले सिरे पर होगा। प्रत्येक को निरंतर सजग और सचेत रहना होता है।

लेकिन पहले अपने ही अंदर उसका निरीक्षण करो। ऐसा नहीं कि वह बाहर नहीं है, वह वहां भी है—क्योंकि अंदर और बाहर सभी कुछ उसका ही है। लेकिन पहले तुम्हें स्वयं अपने ही अंदर उसे समझना आसान होगा। एक बार तुमने वहां उसे जान लिया और देख लिया, फिर तुम उसे हर जगह देखने में समर्थ हो सकोगे। वहां एक बार तुमने उसे समझ लिया, फिर अपनी आंखें खोलो, वह तुम्हारे ही चारों ओर खड़ा है : वह वृक्षों में भी है, पक्षियों में भी है, मनुष्यों में भी है, स्त्री में भी है, चट्टानों में भी है, नदियों पहाड़ों और बादलों में भी है। लेकिन पहले परिचय प्राप्त कर लो उसका। और सबसे बड़ा परिचय, जो सबसे सरलतम है—वह है अपने नेत्र मूंदकर, अपने ही अंदर देखना और निरीक्षण करना। तुम पाओगे कि तुम्हारी चेतना की सर्पिणी निरंतर गति करती हुई अपनी पुरानी केंचुल उतार रही है। यह चेतना का अथवा जीवन ऊर्जा का प्रवाह ही है।

बाउलों का परमात्मा को मृत नहीं है। उनके विचार में वह स्थिर और प्रवाहहीन नहीं है। वह कोई ऐसा परमात्मा नहीं है जो सातवें स्वर्ग में कहीं सोने के सिंहासन पर बैठा हुआ हो। बाउलों का परमात्मा बहुत जीवंत परमात्मा है, वह तुम्हारे अंदर ही तुम्हें ठोकर मारता है, तुम्हें अपने प्रवाह में बहाये लिए जाता है। बाउलों का परमात्मा और कुछ भी नहीं—वह जीवन के समानार्थक है। जीवन को बड़े और उभरे अक्षरों में लिखो—जीवन, और बस इतना ही कहा जा सकता है बाउलों के परमात्मा के बारे में।

बाउल कहते हैं:

मेरा हृदय पूरी तरह संतृप्त और भरपूर है
लेकिन मैं जिसे चाहता हूं जिसे मैंने जाना है
लेकिन किसके साथ और कैसे
आनंद के साथ अथवा मृत्यु के साथ

बहुत अजीब हैरान करने वाला वह अनुभव होता है, जब तुम परमात्मा से परिचित होते हो, तुम यह नहीं बता सकते, कि वह क्या है, तुम उसका वर्णन नहीं कर सकते। वह इतना अधिक विरोधाभासी और एक दूसरे के विपरीत है।

मेरा हृदय पूरी तरह संतृप्त और भरपूर है।
लेकिन मैं चाहता हूं जिसे मैंने जाना है
लेकिन किसके साथ और कैसे
आनंद के साथ अथवा मृत्यु के साथ

वह मृत्यु और पुनर्जीवन दोनों एक साथ हैं। वह सभी के पार पुनर्जन्म भी है। एक परम आश्चर्य के भाव ने

मेरा पीछा करते हुए मुझे सभी ओर से—
ऐसा पकड़ लिया है
कि मैं कुछ समझ नहीं पाता
कहां है वह सागर?
और कहां गईं वे सारी सरिताए?
और इसके बावजूद भी
वहां तुम्हारे देखने के लिए
लहरें उफन रही हैं।
लेकिन ऐसा अद्‌भुत आश्चर्य
तुम सभी देख सकोगे—
केवल यदि तुम अपने नेत्रों को
अपने हृदय के साथ एक कर लो।

'तुम अपने नेत्र मूंद लो' इसका यही अर्थ है—जिससे तुम अपनी आंखों और हृदय को एक दूसरे के समानांतर लाकर एक कर सको। केवल यदि तुम्हारी दृष्टि तुम्हारे हृदय के साथ जुड़कर एक हो जाती है, तभी अचानक तुम परमात्मा को सभी विरोधाभासों के साथ देखोगे। सभी कारणों का तुम्हें स्रोत और पागलपन दिखाई देगा, जीवन और मृत्यु के सभी स्रोत एक साथ दिखाई देंगे।

बाउल कहते हैं:

मेरे कम्पित हृदय के केंद्र में
आंसुओ का सिंधु है
मेरी आंखें रोती हुई मौन अश्रुपात कर रही हैं
और मेरे रोम—रोम से प्रेमपूर्ण पुकार
निरंतर ध्वनित हो रही है—
आओ प्रीतम प्यारे! आओ पधारो,
आ भी जाओ, कृपया पधारो।

बाउलों का मार्ग साधुओं संन्यासियों और फकीरों का मार्ग नहीं है। उनका मार्ग है—नर्तक और गायक का, उस मनुष्य का जिसके अंदर सौंदर्य बोध है। उनकी प्रार्थना सुंदरता से भरपूर है और परमात्मा उनके लिए कोई दार्शनिक विचार या धारणा न होकर, उनका प्रीतम प्यारा है।

मुक्त संवेग निषेधात्मक शक्तियों के साथ रहते हैं
और स्त्रैण—ऊर्जा, मनुष्य की आत्मा के साथ
आलिंगनबद्ध होकर
पूर्ण रूप से अदृश्य होते हुए भी
उस वीणा की तरह होती है
जिसके तार लयबद्ध हो गए हों।
हृदय ही वह मंदिर या घर है
जिसमें मिलन का संगीत गूंजता ही रहता है।

जब तुम स्वयं अपनी ही गहराई में पहुंचते हो, जब तुम अपने हृदय के केंद्र का स्पर्श करते हो, तो तुम उस भूमि के क्षेत्र पर आ जाते हो, जहां से फिर जुदाई होती ही नहीं। वहां, तुम न केवल परमात्मा के साथ हो, तुम उसके साथ मिलकर एक ही हो जाते हो—क्योंकि तुम उसके ही एक खण्ड हो। यह ' वह ' ही है जिसने तुम्हारे समान बनकर अपने को अभिव्यक्त किया है। धन्यभागी और भाग्यशाली होने का अनुभव करो, ' उसने ' भी तुम्हें अपने अनेक रूपों में से एक रूप में चुन

लिया है।

अपनी आंखें बंद करो

और उसे पकड़ने का प्रयास करो

वह हाथों से फिसला जा रहा है।

आज इतना ही।

चौथा प्रवचन

मध्य में रूकने का स्मरण रहे

पहला प्रश्न :

प्यारे ओशो! मैने सुना है:..... एक मनोवैज्ञानिक
अपने ही जुड़वां पुत्रों के साथ एक प्रयोग करना चाहत था!
वह उन्हें अपने साथ समूह चिकित्सा के कमरे में ले गया और
प्रत्येक लड़के को स्वयं अलग—अलग कमरे में रखा! आइक
के कमरे में उसने टी: वी: पर पर विज्ञापित, कठिनता से बिकने
वाले खिलौनों का ढेर इक्कठा कर रखा था। क्योंकि परीक्षण से
वह नकारात्मक दृष्टिकोण का, शिकायतें करने वाला
निराशावादी पाया गया था! माइक के कमरे में उसने की खाद
कर बहुत बड़ा डेर इकट्ठा कर दिया माइक आशावादी है।
एक घंटे बाद ताला खोलकर उसने आइक के कमरे में प्रवेश
किया वहां आइक खिलौने के बाद खिलौना उछालते हुए
शिकायत कर रहा था— यह खिलौना किसी भाई काम का
नहीं है, और यह तो कुछ करता ही नहीं।
जैसे ही उसने दूसरे कमरे का दरवाजा खोला वह कुछ क्षणों
तक तो अपने लड़के को खोजने में असमर्थ रहा लेकिन तभी
उसने उसकी आवाज सुनी जो कह रहा था— " यहां एक टट्टू
जरूर होना चाहिए! यह? एक टट्टू या खच्चर जरूर होनी
चाहिए।"
और जब वह दृष्टिगत हुआ तो जहां लीद की खाद पड़ी हुई थी,
वहां वह उसे उत्तेजित होकर फर्श खोदता हुआ दिखाई दिया
क्योंकि वह उसके नीचे टट्टू के होने की आशा का रहा था!
मैने कमरे बदल लिये है, और मैं टट्टू के निकलने की आशा में
अपनी नजर जमाये हुए हूं।

*नि*राशावाद और आशावाद के सम्बंध में जो पहली चीज समझ लेने जैसी है वह यह है कि वे अलग नहीं हैं। वे भिन्न दिखाई देते हैं, लेकिन उनकी आकृति से धोखे में मत पडो। वे एक ही घटना के केवल दो विपरीत ध्रुव हैं। एक निराशावादी, एक आशावादी बन सकता है। एक निराशावादी ठीक एक आशावादी ही है जो अपने सिर के बल ठीक उल्टा खड़ा हुआ है। वे दो भिन्न व्यक्ति हैं, वे दो भिन्न आयाम नहीं है। स्मरण रहे, कमरे बदलने का कोई मूल्य नहीं। दोनों ही कमरों से बाहर निकलकर खुले आकाश के नीचे आओ, जहां न आशावाद और न कहीं निराशावाद का कोई अस्तित्व है। जब दोनों ही चले जाते हैं, तुम तभी विश्राममय हो सकते हो, क्योंकि दोनों ही गलत हैं।

स्थिति का विश्लेषण करो। निराशावादी, चीजों, के अंधेरे पक्ष की ओर ही
देखे चले जाता है और उजले पहलू से इंकार किए चला जाता है; वह केवल आधे
सत्य को ही स्वीकार करता है। आशावादी व्यक्ति, चीजों के अंधेरे पक्ष से इंकार
किए चला जाता है और केवल उजले पक्ष को ही स्वीकार करता है, वह भी आधा
सत्य है। इनमें से कोई भी पूर्ण सत्य को स्वीकार नहीं करता है, क्योंकि पूरा सत्य
गर्मी और जाड़ा, परमात्मा और शैतान अंधकार और प्रकाश अच्छा और बुरा तथा जीवन और मृत्यु दोनों ही एक साथ है। दोनों एक ही व्यायाम कर रहे है वे आधे से इंकार कर रहे है और शेष दूसरे आधे को स्वीकार कर रहे हैं। दूसरा आधा भाग भी उतना ही आधा है जितना पहले वाला आधा भाग; वहां उनमें कोई भी अंतर नहीं है। यदि निराशावादी गलत है तो आशावादी भी गलत है। दोनों ही, सत्य जैसा है, उसे वैसा ही स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं। वे चुनाव करते हैं।

दोनों ही कमरों से बाहर निकल कर अचुनाव के खुले आकाश के नीचे आओ। चुनाव करो ही मत। सत्य जैसा है, उसे वैसा ही रहने दो। अपनी चित्त वृत्ति के अनुसार उसमें रंग मत भरो। उसकी तथ्यात्मकता को देखने का प्रयास करो, अपनी चित्त वृत्ति की प्रकृति को उससे मत जोड़ो। उसे न तो आशा भरी दृष्टि से और न निराशा भरी दृष्टि से देखो। न विधायक बनो और न नकारात्मक—यही है वह उच्चतम चेतना, जो सम्भव है।

लेकिन आशावाद प्रार्थना करता है, क्योंकि संसार अधिक या कम निराशावादी ही है। लोगों के लटके लम्बे चेहरे हमेशा शिकायतें करते हुए झुंझलाते रहते हैं। आशावाद से गुजरते हुए जीना सुंदर है, क्योंकि लोग कांटों की ही हमेशा बात करते रहते हैं, किसी ऐसे व्यक्ति से मिलना सौभाग्य है जो फूलों और सुवास की बात करता है। पर गलत वह भी है।

मैं तुम्हें एक अन्य प्रसंग के बारे में बताना चाहता हूं।

एक बार मैं एक अस्पताल में मुल्ला नसरुद्दीन को देखने गया, जो एक कार दुर्घटना के कारण वहां भर्ती था। मुल्ला बुरी तरह से जख्मी था' उसकी एक टांग टूट गई थी, दोनों हाथों में फ्रैक्चर थे; गले की हड्डी भी टूट गई थी। उसके सिर और चेहरे पर भी जख्म थे, और कई पसलियां भी टूट गई थीं। उसका पूरा शरीर पट्टियों और टेप से पूरी तरह ढक गया था और केवल दो आंखें और मुंह ही खुला हुआ था। मेरे पास कहने के लिए शब्द नहीं थे, लेकिन मैंने महसूस किया कि मुझे कुछ जरूर कहना चाहिए। इसलिए मैंने मुल्ला से पूछा—''नसरुद्दीन! तुम्हें आज कैसा अनुभव हो रहा है? मेरा खयाल है यह टूटी हड्डियां और जख्म तुम्हें बहुत अधिक पीड़ा दे रहे होंगे। क्या तुम्हें बहुत अधिक कष्ट हो रहा है?"

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' नहीं, कोई ज्यादा नहीं दर्द सिर्फ तब होता है, जब मैं हंसता हूं।''

ऐसे व्यक्ति से मिलना अच्छा लगता है। ऐसा बहुत कम होता है लेकिन यह सामान्य प्रकार के मामलों जितना ही गलत है। सौ में निन्यान्वे लोग निराशावादी होते हैं। वे पीडा और दुखों की ओर ही न केवल देखते हैं वे उनकी प्रतीक्षा भी करते हैं। वे ऐसे समझते हैं कि कुछ न कुछ घटना घटने ही जा रही है, जो गलत होगी ही, वे उसके लिए पहले ही से तैयार हैं। यदि वैसा नहीं होता है, तो वे बहुत निराश हो जायेगे, लेकिन वे किसी नकारात्मक चीज की, अंधेरे पक्ष के घटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ऐसे लोग निश्चित रूप से गलत हैं, लेकिन तब ऐसे लोगों के कारण और ऐसे लोगों का ही बहुमत है—दूसरे तरह के लोग, जो बहुत कम और दुर्लभ हैं, वे मूल्यवान बन जाते हैं: ऐसा व्यक्ति वह है, जो काले बादलों को प्रकाशमय विद्युत के लिए देख रहा है, जो अंधेरे में उगती सुबह का इंतजार कर रहा है। जब रात बहुत अंधेरी होती है, वह प्रतीक्षा करता है, क्योंकि जानता है कि अब सुबह बहुत निकट है। वह सदा आशा से भरा हुआ होता है। लेकिन मैं पुन: इस बात पर जोर देता हूं कि

दोनों ही गलत हैं, क्योंकि जीवन काला और सफेद दोनों है। वास्तव में जीवन स्लेटी है। एक अति या छोर पर वह सफेद दिखाई देता है तो दूसरी अति या छोर पर वह काला दिखाई देता है, लेकिन दोनों के ठीक मध्य में वह और कुछ न होकर स्लेटी रंग की शेड होता है।

ऐसा कोई व्यक्ति, जो उन दोनों को समझता है, चुनाव रहित हो जाता है। वह न तो निराशावादी होता है और न आशावादी। तुम उसे किसी भी कमरे में न पाओगे। तुम उसे अप्रसन्न या उदास भी नहीं पाओगे और न तुम उसे प्रसन्नता और अति उत्साह से उछलता हुआ पाओगे। बुद्धों का यही लक्ष्य है: वे न दुखी और पीड़ित हैं और न वे किसी परमानंद में डूबे हैं। वे कोई भी उत्तेजना जानते ही नहीं, वे केवल शांत और मौन हैं। यही है वह जिसे वे आध्यात्मिक आनंद अथवा सच्चिदानंद कहते हैं। सच्चिदानंद प्रसन्नता नहीं है, क्योंकि प्रसन्नता में एक तरह की उत्तेजना होती है एक तरह का ज्वर होता है। पर देर—सबेर तुम उससे थक जाओगे, क्योंकि यह अस्वाभाविक है। देर—सबेर तुम्हें अपने को बदलना ही होगा, तुम्हें अप्रसन्न होना ही होगा। सच्चिदानंद न तो नकारात्मक है और न विधायक यह सभी का अतिक्रमण है, यह द्वंद्व के पार है। एक व्यक्ति शांत, केंद्रित, चिंतामुक्त और अद्विग्न बना रहता है। अच्छा या बुरा जो भी घटता है, वह दोनों को ही स्वीकार करता है, क्योंकि वह जानता है कि जीवन दोनों का जोड है।

यह व्यक्ति सच्चा और प्रामाणिक है। वह पूरी तरह बिना कोई प्रतिक्रिया के बना रहता है। यदि तुम लम्बी अवधि तक निराशावादी रहे हो, तो एक दिन तुम्हें बहुत आसानी से यह महसूस होगा कि तुम अनावश्यक रूप से दु:खी और अप्रसन्न बने रहे हो, इसलिए तुम अपना ' रोल ' बदलते हो। तुम फिसलते हुए आशावादी बन जाते हो। लेकिन अब तुम एक अति से दूसरी अति पर चले गए हो।

मैं तुम्हें एक प्रसंग के बारे में बताना चाहता हूं।

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन एक विशाल डिपार्टमेंटल स्टोर में अपनी पत्नी के लिए नायलोन के रफ कपड़े खरीदने के लिए गया। अपनी लापरवाही से वह एक काउटंर पर लगी पागल भीड़ में फंस गया, जहां मोलभाव करने वाली बिक्री चल रही थी। उसने शीघ्र ही अपने को धक्के खाते एक बुरी तरह से उत्तेजित स्त्री के पैर से अपने पैर के दबने का अनुभव किया। जितने समय तक सम्भव था वह खड़ा रहा, तब अपना सिर झुकाकर वह सिर और कोहनियों से भीड़ को चीरते हुए आगे बढ़ा। उस स्त्री ने कहा—'' तो यह तुम हो। क्या तुम एक भद्र मनुष्य की भांति व्यवहार नहीं कर सकते?"

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' अब और अधिक नहीं। मैं एक घंटे से एक भद्र पुरुष की भांति ही व्यवहार कर रहा था। अब मैं एक स्त्री की भांति व्यवहार कर रहा हूं।''

यहां एक स्थिति ऐसी आती है जब कोई भी अपने एक ही तरह के रोल से बुरी तरह थक जाता है। निराशावादी व्यक्ति भी एक दिन यह महसूस करता है— " क्यों? आखिर क्यों मैं अंधेरे पक्ष की ओर ही देखे चला जाऊं? आखिर क्यों मैं गुलाब की झाड़ी मैं कांटों को ही गिनता रहूं? वह कांटों के बारे में भूलकर गुलाबों को गिनना शुरू कर देता है—लेकिन दोनों ही आधे हैं। तुम एक आधे से दूसरे आधे की ओर गतिशील हो जाते हो, और पूर्णता उतनी ही दूर बनी रहती है जितनी पहले थी।

गुलाब की झाड़ी में कांटे और फूल दोनों ही हैं। वे दोनों वहां एक दूसरे के साथ—साथ ही रहते हैं। वे एक दूसरे के विरुद्ध नहीं हैं, वे एक दूसरे के दुश्मन नहीं हैं। वास्तव में कांटे, फूल की रक्षा करते हैं। वे दोनों गुलाब की झाड़ी के पूर्ण अंगिक अस्तित्व हैं। और ऐसा ही जीन भी है। अच्छे और बुरे दोनों साथ—साथ जुड़े हैं, पापी और संत दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं और जीवन और मृत्यु भी दोनों एक दूसरे से जुड़े हैं। एक ठीक और सही समझ तभी आती है, जब तुम इन विपरीत ध्रुवों को समझ जाते हो। और इसी समझ से, तुम दोनों के पार चले जाते

हो। तब तुम शांत बने रहते हो—क्योंकि वहां न तो कुछ भी प्रसन्न होने के लिए है और न इस बारे में कुछ भी दुखी होने के लिए।

स्मरण रहे, यदि तुम प्रसन्न हो, तो अपने अचेतन की गहराई में कहीं न कहीं तुम अप्रसन्ना की सम्भावना भी लिए चल रहे हो, क्योंकि तुम प्रसन्न केवल तभी हो सकते हो, यदि तुम अप्रसन्न भी हो सकते हो।

दोनों सम्भावनाएं साथ—साथ बनी रहती हैं। वे अगल— थलग नहीं की जा सकतीं, वे एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। इसलिए यदि तुम एक पहलू को फेंक देते हो, तो तुम दूसरे को भी उसी के साथ फेंक देते हो। यदि तुम एक पहलू को रखते हो तो दूसरा भी तुम्हारे ही साथ रहता है। यदि तुम अपने चेतन मन में निराशावादी बन जाते हो, तो अपने अचेतन में तुम आशावादी बने रहोगे। यदि तुम चेतन मन में आशावादी हो, तो तुम अपने अचेतन मन में निराशावादी बने रहोगे।

प्रसन्नता और अप्रसन्नता दोनों ही साथ—साथ रहती हैं। तुम जब चाहो, उनका ' रोल ' या अभिनय बदल सकते हो। वास्तव में लोग यह रोल बदलते ही रहते हैं: सुबह तुम आशावादी होते हो और शाम आते— आते तुम निराशावादी बन जाते हो। इसी कारण भिखारी भीख मांगने सुबह—सुबह आते हैं—क्योंकि सुबह बहुत से लोगों को आशावादी बना देती है। शाम होते होते पूरे जीवन की गंदगी को जानने के बाद लोग निराशावादी बन जाते हैं, वे थक कर क्रोधी और हताश हो जाते हैं। भिखारी शाम को भीख मांगने नहीं आते, क्योंकि कौन उन्हें भीख देने जा रहा है उस समय? सुबह लोग अधिक खुले और उदार होते हैं, सुबह का सूरज फिर से आशा की किरणें लेकर आता है। रात बीत चुकी है " हो सकता है कुछ अच्छा घटने जा रहा हो।'' लोग अधिक विधायक होते हैं। शाम होते होते लोग नकारात्मक बन जाते है।

दिन में तुम अपने ' रोल ' कई बार बदलते हो यदि तुम थोड़े से भी सजग हो, तो तुम समझ जाओगे, एक क्षण पूर्व ही तुम आशावादी थे, और एक क्षण बाद ही तुम निराशावादी बन गये। छोटी—छोटी चीजें वातावरण बदल देती है, सम्बंध और रिश्ते बदल देती हैं, किसी व्यक्ति की छोटी सी मुद्रा या मुखाकृति, तुम्हारा रोल बदल देती है। क्या तुमने इसका कभी निरीक्षण किया है? तुम उदास बैठे हो और तभी कोई व्यक्ति आता है और वह व्यक्ति हंसी मजाक करने वाला है, वह जोक सुनाता है और हंसता—हंसाता है—तुम भूल ही जाते हो कि तुम उदास थे, और हंसना शुरू कर देते हो। तुम हंस रहे थे, तभी कुछ ऐसे मित्र आ गये, जो सभी उदास थे; वे अपने साथ उदासी का मौसम साथ लेकर आते हैं और तुम उसमें अपने स्थान से हट जाते हो।

जैसा कि मैं देखता हूं प्रत्येक मनुष्य दोनों ही सम्भावनाओं के साथ जन्म लेता है। तुम्हें दोनों की ही व्यर्थता समझकर उनके पार जाना है। यह वह मौन ही है; जो द्वैत की पूर्ण अनुपस्थिति है। इसलिए कृपया अतिवादी बनने से दूर रहो। अतिरेक से हमेशा बचना चाहिए क्योंकि कोई भी अति, असत्य का मूल है। वास्तव में संसार में वहां कोई भी झूठ नहीं है, केवल सत्य और अर्द्धसत्य हैं। सभी आधे सच ही झूठ हैं; और सत्य कभी आधा नहीं होता वह पूर्ण ही होता है।

मन की प्रवृत्ति हमेशा अतिरेक की ओर जाने की होती है—तुम ऊंचाई की ओर जा रहे हो, तब तुम्हें नीचाई की ओर घाटी में भी जाना है, पहले ऊपर की ओर जाना है तब फिर नीचे आना है। तुम ' यो—यो ' की भांति आते—जाते हो और कभी भी सजग नहीं बन पाते कि दोनों ही व्यर्थ हैं। पुरानी घड़ी की पेंडुलम की तरह तुम एक अति से दूसरी अति की ओर जाते हो। एक बार पेंडुलम यदि मध्य में रुक जाये, तो घड़ी रुक जाती है। एक बार तुम मध्य में रुक जाओ, समय विलुप्त हो जाता है। तब तुम इस संसार के भाग नहीं रह जाते। घड़ी रुक जाती है. तब तुम शाश्वत अस्तित्व के एक भाग बन जाते हो।

जरा पेंडुलम का बाएं से दाएं गति करने का निरीक्षण करो। एक बहुत अजीब चीज घट रही है वहां। जब पेंडुलम दाईं ओर जाता है तो तुम उसे दाईं ओर जाता हुआ देखते हो। उसे मिस्त्री से पूछो: वह कहेगा कि जब पेंडुलम दाहिनी ओर जा रहा है वह बाईं ओर जाने के लिए संवेग प्राप्त कर रहा है, और जब वह बाईं ओर जा रहा है, तो वह दाईं ओर जाने के लिए संवेग प्राप्त कर रहा है। इसलिए जब तुम दुःखी होते हो तो तुम प्रसन्न होने के लिए संवेग प्राप्त कर रहे होते हो। जब तुम प्रसन्न होते हो तो तुम दुःखी होने के लिए संवेग प्राप्त कर रहे होते हो। जब तुम प्रेमपूर्ण होते हो, तुम घृणा करने के लिए संवेग प्राप्त कर रहे होते हो, और जब तुम घृणा कर रहे होते हो, तो तुम प्रेमपूर्ण होने के लिए संवेग प्राप्त कर रहे होते हो।

एकबार तुम इस सूक्ष्म यांत्रिकता को समझ जाओ कि मन हमेशा अतियों अथवा पराकाष्ठा की ओर ही गतिशील होता है, तुम मन के साथ सहयोग करते हुए ही रुक सकते हो। आशावाद और निराशावाद दोनों मन के ही अंदर हैं और एक समझदार प्रामाणिक मनुष्य उन दोनों के पार है।

एक बार ऐसा हुआ मुल्ला नसरुद्दीन एक स्थानीय डिपार्टमेंटल स्टोर में नौकरी पाने के लिए प्रार्थनापत्र देने को तैयार हुआ। एक मित्र ने उसे बताया—उस स्टोर की नीति किसी अन्य व्यक्ति को नौकरी न देकर एक कैथोलिक ईसाई को ही नौकरी पर रखना है और यदि वह वहां नौकरी चाहता है तो उसे अपने कैथोलिक ईसाई होने का झूठ बोलना पड़ेगा।

नसरुद्दीन ने नौकरी पाने के लिए प्रार्थनापत्र दिया और वहां के कार्यकत्ताओं ने चलन के अनुसार प्राय: पूछे जाने वाले सामान्य प्रश्न पूछे। तब उसने मुल्ला से पूंछा— तुम किस चर्च को मानने वाले हो? ''

नसरुहीन ने उत्तर दिया—'' मैं एक कैथोलिक हूं। वास्तव में मेरे पिता एकपादरी और मां नन थीं।

पूरे रास्ते में, याद रहे—मध्य में रुक जाना है। वहीं संतुलन लायेगा, वही तुम्हें केंद्रित बनायेगा। पहली बार तुम्हें शांत और ध्यानपूर्ण होने का अनुभव होगा और तुम दोनों को स्वीकार करने में समर्थ हो सकोगे। तुम्हारा स्वीकार भाव समग्र होना चाहिए। तुम इसलिए प्रसन्न आनंदित और उत्तेजित नहीं होगे क्योंकि वहां गुलाब हैं। तुम देखोगे कि वहां दोनों ही हैं और दोनों ही अच्छे हैं और दोनों की ही आवश्यकता है। लेकिन तुम अप्रमावित, अस्पर्श और बिना बिंधे रहोगे, बिना कांटों से खरोंच लगे हुए भी और फूलों से भी बिना प्रभावित हुए। यही वह लक्ष्य है।

दूसरा प्रश्न: मुझे करने की इतनी बुरी तरह जरूरत है और चूंकि वह मेरे पास नहीं है? इसीलिए मैं पीड़ित हूं मैं इतना साहस कह? खोजूं जिससे मैं अपने मारने वाले पर भी श्रद्धा कर सकूं?

जो लोग स्वयं पर श्रद्धा करते हैं, वे ही दूसरों पर भी श्रद्धा कर सकते हैं। जो लोग स्वयं पर श्रद्धा नहीं करते, वे किसी पर भी श्रद्धा नहीं कर सकते। आत्मविश्वास से ही श्रद्धा कर जन्म होता है। यदि तुम स्वयं अपने पर ही श्रद्धा नहीं रखते हो— तब तुम मुझ पर भी श्रद्धा नहीं कर सकते—तुम किसी पर भी विश्वास नहीं कर सकते। क्योंकि यदि तुम स्वयं पर ही विश्वास नहीं कर सकते तो तुम अपने विश्वास पर कैसे विश्वास कर सकते हो? वह तुम्हारा विश्वास बनने जा रहा है। यह हो सकता है, तुम्हें मुझ पर विश्वास हो, लेकिन यह तुम्हारा विश्वास है—तुम मुझ पर तो विश्वास करते हो, पर तुम स्वयं पर विश्वास नहीं करते। इसलिए यह प्रश्न मेरे बारे में न होकर, यह एक गहरा प्रश्न तुम्हारे सम्बंध में ही है।

और कौन हैं वे लोग, जो स्वयं अपने आप पर ही विश्वास नहीं कर सकते? कहीं कोई चीज उनके साथ गलत हो गई है।

पहली बात तो यह कि यह वे लोग हैं, जो स्वयं एक बहुत अच्छी छवि नहीं रखते, वे स्वयं के प्रति ही निंदा से भरे हुए हैं। वे हमेशा अपराध बोध से ग्रस्त होने के साथ सदा गलत होने का ही अनुभव करते हैं। वे

हमेशा रक्षात्मक होते हैं और यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि वे गलत नहीं है, लेकिन अपने गहरे में वे यह अनुभव करते हैं कि वे गलत हैं।

यह वे लोग हैं जो किसी तरह प्रेमपूर्ण वातावरण से चूकते रहे हैं।

मनोवैज्ञानिक कहते हैं कि जो व्यक्ति स्वयं अपने आप पर विश्वास नहीं कर सकता, उसकी गहरी जड़ों में मां के साथ कुछ समस्या होनी जरूरी है। कहीं न कहीं मां और बच्चे के सम्बंधों में वैसा नहीं हुआ, जैसा होना चाहिए था। क्योंकि बच्चे के अनुभव में मां ही सबसे पहले आने वाली व्यक्ति होती है, और यदि मां बच्चे पर विश्वास करती है, यदि मां बच्चे को प्रेम करती है तो बच्चा भी मां पर विश्वास करना और उससे प्रेम करना शुरू कर देता है। मां के माध्यम से बच्चा संसार के बारे में सजग होता है। मां ही वह खिड़की है, जहां से वह अस्तित्व में प्रवेश करता है। और धीमे— धीमे यदि बच्चे और मां के मध्य एक सुंदर सम्बंध बनने लगता है, उनके बीच एक गहरी संवेदनशीलता, ऊर्जाओं का गहराई तक हस्तांतरण और खिलावट होती है..... .तब बच्चा दूसरों पर भी विश्वास करना शुरू कर देता है। क्योंकि वह जानता है कि उसका पहला अनुभव सुंदर था और उसके सोचने को ऐसा कोई भी कारण नहीं है कि दूसरा अनुभव भी सुंदर न हो। उसके पास विश्वास करने का प्रत्येक कारण होता है कि यह संसार सुंदर है।

यदि तुम्हारे बचपन में तुम्हारे चारों ओर एक गहरे प्रेम का वातावरण था, तो तुम धार्मिक बनोगे, विश्वास का उदय होगा। तुम विश्वास करोगे, विश्वास करना तुम्हारा स्वाभाविक गुण बन जाएगा। सामान्य रूप से तुम किसी पर भी अविश्वास नहीं करते, यदि कोई व्यक्ति तुममें अविश्वास सृजित करने की सख्त कोशिश न करे—केवल तभी तुम उस पर अविश्वास करोगे। लेकिन अविश्वास करना एक अपवाद होगा। एक व्यक्ति तुम्हें धोखा देता है और विश्वास को तोड़ने के लिए अपनी पूरी कोशिश करता है। हो सकता है उस व्यक्ति पर विश्वास नष्ट हो जाए लेकिन इससे तुम पूरी मनुष्यता पर अविश्वास करना शुरू नहीं कर दोगे। तुम कहोगे—'' यह तो ऐसा एक व्यक्ति है और वहां लाखों मनुष्य हैं एक मनुष्य के कारण सभी पर अविश्वास क्यों किया जाए? लेकिन यदि मूल विश्वास में ही कमी रह गई और तुम्हारे तथा तुम्हारी मां के मध्य ही कुछ चीज गलत हो गई, तब अविश्वास ही तुम्हारा मूल गुण बन जाता है। तब सामान्यतया स्वाभाविक रूप से तुम अविश्वास करने लगते हो। वहां फिर किसी को कुछ भी सिद्ध करने की जरूरत ही नहीं होती। तुम मनुष्य पर अविश्वास करने लगते हो, और तब यदि कोई व्यक्ति यह चाहता है कि तुम उस पर विश्वास करो, तो उसे बहुत कठिन कार्य करना पडेगा। और तब तुम उस पर सशर्त विश्वास करोगे। और तब भी वह विश्वास, समझ से उद्‌भूत न होगा। वह बहुत संकीर्ण होगा; उसका लक्ष्य केवल एक व्यक्ति ही होगा।''

यही समस्या है। प्राचीन युग में लोग बहुत विश्वासी होते थे। श्रद्धा और विश्वास, मनुष्य का साधारण गुण होता था। तब उसे विकसित करने की कोई आवश्यकता नहीं होती थी। वास्तव में यदि कोई व्यक्ति संदेह पूर्ण और एक महान नास्तिक बनना चाहता था तो एक बड़े प्रशिक्षण की आवश्यकता होती थी, उसे अनुशासन बद्ध और अपने सिद्धांत के प्रति पक्का बनना होता था। सामान्य रूप से लोग श्रद्धावान थे, क्योंकि उनके प्रेम के सम्बंध अत्यधिक गहरे थे। आधुनिक संसार में प्रेम विलुप्त हो गया है बच्चे अब ऐसे परिवारों में जन्म लेते हैं, जहां उनके मां बाप के बीच प्रेम नहीं है। जब बच्चों का जन्म होता है मां उनकी अधिक देखभाल नहीं करती—वह यह फिक्र नहीं करती कि उनके साथ क्या हो रहा है। वास्तव में वह नाराज है क्योंकि बच्चे शोर शराबा कर उसके जीवन में बाधा उत्पन्न कर रहे हैं। स्त्रियां बच्चों से दूर रहना चाहती हैं और यदि उनका जन्म हो ही जाता है, तो उसे वे जीवन की एक दुघर्टना या दुर्योग मानती हैं और वहां उनका बच्चों के प्रति एक गहरा नकारात्मक

दृष्टिकोण है। बच्चा मां से यही नकारात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करता है; शुरू से ही उसके हृदय को विषाक्त कर दिया जाता है। वह मां पर विश्वास कर ही नहीं सकता।

केवल तीन या चार दिन पूर्व ही यहां आश्रम में प्राइमल थेरेपी (अपने अतीत को पुन: जीते हुए मूल स्रोत पर पहुंचने की विधि) लेने वाले एक संन्यासी ने मुझे बताया कि इस प्रयोग में वह बचपन की एक स्मृति से होकर गुजरा। उसे याद आया और वह अपने अंदर यह देख सका कि उसकी मां ने उसका दम घोंटकर उसे मारने का प्रयास किया था। अपने बचपन को पुन: जीते हुए पूरी स्मृति में वह उस घटना को देख सका। अब उसका पूरा अस्तित्व कांपने और डोलने लगा और वह एक सामान्य मनुष्य नहीं है, वह स्वयं एक मनोविश्लेषक है। अब वह बहुत सी चीजें समझता है, जो उसने पहले कभी नहीं समझी थी: वह इतना मृतवत क्यों बना रहता है, ठीक एक पत्थर की शिला की भांति, अप्रवाहित, वह क्योंकि किसी पर विश्वास नहीं कर पाता, वह क्यों सरलता से प्रेम में गतिशील नहीं हो पाता, क्यों उसे इतना अधिक कठिन प्रयास करना पड़ता है और फिर भी कहीं न कहीं कोई चीज गलत हो जाती है। वह जलधारा की भांति प्रवाहित नहीं हो पाता है— क्योंकि मां ने उसका दम घोंटने का प्रयास किया था।

मूल श्रद्धा ही खो गयी, निहित मूल श्रद्धा ही जाती रही: " मां ने भी मुझे मारने का प्रयास किया? तब फिर किस पर विश्वास किया जाये?"— असम्भव। अब यह संसार केवल शत्रुतापूर्ण ही लगता है। प्रत्येक को यहां संघर्ष करना पड़ता है; वही जीवित रह पाता है जो योग्य और शक्तिशाली होता है।

कई बार मुझे स्वयं आश्चर्य होता है: किसी भी व्यक्ति को चार्ल्स डार्विन का मनोविश्लेषण अध्ययन करना चाहिए। उसके और उसकी मां के बीच कुछ न कुछ चीज जरूर ही गलत होना चाहिए तभी उसने—" जो शक्तिशाली और योग्य है संघर्ष में वहीं बच पाता है—" जैसी कल्पना को जन्म दिया। इसी तरह से किसी भी व्यक्ति को प्रिंस क्रोपाटकिन का भी मनोविश्लेषण और अध्ययन करना चाहिए। उसका अपनी मां के साथ ऐसा गहरा प्रेमपूर्ण रिश्ता जरूर रहा होगा।

" केवल सर्वाधिक शक्तिशाली ही जीवित रह पाता है " के स्थान पर अंतर्सहयोग के सिद्धांत का प्रतिस्थापन किया। उसने कहा—" जीवन में कहीं कोई संघर्ष है ही नहीं, बल्कि वहां एक सहयोग है। वास्तव में जब एक चीता झपटकर किसी पशु का शिकार कर उसे अपना आहार बनाता है, तो वह भी एक सहयोग है। इसे वह कैसे स्पष्ट करता है? वह कहता है—वास्तव में जिस क्षण चीता अपने शिकार पर झपटता है, शिकार होने वाला पशु विश्रामपूर्वक आसानी से स्वयं मर जाता है। वहां कोई संघर्ष नहीं होता। शिकार होने वाला पशु चीते का सरलता से आहार बन जाता है। जब तुम वृक्ष से एक सेब तोड़कर खाते हो तो सेब और तुम्हारे मध्य एक सहयोग होना जरूरी है। अन्यथा वह सेब तुम्हारे शरीर में जाकर मुसीबत खड़ी कर सकता है। वह तुमसे संघर्ष होने की स्थिति में तुम्हारे साथ लड़ेगा। वह अपने आपको यह अनुमति नहीं देगा कि तुम्हारा शरीर उसे अवशोषित कर हजम कर जाये, वह शत्रुतापूर्ण ही बना रहेगा। लेकिन वह साधारण रूप से तुम्हारे अंदर जाकर स्वयं घुल जाता है; तुम्हारा रक्त और तुम्हारी हड्डियां बन जाता है; तुम्हारा मांस बनता हौपूछो चार्ल्स डार्विन से: जब कभी दो मित्र एक दूसरे के गहरे प्रेम में होते हैं, वे एक दूसरे के लिए मरने तक को तैयार रहते हैं। डार्विन कहता है—कि यह केवल बहाने हैं। गहरे में वहां संघर्ष, युद्ध, प्रतियोगिता और ईर्ष्या है।

दर्शनशास्त्र का जन्म किसी हताशा या अवसाद के क्षणों में नहीं हुआ है। दर्शनशास्त्र तो तुम्हारे अपने अस्तित्व से जन्मा है, तुम्हारे अपने जीवंत अनुभव से उत्पन्न हुआ है। यदि बच्चा अपनी मां के साथ गहरे प्रेम में रहा है और मां ने भी उस पर अपना प्रेम बरसाया है तो यही भविष्य के लिए सभी विश्वास का प्रारम्भ है। तब वह बच्चा स्त्रियों के साथ अधिक प्रेम पूर्ण सम्बंध बनायेगा वह अपने मित्रों के साथ कहीं अधिक प्रेमपूर्ण होगा

और एक दिन सद्गुरु को समर्पण करने में सफल हो सकेगा— अंतिम रूप से वहीं पूरी तरह से परमात्मा में स्वयं घुलकर एक हो जाने में समर्थ हो सकेगा। लेकिन यदि मूल सम्बंध ही से तुम चूक गये हो तो बुनियाद ही खोखली है। तब तुम्हें कठोर प्रयास करना होगा, लेकिन यह अधिक से अधिक कठिन होता जाता है। यही सब कुछ मैं प्रश्नकर्त्ता के बारे में अनुभव कर रहा हूं। मुझे श्रद्धा करने की इतनी बुरी तरह जरूरत हैं..... .हां, क्योंकि श्रद्धा पालन पोषण करती है। बिना विश्वास के तुम भूखे बने रहते हो, क्षुधा ग्रस्त होते हो। विश्वास ही जीवन के लिए सबसे अधिक सूक्ष्म पोषक तत्व है। यदि तुम श्रद्धा नहीं कर सकते तो तुम वास्तव में जीवित ही नहीं हो। तुम सदा भय ग्रस्त रहते हो, तुम जीवन से नहीं, चारों ओर मृत्यु से घिरे रहते हो। अपने अंदर यदि गहरा विश्वास हो, तो पूरा दृश्य पटल बदल जाता है। तब तुम अपने शाश्वत घर में होते हो और वहां कोई संघर्ष होता ही नहीं। तब तुम इस संसार में एक अजनबी नहीं हो। तब तुम एक विदेशी नहीं हो; तुम किसी और दुनिया से नहीं आए हो। तुम इसी संसार के हो और और यह संसार तुम्हारा अपना है। यह संसार तुम्हारे यहां होने से प्रसन्न है—यह संसार तुम्हारी रक्षा कर रहा है। गहरी सुरक्षा का यह अहसास तुम्हें साहस देता है और तुम्हें अनजाने रास्तों पर चलने के लिए प्रेरित करता है।

मां जब घर में होती है तो बच्चा साहसी बना रहता है। क्या तुमने इसका कभी निरीक्षण किया है? वह बाहर सड़क पर भी जा सकता है, वह उद्यान में घूमने भी जा सकता है और वह एक हजार एक काम कर सकता है। जब मां नहीं होती वहां, वह तभी बस अंदर जाकर भयभीत बना बैठा रहता है। वह अब बाहर नहीं जा सकता, क्योंकि अब वहां सुरक्षा नहीं है; सुरक्षा का कवच नहीं है वहां अब वहां का वातावरण पूरी तरह विदेशी है।

एक बार ऐसा हुआ

मैं एक मित्र के साथ ठहरा हुआ था। वे दोनों पति—पत्नी किसी विवाह संस्कार में भाग लेने गये हुए थे और उन्होंने अपने छोटे बच्चे को घर पर खेलते रहने को छोड दिया था और मुझसे कहा था—कृपया आप इसे देखते रहियेगा, और मैं उसका निरीक्षण कर रहा था—वह बाहर पोर्च में खेल रहा था। वह गिर पड़ा, उसने अपने चारों ओर देखा और फिर मेरी ओर देखा। मैंने भी उसकी ओर खामोशी से देखा। उसने एक क्षण तक यह महसूस करते हुए कि चोट रोने और चीखने योग्य है अथवा नहीं, प्रतीक्षा की। लेकिन मैं इतना अधिक तटस्थ बना रहा जैसे मैं वहां उपस्थित था ही नहीं, इसलिए उसने अपने कंधे उचकाये, जैसे कह रहा हो—'' यह सज्जन तो किसी काम के नहीं '', और वह फिर अपने खेल में व्यस्त हो गया। आधे या एक घंटे बाद जब माता—पिता वापस लौटे, उसने रोना शुरू कर दिया। मैंने उससे कहा—'' अब तुम्हारा यह रोना अतर्कपूर्ण है। आधा घंटा गुजर गया, अब तुम्हारी चोट तुम्हें कष्ट नहीं दे सकती ''। उसने उत्तर दिया—'' प्रश्न यह नहीं है। लेकिन आपने मुझे ऐसी पथरीली दृष्टि से देखा था, इसलिए मैंने सोचा कि यदि चोट लगी हैं तो लगी है, रोना चीखना व्यर्थ है। आखिर उसकी जरूरत क्या है? अब मेरी मां वापस लौट आई हैं। अब वह एक भिन्न वातावरण में है— अब वह रो सकता है, क्योंकि वह जानता है कि अब वहां कोई ऐसा है जो उसे सान्तवना दे सके जो उसकी चोट को महसूस कर सके कोई ऐसा है वहां, जो उसी परवाह कर सके।

यदि तुमने अपने ऊपर गहरे बरसते प्रेम और विश्वास में बचपन व्यतीत किया है तो तुम स्वयं अपने ही बारे में एक सुंदर छवि बना लेते हो। यदि तुम्हारे माता— पिता वास्तव में एक दूसरे से गहरा प्रेम करते रहे हैं और वे तुम्हें पाकर बहुत प्रसन्न रहे हैं; क्योंकि तुम्हीं उनके प्रेम की चरम सीमा, उनके प्रेम—संगीत की तेज होती हुई धुन, उनके प्रेम की वास्तविकता और उनके गहरे प्रेम से उत्पन्न हुए गीत हो। तुम्हीं इस बात के प्रमाण और गवाह हो कि उन दोनों में आपस में कितना अधिक प्रेम रहा है। तुम्हीं सृजन हो उनका: वे तुम्हें स्वीकार करते हैं,

तुम जैसे भी हो, वे तुम्हें वैसे ही स्वीकार करते हैं और तुम्हें लेकर प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। यदि वे तुम्हारी सहायता करने की कोशिश करते हैं, तो बहुत प्रेम पूर्ण तरीके से ही तुम्हारी सहायता करते हैं। यदि कभी वे यह कहते भी हैं—'' यह काम मत करो '', तुम्हारा उससे न तो हृदय दुःखता है और न तुम्हें अपमान का अनुभव होता है। वास्तव में तुम यह अनुभव करते हो कि तुम्हारे बारे में परवाह की जा रही है।

लेकिन जब तुम उनका प्रेम नहीं पाते और तुम्हारे माता—पिता यह कहे चले जाते हैं—'' इस काम को मत करो और इस काम को करो, और धीमे— धीमे बच्चा यह समझना शुरू कर देता है।—'' जैसा मैं हूं मैं उस रूप में उन्हें स्वीकार नहीं हूं और जब मैं कुछ विशिष्ट काम करता हूं तभी मुझे प्रेम किया जाता है, और यदि मैं उन विशिष्ट कार्यों को नहीं करता हूं तो मुझे प्रेम नहीं मिलता है, और यदि मैं कुछ अन्य काम करता हूं तो मुझसे घृणा की जाती है।''

इसलिए वह सिकुड़ना शुरू कर देता है। उसका जैसा स्वाभाविक अस्तित्व है उसे न तो स्वीकार किया जाता है और न उससे प्रेम किया जाता है। उसे सशर्त प्रेम मिलता है क्योंकि श्रद्धा खो गयी है। तब वह कभी भी अपनी सुंदर छवि बनाने में समर्थ न हो सकेगा। क्योंकि वे मां की आंखें हैं, जिनमें पहली बार तुम उसकी प्रतिबिम्बित होती प्रसन्नता, अनुग्रह, भावना की तरंगें और परमानंद देखते हो और जानते हो कि तुम उसके लिए मूल्यवान हो और सहज स्वाभाविक रूप से उसकी दृष्टि में तुम्हारा कुछ मूल्य है। तब श्रद्धा करना और समर्पण करना बहुत आसान हो जाता है, क्योंकि तुम भयभीत नहीं हो।—लेकिन यदि तुम जानते हो कि तुम गलत हो, तब तुम हमेशा यह सिद्ध करने का प्रयास करते हो कि तुम सही हो। लोग तर्कपूर्ण बन जाते हैं। तर्क करने वाले सभी लोग बुनियादी रूप से ऐसे वे लोग हैं, जिनकी स्वयं उनकी दृष्टि में ही सुंदर छवि नहीं है। वे रक्षात्मक और बहुत संवेदनशील होते हैं। यदि वहां ऐसा कोई तर्क वितर्क करने वाला व्यक्ति है और तुम उससे कहते हो—'' यह कार्य तुमने गलत किया है '' तो वह तुरंत नाराज होकर तुम पर झपट पड़ेगा। वह छोटी सी मित्रतापूर्ण आलोचना भी सहन नहीं कर सकता। लेकिन यदि उसकी स्वयं के बारे में अच्छी छवि है, तो वह सुनने ओर सीखने को तैयार रहता है, वह दूसरों के दिए परामर्श को सम्मान देने को तैयार रहता है। हो सकता है वे ठीक हों, और यदि वे ठीक हैं और वह गलत है, तो भी वह फिक्र नहीं करता, क्योंकि उसे फिक्र नहीं होती। वह अपनी ही दृष्टि में अच्छा बना रहता है।

लोग बहुत हृदयस्पर्शी होते हैं—वे आलोचना पसंद नहीं करते, वे यह नहीं चाहते कि कोई उनसे यह कहे कि यह काम करो अथवा कोई कहे कि वह काम करो। और ये लोग सोचते हैं कि वे समर्पण नहीं कर सकते किसी के आगे, क्योंकि वे शक्तिशाली हैं। ये लोग केवल रुग्ण हैं, मानसिक रोगी हैं। केवल एक शक्तिशाली स्त्री या पुरुष ही समर्पण कर सकता है, दुर्बल व्यक्ति कभी समर्पण नहीं कर सकता। क्योंकि वे सोचते हैं कि समर्पण करने से उनकी दुर्बलता सारे संसार में प्रकट हो जायेगी। वे जानते हैं कि वे दुर्बल हैं, वे अपनी हीनता की ग्रंथि को .भली भांति जानते हैं, इसलिए वे झुक नहीं सकते। यह करना उनके लिए बहुत कठिन है, क्योंकि झुकने का अर्थ यह स्वीकार करना होगा कि वे हीन हैं। केवल एक श्रेष्ठ व्यक्ति ही झुक सकता है, हीन मनुष्य कभी भी नहीं झुक सकते। वे किसी दूसरे व्यक्ति का सम्मान भी नहीं कर सकते क्योंकि वे स्वयं का ही सम्मान नहीं करते। वे यह भी नहीं जानते कि सम्मान होता क्या है, और वे समर्पण करने से सदा भयभीत रहते हैं, क्योंकि समर्पण का अर्थ है उनकी दुर्बलता।

स्मरण रखें, समर्पण तभी सम्भव है, यदि तुम अत्यधिक शक्तिशाली हो; तुम्हें समर्पण के बारे में कोई चिंता नहीं है, क्योंकि तुम जानते हो कि तुम समर्पण भी कर सकते हो और फिर भी तुम दुर्बल नहीं होगे। तुम

समर्पण कर सकते हो और अपनी संकल्प शक्ति भी नहीं खोओगे। वास्तव में समर्पण के द्वारा तुम यह दिखला रहे हो कि तुम्हारे पास महान संकल्प की शक्ति भी है।

इसलिए यदि तुम यह अनुभव करते हो कि श्रद्धा करना कठिन है, तब तुम्हें वापस जाना होगा। तुम्हें अपनी स्मृतियों को गहरे खोद कर देखना होगा। तुम्हें अपने अतीत में लौटना होगा। तुम्हें अपने मन से अतीत के प्रभावों को साफ करना होगा। तुम्हारे पास अतीत के कूड़े कर्कट का एक बड़ा ढेर होना जरूरी है, तुम्हें उस भार से मुक्त होना होगा।

इसे करने की यही एक कुंजी है यदि तुम लौट कर अपने जीवन में वापस जा सको, केवल स्मृतियों में नहीं बल्कि फिर वही जीवन फिर से जी सको। इसे एक ध्यान बना लो। प्रत्येक दिन, रात में सोने से पूर्व, एक घंटे बस अतीत में वापस लौटो। वह सभी कुछ खोजने का प्रयास करो, जो तुम्हारे बचपन में घटा था। तुम जितने गहरे जा सको, उतना ही अच्छा है—क्योंकि हम बहुत सी उन चीजों को छिपा रहे हैं, जो कभी घटी थीं लेकिन हम उन्हें चेतना तल तक ऊपर आने की अनुमति नहीं देते। उन्हें सतह तक आने की अनुमति दो। प्रत्येक दिन वापस लौटते हुए तुम्हें गहरे और गहरे में जाने का अनुभव होगा। पहले तुम्हें कुछ वहां की घटनाएं याद आयेंगी, जब तुम चार या पांच वर्ष के थे, और तुम उसके पार जाने में समर्थ न हो सकोगे। अचानक तुम्हें चीन की दीवार जैसे प्रतिरोध का सामना करना होगा। पर धीमे— धीमे और गहरे जाने पर तुम देखोगे कि और गहरे तुम तीन वर्ष..... .दो वर्ष के हो। लोग उस बिंदु तक पहुंच जाते हैं जब गर्भ से उनका जन्म हुआ था। यहां कुछ ऐसे भी लोग हैं जो गर्भ की स्मृतियों तक पहुंचे हैं और यहां ऐसे भी लोग हैं जो उसके भी पार अपने पूर्व जन्म में, जब उनकी मृत्यु हुई थी, वहां तक भी पहुंचे हैं।

लेकिन यदि तुम उस बिंदु तक पहुंच सकते हो, जहां तुम्हारा जन्म हुआ था और तुम उन क्षणों को फिर से जी सकते हो, तो तुम्हें गहरी पीड़ा और दर्द से गुजरना होगा। तुम्हें लगभग ऐसा अनुभव होगा, जैसे मानो तुम्हारा फिर से जन्म हो रहा हो। तुम्हारी भी वैसी ही चीख निकल सकती है जैसे जन्म के समय बच्चा पहली बार चीखता है। तुम्हें दम घुटने का अनुभव होगा, जब गर्भ से बाहर आने पर बच्चे को पहली बार दम घुटने जैसा अनुभव होता है, क्योंकि कुछ क्षणों तक वह सांस लेने में समर्थ नहीं होता है। उस समय उसे बहुत अधिक दम घुटने का अनुभव होता है; तब वह चीखता है और सांस कर रास्ता खुल कर सांस चलना शुरू हो जाती है, और फेफड़े काम करना शुरू कर देते हैं। तुम्हें चलकर उसी बिंदु तक पहुंचना है।

वहां से तुम्हें फिर वापस लौट आना है। प्रत्येक रात्रि फिर से वहीं जाओ और वापस लोटो। इसमें लगभग कम से कम तीन माह से लेकर नौ माह तक का समय लगता है और प्रत्येक दिन तुम्हें अधिक भार मुक्त होने का अनुभव होगा, तुम अधिक से अधिक हल्के होते जाओगे और साथ ही साथ विश्वास का भी जन्म होगा। एक बार अतीत स्पष्ट हो जाये और तुम वह सभी कुछ देख लो, जो पूर्व में तुम्हारे साथ घटा था, तो तुम उससे मुक्त हो जाओगे। यही वह कुंजी है यदि तुम अपनी स्मृति में किसी भी बात या घटना के प्रति सजग हो जाते हो, तो तुम उससे मुक्त हो जाते हो। सजगता ही तुम्हें मुक्त करती है और मूर्च्छा ही बंधन निर्मित करती है। तभी विश्वास करना सम्भव हो सकेगा।

जब तुम यहां मेरे साथ हो, तुम फिर से दूसरे गर्भ में ही हो, तुम फिर से दूसरे जन्म की प्रतीक्षा कर रहे हो। यही एक सद्गुरु का काम होता है—कि वह तुम्हें दूसरा जन्म दे, तुम्हें द्विज बनाये, तुम्हारा पुनर्जन्म हो। एक जन्म तो माता और पिता देते हैं और दूसरा जन्म गुरु या सद्गुरु देता है। तुम फिर से एक दूसरे गर्भ में हो, वह आत्मिक गर्भ है। तुम्हें अपने शरीर के गर्भ के साथ पूरी तरह सभी हिसाब बंद कर देना है। तुम्हें अपने

शारीरिक जन्म के साथ जो भी बंधन शेष हो, उसे गिरा देता है, जिससे तुम मेरे साथ पूरी तरह अभी और यहीं हो सको।

अपने प्रश्न में तुम कहते हो—'' मुझे श्रद्धा की इतनी बुरी तरह जरूरत है..... .हां! यह बात बहुत जरूरी है एक व्यक्ति जो श्रद्धा नहीं कर सकता, उसे बुरी तरह श्रद्धा की जरूरत होती है। और एक ऐसा व्यक्ति जो श्रद्धा कर सकता है वह इसकी जरूरत के प्रति सजग भी नहीं होता। जरूरत तभी उठती है, जब तुम भूखे होते हो।

मनोवैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं कि प्रेम ही भोजन है। केवल बीस वर्ष पूर्व यदि किसी ने यह कहा होता कि प्रेम एक सूक्ष्म जीवन सफूर्ति है, तो वैज्ञानिक यह सुनकर हंसे होते। उन्होंने सोचा होगा—'' तुम एक कवि हो, यह सब बकवास है।'' लेकिन अब वैज्ञानिक खोजें कहती हैं—'' प्रेम एक भोजन है।'' जब बच्चे को भोजन दिया जाता है, वह उसके शरीर का पोषण करता है और यदि उसे प्रेम नहीं दिया जाता, तब उसकी आत्मा विकसित नहीं होती। उसकी आत्मा अपरिपक्व और अविकसित रह जाती है।

अब वहां ऐसे तरीके और विधियां हैं; जिससे यह माना जा सके कि बच्चे को प्रेम दिया गया अथवा नहीं; क्या उसे वह प्रेम की उष्णता दी गई, जिसकी उसे जरूरत थी अथवा नहीं दी गई। तुम बच्चे की जरूरत की हर चीज देकर उसका पालन—पोषण करो, अस्पताल में उसकी डाक्टरों द्वारा पूरी देखभाल भी करो, लेकिन केवल उसकी मां को उससे दूर कर दो, उसे दूध, दवा, देखभाल सभी कुछ दो, लेकिन न तो उसे आलिंगन में लो और न उसे चूमो और स्पर्श करो। इस सम्बंध में बहुत से प्रयोग किए गए। वह बच्चा धीमे— धीमे स्वयं अपने आप सिकुड़ने लगता है। वह रुग्ण हो जाता है, और अधिकतर तो उसकी मृत्यु ही हो जाती है, जिसका कोई कारण दृष्टिगत नहीं होता। और यदि वह बच भी जाता है, वह निम्नतम धरातल पर ही जीवित रहता है। वह अल्पमति या एक छू बन कर रह जाता है। वह जीवित रहेगा, लेकिन वह हमेशा केवल एक किनारे पर जीवित रहेगा। वह जीवन की गहराई में न उतर सकेगा, उसके पास ऊर्जा होगी ही नहीं। बच्चे को हृदय से लगाना, उसे शरीर की गर्मी देना ही उसका सूक्ष्म भोजन है। अब धीमे— धीमे यह बात भली भांति जानी जा चुकी है।

अब मैं तुम्हारे लिए यह भविष्यवाणी करना चाहता हूं: बीस या तीस वर्ष बाद मनोवैज्ञानिक यह भी जानेगे कि श्रद्धा इससे भी उच्च तल का भोजन है, वह प्रेम से भी बड़ी शक्ति है.? .प्रार्थना जैसी। श्रद्धा है— प्रार्थनापूर्ण होना, लेकिन यह बहुत अधिक सूक्ष्म है। तुम इसे अनुभव कर सकते हो। यदि तुम्हारे पास श्रद्धा है तो मेरे साथ रहते हुए अचानक तुम देखोगे कि तुम एक महान साहसिक अभियान पर चल पड़े हो और तुरंत तुम्हारे जीवन में एक परिवर्तन होना शुरू हो गया है। यदि तुम्हारे पास श्रद्धा नहीं है तो तुम वहीं खड़े रहोगे। मैं कितना भी बोले चला जाऊं, मैं तुम्हें कितना ही खींचे चले जाऊं तुम जड़ होकर खड़े ही रह जाओगे— और इस तरह तुम मुझे चूकते चले जाओगे। अपनी श्रद्धा को जन्मने दो। तुम्हारे और मेरे मध्य वही श्रद्धा ही एक सेतु बन जायेगी। तब साधारण शब्द भी दीसिवान हो उठेंगे, केवल तभी मेरी उपस्थिति एक गर्भ बन सकती है, और तुम्हारा पुनर्जन्म हो सकता है।

तुम पूछ रहे हो—'' मुझे श्रद्धा करने की इतनी बुरी तरह जरूरत है, और चूंकि वह मेरे पास नहीं है, मैं इसीलिए पीड़ित हूं। मैं इतना साहस कहां खोजूं जिससे मैं मारने वाले पर भी श्रद्धा कर सकूं।''

हां! मैं ही तुम्हें मारने वाला हूं लेकिन एक खास तरह से। मुझे तुम्हें मारना ही होगा क्योंकि केवल यही रास्ता है जिससे तुम्हारा पुनर्जन्म हो सके। मुझे तुम्हारे मुरतीत से तुम्हें पूरी तरह काट देना होगा, मुझे तुम्हारी जीवन कथा नष्ट करनी ही होगी, केवल तभी नये का जन्म हो सकता है।

लेकिन यदि तुम्हारे पास श्रद्धा है, तो तुम मरने के लिए तैयार रहोगे। यदि तुम्हारे पास श्रद्धा है, तो तुम जानते हो—मरकर जीवित हो उठना निश्चित है। मैं इस बात की गारंटी नहीं दे सकता; वहां गारंटी देने का कोई

रास्ता ही नहीं है। केवल श्रद्धा ही वह गारंटी है। मैं उसके बारे में चर्चा कर सकता हूं मैं उसकी काव्यात्मक अभिव्यक्ति कर सकता हूं लेकिन उससे तुम्हारे अंदर केवल स्वप्न सृजित होंगे, वह गारंटी नहीं होगी। मैं तुम्हें यह बता सकता हूं कि मेरे साथ क्या घटा है, मैं तुम्हें उस और जाने का प्रलोभन दे सकता हूं लेकिन वह कोई गारंटी नहीं होगी।

" कौन जानता है? यह शख्स केवल झूठ बोल रहा हो अथवा यह व्यक्ति झूठ .। भी बोल रहा हो, लेकिन वह केवल विभ्रम में भी हो सकता है?" इसे सिद्ध कैसे। किया जाये? यह कोई ऐसी चीज नहीं, जिसे में तुम्हें दिखा सकता हूं। यदि तुम्हें श्रद्धा है तब वहां गारंटी है। तुम्हारे श्रद्धा ही तुम्हारी गारंटी है।

तुम मुझ पर श्रद्धा भी दो तरह से कर सकते हो। इस बात को भी ठीक से समझ लेना है, क्योंकि इनमें से एक रास्ता, गलत रास्ता है।

तुम मुझ पर श्रद्धा कर सकते हो, क्योंकि तुम्हें असुरक्षा और अकेलेपन का अनुभव होता है। तुम विवश होकर बलात् श्रद्धा कर सकते हो, क्योंकि तुम्हें मेरे साथ सुरक्षित होने का अधिक अनुभव होता है। इसी तरह से बहुत से लोग चर्चों मठों, संस्थाओं और संगठित धर्मों के साथ जी रहे हैं। कोई ईसाई है, कोई हिंदू है; यह एक निश्चित सुरक्षा देती है। तुम अकेले नहीं हो—करोड़ों ईसाई और करोड़ों हिंदू तुम्हारे साथ हैं।'' इतने अधिक लोग गलत कैसे हो सकते हैं? उन्हें ठीक होना ही चाहिए ' —इसलिए तुम भीड़ को पकड़ते हो, अपने को हिलगा लेते हो उसे साथ, सिर्फ इसीलिए क्योंकि तुम भयभीत हो। श्रद्धा उत्पन्न हो सकती है—क्योंकि भय है वहां—तब यह एक नकारात्मक श्रद्धा है—इससे तुम्हारा पुनर्जन्म न होगा। वास्तव में यह नूतन जन्म लेने में बाधक बनेगा। श्रद्धा तो प्रेम से ही उत्पन्न हो सकती है। तभी वह ठीक और सच्ची है।

जो लोग विश्वास करते हैं, क्योंकि वे भयभीत हैं, क्योंकि वे चाहते हैं कि वे किसी के साथ बंध जायें, उसके साथ लटक जायें, वे भयभीत हैं और वे सहारे को किसी का हाथ चाहते हैं, वे आकाश की आरे देखते हैं और केवल अभय का अनुभव करने के लिए ही परमात्मा की प्रार्थना करते हैं। क्या तुमने कभी देखा है? कभी अंधेरी सुनसान सड़क से गुजरते हुए तुम रात में सीटी बजाना शुरू कर देते हो, अथवा गाना शुरू कर देते हो—इसलिए नहीं कि उससे तुम्हें कोई सहायता मिल जायेगी। लेकिन एक तरह से वह सहायता भी करती है। गाने या गुनगुनाने से तुम उष्णता का अनुभव करते हो, तुम उसमें व्यस्त हो जाते हो और भय का दमन हो जाता है। सीटी बजाने से तुम्हें अच्छा लगने लगता है। तुम यह भूल जाते हो कि तुम अंधेरे में हो और यह खतरनाक है, लेकिन इससे वास्तविक यथार्थ में कोई असली परिवर्तन नहीं होता। यदि वहां भय और खतरा है, तो वह अभी भी वहां है। वास्तव में वह पहले से कहीं अधिक हैं, क्योंकि एक व्यक्ति जो गाने में व्यस्त है, अधिक आसानी से लूटा जा सकता है, क्योंकि वह कम सजग होगा। सीटी बजाते हुए वह कम सावधान रहेगा। वह सीटी बजाने के साथ अपने चारों ओर एक भ्रम खड़ा कर रहा है। तो यदि तुम्हारी श्रद्धा भय से उत्पन्न हुई है तो इससे यही अच्छा है कि तुम वह श्रद्धा करो ही मत, क्योंकि वह नकली है।

मैंने सुना है:

मुल्ला नसरुद्दीन हजामत बनाने बाली ऊंची कुर्सी पर चढ़कर बैठ गया और नाई से पूछा—'' वह हज्जाम कहां है जो इस बगल वाली कुर्सी पर हजामत बनाता था?"

हज्जाम ने उत्तर दिया—'' ओह! वह एक दुःखद प्रसंग है। मैदे व्यापार से घबडा कर वह इतना अधिक निराश हो गया कि एक दिन जब एक ग्राहक ने उससे कहा—कि वह मालिश नहीं कराना चाहता तो बस उसकी खोपड़ी उलट गई और उसने उस्तुरे से ग्राहक का गला काट दिया। अब वह सरकारी पागलखान में भर्ती है। पर श्रीमान! बस मैं यूं ही पूंछ रहा हूं क्या आप मालिश कराना पसंद करेंगे?

मुल्ला नसरुद्दीन ने तुरंत उत्तर दिया—'' जरूर! पूरी तरह से।''

तुम भय के कारण—'' जरूर, पूरी तरह से '' कह सकते हो, लेकिन यह श्रद्धा न होगी। श्रद्धा तो प्रेम से जन्मती है, और यदि तुम यह पाते हो कि तुम श्रद्धा नहीं कर सकते, तब तुम्हें कठोर श्रम करना होगा। तुम्हारा अतीत बहुत अधिक बोझिल हैं, उसमें कूड़े कर्कट का ढेर है। तुम्हें उसे साफ करना होगा, भार रहित बनाना होगा।

तीसरा प्रश्न:

मैं विश्वास करता हूं कि वहां परमात्मा है! वहां ऐसी कोई शक्ति जरूर होनी चाहिए जो पूरे ब्रह्माण्ड की एक साथ संभाले हुए है! लेकिन स्वयं अपनी ही गहराई में मैं वहां किसी परमात्मा का अथवा आपका, अथवा इस बात का कि परमात्मा मेरे साथ है अनुभव नहीं कर पाता! मैं यह अनुभव करता हूं जैसे मैं स्वयं इस धमकी भरे संसार में जैसे असुरक्षित हूं और कहीं खो गया हूं! मुझे तभी आराम मिलता है जब मैं अकेला होता हूं! मैं उस मूल श्रद्धा से चुका जा रहा हूं! जो जानकारी या ज्ञान मैने इकट्ठा किया है? जिन भावनाओं को मैने महसूसा है? और जो अनुभव मुझे प्राप्त हुए है, वे आंतरिक श्रद्धा की ओर मेरा पथ प्रशस्त नहीं करते

कृपया क्या आप मेरी सहायता कर सकते हैं?

पहली बात, विश्वास एक बहाना है। किसी भी चीज में विश्वास मत करो। विश्वास एक झूठी श्रद्धा है। वह तुम्हें यह अहसास कराती है। जैसे मानो तुम्हें श्रद्धा हो। यह ' जैसे मानो ' वाली श्रद्धा है; यह खतरनाक है। यदि तुमने दिव्यता जैसी किसी भी चीज का अनुभव नहीं किया है, तो कृपया ईमानदार बने रहो। श्रद्धा करने की कोई जरूरत नहीं है और वहां परमात्मा पर भी विश्वास करने की कोई जरूरत नहीं है। परमात्मा को एक तार्किक व्यायाम जैसा मत बनाओ। प्रश्नकर्त्ता कह रहा है, '' मैं विश्वास करता हूं कि वहां परमात्मा है। वहां ऐसी कोई शक्ति जरूर होनी चाहिए जो पूरे ब्रह्माण्ड को एक साथ संभाले हुए है।'' यह एक तर्क का मुद्दा है: अस्तित्व अथवा ब्रह्माण्ड वहां है और सभी चीजें भी वास्तव में एक साथ गतिशील हैं, प्रत्येक वस्तु बहुत सुंदरता से एक साथ चली जा रही हैं, इसीलिए तर्कपूर्ण मन कहता है—वहा कोई ऐसा जरूर होना चाहिए जो सभी को एक साथ संभाले हुए है। जब अस्तित्व वहां है, इसलिए कोई ऐसा जरूर होना चाहिए जिसने यह सभी कुछ सृजित किया है।

लेकिन तर्क के द्वारा परमात्मा तक नहीं पहुंचा जा सकता। केवल प्रेम के द्वारा ही परमात्मा तक पहुंचा जा सकता है। परमात्मा कोई प्रकृति और तर्क के पार का निष्कर्ष नहीं है। यही कारण है कि वैज्ञानिक परमात्मा या सत्य तक कभी भी नहीं पहुंच सकते। और वे लोग जो वास्तव में विचारक हैं, उन्होंने हमेशा परमात्मा से इंकार किया है—क्योंकि यदि तुम वास्तव में विचार का चिंतन कर रहे हो, तुम परमात्मा पर विश्वास नहीं कर सकते। परमात्मा, निरर्थक और असम्भव प्रतीत होता है, वह सच जैसा लगता ही नहीं।

लेकिन तर्क तुम्हें एक नकली विचार दे सकता है। वह सामान्य रूप से कहता है कि जब तुम संसार को एक साथ चलते हुए देखते हो तो तुम सोचते हो कि कोई ऐसा है जो सभी को एक साथ संभाले हुए है। इतना कहना ही काफी है कि यह अत्यधिक विराट संसार एक साथ चला जा रहा है—'' मैं यह नहीं जानता कि क्यों, मैं यह भी नहीं जानता कि कौन इसे संभाले हुए है, अथवा कोई ऐसा है, जो इसे संभालता हैं।'' यह निष्कर्ष ठीक नहीं है; स्मरण रहे, कि तुम यह जानते नहीं। यह अज्ञान ही अत्यधिक सहायक होगा, क्योंकि यह अज्ञान, ईमानदार प्रामाणिक और सच्चा होगा।

तुम सोचते हो कि यह संसार सभी को एक साथ लेकर ऐसे ही कैसे चले जा रहा है, और इसी कारण वहां परमात्मा जरूर होना चाहिए। यहां ऐसे भी दार्शनिक हैं, जो कहते हैं कि ठीक इसीलिए ही कि संसार ऐसे ही

चले जा रहा है, वहां परमात्मा हो ही नहीं सकता। क्योंकि यदि वहां परमात्मा है, तो कभी—कभी वह भी, संसार में ऐसा कोई व्यक्तित्व होगा ही। यह सब कुछ इतना यांत्रिक है: सितारे परिभ्रमण किए चले जाते हैं, सूर्य रोज उगता है यह पृथ्वी घूमे ही चले जा रही है, लोग जन्म लेते हैं फल और बीज वृक्षों पर लगते हैं और बीज मौसम आने पर फिर वृक्ष बनते हैं। यह इतना अधिक यांत्रिक प्रतीत होता है कि बहुत से दार्शनिक कहते हैं—क्योंकि यह संसार पूरी तरह से ठीक ठीक चले ही जा रहा है, तो उसके पीछे कोई व्यक्ति हो ही नहीं सकता। क्योंकि कभी—कभी एक व्यक्ति बदल भी जाता है और जब कभी वह बहुत ऊब भी जाता है। एक दिन सोचता है—'' अब आम के बीजों से सेब उत्पन्न होंगे।''

यदि संसार में वहां कोई व्यक्तित्व है, तो जरा सोचो—'' पिकासो की एक वैसी ही पेंटिंग क्या प्रतिदिन आयेगी? यदि पिकासो के घर के बाहर वैसी ही पेंटिंग प्रतिदिन आती रहे तो इससे क्या सिद्ध होगा कि वहां अंदर कोई व्यक्ति बैठा १ अथवा वहां कोई यांत्रिक व्यवस्था हैं? तुम घर के अंदर कभी नहीं जाते हो। तुम यह भी नहीं जानते कि अंदर कौन है, केवल एक पेंटिंग प्रतिदिन मशीनी ढंग से बाहर आ रही है। ठीक वहीं पेंटिग, प्रत्येक चीज ठीक वैसे ही पूर्ण, क्या यह सिद्ध करेगा कि अंदर पिकासो जैसा एक महान पेंटर है? अथवा इससे यह सिद्ध होगा कि वहां अंदर कोई यांत्रिक व्यवस्था है जो उत्पादन किये जा रही है? यहां ऐसे दार्शनिक भी हैं जो कहते हैं कि क्योंकि संसार एक यांत्रिक व्यवस्था से चल रहा है तो वहां उसके पीछे कोई व्यक्तित्व हो ही नहीं सकता। अब क्या किया जाये?"

तुम कहते हो—जब संसार या सृष्टि है: तो वहां सृष्टिकर्त्ता या सृष्टा भी होना चाहिए। ऐसे भी दार्शनिक हैं, जो कहते हैं—यदि सृष्टि को सृष्टा की आवश्यकता है तब सृष्टा को किसी और सृष्टा की जरूरत होगी। उस सृष्टा को आखिर बनोयगा कौन? और यदि तुम यह कहते हो सृष्टा को किसी और सृष्टा की जरूरत नहीं है— तो मूर्ख मत बनो। तब वे कहते हैं—'' तब सृष्टा की भी क्या आवश्यकता है? जब सृष्टा बिना सृष्टा के हो सकता है। तब सृष्टि भी स्वयं बिना किसी सृष्टा के हो सकती है।'' जैसे ही तुमने यह सिद्धांत बुनियादी रूप से स्वीकार कर लिया कि कोई भी चीज बिना सृजित किए हुए भी अस्तित्व में हो सकती है—वैसे ही संसार या सृष्टि भी बिना सृष्टा के हो सकती है। यदि तुम तर्क में धंसते चले जाओगे तो तुम मुसीबत में पड़ोगे।

मैं तुम्हें एक प्रसंग बताना चाहता हूं।

चाय घर में एक के प्रोफेसर ने कहा—तर्कशास्त्र का एक सबक है—'' यदि प्रदर्शन नौ बजे शुरू होता है और रात्रि भोजन का समय छ: बजे है, मेरे लड़के को खसरा निकला हुआ है और मेरा भाई कैडीलाक कार चला रहा है तो बताओ मेरी आयु क्या है?"

मुल्ला नसरुद्दीन ने तुरंत उत्तर दिया—'' चौरासी वर्ष।''' बिलकूल ठीक।'' प्रोफेसर ने कहा—'' अब तुम यहां मौजूद दूसरे लोगों को बतलाओ कि तुम ठीक उत्तर तक किस तरह पहुंचे?"

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' यह बहुत आसान है। मेरे एक चाचा हैं, जो बयालीस वर्ष के हैं और वह आधे पागल हैं। इस हिसाब से आपको चौरासी वर्ष का होना चाहिए।''

यदि तुमने परमात्मा को तर्क शास्त्र का एक व्यायाम बना दिया तो तुम पागल हो जाओगे। तार्किक जांच पड़ताल के जाल से कोई भी व्यक्ति कभी समझदार बनकर बाहर नहीं आता। कोई भी समझदार होकर कभी वापस लौटा ही नहीं है क्योंकि आयाम पूरी तरह भिन्न है—उसका तर्क से कुछ लेना देना है ही नहीं। यह कुछ ऐसी चीज है जिसे हृदय के साथ किय जाना है, यह कुछ चीज प्रेम के साथ करने जैसी है।

" मैं विश्वास करता हूं कि वहां परमात्मा है " कृपया विश्वास मत करें, क्योंकि यह विश्वास ही एक चट्टान बन जायेगा और तुम्हें गहरे उतरने की अनुमति नहीं देगा। सामान्य रूप से इतना ही जानो कि तुम उसे नहीं

जानते। अपने अज्ञान को स्वीकार करो। उसे विश्वास की आड़ू में छिपाओ मत क्योंकि अज्ञान से भी एक सम्भावना होती है, लेकिन झूठी उधार ली गई तार्किक जानकारी से कोई सम्भावना ही नहीं होती। तार्किक जानकारी बंजर है, जब कि प्रेम उपजाऊ है।

" मैं विश्वास करता हूं कि वहां परमात्मा है। वहां ऐसी कोई शक्ति जरूर होना चाहिए जो पूरे ब्रह्माण्ड को एक साथ संभाले हूए है—'' यह परमात्मा तक पहुंचने का कोई तरीका नहीं है—'' लेकिन स्वयं अपनी ही गहराई में मैं वहां किसी परमात्मा का अनुभव नहीं कर पाता।'' सचमुच..... आखिर तुम अनुभव करोगे कैसे? हृदय में तुम तर्क के किसी कथन या निष्कर्ष का कैसे अनुभव कर सकते हो?" दो और दो चार होते हैं, यह निश्चित रूप से ठीक है—लेकिन क्या तुम तर्क पूर्ण निष्कर्ष से प्रेम कर सकते हो? क्या तुम दो धन दो चार से प्रेम कर सकते हो? और यदि कोई भी इससे इंकार करता है, तो क्या तुम उसके लिए क्योंकि वह सच है शहीद बनने का तैयार हो सकते है? तुम कहोगे—उसके बारे में सब कुछ भूल जाओ। यदि तुम कहोगे—उसके बारे में सब कुछ भूल जाओ। यदि तुम दो में दो जोड़कर पांच बनाना चाहते हो तो बना लो, पर मैं उसके लिए अपना जीवन नष्ट क्यों करूं?

कोई भी नहीं मरता, कोई भी एक तर्क पूर्ण कथन या निष्कर्ष के लिए जीवन को दांव पर नहीं लगाता। इसका कोई भी मूल्य नहीं है। यदि कोई इससे इंकार करता है तो उसे वैसा ही रहने दो। दो और दो मिलाकर चार होना पूरी तरह सच है लेकिन यह परमात्मा की श्रेणी का सत्य नहीं है; यहां तक कि यह लैला और मजनू की भी श्रेणी का भी सच नहीं है। यदि तुम्हारे तर्क को गलत सिद्ध कर दिया जाये तो कुछ भी गलत सिद्ध नहीं किया जा सकता। तुम अपने तर्क में परिवर्तन कर सकते हो। लेकिन यदि तुम्हारा प्रेम गलत सिद्ध हो जाता है तो तुम फिर से वही व्यक्ति कभी भी नहीं हो सकते। यदि तुम्हारा प्रेम गलत सिद्ध होता है, तो तुम ही गलत सिद्ध हो जाते हो। यदि तुम्हारा तर्क गलत सिद्ध हो जाता है, तो कुछ भी गलत सिद्ध नहीं होता। तुम अपने तर्क को बदल सकते हो, तुम उससे अप्रभावित बने रह सकते हो।'' मैं स्वयं अपनी गहराई में परमात्मा का अनुभव नहीं करता।''—क्योंकि विश्वास से अनुभव तक का यहां कोई रास्ता है ही नहीं। वे एक दूसरे से सम्बंधित नहीं हैं। इसलिए विश्वास के बारे में भूल ही जाओ। अन्यथा फिर इसकी एक खतरनाक सम्भावना है तुम यह बहाना बना सकते हो कि तुम अनुभव कर रहे हो।

बहुत से लोग बहाने बनाते हैं। वे चर्च, मंदिर और मस्जिद में जाते हैं और वे बहाना बनाते हैं कि वे परमात्मा का अनुभव कर रहे हैं। उनका यह अनुभव वास्तविक अनुभव नहीं है। तुम देख सकते हो कि मंदिर में उनकी आंखों से आंसू बह रहे हैं। मंदिर के बाहर तुम उसी आदमी को फिर कहीं न देख पाओगे, जैसा मनुष्य तुमने मंदिर के अंदर देखा था। तुम उसे वैसा ही बाजार के बीच न पाओगे। वह उसका केवल एक मुखौटा था: वह अनुभव करने का कठोर प्रयास कर रहा था। वह नकली आंसू बहाने के साथ—साथ रोने और बिलखने के लिए तैयार था। वे आंसू घड़ियाली आंसू थे। तुम उसे प्रार्थना करते हुए देख सकते हो, लेकिन उसके हृदय में कुछ भी नहीं उमग रहा है—उसके अंदर प्रेमाग्नि नहीं है, तीव्र भावोद्वेग ही नहीं है उसकी प्रार्थना केवल मौखिक शब्द मात्र हैं। वह उन शब्दों को दोहराये चले जाता है, जिसे दोहराने के लिए उसे बताया गया है; यह ठीक तोता रटंत जैसा है। भावनाएं तभी उठती हैं; अनुभव तभी होता है जब तुम अत्यधिक कठोर और निष्ठा से भरा जीवन जीते हो।

परमात्मा में विश्वास के बारे में भूल ही जाओ, उसकी वहां कोई जरूरत नहीं है। सिर्फ यही जानो कि तुम नहीं जानते हो।'' मैं नहीं जानता हूं इसी निष्ठा से प्रारम्भ होना चाहिए। हो सकता है परमात्मा—हो, हो सकता है, वह नहीं हो; मुझे खोज करनी है। अब कहां खोजा जाए उसे और कैसे खोजा जाये? यदि वहां है परमात्मा,

तो उसे वृक्षों पक्षियों और पशुओं का परमात्मा भी तो होना चाहिए वह अकेला मनुष्यों का ही तो परमात्मा नहीं है। वृक्ष कोई भी तर्क नहीं जानते, पशु पक्षी भी कोई तंर्क—वितर्क नहीं जानते। यदि वहां परमात्मा है तो, ' उसे ' सभी का परमात्मा होना चाहिए। तर्क का प्रमुख क्षेत्र बहुत सीमित होता है, वह केवल छोटा सा भाग होता है, पूरे संसार का एक बहुत छोटा सा भाग। गणितीय हिसाब किताब और तर्क वितर्क के लिए मनुष्यता के पास मन का केवल एक छोटा सा ही कोना है।

तर्क की बात भूल ही जाओ, यदि परमात्मा है, तो उसे सभी का परमात्मा होना चाहिए। उस तक पहुंचने की शुरुआत यों करो, जैसे वृक्ष करते हैं। उस तक पहुंचने की शुरुआत सरिताओं की भांति करो, जो सागर से मिलने उस तक दौड़ पड़ती है, उस तक पक्षियों की भांति पहुंचो और उस तक पहुंचने की शुरुआत अपने समग्र अस्तित्व के द्वारा करो। नृत्य करो अपनी गहराइयों के साथ। परमात्मा को भूल ही जाओ, केवल समग्रता से नृत्य करने में ही डूब जाओ—क्योंकि एक दिव्य नृत्य करते हुए उस भावदशा में एक क्षण को मन विसर्जित हो जाता है, और तुम्हें समग्र और पूर्ण होने का अनुभव होता है। जब तुम प्रामाणिकता के साथ नृत्य कर रहे होते हो और गति तीव्र होती है तो मन कार्य नहीं कर सकता। मन रुक जाता है और तुम अमन में छलांग लगा जाते हो।

तुम होते हो लेकिन तुम तब मन नहीं होते, और तुम उन क्षणों में तर्क की भाषा में नहीं सोचते। तुम एक वृक्ष बन जाते हो, तेज हवा के साथ झूमते और डोलते हुए एक वृक्ष अथवा एक फूल, एक बहती नदी, एक चट्टान अथवा एक सितारा बन जाते हो, लेकिन तुम तर्क के उस छोटे से सीमा क्षेत्र को, जो तुम पर अधिकार जमाये हुए था, छोड़ देते हो। अकस्मात् तुम्हें किसी के सम्पर्क में होने का अनुभव होना शुरू होने लगेगा। तुम्हें लगेगा जैसे किसी अज्ञात ऊर्जा ने तुमसे सम्पर्क जोड़ा है और तुम्हें भी किसी के सम्पर्क में आने का अहसास होगा। एक नर्त्तक ही धार्मिक बनता है, उसे वैसा होना ही होता है। कोई गीत गुनगुनाओ— और मैं यह नहीं कह रहा हूं कि कोई धार्मिक गीत ही गाओ। यदि गाना सच्चा और प्रामाणिक है, तो वही धार्मिक है। उसके शब्द क्या हैं, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। दौड़ो तैसे, कोई भी काम करो, और करते हुए उस कार्य में खो जाओ।

मैं इसीलिए ध्यान की सक्रिय विधियों पर जोर देता हूं: नृत्य करना, गीत गाना, संगीत, ताईची, कराटे। कुछ करो, क्योंकि जब तुम कुछ करते हो तो तुम वृक्षों, पक्षियों और पशुओं के महान संसार का एक भाग बन जाते हो। वे करने वाले हैं, वे विचारक नहीं है। जब तुम कुछ कार्य करते हो, तो अकस्मात् अस्तित्व की एकता के विराट सागर में डूब जाते हो।

तब वहां यह अनुभव होता है कि परमात्मा है। लेकिन यह परमात्मा, ईसाइयों, हिंदुओं और मुसलमानों का परमात्मा नहीं है। यह परमात्मा तुम्हारा अपना परमात्मा है। इसका बाईबिल गीता और कुरान से कोई लेना—देना नहीं है। यह परमात्मा तुम्हारा परमात्मा है। इस परमात्मा का तर्कशास्त्र, तर्क के पार के निष्कर्षों, दर्शन शास्त्र और संस्कारों से कुछ लेना देना नहीं है। यह वह परमात्मा है, जिसे तुमने महसूसा है, उसमें जीकर उसका अनुभव किया है।

तब….. .तुम तभी जानोगे, और इसके अतिरिक्त अन्य कोई दूसरा मार्ग है ही नहीं।

लोग शास्त्रों से सीख रहे हैं और सबसे महान शास्त्र जो तुम्हें अस्तित्व द्वारा दिया गया है, वह बिना खुले रह जाता है। और शास्त्रों के द्वारा तुम पाते हो केवल विचार।

मैंने सुना है……

मुल्ला नसरुद्दीन तलाक के बारे में अपने वकील से मिलने गया।

वकील ने उससे पूछा—'' तलाक देने के लिए तुम्हारे खयाल में तुम्हारे पास क्या आधार हैं?"

मुल्ला ने उत्तर दिया—'' यह मेरी पत्नी के शिष्टाचार के बाबत है। भोजन की मेज पर बैठने की उसकी बुरी आदतों से वह पूरे परिवार की गौरव गरिमा को नष्ट करती है।''

वकील ने कहा—'' यह बुरी बात है। लेकिन आपका विवाह हुए कितना समय बीत चुका?''

मुल्ला ने उत्तर दिया—'' नौ वर्ष।''

वकील ने कहा—'' यदि आप उसके मेज पर बैठने की आदतों और तौर तरीकों को नौ वर्ष तक सहते रहे तो मैं यह नहीं समझ पा रहा कि अब आप उसको तलाक क्यों देना चाहते हो?''

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' मैं पहले इसे स्वयं नहीं जानता था। मैं आज सुबह ही शिष्टाचार पर एक पुस्तक खरीद कर लाया हूं।''

तुम पहले पुस्तकें पढ़ते हो, तब तुम जीवन के बारे में कुछ निर्णय लेते हो। पहले जीवन में गतिशील बनो और तभी पुस्तकों के बारे में कोई निर्णय लो। और तब तुम्हें आश्चर्य होगा कि गीता, कुरान और बाइबिल तीन अलग— अलग पुस्तकें न होकर केवल एक ही पुस्तक है। तब बुद्ध, क्राइस्ट और कृष्ण तीन व्यक्ति नहीं रह जाते, बल्कि तीनों स्वर एक ही व्यक्ति के स्वर होते हैं।

लेकिन पहले यदि तुम पुस्तकों के तर्कपूर्ण जाल में फंस जाते हो, तब तुम जीवन को जानने में कभी भी समर्थ न हो सकोगे। अधिक सहज स्वाभाविक बनने का प्रयास करो। परमात्मा के बारे में सब कुछ भूल ही जाओ। उस परमात्मा के साथ रहो, जो तुम्हें पहले ही से चारों ओर से घेरे हुए है, वह तुम्हारे चारों ओर फैला है। इसी क्षण कोयल कूकती हुई अपनी प्रार्थना कर रही है, पक्षी भी चहचहाते हुए प्रार्थना ही कर रहे हैं। जरा वृक्षों की ओर देखो, कि वे कितने प्रार्थनापूर्ण हैं? पूरा अस्तित्व ही प्रार्थना में निमग्न है और तुम क्या कर रहे हो, तुम बैठे हुए अपने खोपड़ी के अंदर परमात्मा के बारे में विचार कर रहे हो कि वह है अथवा नहीं? " उसका अस्तित्व होना ही चाहिए क्योंकि यह संसार इतनी सुंदरता से एक साथ चलता चला जा रहा है।''

यह संसार सभी के साथ मिलकर सुंदरता से गतिशील है। तुम भी सभी के साथ मिलकर उसके एक भाग बन जाओ, इस सहभागिता में घुल ही जाओ। जब नदी बही चली जा रही है, तुम उसमें कूदते क्यों नहीं? तुम नदी किनारे आंखें बंद किए बैठे हुए सोच रहे हो—नदी को वहां जरूर होना चाहिए क्योंकि.....? ये सभी " क्योंकि " आदि भूल ही जाओ।

आंतरिक श्रद्धा केवल तभी जन्मती है जब तुम्हारा परमात्मा से जीवंत सम्पर्क होता है। जो कुछ भी तुम करना चाहो, कर सकते हो पर कृपया केवल मात्र सिर या बुद्धि के होकर मत रह जाना। सिर या बुद्धि के साथ गलत कुछ भी नहीं है यदि वह तुम्हारी समग्रता में साथ कार्य करती है। गलत तब होता है जब वह एक भाग बनकर समग्रता पर नियंत्रण करना प्रारम्भ कर देती है। अपने सिर से उतार कर चेतना को नीचे पेट या नाभि पर ले जाओ। वापस लौटकर तुम होशपूर्ण बनो, कहीं अधिक भूमि या मिट्टी से जुड़ो।

बाउलों का यही संदेश है: अधिक प्रामाणिक और सच्चे बनो। जब तुम प्रामाणिक होते हो तो परमात्मा भी प्रामाणिक होता है; जब तुम सच्चे होते हो, तो परमात्मा भी सच्चा होता है—क्योंकि जब तुम सच्चे होते हो, तुम अस्तित्व के सत्य के साथ सम्पर्क बनाने में समर्थ होते हो। जब तुम प्रामाणिक होते हो तुम अचानक समग्र अस्तित्व के साथ लयबद्ध हो जाते हो। जब तुम नकली होते हो, तभी यह समस्या उठ खड़ी होती है कि परमात्मा अस्तित्व में है अथवा नहीं, इससे बस इतना ही प्रदर्शित होता है कि तुमने पूर्ण अस्तित्व के साथ लयबद्धता खो दी है। फिर से लयबद्ध हो जाओ, पंक्तिबद्ध होकर अस्तित्व की सीमा रेखा में फिर गिर पड़े। अधिक सच्चे और अधिक प्रामाणिक बनने के लिए वापस लौट आओ।

सभी धर्मों का भी यही पूरा संदेश है यदि वह धर्म, धर्म जैसा है। यही कारण है कि बुद्ध और महावीर परमात्मा के बारे में कुछ बात करते ही नहीं : वे कहते हैं : " सच्चे और प्रामाणिक बनो, और तुम परमात्मा ही हो जाओगे।" केवल सच्चे बनने से ही तुम सत्य के निकट आ जाते हो। यह बहुत सरल है। क्या तुम इतनी साधारण सी बात भी नहीं समझ पाते कि सच्चे बनने से ही तुम सत्य के निकट आ जाते हो?

विश्वास झूठा है, उधार का ज्ञान भी झूठा है। वह सभी कुछ गिरा दो जो उधार लिया हुआ है। कुछ समय के लिए तुम अपने को दीन होने का अनुभव करो क्योंकि तुम्हारी बटोरी गई जानकारी तुम्हें एक बहुत बड़ा अहंकार देती है, कि मैं जानता हूं। यह जानना, कि तुम कुछ भी नहीं जानते तुम कुछ दिनों तक बहुत निर्धन होने का अनुभव कर सकते हो, तुम्हें एक भिखारी जैसा होने का अनुभव हो सकता है। लेकिन यदि तुम पहले ही प्रामाणिक बनने को तैयार हो, तो अचानक एक दिन संवाद घटित हो जाता है। जब तुम उधार ली गई जानकारी को खो देते हो, तो तुम्हारे अंदर से कुछ चीज उमगती और जन्मती है जो न जाने कब से प्रतीक्षा कर रही थी। तुम्हारे अंदर ही से कुछ उठता है, कोई सुवास जैसा, जो तुम्हारी पूरी चेतना को सुवास से भर देता है। परमात्मा जो कुछ भी है वह यही है।

परमात्मा और कुछ भी नहीं है, बल्कि जीवन ही परमात्मा है। परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है। परमात्मा एक ऊर्जा है, तुम ही हो परमात्मा। परमात्मा ही वह ऊर्जा है जिससे वृक्ष वृक्ष है। सितारों में भी वही परमात्मा की ही ऊर्जा है। प्रत्येक वस्तु जिस सामग्री से बनी है, परमात्मा वही सामग्री और कच्चा माल है। परमात्मा सृष्टा न होकर सृष्टि है। इस क्षण भी तुम परमात्मा के ही सागर में हो, लेकिन वह तुम्हारे बहुत निकट है और तुम ही उससे बहुत दूर अपने सिर और बुद्धि में उलझे हो। बुद्धि को हृदय से जोड़ने वाले सेतु से ही तुम चूके जा रहे हो।

अंतिम प्रश्न: प्यारे ओशो! मैं आपके सम्बंध में इतना अधिक सनकी और पागल हूं कि मैं आपके पास कैसे आऊं?

इसी कारण मैं सनकी लोगों को आकर्षित करता हूं क्योंकि मैं स्वयं सनकी हूं। लेकिन सनकी अथवा पागल व्यक्ति बहुत सुंदर होते हैं। ये लोग ही संसार में केवल समझदार लोग है। बाउल शब्द का भी यही अर्थ है। बाउल का अर्थ होता है—बावरा दीवाना, पागल। मैं एक बाउल हूं और मैं बाउलों को ही अपनी ओर इसी कारण आकर्षित करता हूं।

आज इतना ही।

पांचवां प्रवचन

जीवन रहते हुए मरना

बाऊलगीत—
यह मनुष्य का शरीर जो श्वांस लेता है,
प्राणवायु पर ही जीवित रहता है।
और उसके पार वह अदृश्य दूसरा
जो पहुंच के बाहर है—
वह विश्राम करता है।
और दो के मध्य में
एक और मनुष्य रहस्य कडी की भांति गतिशील है
जिसका शरीर मन, हृदय और भावों का अनुसरण करता हुआ
आराधना ही में रत रहता है।
इन तीनों के बीच
यह एक लीला हो रही है
ओ मेरे खोजी हृदय!
तू किसे खोज रहा है?
जीवन और मृत्यु के दोनों द्वारों के मध्य
एक और द्वार भी है,
जिसे पूरी तरह स्पष्ट नहीं किया जा सकता।
क्योंकि वह मृत्यु के द्वार पर
फिर से जन्म लेने में समर्थ है,
और वह है शाश्वत प्रेम।
मृत्यु से पहले ही मर जाना
जीवित रहते हुए भी
मर जाने जैसा है।

धर्म अत्यंत ही जटिल चीज है। उसकी गढ़ता और जटिलता समझने जैसी है। यहां विश्व में कोई सात तरह के धर्म हैं। पहली तरह का धर्म अज्ञान से उद्‌भूत है। क्योंकि लोग अपने अज्ञान को बरदाश्त नहीं कर सकते, इसलिए वे उसे छिपाते हैं। यह मानना कठिन होता है कि कोई व्यक्ति कुछ भी नहीं जानता, यह अहंकार के विरुद्ध है। लोग विश्वास करते हैं। उनके विश्वास की पद्धति, उनके अहंकार की रक्षा करती है। यह सहायता भी करती है लेकिन बहुत दूर तक जाने में यह बहुत हानिकारक है। प्रारम्भ में यह विधि सुरक्षा करती दिखाई देती है, लेकिन अंतिम रूप से यह बहुत विध्वंसक है। इसका मूल स्रोत ही अज्ञान में है।

धर्म एक रोशनी है, एक प्रकाश है, धर्म एक समझ है, धर्म है—होशपूर्ण रहना और धर्म है एक प्रामाणिकता। लेकिन मनुष्यता का बहुत बड़ा भाग इस पहली तरह के ही धर्म में रहता है। यह केवल वास्तविक

यथार्थ को टालना भर है; यह उस रिक्तता को झुठलाना भर है जो व्यक्ति अपने अस्तित्व में महसूस करता है और यह अपने अज्ञान की अंधेरी काली खाई से बचने का प्रयास भर है।

पहली तरह के धर्म के लोग कट्टर और उन्मादी होते हैं। वे यह भी बरदाश्त नहीं कर सकते कि संसार में दूसरी तरह के धर्म भी हो सकते हैं। उनका धर्म ही केवल मात्र धर्म है, क्योंकि वे अपने अज्ञान से इतने अधिक डरे हुए हैं कि यदि यहां कोई दूसरा धर्म भी है, तो वे संदेही हो सकते हैं तब उनके अंदर संदेह उठ सकता है। तब वे इतने अधिक निश्चित नहीं हो सकेंगे। निश्चयात्मकता प्राप्त करने के लिए ही वे बहुत अधिक दुराग्रही बन जाते हैं, पागलपन की सीमा तक हठी बन जाते हैं। वे दूसरे धर्मों के शास्त्र पढ़ नहीं सकते, वे सत्य के सम्बंध में दूसरे के मतों और नाजुक मत भेदों को सुन तक नहीं सकते, वे दूसरे लोगों के परमात्मा के बाबत रहस्यों और ज्ञान को बरदाश्त नहीं कर सकते। उनका परमात्मा ही एकमात्र परमात्मा है और उनके लिए उनका पैगम्बर ही केवलमात्र अकेला पैगम्बर है। इसके अतिरिक्त प्रत्येक चीज को वे पूरी तरह नकली मानते हैं। ये लोग पूर्ण और बेशर्त होने की भाषा में बात करते हैं, जब कि एक समझदार व्यक्ति सदैव तुलनात्मक होता है।

इन लोगों ने धर्म को बहुत अधिक हानि पहुंचाई है, क्योंकि इन्हीं लोगों के कारण धर्म अपने आपमें थोड़ा मूढ़तापूर्ण दिखाई देता है।

याद रहे, तुम्हें इस पहली तरह के धर्म का शिकार नहीं बनना है। लगभग नब्बे प्रतिशत मनुष्यता पहली तरह के धर्म में ही रहती है, और यह किसी भी तरह से अधर्म की अपेक्षा बेहतर स्थिति नहीं है। यह इससे भी निकृष्ट हो सकती है— क्योंकि एक अधार्मिक व्यक्ति हठी या दुराग्रही तो नहीं होता। एक अधार्मिक व्यक्ति कहीं अधिक खुला हुआ होता है, कम से कम दूसरों को सुनने के लिए तैयार होता है; वह सभी बातों पर तर्क वितर्क करने, बातचीत करने, उसे खोजने और जांच करने के लिए तैयार रहता है; लेकिन पहली तरह के धार्मिक लोग कुछ भी सुनने तक को तैयार नहीं होते।

जब मैं विश्वविद्यालय में एक छात्र था, तो मैं अपने एक मित्र प्रोफेसर के साथ ठहरा करता था। उनकी मां कट्टर हिंदू थीं, पूर्ण रूप से अशिक्षित, लेकिन बहुत अधिक धार्मिक। एक दिन जाड़े की रात में, जब कमरे के आतिशदान में आग जल रही थी, मैं ऋग्वेद पड़ रहा था। इतने में वे मेरे पास आकर बोलीं—'' तुम इतनी देर रात तक आखिर क्या पढ़ रहे हो?" केवल उन्हें चिढ़ाने के लिए मैंने कहा—'' मैं कुरान पढ़ रहा हूं।'' मेरे ऊपर जैसे उछल कर उन्होंने मुझसे ऋग्वेद छीन कर आतिशदान में जलती हुई आग में फेंक दिया और क्रोधित होकर मुझसे प्रश्न किया—'' क्या तुम मुसलमान हो?" तुमने मेरे घर में कुरान लाने का साहस कैसे किया?"

अगले दिन मैंने उनके पुत्र अर्थात् अपने मित्र प्रोफेसर से कहा—'' आपकी मां तो मुसलमान लगती हैं— क्योंकि इस तरह की चीज तो अभी तक केवल मुसलमानों के द्वारा की जाती रही है।

मुसलमानों ने विश्व का सबसे अधिक बड़ा और मूल्यवान पुस्तकों का खजाना सिकंदरिया का पूरा पुस्तकालय ही जला दिया। उस पुस्तकालय में विश्व की प्राचीन सभ्यता की बहुमूल्य विरासत थी। वह पुस्तकालय इतना विशाल था कि उसमें लगाई आग छ: महीने तक जलती रही। उसकी पुस्तकों को पूरी तरह जलने में छ: माह लगे। और जिस व्यक्ति ने उसे जलवाया, वह एक मुसलमान खलीफा था। उसका तर्क, पहली तरह के धर्म का तर्क है। वह अपने एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में जलती हुई मशाल के साथ, पुस्तकालयाध्यक्ष के सामने आकर बोला— " मेरा एक सरल सा प्रश्न है। इस विशाल पुस्तकालय में लाखों करोड़ों पुस्तकें है..... "

उन पुस्तकों में वह सब कुछ था, जो मनुष्यता ने उस समय तक जाना और सीखा था, और वास्तव में उसमें उससे कहीं अधिक ज्ञान था जितना हम अब जानते है।

उस पुस्तकालय में लीमूरिया और अटलांटिस के सम्बंध में प्रत्येक सूचना थी और अटलांटिस की उस सभ्यता के पूरे शास्त्र और ग्रंथ थे, और वह सम्यता और पूरा महाद्वीप, अटलांटिक महासागर के गर्भ में समा गये। वह सर्वाधिक प्राचीनतम पुस्तकालय था; जिसमें उस समय तक के सभी ग्रंथों को सुरक्षित रखा गया था। यदि वह अभी भी रही होती, तो आज मनुष्यता पूरी तरह भिन्न होती—क्योंकि हम अभी भी उन चीजों की खोज कर रहे हैं, जो पहले ही खोजी जा चुकी थीं।

इस खलीफा ने कहा—'' यदि इस पुस्तकालय की सभी पुस्तकों में वह ज्ञान उपलब्ध है जो कुरान में है तब इन पुस्तकों की कोई आवश्यकता नहीं, यह आवश्यकता से अधिक है। यदि इनमें कुरान से अधिक कुछ है, तो वह गलत है।''

तब उसको तुरंत नष्ट करना जरूरी है। हर तरह से उसे नष्ट किया ही जाना था। यदि उसमें वह सब कुछ है, जो कुरान में है तब वह आवश्यकता से अधिक है। फिर अनावश्यक रूप से इतने बडे पुस्तकालय का प्रबंध किए जाने की जरूरत क्या? एक कुरान ही काफी है। और यदि तुम कहते हो कि उसमें कुरान से भी कहीं अधिक चीजें और ज्ञान है, तो उस सभी को गलत होना ही चाहिए क्योंकि कुरान ही सर्वोच्च सत्य है।

एक हाथ में कुरान और दूसरे हाथ में जलती मशाल लेकर, उसने कुरान के नाम पर पुस्तकालय में आग लगाना शुरू किया। उस दिन बहिश्त में मुहम्मद जरूर बहुत रोये और बिलखे होंगे, क्योंकि उनके ही नाम पर उस पुस्तकालय को जलाया जा रहा था। यह है—पहली तरह का धर्म। सदैव सजग बने रहो, क्योंकि प्रत्येक मनुष्य में ऐसा ही हठी और दुराग्रही मनुष्य बैठा हुआ है।

कल रात मैं पढ़ रहा था.....

दो असाधारण रूप से झक्की और दुराग्रही बूढों की एक जैसी ही ख्याति थी। जब वे दोनों किसी भी स्थिति में एक दूसरे से आमने—सामने उलझ जाते थे, जहां किसी एक को झुकाना होता था। तो प्राय: मामले को सुलझाने के लिए तीसरे व्यक्ति को दखल देना होता था। एक दिन ये दोनों जिद्दी के, सूखी घास के ढेर को अपनी अपनी गाड़ी पर लादे हुए एक तंग रास्ते पर मिले। दोनों ने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वे एक दूसरे की गाड़ी को गुजरने के लिए एक इंच जगह भी न देंगे।

अंत में एक बूढ़े से दूसरे से कहा—'' मैं यहां उतनी अवधि तक प्रतीक्षा करने को तैयार हूं जितनी देर तक तुम प्रतीक्षा कराना चाहते हो।'' इतना कहकर उसने अपना अखबार निकाला और उसे पढ़ना शुरू कर दिया।

दूसरे बूढ़े ने अपने पाइप में तम्बाकू भरी और बहुत संतोष के साथ धुंआ उडाने लगा। आधे घंटे की खामोशी के बाद वह आगे की ओर झुककर, पड़ोस में बैठे के से बोला—'' जब तुम अखबार पूरा पढ चुको तो क्या उसे पढ़ने के लिए मुझे देने में आपको कोई आपत्ति तो नहीं होगी?''

इस तरह का दुराग्रही और हठी मनुष्य, प्रत्येक मनुष्य के अंदर ही रहता है। और यह मनुष्य जाति की सबसे निम्नतम कोटि है। ऐसा मनुष्य हिंदुओं में भी है, मुसलमानों, ईसाइयों, बौद्धों और जैनों में भीं—ऐसा मनुष्य प्रत्येक मनुष्य के अंदर ही निवास करता है और प्रत्येक मनुष्य को इस जाल में न फंसने के प्रति सावधान और सजग रहना है। केवल तभी तुम उच्चतम तलों के धर्मों की ओर उन्मुख हो सकोगे। इस पहली तरह के धर्म के साथ समस्या यह है कि हम लोग लगभग इसी में पले बड़े हैं। हम लोग उसके आदी हो गए हैं, इसलिए वह लगभग सामान्य जैसे लगने लगा है। वह हमारा ढांचा बन गया है। एक हिंदू इस विचार के साथ पाला— पोसा जाता है कि दूसरे सभी धर्म गलत हैं। यदि उसे सहनशील बनना भी सिखाया जाए तो वह सहनशीलता उस व्यक्ति की अपनी होती है जिससे वह उन दूसरों के बाबत जानता है जो उसे नहीं जानते। एक जैन पूरी तरह से इस विश्वास के साथ पाला—पोसा जाता है कि केवल वह ही ठीक है और अन्य सभी दूसरे लोग अज्ञानी है। वे

ठोकरें खा रहे हैं और अंधेरे में टटोल रहे हैं। यह अनुशासन और आदतें तुम्हारे अंदर इतनी गहराई से प्रविष्ट हो जाती हैं। कि तुम यह भी भूल सकते हो कि ये सभी थोपे गये संस्कार और आदतें हैं और तुम्हें उनसे ऊपर उठना है।

मुल्ला नसरुद्दीन अपने एक मित्र को उसकी हाथ की रेखाएं देखकर उसका भविष्य बतला रहा था। उसने कहा—'' तुम निर्धन, दुखी और अप्रसन्न ही बने रहोगे जब तक कि तुम साठ वर्ष के नहीं हो जाते।''

तब उसके मित्र ने आशान्वित होकर पूछा—'' तब उसके बाद क्या होगा?'' नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' उस समय तक तुम उस सभी के अभ्यस्त हो चुके होगे।''

यही समस्या है, कोई भी व्यक्ति एक निश्चित अनुशासन और आदतों के ढांचे का अभ्यस्त हो जाता है और यह सोचना शुरू कर देता है, जैसे मानो वही उसका स्वभाव हो, अथवा जैसे मानो वही सत्य हो।

इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने अंदर इस सबसे निम्न सम्भावना को खोजते समय बहुत सजग और सचेत होना चाहिए जिससे वह उसके जाल में पकड़ा न जा सके।

कभी—कभी हम अपने जीवन को रूपांतरित करने के लिए कठिन कार्य करते हैं और हम पहली तरह के धर्म में ही विश्वास किए चले जाते हैं। तब किसी क्रांति होने की सम्भावना नहीं है। क्योंकि तुम ऐसी चीज को पाने का प्रयास कर रहे हो जो बहुत निम्न तल की है, और वह वास्तव में धार्मिक नहीं हो सकती। पहली तरह का यह धर्म, केवल नाममात्र का ही धर्म है; उसे धर्म कहकर पुकारना ही गलत है।

एक मनुष्य दूसरे से कह रहा था—'' मेरा डॉक्टर दामाद एक पीलिया से पीले पड़े मनुष्य का पिछले बीस वर्षों से इलाज कर रहा है। आखिर उसने यह खोज की कि वह व्यक्ति चीनी था।''

दूसरे व्यक्ति ने कहा—'' आखिर वास्तविकता भी तो कोई चीज है? और कितनी भयानक बात है कि उसने उसे ठीक कर दिया।''

किसी व्यक्ति का बीस वर्षों तक पीलिया रोग का इलाज किए जाना, जो एक चीनी भी हो सकता है, लेकिन वह कितने समय तक उस इलाज से अपनी रक्षा कर सकता है? यदि तुम निरंतर एक गलत दृष्टिकोण से स्वयं अपने ऊपर कार्य करते रहो, तो तुम अपनी प्रकृति और स्वभाव छोड़ते चले जाओगे। तुम उसी तरह से कार्य करना शुरू कर दोगे, जिस तरह से तुम कार्य करना चाहते हो। हां! तुम्हारी आदत ही तुम्हारा दूसरा स्वभाव या प्रकृति बन सकती है। दुर्भाग्य से वह कभी—कभी पहला स्वभाव बन जाता है, और मूल प्रकृति पूरी तरह भुला दी जाती है।

पहले तरह के धर्म का प्रमुख गुण है कि वह अनुकरण करने को कहता है। वह अनुकरण करने का आग्रह करता है: बुद्ध का अनुकरण करो, जीसस का अनुकरण करो, महावीर का अनुकरण करो लेकिन अनुकरण अवश्य करो। किसी भी व्यक्ति का अनुकरण करो। स्वयं के होकर मत रहो, किसी और जैसे बनो। और यदि तुम बहुत अधिक जिद्दी और हठी हो तुम अपने आपको किसी और जैसा बनने को विवश कर सकते हो।

तुम किसी दूसरे व्यक्ति जैसे कभी न हो सकोगे। अपने गहरे में तुम वैसे हो ही नहीं सकते। तुम वैसे ही बने रहोगे, लेकिन तुम अपने आप पर बल प्रयोग कर सकते हो जिससे तुम लगभग किसी दूसरे जैसे दिखना शुरू हो जाओगे।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी अनूठी निजता के साथ जन्म लेता है और प्रत्येक व्यक्ति की एक अपनी अलग नियति होती है। अनुकरण करना अपराध है, यह अपराधी होने जैसा है। यदि तुम बुद्ध बनने का प्रयास करते हो, तुम बुद्ध की नकल तो कर सकते हो; बुद्ध जैसे दिखाई भी दे सकते हो, बुद्ध की तरह चल भी सकते हो, उनकी ही तरह बातचीत भी कर सकते हो, लेकिन तुम चूक जाओगे।

तुम जीवन में वह सभी कुछ चूक जाओगे, जो वह तुम्हें देने के लिए तैयार है। क्योंकि बुद्ध केवल एक बार ही होते हैं, प्रकृति कभी अपने आपको दोहराती नहीं है। परमात्मा इतना अधिक सृजनात्मक है कि वह कभी भी किसी चीज को दोहराता नहीं। तुम वर्तमान में, अतीत में अथवा भविष्य में भी ठीक अपने जैसा कोई दूसरा मनुष्य नहीं खोज सकते। ऐसा आज तक कभी हुआ ही नहीं। मनुष्य होना कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है। वह फोर्ड की कारों की तरह नहीं है, जिनके पुर्जे जोड़कर तुम ठीक एक जैसी लाखों कारों का उत्पादन कर सको। मनुष्य के पास अपनी आत्मा है, वह वैयक्तिक है। अनुकरण करना विष तुल्य है। कभी किसी का भी अनुकरण करना ही नहीं; अन्यथा तुम पहली कोटि के धर्म का शिकार बन जाओगे, जो अपने आप में किसी भी तरह धर्म है ही नहीं।

तब वहां धर्म की एक दूसरी कोटि है। दूसरी श्रेणी का धर्म भय पर आधारित है। मनुष्य भयभीत है, यह संसार उसके लिए एक अजनबी संसार है, और मनुष्य सुरक्षित होना चाहता है, सुरक्षा चाहता है। बचपन में माता और पिता सुरक्षा करते हैं। लेकिन यहां ऐसे लाखों लोग हैं जो अपने बचपन के पार जाकर आगे कभी विकसित ही नहीं हो पाते। वे वहीं अटक कर रह जाते हैं; और वे अभी भी अपने माता और पिता की जरूरत महसूस करते है। इसीलिए वे परमात्मा को परमपिता अथवा मातृशक्ति कहकर पुकारते है। उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए एक दैवी—पिता की आवश्यकता महसूस होती है; क्योंकि वे स्वयं अभी तक यथेष्ट परिपक्व या विकसित नहीं हो सके हैं। उन्हें किसी सुरक्षा की जरूरत है।

एक मनोवैज्ञानिक विन्नीकोट, जो कई वर्षों से छोटे बच्चों की एक विशिष्ट समस्या पर कार्य कर रहा था, उसने बहुत सी सुंदर चीजें खोजी। उनका उल्लेख करना प्रसंगानुकूल है।

तुमने छोटे बच्चों को अपने ' टेडी बियर ' अथवा अपने प्रिय किसी विशिष्ट खिलौने, अथवा किसी गुड्डे, गुड़िया कम्बल अथवा किसी ऐसी चीज के साथ खेलते और उसे निरंतर साथ रखते देख होगा; जिसका व्यक्तित्व उसके लिए विशेष अर्थपूर्ण है। ' टेडी बियर ' अर्थात् छोटे भालू का खिलौना ही लो, जिस बच्चे को वह प्रिय होता हे, तुम उसे किसी दूसरे से बदल नहीं सकते। तुम उससे कह सकते हो कि हम इससे कहीं अच्छा दूसरा खिलौना ला देंगे, लेकिन उससे कोई भी फर्क नहीं पड़ता। बच्चे का उसी टेडी बियर के खिलौने के साथ एक प्रेम सम्बंध जुड़ जाता है। उसका अपना ' टेडी बियर ' ही अनूठा होता है, तुम उसे किसी दूसरे से बदल नहीं सकते। वह गंदा हो जाता है, फट जाता है, उससे गंध आने लगती है, लेकिन बच्चा उसे ही हमेशा अपने साथ रखता है। तुम उसके स्थान पर कोई दूसरा नया खिलौना लाकर उसे हटा नहीं सकते। माता—पिता को उसे बरदाश्त करना ही होता है।

यहां तक कि उसे सम्मान भी देना पड़ता है, अन्यथा बच्चा नाराज होकर रूठ जाना है। यदि माता—पिता, बच्चे के साथ यात्रा पर बाहर भी जाते हैं, तो भी उन्हें टेडी बियर को बरदाश्त करते हुए उससे लगभग परिवार के एक सदस्य जैसा व्यवहार भी करना होता है। वे जानते हैं कि ऐसा करना बेबकूफी है लेकिन बच्चे के लिए वह बहुत महत्त्वपूर्ण है।

उस बच्चे के लिए ' टेडी बियर ' का आखिर क्या महत्त्व है? बच्चे के बाहर के संसार में वह वास्तविक यथार्थ का एक भाग है। निश्चय ही वह मात्र एक कल्पना नहीं है; वह एक वैयक्तिकता मात्र भी नहीं हैं; और न वह एक सपना है, क्योंकि यथार्थ में वह वहां है। लेकिन वह समग्र रूप से वहां नहीं है; क्योंकि बहुत से बच्चों के उसके साथ सपने जुड़े हैं। वह एक वस्तु हैं, पदार्थगत है लेकिन उसके साथ बहुत अधिक वैयक्तिकता भी जुड़ी हुई है। बच्चे के लिए तो वह जैसे जीवंत है। बच्चे ने उस ' टेडी बियर ' में बहुत सी चीजें प्रक्षेपित कर रखी हैं। वह ' टेडी बियर ' से बातचीत करता है, कभी—कभी उससे नाराज होकर उसे दूर फेंक भी देता है और तब यह कहते हुए—मुझे अफसोस है। उसे वापस उठा लाता है। उसके पास लगभग मनुष्य जैसा एक व्यक्तित्व है। बिना ' टेडी

बियर ' के वह सो नहीं सकता। उसे पकड़कर हृदय से लगाकर ही वह सोने जाता है और अपने को सुरक्षित महसूस करता है। ' टेडी बियर ' के साथ रहते हुए उसके लिए संसार ठीक है, उसकी हर चीज ठीक है। बिना टेडी बियर के वह अचानक अपने को अकेला पाता है।

इसलिए ' टेडी बियर ' के अस्तित्व का पूरी तरह से एक नया आयाम है; जो न तो काल्पनिक या वैयक्तिक है और न वस्तुगत। विन्नीकोट इसे अंतरिम या क्षणिक क्षेत्र कहता है जो थोड़ा—सा पदार्थगत है और थोड़ा सा वैयक्तिक। बहुत से बच्चे शरीर से तो विकसित हो जाते हैं, लेकिन उनका आत्मिक रूप से कोई विकास नहीं होता, और उन्हें अपने पूरे जीवन में अपने टेडी बियर की जरूरत बनी रहती है। मंदिरों में तुम्हारे परमात्मा की मूर्ति और कुछ भी नहीं, वह ' टेडी बियर ' ही है। इसीलिए जब एक हिंदू हिंदू मंदिर में जाता है, वह कुछ ऐसा देखता है वहां, जो एक मुसलमान नहीं देख सकता। मुसलमान तो केवल पत्थर की एक मूर्ति ही देख पाता है। हिंदू कुछ ऐसी चीज देखता है वहां, जो कोई दूसरा नहीं देख पाता, क्योंकि मूर्ति उसका टेडी बियर ही है। एक वस्तु के रूप में तो वह वहां है ही, लेकिन वह पूरी तरह पदार्थगत नहीं है। उसमें पूजा करने वाले की काफी अधिक वैयक्तिक भी प्रक्षेपित है, जो एक स्क्रीन या सिनेमा के पर्दे की भांति कार्य करती है।

तुम एक जैन मंदिर में जाते हो। तुम एक हिंदू हो सकते हो, लेकिन जैन मंदिर में श्रद्धा उठने जैसी तुम किसी भी बात का अनुभव न करोगे। कभी—कभी तुम थोड़ी सी नाराजगी भी महसूस कर सकते हो, क्योंकि महावीर अपनी मूर्ति में बिलकुल नग्न खड़े हैं। तुम किसी सम्मान जैसी चीज का अनुभव न करते हुए जितनी शीघ्रता से संभव हो सके, बाहर निकलना चाहोगे। लेकिन तभी वहां एक जैन अत्यधिक सम्मान की भावना के साथ आता है, क्योंकि वह मूर्ति ही उसका टेडी बियर है और वहां बहुत सुरक्षा का अनुभव करता है।

इसलिए जब कभी भी तुम भयभीत होते हो, तुम परमात्मा का स्मरण करना शुरू कर देते हो। तुम्हारा परमात्मा तुम्हारे भय का बाई—प्रोडक्ट है, वह भय से ही स्वत:— उत्पन्न हुआ है। जब तुम अच्छा महसूस करते हो और भयभीत नहीं होते, तुम कोई फिक्र करते ही नहीं। वहां उसकी कोई जरूरत ही नहीं है।

तो दूसरी तरह का धर्म भय की ओर उन्मुख है। यह बहुत रुग्ण है, यह लगभग मानसिक बीमारी जैसा है क्योंकि तुममें परिपक्वता केवल तभी आती है, जब तुम यह महसूस करते हो कि तुम अकेले हो और तुम्हें अकेला ही रहना है, और तुम्हें वास्तविक यथार्थ या सत्य जो कुछ भी वहां है, उसका सामना करना है। ये क्षणभंगुर टेडी—बियर या मूर्तियां केवल तुम्हारी ही कल्पनाऐं है और वे तुम्हारी सहायता नहीं कर सकेंगी। यदि कुछ भी होने जा ही रहा है, तो वह होगा ही, ये टेडी बियर तुम्हारी रक्षा न कर सकेंगे। यदि मृत्यु होने जा रही है तो वह होगी ही। तुम परमात्मा को पुकारते ही जाओ, पर तुम्हारे पास सुरक्षा आने से रही। तुम केवल भयभीत होने के कारण ही उसे पुकार रहे हो, जब कि वास्तव में तुम किसी को भी नहीं पुकार रहे हो।

हो सकता है, जोर जोर से बुलाना, तुम्हें थोड़ा साहस देता हो। हो सकता है तुम प्रार्थना कर रहे हो..... प्रार्थना तुम्हें एक निश्चित साहस देती है, लेकिन उत्तर देने के लिए वहां कोई परमात्मा है नहीं। वहां ऐसा कोई भी नहीं है, जो तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दे। लेकिन यदि तुम्हारा ऐसा कोई खयाल है कि वह है वहां, जो तुम्हारी प्रार्थना का उत्तर दे, तो तुम्हें इस विचार से थोडा सा सुकून और शांति मिलती है।

एक बार मैंने देखा कि मुल्ला नसरुद्दीन बहुत भक्तिभाव से प्रार्थना कर रहा है। जब वह अपनी नमाज खत्म कर चुका तो मैंने उससे पूछा—'' मुल्ला! लगता है तुम जरूर किसी समस्या से जूझ रहे हो और इसीलिए इतनी गहरी भक्ति से प्रार्थना कर रहे थे। कृपया तुम मेरे एक प्रश्न का उत्तर दो, क्या कभी तुम्हारी प्रार्थना सुनी गई और उसका उत्तर तुम्हें मिला?" उसने उत्तर दिया—'' हां! एक तरह से या दूसरी तरह से।''

लेकिन यदि प्रार्थना का उत्तर एक तरह से या दूसरी तरह से मिलता है तो इसमें खास बात क्या है। हां! कभी—कभी वह तथ्यों के साथ घट जाती है और कभी यह तथ्यों के साथ नहीं भी घटती, लेकिन तुम्हारी प्रार्थना से तथ्य ज्यों के त्यों बने रहते हैं, उनमें कुछ भी फर्क नहीं पड़ता। इससे तुम्हारे मन में थोडा सा फर्क जरूर पड़ता है, पर वास्तविकता में कोई अंतर नहीं पड़ता।

भय पर आधारित या उससे उद्‌भूत धर्म,' मत करो ' वाला धर्म है, यह मत करो, वह मत करो—क्योंकि भय नकारात्मक है। मूसा के दस आदेश, ये सभी भय पर आधारित हैं—यह मत करो, वह मत करो—सुरक्षा के लिए अपने आप में बंद होकर रह जाओ, कभी कोई जोखिम मत उठाओ, कभी किसी खतरनाक रास्ते की ओर बढ़ो ही मत, और वास्तव में अपने आप को जीवंत बने रहने की अनुमति ही मत दो। ठीक जैसे कि पहली कोटि का धर्म, मूढ़तापूर्ण और उन्मादी था, दूसरी कोटि का धर्म भी वैसा ही नकारात्मक है। यह तुम्हें एक विशेष तरह की जकड़न और बंधन देता है। इसमें बचपना है। यह सुरक्षा की खोज के लिए है, जो कहीं भी सम्भव है ही नहीं, क्योंकि जीवन का अस्तित्व असुरक्षा में ही है। परमात्मा का अस्तित्व जैसे एक असुरक्षा, खतरा और जोखिम भरा है।

भयोम्मुख धर्म की कुंजी है—नर्क जैसा शब्द और वास्तव में दमन, निरंतर दमन, यह मत करो। दूसरी कोटि के धर्म का मनुष्य हमेशा भयभीत रहता है—क्या खाया जाये, क्या न खाया जाये, उस स्त्री से प्रेम किया जाये अथवा न किया जाये, वह घर बनाया जाये या न बनाया जाये। और तुम जिस चीज का भी दमन करते हो, तुम उससे कभी भी मुक्त नहीं हो सकते और वास्तव में अधिक से अधिक तुम उसकी शक्ति के शिकंजे में होते हो। क्योंकि जब तुम किसी चीज का दमन करते हो तो वह तुम्हारे अचेतन में गहरे चली जाती है। वह तुम्हारी जड़ों तक पहुच कर तुम्हारे पूरे अस्तित्व को विषमय बना देती है।

मैंने सुना है: एक वृद्ध व्यक्ति, जो प्रत्येक कार्य समय देखकर नियमित रूप से करता था, पहली बार एक फिल्म देख रहा था। वह बहुत ही धार्मिक मनुष्य के रूप में जाना जाता था, जो अपनी प्रार्थनाएं नियमित रूप से किया करता था, अपने सभी कर्तव्यों का पूरी तरह निर्वाह करता था और ऐसा कहा जाता था कि वह कभी भी समस्या उत्पन्न करने वाली किसी भी स्थिति में कभी भी पड़ा ही नहीं।

संक्षेप में वह बहुत सरल व्यक्ति था—लेकिन अंदर से वह इतना सरल नहीं था। फिल्म में एक स्थान पर कई सुंदर लड़कियों का झुंड स्क्रीन पर आता दिखाई दिया। तैरने के तालाब तक पहुंचने के लिए उन्होंने रेल की पटरी पार की और तरणताल पर पहुंच कर गोताखोरी के लिए वे अपने कपड़े उतारने लगीं। पहले उन्होंने अपने जूते खोले, मोजे अलग किये फिर अपनी कमीजें और स्कर्ट उतारीं और बस वह आगे कुछ और उतारने जा रही थीं..... तभी एक मालगाड़ी तीव्र गति से धड़धड़ाती हुई स्क्रीन पर प्रकट हुई और वह दृश्य छिप गया। जब मालगाड़ी गुजर गई, तो अगले दृश्य में लड़कियों को पानी में उछलते कूदते और खेलते हुए दिखलाया गया।

समय के पाबंद उस बूढ़े व्यक्ति ने उस फिल्म को बार—बार कई बार देखा। आखिरकार गेटकीपर ने उसके कंधे को थपथपा कर उससे पूछा—'' क्या आपको अपने घर नहीं जाना है?"

समय के पाबंद उस वृद्ध ने उत्तर दिया—'' मैं यह सोच रहा था कि कभी तो वह वक्त आयेगा जब यह रेलगाड़ी लेट हो जायेगी।''

अपने अंदर गहरे में तुम हमेशा वह साथ लिए चलते हो, जिसका तुमने दमन किया है। तुम धर्म का अनुसरण एक संस्कार की भांति करते हो, लेकिन वह तुम्हारा हृदय कभी भी नहीं बनता।

मैंने एक घटना के बाबत सुना है: सदियों तक योरोप में बसे यहूदियों को संगठित दण्ड का शिकार बनना पड़ा जिसे सामूहिक अत्याचार, मारपीट अथवा ' पोगरोम ' कहा जाता था। यह दण्ड देने की प्रक्रिया प्राय: हुआ करती थी अत: यहूदियों में उसके प्रति एक मजाक की भावना विकसित हो गई।

पौलैण्ड के एक छोटे से कस्वे में सिपाहियों ने आस्ट्रोवस्की के घर में जबरन प्रवेश किया। उसके परिवार में उसके साथ उसकी पत्नी, तीन लड़कियां, दो पुत्र और उसकी वृद्ध धार्मिक मां भी थी। उसकी प्रसिद्धि चारों ओर एक संत जैसी थी। सिपाहियों का सार्जेन्ट चीखते हुए बोला—'' सभी लोग एक लाइन में खडे हो जाओ। हम सभी पुरुषों को मारते—मारते अधमरा कर देंगे और सभी स्त्रियों के साथ बलात्कार करेंगे।''

ओस्ट्रोवस्की ने गुहार लगाते हुए कहा—'' जरा रुकिये श्रीमान! आप मुझे और मेरे बेटों को चाहे जितना भी मारें पीटें, मेरी पत्नी और लड़कियों को चाहे जैसे भी गाली गलौज कर अपमानित करें लेकिन मेरी प्रार्थना है कि मेरी मां के साथ बलात्कार न करें।

वह पछत्तर वर्ष की वृद्धा है और बहुत धार्मिक है।''

वृद्ध महिला चीखते हुए बोली—'' शटअप! तुम खामोश रहो। आखिर ' पोगरोम ' तो एक ' पोगरोम ' ही होता है।''

स्मरण रहे, दमन, स्वतंत्रता की ओर ले जाने वाला मार्ग नहीं है। दमन करना अथवा अपने भावों को रोकना, उन्हें शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करने से भी कहीं अधिक बुरा है, क्योंकि शब्दों द्वारा अभिव्यक्ति से उस मनुष्य को एक न एक दिन उससे मुक्त हो ही जाना है, लेकिन दमन के द्वारा मनुष्य के मन में वह चीज हमेशा घुमड़ती और घूमती ही रहती है। केवल जीवन ही तुम्हें स्वतंत्रता देता है। एक जिया हुआ जीवन ही तुम्हे स्वतंत्रता देता है, और बिना जिया हुआ जीवन आकर्षक बना रहता है, और तुमने जिन भावों का दमन किया है, वे मन में घूमते ही रहते हैं।

तिरासी वर्ष के विधुर स्थूलोवित्व ने मियामी बीच स्थित वृद्धाश्रम में रहने से साफ इंकार करते हुए अपने पुत्र के सामने घोषणा करते हुए कहा—'' मैं कोई भी चीज खा ही नहीं सकता, जब तक यहूदी की धार्मिक विधि ' कोशर ' पद्धति से उसे तैयार न किया जाए।''

उसका पुत्र कई हफ्ते ऐसा स्थगन खोजता रहा और अंत में उसे एक ऐसा स्थान मिल ही गया जहां यहूदियों के धार्मिक नियमों के अनुसार भोजन ' सर्व ' किया जाता था। उसने अपने पिता को उसी वृद्ध निकेतन में भेज दिया जहां ' कोशर ' विधि से तैयार भोजन ही उसके पिता को परोसा जाए और उनकी भावनाओं की रक्षा हो सके।

तीन दिनों बाद उसके पुत्र को ज्ञात हुआ कि वृद्ध महाशय, वृद्ध—निकेतन छोड्कर होटल फाउन्टेनब्यू चले गए हैं। उसका पुत्र होटल मैनेजर से पिता के कमरे की चाभी लेकर, सीढ़ियां चढ़कर उनके कमरे में दरवाजा खोलकर जा पहुंचा और देखा कि उसके पिता भूरे बालों वाली एक सुंदरी के साथ पलंग पर लेटे हैं और वे दोनों पूरी तरह नग्र हैं।

उलझन में पड़े लड़के ने प्रश्न किया—'' पापा! आपने ऐसा क्यों किया?" वृद्ध महाशय ने उत्तर दिया—'' लेकिन यह तो देखो जरा, मैं इस होटल का भोजन नहीं ले रहा हूं।''

जो लोग भयवश संस्कारों के द्वारा जीवन जीते हैं वे एक चीज से तो दूर रह सकते हैं, लेकिन वे किसी दूसरे जाल में फंस जाते हैं, क्योंकि उनके पास उनकी अपनी समझ नहीं है। वह केवल भय से उत्पन्न हुई समझ है। वे उससे डरे हुए हैं कि उन्हें नर्क में जाना होगा।

एक सच्चा धर्म तुम्हें निर्भयता देता है, बस इसी को मापदण्ड बना लो। यदि धर्म तुम्हें भय देता है, तब वास्तव में वह धर्म है ही नहीं।

तीसरी कोटि का धर्म, लोभ से उत्पन्न होता है।

लोभ से उत्पन्न धर्म कहता है—' यह करो '। और जैसे भय से उत्पन्न होने वाले धर्म की कुंजी है—नर्क जैसा शब्द, तो लोभ से जन्म धर्म की कुंजी है—स्वर्ग का शब्द। प्रत्येक कार्य इस तरह से करना है, जिससे इस संसार के पार दूसरा संसार पूरी तरह सुरक्षित रहे, और मृत्यु के बाद भी तुम्हारी प्रसन्नता और सुख की पूरी गारंटी हो।

' यह करो ', ऐसे करो ' अथवा लोभ से जन्मा धर्म औपचारिक संस्कार गुस्त, महत्त्वाकांक्षी और कामनाओं की ओर उन्तुख होता है। वह कामनाओं से भरा हुआ होता है। मुसलमानों, ईसाइयों और हिंदुओं के स्वर्ग की अवधारणाओं को जरा गौर से देखो। उनकी मात्रा और डिग्री में अंतर हो सकता है, लेकिन यह बहुत अद्‌भुत बात है यह सभी लोग अपने इस जीवन में जिन चीजों से इंकार किए चले जाते हैं, वे बड़ी मात्रा में उन सभी चीजों की स्वर्ग से सुविधाएं चाहते हैं। स्वर्ग को पाने के लिए यहां इस जीवन में तुम्हें ब्रह्मचर्य से रहना होगा, तभी वहां सोलह वर्ष की आयु पर रुक जाने वाली चिर युवा सुंदर अप्सराएं तुम्हें उपलब्ध होंगी। मुसलमान कहते हैं—'' यहां शराब का सेवन मत करो, लेकिन स्वर्ग में शराब की नदियां बह रही हैं। चिंता करने की कोई बात नहीं।''

लेकिन यह सब कुछ बकवास लगता है। यदि यहां कोई भी चीज गलत है, तो वह गलत ही है। वह स्वर्ग में कैसे ठीक और अच्छी हो सकती है? तभी उमर खैय्याम ठीक ही कहता है। वह कहता है' यदि बहिश्त में शराब की नदियां बह रही हैं तो हम लोग यही से उसका अभ्यास करना क्यों न शुरू कर दें, क्योंकि यदि हम बिना अभ्यास किए वहां जाते हैं, तो वहां बहिश्त में रहना कठिन होगा। इसलिए इस जीवन में उसका थोड़ा सा पूर्वाभ्यास कर लिया जाए जिससे हमारे अंदर उसका स्वाद और उसके लेने की क्षमता उत्पन्न हो जाए।'' तब उमर खैथ्याम की बात अधिक तर्कपूर्ण प्रतीत होती है। वास्तव में वह मुसलमानों के बहिश्त की धारणा के विरुद्ध उसका मखौल उड़ा रहा है। यह मूर्खतापूर्ण है, पूरी धारणा ही मूर्खता से भरी है। लेकिन जो लोग हैं, वे इस लालच के कारण ही धार्मिक बने हुए हैं।

एक चीज निश्चित है यहां जो कुछ तुम इकट्ठा करोगे, वह तुमसे यही छीन लिया जाएगा। मृत्यु अपने साथ सब कुछ ले जाती है। इसलिए लालची लोग यहां कुछ ऐसी चीज इकट्ठी करना चाहते है, जिसे मृत्यु अपने साथ न ले जा सके। लेकिन इकट्ठा करने का विचार, संग्रह करने की चाह ज्यों की त्यों बनी रहती है। अब वह पुण्य का संचय कर रहा है। दूसरे संसार में पुण्य ही वह सिक्का है, अत— वह यहां पुण्यों का संग्रह किए चले जा रहा है, जिससे वह दूसरे संसार में हमेशा—हमेशा के लिए वासना और प्रेम में जी सके। इस कोटि का मनुष्य मूल रूप से संसारी है। उसका दूसरा संसार और कुछ भी नहीं, बल्कि इस संसार का ही एक प्रक्षेपण है। चूंकि उसकी कामनाएं हैं, उसकी कुछ महत्त्वाकांक्षाएं हैं, और चूंकि उसके पास शक्ति प्राप्त करने की वासना है, इसलिए वह कार्य करेगा, लेकिन उसका करना हृदय से न होगा। वह एक तरह का नियंत्रित कार्य होगा।

जाड़ों में मुल्ला नसरुद्दीन अपने युवा पुत्र के साथ बैलगाड़ी हांकता गांव जा रहा था। बर्फ गिर रही थी और ऐसे में बैलगाड़ी बर्फ में धंस गई। अंत में वे एक फार्म हाउस में पहुंचे, जहां रात रुकने के लिए उनका स्वागत किया गया। घर बहुत ठंडा था और ऊपर की मंजिल के जिस कमरे में उन्हें रुकने को कहा गया वह तो बर्फ के बक्से की तरह ठंडा था। अपने अंडर बियर के नाड़े को कसते हुए मुल्ला कूदकर मुलायम बिस्तर पर लेट गया और अपने को सिर तक कम्बल से ढक लिया। उसके युवा पुत्र को अपने मन में थोड़ा सा बुरा लगा।

उसने कहा—'' माफ करें डैडी! क्या आप ऐसा नहीं सोचते कि बिस्तरे में जाने से पहिले आपको प्रार्थना करना चाहिए था।'' मुल्ला ने कम्बल के नीचे ही अपनी एक आख घिर कर उत्तर दिया—'' मेरे बेटे! इस जैसी स्थिति आने पर मैं प्रार्थना को आगे के लिए सुरक्षित रख लेता हूं।''

तब चीजें केवल परिधि पर होती हैं। लालच भय और अज्ञान ये सभी केवल परिधि पर हैं।

ये तीन तरह के धर्म हैं— और ये तीनों एक दूसरे से मिले हुए हैं। तुम ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं खोज सकते जो शुद्ध रूप से पहली, दूसरी या तीसरी कोटि के धर्म का हो। जहां कहीं भी लोभ और लालच होता है, वहां भय भी होता है, जहां भय होता है, वहां लोभ होता है, और जहां लोभ और भय दोनों एक साथ होते हैं, वहां अज्ञान होता है—क्योंकि वे बिना उनके अस्तित्व में हो ही नहीं सकते। इसलिए मैं किसी शुद्ध कोटि के बाबत कह ही नहीं रहा हूं। मैं उनका श्रेणीबद्ध विभाजन केवल इसलिए कर रहा हूं जिससे तुम उन्हें ठीक से समझ सको। अन्यथा यह तीनों मिले हुए हैं।

ये धर्म की तीन निम्नतम कोटियां हैं। इन्हें धर्म कहकर पुकारना भी नहीं चाहिए।

तब वहां एक चौथी कोटि भी है तर्क—वितर्क हिसाब—किताब और चालाकी का धर्म।

यह धर्म, ' करो ' और ' मत करो ' का जोड़ है— यह सांसारिक भौतिकवादी, अवसरवादी, बुद्धिगत, सैद्धांतिक शास्त्रसम्मत और परम्परावादी धर्म है। यह पंडितों और विद्वान शास्त्रज्ञों का धर्म है, जो तर्क के द्वारा परमात्मा के अस्तित्व को सिद्ध करने का प्रयास करते हैं और जिनका ख्याल है कि जीवन के रहस्यों को बुद्धि के द्वारा समझा जा सकता है।

इस तरह के धर्म, धर्मशास्त्रों को जन्म देते हैं। यह वास्तव में धर्म न होकर उसकी धुंधली सी कार्बन अनुकृति हैं। लेकिन सभी पूजा घर इसी पर आधारित हैं। जब संसार में कोई बुद्ध, मुहम्मद, कृष्ण या क्राइस्ट अस्तित्व में होता है तो पंडित, विद्वान और चालाक बुद्धिजीवी लोग उनके चारों ओर इकट्ठे हो जाते हैं। वे कठिन परिश्रम करना शुरू कर देते हैं आखिर जीसस के होने का अर्थ क्या है? वे एक धर्मशास्त्र, एक पंथ, एक मत और पूजाघर का सृजन करना शुरू कर देते है। ऐसे लोग बहुत सफल होते हैं, क्योंकि वे बहुत अधिक तर्कपूर्ण होते हैं। वे लोग तुम्हें परमात्मा नहीं दे सकते, वे तुम्हें सत्य भी नहीं दे सकते, लेकिन वे तुम्हें महान संगठन देते हैं। वे तुम्हें कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट चर्च देते हैं। वे तुम्हें महान धर्मशास्त्र देते हैं, जिसमें वास्तविक अनुभव जैसा कुछ भी न होकर, केवल बुद्धि का करतब और चालाकी मात्र होती है। उनकी पूरी इमारत कुछ ऐसी होती है, जैसे मानो कोई ताश का एक घर बनाता हो और हल्की सी हवा चलने पर वह घर ध्वस्त हो जाता हो। उनकी पूरी इमारत कुछ ऐसी होती है जैसे मानो कोई कागज की नाव नदी में खेने का प्रयास कर रहा हो। वह ठीक असली नाव जैसी दिखाई तो देती है, उसकी आकृति ठीक नाव जैसी ही होती है, लेकिन वह कागज की नाव होती है। वह बेजान है, वह पहले ही से मृत है। तर्क—वितर्क, कागज की नाव जैसा ही है, और जीवन को तर्क—वितर्क द्वारा नहीं समझा जा सकता।

मैंने एक अमेरिकन के बारे में सुना है' एक अत्यंत धनी अमेरिकन को यह पक्का यकीन हो गया कि आणुविक युद्ध उसके आसपास बस होने ही जा रहा है, और उसने यह पक्का इरादा कर लिया कि वह तब भी जीवित रहेगा। उसने एरीजोना के मरुस्थल के मध्य में एकड़ों जमीन खरीदी और मजदूरों, मिस्त्रियों की भर्ती करते हुए उसने उनसे जमीन के पांच मील नीचे एक घर बनाने का आदेश दिया। इसे पचास गज मोटे सीसे के खोल से ढका गया और इसमें बिजली उत्पादन का ऐसा संयंत्र लगाया गया, जो दस वर्षों तक ताजी हवा, रोशनी और गर्मी दे सके। उसमें ठंडे जमे हुए भोज पदार्थ, पानी, सिगार, शराबें और अन्य पेय उस अवधि के प्रयोग के लिए इकट्ठे किये गये, और इसके ही साथ विलासितापूर्ण जीवन में सहायक जितनी भी चीजें सोची जा

सकती थीं, वे सभी जुटाई गईं। पूरा काम तीन वर्षों में पूरा हुआ और उसके बनाने में पांच सौ हजार मिलियन डालर खर्च हुए।

उसका मालिक गर्व से भरा हुआ, मरुथल में उसका निरीक्षण करने के लिए गया और वहीं एक रेडइंडियन ने उसकी पीठ में तीर मारकर उसकी हत्या कर दी।

यह जीवन ऐसा ही है तुम उसके सभी प्रबंध करते हो और उसे समाप्त करने के लिए केवल एक तीर काफी है। मनुष्य का जीवन बहुत नाजुक है। मनुष्य तर्क से इस सत्य या वास्तविकता को कैसे समझ सकता है? मनुष्य इतना अधिक सीमित है, उसकी समझ की दृष्टि इतनी अधिक छोटी है। नहीं, तर्क के द्वारा वहां उसे जानने का कोई मार्ग है ही नहीं। तर्क—वितर्क के द्वारा दर्शनशास्त्र का जन्म होता है, लेकिन किसी सच्चे धर्म का नहीं।

सामान्यत धर्म के यह चार रूप ही जाने जाते हैं। पांचवा, छठा और सातवां ही सच्चे धर्म हैं। पांचवा धर्म प्रज्ञा या समझ पर आधारित है। वह तर्क और बुद्धि पर आधारित न होकर समझ पर आधारित है। और बुद्धि और प्रज्ञा अथवा समझ में बहुत बड़ा अंतर है।

बुद्धि तर्क निष्ठ होती है, जब कि प्रज्ञा असंगत या विरोधामास अपने में समाहित किए बहुत होती है। बुद्धि विश्लेषाणात्मक होती है और प्रज्ञा संश्लेषणात्मक। बुद्धि विभाजन करती है, किसी चीज को समझने के लिए उसे खण्ड—खण्ड करती है। विज्ञान बुद्धि, विभाजन, विश्लेषण और विच्छेदन पर आधारित है। प्रज्ञा चीजों को एक साथ जोड़ती है, खण्ड से उसे अखण्ड बनाती है, क्योंकि महान समझों की एक समझ यही है कि अखण्ड के द्वारा ही खण्डों का अस्तित्व होता है, और उससे विपरीत कुछ नहीं होता। और अखण्ड केवल सभी खण्डों का योग न होकर, उस योग से भी कुछ अधिक होता है। उदाहरण के लिए तुम्हारे पास एक गुलाब का फूल है, तुम एक वैज्ञानिक या तार्किक के पास जाकर उससे कहते हो—'' मैं इस गुलाब के फूल को समझना चाहता हूं यह आखिर है क्या?" वह करेगा क्या? वह उसका विच्छेदन करेगा, वह उन सभी तत्वों को अलग— अलग कर देगा, जिनसे फूल बना है। जब तुम फिर उसे जाकर देखोगे तो पाओगे तो फूल तो नष्ट हो गया। फूल के स्थान पर तुम वहां लेविल लगी कुछ शीशियां देखोगे। उसके सभी सत्य अलग— अलग कर दिए गए लेकिन एक चीज निश्चित है, वहां किसी भी शीशी में तुम सुंदरता का लेबिल लगा न पाओगे।

सौंदर्य कोई पदार्थ नहीं है, और सौंदर्य उसके खण्डों में नहीं होता। एक बार तुम फूल का विच्छेदन कर देते हो, एक बार जब फूल की अखण्डता नष्ट हो जाती हैं उसका सौंदर्य भी लुप्त हो जाता है। सौंदर्य तो उसके अखण्ड होने में होता है?ए यही वह गरिमा है जो अखण्ड से आती है। यह सभी तत्वों के जोड़ से कुछ अधिक होता है। तब वहां केवल खण्ड ही होते हैं। तुम एक मनुष्य के शरीर की चीर—फाड़ या विच्छेदन कर सकते हो, और जिस क्षण तुम उसे काटते हो, जीवन विलुप्त हो जाता है। तब तुम केवल एक मृत शरीर या मुर्दा पाते हो। तुम जान सकते हो कि उसके शरीर में कितना एलूमिनियम और कितना आयरन है अस्सी प्रतिशत अथवा कितने प्रतिशत पानी या अन्य चीजें है तुम सभी अंगों, फेफड़ों, गुर्दों आदि की प्रक्रिया समझ सकते हो, उस शरीर में प्रत्येक चीज है, लेकिन केवल एक ही चीज नहीं है और वह है—जीवन। जो एक चीज वहां नहीं है वही सबसे अधिक मूल्यवान है। जिसे हम वास्तव में समझना चाहते हैं, वह एक चीज ही वहां नहीं है और उसके अतिरिक्त हर चीज वहां है।

अब वैज्ञानिक भी इस तथ्य के प्रति सजग होने लगे हैं कि जब तुम मनुष्य के रक्तप्रवाह में से रक्त लेकर उसका परीक्षण करते हो तो वह, वही रक्त नहीं। मनुष्य के रक्तप्रवाह में बहते हुए वह जीवंत था, और उसमें जीवन की धड़कन थी। अब वह केवल मृत रक्त है। वह वही नहीं हो सकता क्योंकि अब गेस्टाल्ट बदल गया है। तुम गुलाब के फूल में से उसका रंग ले सकते हो, लेकिन क्या यह वही फूल का जीवंत रंग है? वह उस जैसा

लगता जरूर है, लेकिन ठीक वैसा हो ही नहीं सकता। उसकी वह सुगंध कहां चली गई? वह जीवंतता और नाजुकता कहां चली गई? अब उसमें जीवन की वह धड़कन कहां है? जब वे सभी उस गुलाब के फूल में थीं, तो उनका पूरी तरह से एक भिन्न संयोजन था, और तब वहां जीवन था। वह अपनी उपस्थिति से भरा उसे प्रकट कर रहा था। उसके हृदय में परमात्मा ही धड़क रहा था। उसे तोड़ लिया गया, उसके सभी खण्ड उसमें है, लेकिन तुम यह नहीं कह सकते कि उसके सभी खण्ड वैसे ही हैं। वे हो भी नहीं सकते, क्योंकि खण्डों का अस्तित्व, अखण्ड होने में ही है।

बुद्धि विच्छेदन कर विश्लेषण करती है। वह विज्ञान का एक उपकरण है। प्रज्ञा धर्म का एक उपकरण है, वह दोनों को जोड़ता है। इसीलिए अध्यात्म के सबसे बड़े विज्ञान को हम योग कहते हैं। योग का अर्थ है वह विधियां, जो जोड़ती हैं। योग का अर्थ है चीजों को एक साथ रखना। परमात्मा सबसे बड़ा जोड़ है, सभी चीजों को एक साथ रखने वाला। परमात्मा कोई व्यक्ति नहीं है, परमात्मा एक उपस्थिति है, एक ऐसी उपस्थिति, जिसमें पूरा अस्तित्व एक महान लयबद्धता में कार्य करता है— सभी वृक्ष और पक्षी, पृथ्वी, सितारे चंद्रमा और सूरज, नदियां और सागर यह सभी एक साथ मिलकर ही परमात्मा है। यदि तुम इनका विच्छेदन करो तो तुम कभी भी परमात्मा को न पाओगे। एक मनुष्य के शरीर का विच्छेदन करो, तुम उसकी उपस्थिति कहीं नहीं पाओगे, जो उसे जीवंत बनाता है।

प्रज्ञा या समझ सभी चीजों को एक साथ जोड्ने की विधि है। एक प्रज्ञावान व्यक्ति बहुत संश्लेषणात्मक होता है। वह सदैव उच्चतम अखण्ड की ओर देखता है, क्योंकि उच्चतम अखण्ड ही अर्थपूर्ण है।

उसकी दृष्टि सदैव उच्चतम तल की किसी वस्तु की ओर होती है, जिसमें जो निम्नतम है वह धुल कर उसका एक भाग बनकर ही कार्य करने लगता है और अखण्ड के साथ लयबद्ध होकर वह संगीत की एक तान की तरह कार्य करते हुए अखण्ड के आस्केस्ट्रा को अपना योगदान देता है, और उससे पृथक नहीं होता।

प्रज्ञा सदैव उच्च तल की ओर, जबकि बुद्धि निम्नतल की ओर किसी कारणवश ही गतिशील होश है।

यह बिंदु बहुत नाजुक है, कृपया इसे ठीक से समझें।

बुद्धि किसी कारण की ओर जाती है, जबकि प्रज्ञा लक्ष्य की ओर जाती है। प्रज्ञा भविष्य की ओर, जबकि बुद्धि अतीत की ओर गतिशील होती है। बुद्धि प्रत्येक वस्तु को घटाकर उसके निम्नतम भिन्न के अंश तक पहुंचा देती है। यदि तुम उससे पूछो कि प्रेम क्या होता है, बुद्धि तुरंत कहेगी—वह और कुछ भी नहीं, बल्कि सेक्स ही है, जो प्रेम का निम्नतम अंश है। यदि तुम उससे पूछो कि प्रार्थना क्या है, बुद्धि कहेगी—वह और कुछ भी नहीं बल्कि दमित सेक्स ही है।

प्रज्ञा अथवा समझ से पूछो कि सेक्स क्या है, तो वह कहेगी कि वह और कुछ भी नहीं बल्कि बीज रूप में प्रार्थना ही है। उसी में प्रेम की संभावना छिपी हुई है। बुद्धि उसे घटाकर निम्नतम तल पर ले जाती है, वह प्रत्येक वस्तु का महत्त्व कम करते हुए उसे निम्नतम तल तक ले जाती है। बुद्धि से पूछो—कमल का फूल क्या होता है? वह कहेगी—वह कुछ भी न होकर एक भ्रम है क्योंकि उसका वास्तविक यथार्थ तो कीचड़ है—क्योंकि कमल कीचड़ में से ही निकल कर ऊपर खिलता है और मुर्झा कर फिर कीचड़ में ही समा जाता है। कीचड़ ही एकमात्र सत्य है और कमल तो केवल एक भ्रम अथवा मायाजाल ही है, वास्तविक सत्य तो कीचड़ है— क्योंकि कमल, कीचड़ से ही उत्पन्न होता है और मुर्झा कर फिर कीचड़ में ही वापस समा जाता है। कीचड़ ही वास्तविक यथार्थ है और कमल तो केवल चला जाता है। समझ अथवा प्रज्ञा से पूछो—कीचड़ क्या है, और वह कहेगी—'' उसमें कमल को उत्पन्न करने की क्षमता है।'' तब कीचड़ अदृश्य हो जाती है और लाखों कमल खिल उठते हैं।''

प्रज्ञा उच्च से उच्चतम तल की ओर जाती है और उसका पूरा प्रयास यही रहता है कि वह अस्तित्व के सर्वोच्च शिखर तक पहुचे, क्योंकि चीजों की स्पष्ट रूप से अभिव्यक्ति निम्नतम तल से न होकर उच्चतम तल के द्वारा ही की जा सकती है। तुम निम्न तल से उसे स्पष्ट न कर अस्पष्ट ही कर देते हो। और जब निम्नतम ही अधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है तो सारा सौंदर्य खो जाता है, जो शुभ और सत्य है वह रहता ही नहीं।

प्रत्येक वस्तु में जो कुछ भी महत्त्वपूर्ण है, वह खो जाता है, और तब तुम चिल्लाते हो—'' इस जीवन का अर्थ क्या है?

पश्चिम में विज्ञान ने प्रत्येक चीज का मूल नष्ट कर उसे घटाकर पदार्थ बना दिया है। अब प्रत्येक व्यक्ति जीवन के अर्थ के बारे में चिंतित है, क्योंकि अर्थ तो उच्चतम अखण्ड में ही होता है।

जरा देखो, तुम अकेले हो, तुम अनुभव करो—जीवन का क्या अर्थ है? तुम किसी स्त्री से प्रेम करो, उसका एक निश्चित अर्थ प्रकट होता है। अब दो, एक बन जाते हैं—यह थोड़ा सा उच्च तल है। एक अकेला व्यक्ति, एक प्रेमी युगल से थोड़े से निम्नतल पर है। एक प्रेमी युगल थोड़े से उच्च धरातल पर है। दो चीजें एक साथ जुड़ गईं। दो विपरीत ऊर्जाएं एक दूसरे में समाहित हो गईं। स्त्रैण और पुरुष, निष्क्रय और सक्रिय ऊर्जाओं का एक वर्तुल उत्पन्न हो गया, जो कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है।

यही कारण है कि भारत में हमारे पास अर्द्ध नारीश्वर की अवधारणा है। शिव की आकृति में आधी स्त्री और आधा पुरुष चित्रित किया गया है। अर्द्ध नारीश्वर की अवधारणा कहती है कि पुरुष आधा है और स्त्री भी आधी है। जब एक पुरुष और एक स्त्री गहन प्रेम में मिलते हैं, तो एक उच्चतम वास्तविकता का जन्म होता है, जो निश्चित रूप से अधिक जटिल और अधिक महान होता है, क्योंकि दो ऊर्जाएं मिल रही हैं।

तब एक बच्चे का जन्म होता है, अब वहां एक परिवार है—जो कहीं अधिक अर्थपूर्ण है। अब पिता को अपने जीवन में एक अर्थ का अनुभव होता है, कि बच्चे को अब पालपोस कर बड़ा करना है। वह बच्चे को प्रेम करता है, कठोर परिश्रम करता है, लेकिन अब कार्य करना केवल कार्य नहीं रह जाता। वह अपने बच्चे के लिए अपने प्रियपात्र के लिए और अपने घर के लिए कार्य कर रहा है। वह कार्य करता है लेकिन कार्य करने की कठोरता और तनाव खो जाता है। वह कार्य को अब घसीटता नहीं। दिन भर थक कर वह नाचता हुआ घर आता है। बच्चे के चेहरे पर मुस्कान देखकर वह अत्यधिक प्रसन्न हो जाता है। एक प्रेमी युगल की अपेक्षा एक परिवार का तल अधिक उच्च है, और इसी तरह और भी ऊंचे तल हैं। परमात्मा और कुछ भी नहीं है, बल्कि वह सभी के जोडकर, वह सभी का सबसे बड़ा परिवार है।

यही कारण है कि मैं गेरुवा वस्त्रधारी अपने संन्यासियों को अपना परिवार कहता हूं। मैं चाहता हूं कि तुम सभी उसी अखण्ड में समाहित होकर खो जाओ। मैं तुम्हें समग्र अस्तित्व में इतना अधिक अवशोषित हुआ देखना चाहता हूं कि तुम्हारी वैयक्तिकता भी बनी रहे, लेकिन तुम इस महान एक्य के, जो तुमसे कहीं अधिक महान है, एक भाग बन जाओ। तुरंत जीवन का अर्थ प्रकट हो जाता है जब तुम इस महान एकीकरण के एक भाग बन जाते हो।

जब कोई कवि एक कविता लिखता है, अथवा जब कोई नर्त्तक नाचता है तो जीवन का अर्थ प्रकट हो जाता है। जब कोई मां बच्चे को जन्म देती है— अर्थ प्रकट हो जाता है। तुम्हें प्रत्येक चीज से काटकर अकेला छोड़ दिया जाए तुम एक निर्जन टापू की तरह अर्थहीन होकर रह जाते हो। सभी के साथ जुड़कर तुम अर्थपूर्ण हो जाते हो। तुम पहले से बड़े, उस समग्र अस्तित्व के भाग बन जाते हो, और इस बड़े होने में ही एक अर्थ है। इसी कारण मैं कहता हूं कि जिस सबसे बड़े, महान और अखण्ड की कल्पना या धारणा की जा सकती है, वही परमात्मा है और बिना परमात्मा के तुम जीवन के सर्वोच्च अर्थ को प्राप्त न कर सकोगे। परमात्मा कोई व्यक्ति की भांति नहीं

है, वह कहीं किसी सिंहासन पर नहीं बैठा है। ये सारे विचार केवल मूर्खतापूर्ण हैं। परमात्मा अस्तित्व की सम्पूर्ण उपस्थिति है, वही अस्तित्व है और वही अस्तित्व का आधार भी है।

परमात्मा का अस्तित्व वहीं है, जहां जोड़ है, एक्य है, जहां कभी भी योग होता है, वहीं परमात्मा अस्तित्व में आता है। तुम अकेले चल रहे हो, परमात्मा अभी सोया हुआ है। तभी अचानक तुम किसी को देखते हो और मुस्कराते हो, परमात्मा जाग गया है, क्योंकि दूसरा आ गया है। तुम्हारी मुस्कान, सम्बंध—विच्छेद न कर, सम्बंध जोड़ती है, वह एक सेतु बन जाती है। तुमने दूसरे की ओर एक सेतु उछाला है। दूसरे से भी उत्तर आता है, वह भी मुस्कराता है। तुम दोनों के बीच एक खाली स्थान उभरता है, मैं उसी को परमात्मा कहता हूं—एक छोटी सी धड़कन। जब तुम किसी वृक्ष के निकट जाते हो और उसके निकट बैठते हो, तुम पूरी तरह वृक्ष के अस्तित्व को भूले हुए हो। परमात्मा अभी गहरी नींद सोया हुआ है। तभी अचानक तुम वृक्ष की ओर निहारते हो, तभी वृक्ष के प्रति तुम्हारी संवेदना जागृत होती है, और परमात्मा जाग जाता है।

जहां कहीं भी प्रेम होता है, वहीं परमात्मा होता है। जहां कहीं भी से प्रत्युत्तर आता है, वहीं परमात्मा होता है। परमात्मा एक शून्य स्थान है, जहां कहीं भी एकता घटती है, वह अस्तित्व में आता है। इसी कारण—मैं कहता हूं कि प्रेम ही परमात्मा की शुद्धतम सम्भावना है, क्योंकि यह दो ऊर्जाओं का सूक्ष्म और रहस्यमय योग है। इसीलिए बाउलों का आग्रह है कि प्रेम ही परमात्मा है। परमात्मा को भूल जाओ, प्रेम ही सब कुछ करेगा। लेकिन प्रेम को कभी मत भूलना, क्योंकि परमात्मा अकेला कुछ नहीं कर सकता।

प्रज्ञा अंतर करना जानती है, वह एक समझ है। इसका बीज मंत्र है—सत्य या सत्। वह मनुष्य जो प्रज्ञा से चलता है वह सत् अर्थात् सत्य के पथ पर ही चलता है। प्रज्ञा से उच्च, धर्म का छठवां तल है। मैं इसे ध्यान का धर्म कहता हूं।

ध्यान है सजगता, स्वाभाविकता, सहजता, जिसे बाउल कहते हैं—सहज— मानुष, स्वयं प्रवर्तित मनुष्य। यह है—अपरम्परागत, जड़ों से जुड़ी हुई, क्रांतिकारी वैयक्तिकता और स्वतंत्रता। इसका बीज शब्द है—चित्त अथवा चेतना। ठहरी हुई स्थिर बुद्धि का ही सर्वोच्च रूप है प्रज्ञा। यह प्रज्ञा या समझ बुद्धि का शुद्धतम स्वरूप है। सीढ़ी वही है। इसी सीढ़ी से बुद्धि नीचे जाकर अधोगामी होती है और इसी सीढ़ी से प्रज्ञा उच्चतम तल पर ले जाती है, लेकिन सीढ़ी एक ही है। ध्यान में सीढी फेंक दी जाती है। अब उसी सीढ़ी पर नीचे या ऊपर जाने की कोई भी गति होती ही नहीं। अब कोई गति न होकर अपने अंदर अपने ही डूबने की गतिशून्यता होती है।

प्रज्ञा और बुद्धि दोनों ही किसी दूसरे व्यक्ति की ओर उन्मुख होती हैं। बुद्धि दूसरे व्यक्ति को काटती है जब कि प्रज्ञा, दूसरे व्यक्ति से तुम्हें जोड़ती है। इसलिए यदि तुम ठीक से समझ जाते हो, तो पहले चार तरह के धर्म, जिन्हें मैं धर्म कहता ही नहीं, वे उधार अथवा नकली धर्म हैं। असली धर्म तो पांचवीं कोटि से ही प्रारम्भ होता है, और यह धर्म का सबसे नीचे का स्वरूप है, लेकिन यही असली है। छठी तरह का धर्म है— ध्यान, चेतना या चित्। कोई भी ऐसा एक व्यक्ति अपनी ओर ही मुड़ता है। वह बस होना भर रहने का प्रयास करता है। यही है वह स्थान जहां झेन का अस्तित्व है। यह धर्म की छठी कोटि है। ' झेन ' शब्द का अर्थ ही है— ध्यान या मेडीटेशन।

तब आती है धर्म की सर्वोच्च कोटि—सातवां तल: समाधि और परमानंद का धर्म। जैसे कि पांचवे कोटि के धर्म का बीजाक्षर सत या सत्य है और छठवें कोटि के धर्म, ध्यान का बीजाक्षर चित् अथवा चैतन्य है, इस सर्वोच्च धर्म का बीजाक्षर है— आनंद चारों ओर से बरसता हुआ परमानंद। सत् चिद् और आनंद यह तीनों बीजाक्षर हैं—सत्य, चेतना और परमानद।

बाउल, सातवीं तरह के धर्म—उत्सव आनंद, गीत, नृत्य और परमानंद से जुड़े लोग हैं। उनका अत्यधिक प्रसन्न बने रहना ही ध्यान बन जाता है, क्योंकि एक ही व्यक्ति ध्यानपूर्ण भी हो सकता है और उदास भी। एक ही व्यक्ति ध्यानपूर्ण होकर शांत भी बन सकता है और वही व्यक्ति परमानंद से चूक भी सकता है।"

एक ही व्यक्ति ध्यानपूर्ण होकर शांत भी बन सकता है और वही व्यक्ति परमानंद से चूक भी सकता है। क्योंकि ध्यान तुम्हें पूरी तरह चिर और शांत बना सकता है लेकिन जब तक नृत्य नहीं घटता, तुम किसी चीज से चूक रहे हो। शांति बहुत अच्छी चीज है, लेकिन उसमें किसी चीज की कमी है, उसमें परमानंद नहीं है। जब शांति ही आनंद से नृत्य करना शुरू कर देती है, तो परमानंद घटता है। जब शांति, सक्रिय बन जाती है, और अतिरेक से प्रवाहित होने लगती है, वह परमानन्द बन जाती है। जब परमानंद एक बीज के अंदर समा जाता है, वह शांति होती है। और जब बीज अंकुरित होता है तो केवल इतना ही नहीं; बल्कि वृक्ष भी विकसित होता है, फूल भी खिलते हैं, उसमें, और जब बीज ही विकसित होकर फूल बन जाता है, तब वही समाधि है। यही धर्म की सर्वोच्च कोटि है।

शांति को नृत्य करना है और मौन को गुनगुनाना है। और जब तक तुम्हारा सबसे अधिक अन्तर्गम का अनुभव हास्य नहीं बनता, उसमें किसी चीज की कमी है। कुछ अब भी किए जाना है। इसी स्थान पर बाउल प्रवेश करते हैं। उनका धर्म है—परमानंद। और अब आज के लिए यह गीत—

यह मनुष्य जो श्वांस लेता है
प्राणवायु पर ही जीवित रहता है,
और इसके पार वह अदृश्य दूसरा
जो पहुंच के बाहर है, विश्राम करता है।
और दो के मध्य में एक और मनुष्य
रहस्यमय कड़ी की भांति गतिशील है।
जिसका शरीर मन, हृदय और भावों का अनुसरण करता हुआ
आराधना ही में रत रहता है।

वह मनुष्य जो सांस लेता है, और वह मनुष्य जो सभी के पार रहता है..... .इन दो के मध्य में इन्हें जोड़ने वाला तीसरा मनुष्य भी है: शरीर, मन और आत्मा, अथवा तुम ईसाइयों की त्रिमूर्ति—परमात्मा, उसके पुत्र और पवित्र शैतान का भी उपयोग कर सकते हो।

शरीर ही वह मनुष्य है, जो श्वांस लेता है। श्वांस लेने के द्वारा ही शरीर जीवित रहता है। सांस तुम्हारे शरीर के अंदर जाती है, वह तुम्हें प्राण ऊर्जा देती है, तुम्हारे जीवन को जीवऊर्जा देती है। बिना श्वांस लिए शरीर नष्ट हो जाएगा, क्योंकि बिना श्वांस लिए शरीर बाहर के वातावरण से टूट कर अलग हो जाएगा। वातावरण, तुम्हारे अस्तित्व में अपना अस्तित्व निरंतर उड़ेल रहा है। श्वांस अंदर लेना, श्वांस बाहर छोड़ना—वातावरण इसी के द्वारा तुम्हें निरंतर जीवंत और प्रवाहित बनाये रखता है।

बाउल कहते हैं—यह शरीर ही पहला मनुष्य है।

तब उसके पार एक दूसरा है, जिसे सांस लेने की जरूरत नहीं होती, जो शाश्वत रूप से वहां विराजमान है, जिसे किसी भी चीज की जरूरत नहीं होती। वही परमात्मा है बाउलों का। वे उसे सारभूत मनुष्य अथवा आधार मनुष्य कहते हैं और दो के मध्य मन है, जिसे बाउल हृदय कहते हैं, यही पवित्र शैतान है। इसका अस्तित्व दो के मध्य जोड़ने वाली कड़ी की भांति है।

पूरा कार्य, मन अथवा हृदय ही में किए जाना है। एक छोर पर तो शरीर का अस्तित्व है, और दूसरे छोर पर परमात्मा है। अनुशासन अथवा साधना का पूरा कार्य हृदय ही में किये जाना है। ध्यान के बारे में इतना ही सब कुछ किये जाना है। यह मनुष्य जो श्वांस लेता है

प्राणवायु पर ही जीवित रहता है।
और इसके पार वह अदृश्य दूसरा
जो पहुंच के बाहर है,
विश्राम करता है।
ओर दो के मध्य में एक और मनुष्य
रहस्यमय कड़ी की भांति गतिशील है
जो, शरीर हृदय और भावों का अनुसरण करता हुआ
आराधना ही में रत रहता है।

बाउल कहते हैं कि पूजा या आराधना करने से ही कुछ नहीं होने का लेकिन आराधना हो तो समझ से जानते हुए। शरीर को मन और हृदय की पूजा करनी चाहिए और हृदय को पूजना चाहिए उस अदृश्य को। इसी को वे लोग समझ से जानते हुए पूजा, आराधना करना कहते हैं। अपने शरीर को मन और हृदय का अनुसरण करने दो, अपने शरीर को अपने भावों का अनुसरण करने दो और अपने भावों को इस अदृश्य अज्ञात का अनुसरण करने दो। तुम तभी एक आराधक पर भक्त हो। तब पूजा करना सामान्य संस्कार नहीं रह जाता जिसे तुम पूजा करना में जाकर करते हो, तब पूजा या आराधना कुछ ऐसी चीज होती है जिसे तुम अपने शरीर और अस्तित्व के मंदिर में भावों के द्वारा करते हो।

इन तीनों के बीच
यहां एक लीला हो रही है,
ओ मेरे खोजी हृदय।
तू किसे खोज रहा है?

और बाउल कहते हैं यहां एक लीला या खेल हो रहा है। यह तीनों, शरीर, हृदय और आत्मा एक दूसरे का पीछा करते हुए दौड़ रहे हैं।

ओ मेरे खोजी हृदय।
तू किसे खोज रहा है?

यह शब्द लीला या खेल समझने जैसा है। यह चीज पूरब का ही अनूठापन है। पश्चिम में इस तरह की धारणा या विचार कभी उठा ही नहीं। पश्चिम में परमात्मा की धारणा, कार्य करने वाले कर्त्ता के रूप में की जाती है, न कि खिलाड़ी के रूप में वहां परमात्मा की धारणा सृष्टि की रचना करने वाले के रूप में है और यह कसौटी बहुत गम्भीर—प्रतीत होती है। लेकिन लीला की धारणा तो एक हास— परिहास, अथवा एक खेल की है। पूरब में हम लोगों ने जाना है कि परमात्मा गम्भीर नहीं है और न धर्म को ही उदास और गम्भीर होना चाहिए। परमात्मा सबसे महान खिलाड़ी या अभिनेता है। जो एक विराट लीला में संलग्न है।

जैसे एक चित्रकार अपनी तूलिका से कैनवास पर रंगों द्वारा चित्रण करने का खेल खेलता है, तब उसे खेल या रास से कुछ नये का जन्म होता है। चित्र दो तरह से बनाया जा सकता है: तुम बहुत गम्भीर होकर उसे बना सकते हो, तब तुम ठीक एक यांत्रिक रूप से कार्य करने वाले एक साधारण चित्रकार होगे। तुम उस चित्र को पूरी कुशलता से चित्रित कर दोगे, लेकिन उसमें किसी चीज की कभी बनी रहेगी, उसमें आत्मा न होगी। एक यांत्रिक

मनुष्य और एक कलाकार के मध्य यही अंतर होता है। कलाकार किसी योजना को बनाकर कार्य नहीं करता। वह बस कैनवास के सामने बैठ जाता है, और ब्रुश व रंगों से खेलने लगता है। वह बच्चे से भी कहीं बड़ा खिलाड़ी होता है। उसके खेल से ही कुछ नई चीज उमगती हैं। आधुनिक चित्र को समझने के लिए यही सबसे अच्छा तरीका है।

आधुनिक चित्रकला, पश्चिमी से कहीं अधिक पूरबी है। पिकासो पश्चिमी से कहीं अधिक पूरबी है क्योंकि वह ब्रश और रंगों से खेलता है। यही कारण है कि आधुनिक चित्रकला को समझना बहुत कठिन है। शास्त्रीय और परम्परागत चित्र को समझना बहुत सरल है। वह जीवन को ठीक वैसा ही जैसा वह है चित्रित करती है, वह मूल की कार्बन कापी या प्रतिलिपि है। वह फोटोग्राफों की तरह यांत्रिक है। आधुनिक चित्र को समझना बहुत कठिन है। उसे समझना उतना ही कठिन है जितना कि फूलों को समझना। किसी व्यक्ति ने पिकासो से उसके चित्र को देखने के बाद उससे पूछा—'' आखिर इसका अर्थ क्या है? पिकासो ने कहा—'' कोई भी व्यक्ति वृक्षों और पक्षियों से जाकर यह नहीं पूछता—कि तुम्हारे होने का क्या अर्थ है? तुम मेरे पास आकर मुझसे यह क्यों पूछते हो? मुझे अकेला छोड दो। पौधों और फूलों से जाकर पूछो कि आखिर वे क्यों है?

एक महान लीला चल रही है।

वनस्पति शास्त्री अब इस बात के प्रति सजग होने लगे हैं कि पौधों और फूलों में कोई चीज बहुत अनूठी और अर्थपूर्ण है। वे अब इसके प्रति सजग हो गये हैं, कि तितलियां या भरि या अन्य कीट फूलों के साथ खेल खेलते हैं और उनकी नकल उतारते हैं, वे फूलों को धोखा देकर छकाते हैं। तितलियों फूलों की नकल उतारते हुए उन्हें खिजाती हैं। और दूसरी ओर फूल भी तितलियों और अन्य कीड़ों की नकल उतारते हैं, उनके साथ खेलते हैं और यह खेल या लीला चलती ही रहती है। छिपकलियां और गिरगिट, चट्टानों की नकल उतारती हैं और चट्टानें उनकी नकल उतारती हैं। लुका छिपी की यह महान लीला उनके बीच निरंतर चल रही है।

यह लीला एक बहुत सुंदर धारणा है। वह तुम्हें अत्यधिक क्या, पूरी तरह विश्राम में ले जाती है। यदि परमात्मा ही इस खेल में शामिल है तो गम्भीर होकर उदास लटके चेहरे बनाने की कोई जरूरत ही नहीं है और अधिक खेलपूर्ण हो जाओ। जीवन एक खेल है। जीवन की ओर बिना गम्भीर हुए जरा खेल पूर्ण दृष्टि से निहारो, तुम्हें बहुत बड़ा अंतर दिखाई देगा।

जब तुम अपने आफिस जाते हुए सड़क पर चलते हो, तब तुम्हारा मन पूरी तरह मित्र होता है, तनावपूर्ण महत्त्वाकांक्षी चिंतित और खिंचा—खिंचा सा। उसी सड़क पर तुम सुबह टहलने निकलते हो। सड़के वही है, उसके किनारे खड़े वृक्ष भी वही हैं, पक्षी भी वही हैं, वही आकाश है और वहीं तुम हो, और आसपास से गुजरते हुए लोग भी वही हैं। लेकिन जब तुम सुबह टहलने के लिए जाते हो, तो तुम्हें कोई भी खिंचाव या तनाव नहीं होता है क्योंकि तुम विशेष रूप से किसी खास स्थान पर नहीं जा रहे हो। वह केवल सुबह का टहलना भर है, तुम उसका मजा ले रहे हो, और तुम खेलपूर्ण हो।

प्रार्थना करना भी एक खेल हैं। इसलिए यदि तुम मंदिर जाते हो और बहुत गम्भीर बन जाते हो तो तुम मंदिर से चूक जाओगे। मंदिर भी हंसते मुस्कराते हुए जाओ, मंदिर भी उत्सव आनंद मनाने के लिए जाओ।

बाउल गाते हैं—

मुझे स्वयं अपने होने का भी कोई ज्ञान नहीं,

यदि केवल एक बार मैं यह जान पाता—

कि मैं कौन हूं

तो वह अज्ञात भी जाना जा सकता था।

परमात्मा तो बहुत निकट ही है
लेकिन फिर भी बहुत दूर—
जैसे मेरे बिखरे केशों के पीछे
कोई पहाड़ छिपा हो।
मैं डाकर से देहली के
दूर—दूर नगरों की यात्रा करते हुए
निरंतर उसे खोजता रहता हूं
लेकिन मैं अपने ही घुटनों के चारों ओर ही
घूमता रहता हूं।
मेरी अपनी ही आकृति और रूप में
परमात्मा जीवंत है।
केवल हृदय की शुद्धता ही
मुझे उस तक ले जाएगी।
मैं जितना अधिक वेद शास्त्रों का अध्ययन करता हूं
मैं उतनी ही उलझन में पड़कर भटक जाता हूं
आंखों के होने के बावजूद भी
मैं अंधा हूं।
केवल मेरे हृदय की शुद्धता ही
मुझे उस तक ले जाएगी।
मेरे अपने ही रूप और आकृति में
परमात्मा जीवित है।
लेकिन कभी भी अपने जीवन में
मेरा उस मनुष्य से एक बार भी कभी आमना सामना नहीं हुआ,
जो मेरे ही अपने छोटे से कक्ष में विराजमान है।
तूफानों और आधियों के गुबार में
मेरी आंखें अंधी बनकर कुछ भी देख नहीं पातीं,
यहां तक कि जब वह नाचता है
मेरे हाथ उसके हाथों तक पहुंचने से पहले ही
असफल हो जाते हैं।
जैसे वह संसार के साथ सदा सदा के लिए
व्यस्त हो गया है
मैं खामोश रहता हूं—
जब वे लोग उसे जीवन के मूल तत्व
जल, अग्नि, पृथ्वी और वायु कहकर पुकारते हैं
जब कि यह निश्चित नहीं है
कि वह इन्हीं में से किसी एक में है।

मैं अभी तक अपने ही अंदर
अपने छोटे से कक्ष अपने हृदय को ही नहीं जान पाया हूं
फिर मैं किसी और को
जिसे मैं जानना चाहता हूं
कैसे जान सकता हूं?

बाउल कहते हैं यदि तुम अपने ही छोटे से कमरे या हृदय को जान लो, तो तुम सभी को जान लोगे— क्योंकि वह उसी कमरे में ही तो छिपा है। वह सांस लेते हुए मनुष्य के शरीर में ही बसा है। वह प्रज्ञा, चेतना और ध्यान बनकर तुम्हारे ही मन में बसा है और फिर भी तुम्हारे पार है। आहिस्ते— आहिस्ते तुम्हारा शरीर भावों और अनुभूतियों का अनुसरण करे, फिर उन्हें उस अज्ञात का अनुसरण करने दो। पोथियों की जानकारी के द्वारा नहीं, अनुभव के द्वारा आगे बढ़ो, और केवल तभी तुम्हारी परमात्मा के साथ लयबद्धता हो सकेगी।

वह कहीं भी नहीं रहता—
न तो असंख्य सितारों की भूल भुलइयों में
और न असीम शून्य विस्तार में।
तुम उसे नहीं पाओगे नीतिशास्त्रों अथवा वेदों के पाठ में।
इन सभी के अस्तित्व के पार
वह मनुष्य, यहीं रहता है—
रूप में भी अरूप बनकर
मेरे अंगों के मंदिर का श्रृंगार बनकर।
वह पंचतत्वों के सहज स्वाभाविक शरीर में ही
भावों और अनुभूतियों के साथ दीप्तिवान हो रहा है।

पंचतत्वों और पदार्थ से बना यह शरीर सहज और स्वाभाविक है। यह शरीर ही उसका मंच है और वह मनुष्य यहीं है।

यदि तुम अपने हृदय को ही
पहचानने में असफल हो गए,
तो जो महान और अज्ञात है
उसे तुम कैसे जान सकोगे?
चारों दिशाओं में फैले इस अस्तित्व के साथ
लयबद्ध होकर
इसे अपने हृदय पात्र में भर लो
फिर जो दूर से भी दूर है
वह तुम्हारे निकट होगा।
अज्ञात का तुम्हें बोध होगा
और वह अप्राप्य मनुष्य,
तुम उसे प्राप्त कर सकोगे।

उस असीम, अछोर अज्ञात और अपरिचित के लिए अपने हृदय के द्वार खोल दो। शास्त्र—ज्ञान के साथ आगे गतिशील मत होना क्योंकि ज्ञान का अर्थ है जिसे तुम पहले ही से जानते हो। इसी कारण वेद तुम्हारी

सहायता न कर सकेंगे। वेद का अर्थ होता है—ज्ञान। वेद शब्द का अर्थ ही है—जानना। इसका मूल वेद से ही आता है— जिसका अर्थ है जानना। इसीलिए बाउल निरंतर वेदों की आलोचना करते हैं। वे कहते हैं—ज्ञान से कोई भी सहायता नहीं मिलने वाली। अज्ञात की ओर आगे बढ़ो और प्रतीक्षा करो, उस अज्ञात की, जो तुम्हारा द्वार खटखटाये। तुम बस सजग आशापूर्ण ग्राहयता और भाव भरे हृदय से खेलपूर्ण रहते हुए उसकी प्रतीक्षा करो। जीवन और मृत्यु के द्वारों के मध्य

एक अन्य द्वार भी सामने ही खुला है.....
जिसे स्पष्ट नहीं किया जा सकता।
वह जो मृत्यु के द्वार पर
फिर से जन्म लेने में समर्थ और योग्य है,
जो मृत्यु से पहले ही
जीते हुए ही मर जाता है,
वही प्रेम में डूबा व्यक्ति ही अमर हो जाता है।

एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहस्य यह है कि जीवन और मृत्यु के दो द्वारों के मध्य एक अन्य द्वार भी है..... उस द्वार को हम प्रेम कहकर पुकारते हैं। क्या तुमने उसे देखा है? जीवन और मृत्यु के मध्य वहां सिवाय प्रेम के और कुछ भी तो नहीं घटता। यदि तुम जीवन और मृत्यु के बीच प्रेम से चूक गए तो तुम जीवन में मिले पूरे अवसर से ही चूक जाओगे। तुम ज्ञान इकट्ठा कर सकते हो, तुम मूल्यवान पत्थरों और रत्नों को इकट्ठा कर सकते हो, तुम धन सम्पत्ति, पद प्रतिष्ठा और शक्ति का संचय कर सकते हो, लेकिन यदि तुम प्रेम से चूक गये तो तुम असली द्वार से ही चूक गये।

पहला द्वार जो जन्म का द्वार है, वह दूसरे द्वार के द्वारा प्रेम के द्वार में प्रविष्ट होने का अवसर देता है। जीवन और मृत्यु के मध्य ही प्रेम है। वास्तव में जीवन का अस्तित्व केवल इसीलिए है, जिससे वह प्रेम और प्रेम घटने का अवसर दे सके। यदि तुम उससे ही चूक गये तो पूरे जीवन से ही चूक गये। यदि तुम उससे नहीं चूके, और शेष सभी कुछ से चूक गये, तो तुमने न कुछ भी खोया और न तुम किसी से भी चूके।

और यह प्रेम का द्वार ही असली मृत्यु है। वह दूसरी मृत्यु सबसे अंत में आयेगी, यह असली मृत्यु नहीं है, क्योंकि तुम जीवित रहोगे। तुम्हारा फिर से पुनर्जन्म होगा। जैसे मृत्यु के बाद जन्म होता है, इसीलिए जन्म मृत्यु का अनुसरण करता है। यह दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। लेकिन यदि तुम प्रेम के द्वार में प्रविष्ट हो गये, तब तुम मर जाओगे और तुम तब इतनी पूर्णता से मर जाओगे कि तुम्हारा फिर कोई दूसरा जन्म न होगा और वास्तव में फिर कोई मृत्यु भी नहीं होगी। प्रेम ही वास्तविक और सच्ची मृत्यु है, क्योंकि अहंकार पूरी तरह विसर्जित हो जाता

साधारण मृत्यु में केवल शरीर मरता है, अहंकार फिर भी बना रहता है, और यही तुम्हें नये जन्मों में ले जाता है। पुनर्जन्म का यही अहंकार ही धागा है। एक बार यह धागा टूट जाये, तो जड़ ही टूट जाती है, तुम पदार्थगत संसार से विलुप्त हो जाते हो तुम दृश्य संसार से अदृश्य में चले जाते हो, जो सभी के पार है, वही दूसरा किनारा है।

जीवन और मृत्यु के द्वारों के मध्य
एक अन्य द्वार भी सामने ही खुला है,
जिसे स्पष्ट नहीं किया जा सकता।
वह जो मृत्यु के द्वार पर

फिर से जन्म लेने में समर्थ और योग्य है,
जो मृत्यु से पहले ही
जीते हुए ही मर जाता है
वही प्रेम में डूबा व्यक्ति ही
अमर हो जाता है।
यही है वह, जिसे बाउल मृत्यु का असली द्वार कहते हैं।
मृत्यु से पहले ही मर जाना
मरकर भी जीवित रहने जैसा है।

यदि तुम मरने से पहले ही मर सकते हो, वही तुम हो, यदि तुम प्रेम के द्वार में होकर गुजर सकते हो, यदि तुम जीवित रहते हुए मर सकते हो, तब तुम्हारे लिए कोई मृत्यु है ही नहीं। तब तुम अमर बन गये, तब तुम शाश्वत हो, तब तुम एक परमात्मा हो। तब तुम इस पदार्थगत संसार के कोई भाग नहीं हो, जहां शरीर आकृतियां ग्रहण करते हैं, और जहां शरीर की आकृतियां मिट जाती हैं। तब तुम सभी रूपों, आकृतियों जन्म और मृत्यु के पार हो जाते हो। यह पार जाने का तत्व तुममें पहले ही से है।

मनुष्य अभी यहां है। वह ठीक अभी, इस क्षण में यहां है। लेकिन तुम्हें प्रेम के रसायन से होकर गुजरना होगा, अन्यथा तुम इसे कभी न जान सकोगे।

बाउल गाते हैं:
प्रेमी आराधक के लश का
और वास्तविक सत्य तक पहुंचने का
वर्णन करने के लिए
सभी शब्द और बातें व्यर्थ हैं।
प्रेम का अमृत पीकर ही
वह प्रेमी आराधक
उस अदृश्य मनुष्य के चेहरे को देख सकता है
उस महान अप्राप्त को वही प्राप्त कर सकेगा।
मैं उस मनुष्य को कैसे पकड़ सकता हूं
जो सभी की पकड़ के बाहर है?
वह नदी के उस दूसरे किनारे पर रहता है
और मेरी आंखों की त्वचा
मेरी दृष्टि पर पर्दा डाल देती है।

यह शरीर ही तुम्हारी दृष्टि पर आवरण डाल देता है। यदि तुम शरीर के साथ बहुत अधिक तादाम्य जोड़ लेते हो, तो वही अवरोध बन जाता है। इस विधि को उलट दो: शरीर को हृदय का अनुसरण करने दो, न कि हृदय शरीर का अनुसरण करे। यदि हृदय को शरीर का अनुसरण करना पड़ा तो शरीर अवरोध बन जाता है। तब तुम उस दूसरे किनारे पर नहीं पहुंच सकते। यदि शरीर, हृदय का अनुसरण करता है, तो शरीर ही नौका बन जाता है।

कहां है चंद्रमा का वह घर?
और कौन कैसे बनाता है

एक दूसरे के पीछे घूमते आते—जाते
रात और दिनों का यह अनूठा चक्र?
पूर्णमासी की रात्रि में निकले पूर्ण चंद्र में
लगे ग्रहण को सभी जानते हैं।
लेकिन कोई भी
महीने की सबसे अंधेरी रात में
काले वर्ण के चंद्रमा के बारे में
कुछ भी जांच पड़ताल नहीं करता।
वह व्यक्ति, जो
आकाश में पूर्ण चंद्रमा के उदय होने
और सबसे अंधेरी रात में व्याप्त चंद्रमा
को भी जानने में समर्थ है
वही व्यक्ति स्वर्ग, पृथ्वी और पाताल
अर्थात तीनों लोकों के गौरव को जानने का
दावा करने का अधिकार रखता है।

" वह व्यक्ति जो आकाश में पूर्ण चंद्रमा के उदय होने और सबसे अंधेरी रात में भी चंद्रमा को देख पाता है..... .यह बाउलों का प्रेम की अनुभूति का ही वर्ण है। एक प्रेमी ही मृत्यु से भी जीवन का सृजन करने में समर्थ है, वह कोई भी चमत्कार कर सकता है। यही कारण है कि प्रेम के बारे में यहां इतना अधिक भय है। मैंने हजारों व्यक्तियों को, जब वे प्रेम के द्वार में प्रवेश करते हैं, भय से कांपते हुए देखा है। प्रेम करने से इतना अधिक भय उत्पन्न क्यों होता है?

एरिक फ्रोम ने एक बहुत सुंदर पुस्तक लिखी है, जिसमें वह कहता है कि प्रेम सबसे अधिक जोखिम भरी चीजों में से एक बहुत खतरनाक चीज है। और प्रेम के बारे में यहां मनुष्यता को सबसे अधिक भय लगता है। जो लोग प्रेम के बोर में बातचीत करते हैं, वे केवल अपने आप को धोखा देने के लिए ही बात कर सकते हैं। उनकी बातचीत उन्हें केवल यह अहसास दिलाने की प्रतिपूर्ति कर सकती है कि वे प्रेमी हैं। लेकिन लोग प्रेम से भयभीत हैं। वह उन्हें भयभीत करता है क्योंकि लोग प्रेम से भयभीत हैं। वह उन्हें भयभीत करता है क्योंकि प्रेम मृत्यु है। तुम्हें अपने अहंकार को पूरी तरह गिराना और मिटाना होता है। यह आत्मघात करने जैसा है। भय का होना स्वाभाविक है, लेकिन यदि तुम काफी साहसी हो तो तुम उससे गुजर सकते हो, यदि तुम अपने कंधों पर प्रेम की सलीब ढोते चल सकते हो, तो तुम्हारा पुनर्जन्म होना निश्चित है। जिस क्षण अहंकार गिरता है, उसी क्षण तुम्हारा नया जन्म होता है।

वह व्यक्ति
जो प्रेम के अंतर्निहित उसके स्वभाव को जानता है
वह निर्भय होता है।
वह केवल अपने ही रूप को
जो उसकी आंखों के सामने जीवंत होता है,
प्रेम करता है।
अपनी प्रसन्नता में ही

वह अपने ही घर के अंदर होता है।
वह अकेली तीव्र चाह से ही
प्रबल कामवासना को शांत करता है
वह परमात्मा के हृदय पर प्रेम का धावा बोलता है
जो सभी लोगों के हृदय पात्रों को मथ कर
प्रेम—नवनीत उत्पन्न करता है
ऐसा करते हुए वह अपने आप को
उसके शाश्वत प्रेम में डूबा हुआ ही पाता है।
तुम अपने हृदय रूपी घर की भली भांति देखभाल करो
क्योंकि उसी में वह मन मनुष्य निवास करता है।
प्रेम भरी आंखों की काली पुतलियों से
दृष्टि उस पर केंद्रित कर दो।
पारे लगे शीशे के दर्पण पर
उसकी छवि तुम्हें तैरती दिखाई देगी।
इस पृथ्वी की क्रीड़ा स्थली पर
उसकी गहन खोज करते हुए
छिन्न—भिन्न होते दांव पेंचों की तरह
तुमने कितना अधिक समय व्यर्थ गंवा दिया।
अब इस प्रेम—समारोह में सम्मलित होकर
उमड़ते भावों से उसे खोजो
और इस प्रेम—महोत्सव में डूब ही जाओ।

बाउल कहते हैं कि केवल बौद्धिक खोज से कोई सहायता नहीं मिलने वाली। बस, केवल प्रेम—महोत्सव में सम्मलित हो जाओ: यही है वह जिसे प्रार्थना और आराधना कहते हैं।

नाचते, गाते उत्सव आनंद मनाते, इस परमानंद में डूब ही जाओ। तुम अपने माध्यम से परमात्मा को लीलामय होकर खेलने की अनुमति दो, अपने खेलपूर्ण होने को ही तुम अपनी प्रार्थना, और केवल उत्सव आनंद को ही तुम अपनी पूजा बना लो।

आज इतना ही।

छठवां प्रवचन

अभी यह क्षण समय का भाग नहीं है

प्रश्नसार:

पहला प्रश्न: मुझे कैसे प्रार्थना करनी चाहिए? मैं प्रार्थना करने में जो कुछ अनुभव करता है, मैं नहीं जानता कि अपने इस प्रेम की मैं किस तरह ठीक से अभिव्यक्त करूं?

प्रार्थना कोई विधि नहीं है, वह कोई संस्कार नहीं है, और न वह कोई औपचारिकता है। यह हृदय का सहज स्वाभाविक उमड़ता उद्रेक है, इसलिए यह पूछो ही मत—कैसे? क्योंकि यहां कैसे जैसा कुछ है ही नहीं, और ' न कैसे जैसा ' कुछ हो भी सकता है।

जिस क्षण जो कुछ घटता है, वही ठीक है। यदि आंसू उमड़ते हैं तो अच्छा है। यदि तुम कोई गीत गाने लगते हो तो यह भी ठीक है। यदि तुम नाचने लगते हो, तो भी ठीक है। यदि अंदर से कुछ भी नहीं आ रहा है और तुम बस शांत खड़े रहते हो, तो यह भी ठीक है। क्योंकि प्रार्थना, कोई अभिव्यक्ति नहीं है, वह किसी खोल या आवरण में नहीं है, वह उस खोल या आवरण में बंद उस सारभूत तत्व में है।

कभी मौन ही प्रार्थनापूर्ण होता है, तो कभी गीत गाना प्रार्थना बन जाता है। यह सभी कुछ तुम पर और तुम्हारे हृदय पर निर्भर करता है। इसलिए यदि मैं तुमसे गीत गाने के लिए कहता हूं और तुम गीत इसलिए गाते हो क्योंकि ऐसा करने के लिए मैंने तुमसे कहा था, तब वह प्रार्थना शुरू से ही नकली और झूठी है। अपने हृदय की सुनो, उस क्षण को महसूस करो और उसे होने दो। और फिर जो कुछ भी होता है, वह ठीक ही होता है।

तुम्हारे साथ कभी कुछ भी नहीं घटेगा, लेकिन वह तो निरंतर घट ही रहा है, तुम उसे घटने की अनुमति तो दो, उस पर तुम अपनी इच्छा मत लादो। जब तुम पूछते हो—कैसे? तो तुम अपनी चाह थोपने की कोशिश कर रहे हो, तुम कोई योजना बनाने की कोशिश कर रहे हो। इसी तरह तुम प्रार्थना से चूक जाते हो। इसी कारण सभी धर्मस्थल और धर्म, संस्कार और कर्मकांड बन कर रह गए हैं। उनकी एक तय की गई निश्चित प्रार्थना है, उसका एक निश्चित रूप है, एक अधिकृत और स्वीकृत किया गया अनूदित वर्णन है। लेकिन कोई भी व्यक्ति कैसे प्रार्थना की शब्दावली को स्वीकृति प्रदान कर सकता है? कोई भी व्यक्ति कैसे उसका अधिकृत वर्णन तैयार कर तुम्हें दे सकता है? प्रार्थना तो तुम्हारे अंदर से उठती और उमगती है, और प्रत्येक क्षण में उसकी अपनी प्रार्थना होती है, और प्रत्येक चित्तवृत्ति में उसकी अपनी निजी प्रार्थना होती है। यह कोई भी नहीं जानता कि तुम्हारे आतरिक संसार में कल सुबह क्या घटने जा रहा है? उसे कैसे निश्चित और तय किया जा सकता है?

एक पहले से तैयार की गई प्रार्थना झूठी और नकली प्रार्थना है; यह तो निश्चित रूप से कहा जा सकता है। एक निर्धारित विधि से तैयार संस्कारित प्रार्थना, प्रार्थना ही नहीं है उसके बाबत यह पूरी तौर से निश्चित रूप से कहा जा सकता है। एक असंस्कारित, सहज स्वाभाविक भाव भरी मुद्रा और कुछ भी नहीं, एक प्रार्थना ही है।

कभी तुम बहुत उदासी का अनुभव कर सकते हो, क्योंकि उदासी परमात्मा से ही सम्बंधित है। उदासी भी दिव्य होती है। यहां हमेशा प्रसन्न रहना भी कोई जरूरी नहीं है। तब यह उदासी ही तुम्हारी प्रार्थना है। तब तुम अपने हृदय को रोने और बिलखने दो, और आंखों को आंसू बरसाने दो। तब इस उदासी को ही परमात्मा की अर्पित कर दो। वहां तुम्हारे हृदय में जो कुछ भी हो, उसे ही उन दिव्य चरणों में अर्पित कर दो—वह प्रसन्नता हो अथवा उदासी, और कभी—कभी वह क्रोध या आक्रोश भी हो सकता है।

जब कभी कोई परमात्मा से नाराज भी हो सकता है। यदि तुम परमात्मा से नाराज नहीं हो सकते, तो तुमने प्रेम को जाना ही नहीं। जब कभी कोई वास्तव में एक गहरे उन्माद में हो सकता है। तब अपने क्रोध को ही अपनी प्रार्थना बन जाने दो। परमात्मा से लड़ो—वह तुम्हारा है और तुम उसके हो, और प्रेम कोई औपचारिकता नहीं जानता। प्रेम में सभी तरह के संघर्ष बने रह सकते हैं। यदि उसमें लड़ाई और संघर्ष का अस्तित्व न हो, तब वह प्रेम है ही नहीं। इसलिए जब कभी तुम्हें प्रार्थना करने जैसा कुछ भी अनुभव न हो, तो तुम उसे ही अपनी प्रार्थना बना लो। तुम परमात्मा से कहो—'' जरा ठहरो! देखो, मेरा मूड ठीक नहीं है, और तुम जिस तरह से यह सब कुछ कर रहे हो, यह कृत्य तुम्हारी प्रार्थना करने योग्य नहीं है।''

लेकिन तुम इसे अपने हृदय का सहज स्वाभाविक भावोद्वेग बनने दो

परमात्मा के साथ कभी भी अप्रामाणिक बनकर मत रहो, क्योंकि यह तरीका उसके साथ अस्तित्व में बने रहने का नहीं है। यदि तुम परमात्मा के साथ ईमानदार नहीं हो—यदि गहरे में तो तुम शिकायत कर रहे हो और ऊपर ही ऊपर प्रार्थना कर रहे हो? तब परमात्मा तुम्हारी शिकायत की ओर ही देखेगा, प्रार्थना की ओर नहीं। तुम झूठे बन जाओगे। वह सीधे तुम्हारे हृदय में देख सकता है। तुम किसे धोखा देने अभी यह क्षण समय का भाग नहीं है?

की कोशिश कर रहे हो? तुम्हारे चेहरे की मुस्कान परमात्मा को धोखा नहीं दे सकती, तुम्हारा वास्तविक सत्य वह जान ही लेगा। केवल वही तुम्हारे सत्य को जान सकता है, उसके सामने झूठ ठहरता ही नहीं। इसलिए वहां सत्य को ही बने रहने दो। तुम उसे केवल अपना सत्य ही भेंट करो और कहो— आज मैं तुमसे नाराज हूं तुम्हारे इस संसार से नाराज हूं तुम्हारे द्वारा दिए इस जीवन से नाराज हूं। मैं तुमसे घृणा करता हूं। और मैं तुम्हारी प्रार्थना भी नहीं कर सकता, इसलिए तुम्हें आज मेरी प्रार्थना के बिना ही रहना होगा। मैंने अब तक बहुत सहा है, अब तुम सहो।

उससे इसी तरह बात करो जैसे कोई अपने प्रेमी या मित्र या मां के साथ बातचीत करता है। उससे ऐसे बात करो जैसे कोई छोटे बच्चे के साथ बात सकता है। मैं एक परिवार के साथ ठहरा हुआ था, और वहां मां ने अपने छोटे बच्चे को प्रार्थना करने का आदेश दिया। वह बच्चा अभी सोने के लिए बिस्तरे पर जाने के लिए तैयार नहीं था और वह कुछ देर और मेरे पास रहना चाहता था। उसकी प्रार्थना करने में भी कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन वह परिवार बहुत अधिक अनुशासन प्रेमी था इसलिए उन्होंने उससे कहा—'' अब नौ बज गये हैं। तुम सोने के लिए जाओ, और देखो, प्रार्थना करना भूल मत जाना।''

मैं देख सकता था कि वह बहुत नाराज था। वह अपने कमरे में गया। मैंने केवल यह सुनने के लिए ही, कि वह कैसी प्रार्थना करने जा रहा है, उसका चुपके से पीछा गया। अंधेरे में मैंने उसे यह कहते हुए सुना—'' हे परमात्मा तू बुरे लोगों को अच्छा बना और अच्छे लोगों को बहुत अच्छा "। वह जानता था कि उसके माता और पिता अच्छे तो हैं लेकिन वे बहुत अधिक अच्छे नहीं हैं।

मैंने एक अन्य दूसरे बच्चे के बारे में भी सुना है। मैं एक परिवार के साथ एक अतिथि गृह में ठहरा हुआ था। पहली रात बच्चे ने प्रार्थना की। वह बच्चा सोते हुए हमेशा मद्धिम प्रकाश जलाये रखता था, लेकिन उस रात बिजली चले जाने से गहन अंधकार था। उसके प्रार्थना प्रारम्भ करते ही बिजली चली गई थी। वह बिस्तरे से उठकर अपनी मां से बोला—'' अब मुझे फिर से और अधिक सावधानी से प्रार्थना करनी होगी क्योंकि रात और अधिक अंधेरी होती जा रही है।'' पहले तो उसने कामचलाऊ औपचारिक प्रार्थना की थी, लेकिन अब चूंकि रात अंधरी हो गई थी और वहां कोई प्रकाश भी न था, इसलिए वह अधिक भयभीत था। उसने कहा— " मुझे अब

फिर से प्रार्थना करनी होगी। मुझे फिर बिस्तरे से उठकर कहीं अधिक सावधानी से प्रार्थना करनी होगी क्योंकि अब यहां कहीं अधिक खतरा है।''

एक बच्चे बनकर ही बच्चों की प्रार्थनाएं सुनो।

सभी धर्म कहते हैं कि परमात्मा परमपिता है। वास्तव में जोर इस बात पर होना चाहिए कि मनुष्य एक बच्चे की भांति है। जब हम परमात्मा को परमपिता कहते हैं तो उसका असली अर्थ यही है। लेकिन हम लोग यह भूल गए है— परमात्मा परमपिता है, लेकिन हम लोग उसके बच्चे नहीं हैं। इसे भूल जाओ कि वह तुम्हारा पिता है अथवा नहीं, तुम बस एक छोटे बच्चे की भांति हो जाओ—सहज, स्वाभाविक सच्चे और प्रामाणिक। मुझसे या किसी दूसरे से भी यह पूछो ही मत कि प्रार्थना कैसे की जाये? क्षण को ही यह तय करने दो, यह क्षण ही निर्णायक होगा और उस क्षण का सत्य ही तुम्हारी प्रार्थना होनी चाहिए।

यही मेरा उत्तर है उस क्षण का सत्य, वह चाहे जो भी हो, जैसा भी हो, बिना शर्त तुम्हारी प्रार्थना बन जाना चाहिए। और एक बार उस क्षण का सत्य तुम्हारी सम्पत्ति बन जाता है, तुम विकसित होना शुरू हो जाओगे और तुम तभी प्रार्थना के अतुलित सौंदर्य को जानोगे। तुम पथ में प्रविष्ट हो चुके हो। लेकिन यदि तुम केवल एक ही प्रार्थना एक ही विधि से दोहराते चले जाओगे तब तुम चूक जाओगे। तुम पथ में कभी प्रविष्ट ही न हो सकोगे, और तुम केवल उससे बाहर ही बने रहोगे।

दूसरा प्रश्न:

प्यारे भगवान! आपके बुद्धत्व को चुराने के लिए मैं निरंतर प्रार्थनाएं किए चले जाता हूं! भगवान, कृपा करके कम से कम मुझे आशीर्वाद दें जिससे मेरी प्रार्थना कहीं अधिक सघन और जीवंत हो जाये।

यह बहुत सुंदर है। एक शिष्य को अपने सद्गुरु से बहुत कुछ चुराना चाहिए क्योंकि यहां थोड़ी सी ऐसी चीजें हैं, जिन्हें दिया नहीं जा सकता; केवल तुम उन्हें ले सकते हो, मैं उन्हें तुम्हें दे नहीं सकता। उन वस्तुओं की प्रकृति या स्वभाव ही कुछ ऐसी है कि उन्हें दिया नहीं जा सकता, लेकिन तुम उन्हें ले सकते हो। एक शिष्य को अपने सद्गुरु से काफी कुछ चुराना होता है। यह प्रश्न बहुत महत्त्वपूर्ण है और मैं तुम्हें आशीर्वाद देता हूं।

लेकिन अकेली प्रार्थना से कुछ नहीं होने का, क्योंकि प्रार्थना का सम्बंध एक विशिष्ट मार्ग से है और बुद्धत्व का मार्ग दूसरा है। प्रार्थना, भक्ति के पथ का एक भाग है, और भक्त या सूफी कहता है—'' मैं नहीं चाहता किसी भी तरह का बुद्धत्व। मेरे मालिक! मैं तो आपके साथ निरंतर एक हजार एक जन्मों में, एक हजार एक खेलों को एक हजार एक संसारों में खेलना चाहता हूं। मैं इस खेल या लीला से बाहर नहीं होना चाहता, यह लीला बहुत सुंदर है, और मैं इसी का एक भाग बना रहना चाहता हूं। मेरे स्वामी मुझे इस योग्य बना, जिससे मैं सदा अभी और यहीं तेरे साथ आख मिचौली की लीला खेलता रहूं।''

प्रार्थना एक प्रेमी का, भक्ति के मार्ग का एक भाग है। एक प्रेमी, प्रेम के बंधन को प्रेम करता है, वह किसी भी तरह से उससे बाहर आने का प्रयास नहीं करता। वास्तव में उसकी केवल यही प्रार्थना है कि उसे इस योग्य समझा जाना चाहिए कि परमात्मा उसे अपनी लीला में निरंतर स्थान देता रहे। वह खेल, खेल रहा है और खेल बहुत सुंदर है। वह उससे मुक्त नहीं होना चाहता।

बुद्धत्व शब्द, ध्यान मार्ग से सम्बंध रखता है। ध्यानी कहता है—'' बस, अब बहुत हो चुका। मैं एक लम्बी अवधि से बंधन में बंधा दुःख झेल रहा हूं अब तो मुझे मुक्त करो।'' वास्तव में वह कुछ मांग ही नहीं सकता—क्योंकि ध्यान के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति के लिए प्रार्थना भी एक बन्धन है। महावीर ने कभी प्रार्थना नहीं की। बुद्ध ने कभी प्रार्थना नहीं की। बुद्ध के लिए प्रार्थना अर्थहीन थी उन्होंने उससे अलग रहने के सारे प्रयास किए। इसलिए यदि तुम बुद्धत्व चाहते हो, तो प्रार्थना करना ही मत, क्योंकि प्रार्थना एक बंधन निर्मित करेगी।

यह प्रेम का शुद्धतम रूप है। यह बंधन बहुत सुंदर और सुहाना है लेकिन है बंधन ही। यदि तुम उस मार्ग का चुनाव करते हो, तब वह ठीक है। लेकिन तब उसके लिए बुद्धत्व ठीक शब्द नहीं

मैंने सुना हैं.....?

एक कुपित मां ने अपने नवयुवा पुत्र से पूछा—'' तुमने मुझे बताया क्यों नहीं कि तुम मछली का शिकार करने जाना चाहते हो?"

उस बच्चे ने उत्तर दिया—'' क्योंकि मैं बस मछलियों के शिकार के लिए जाना चाहता था।''

यदि तुम वास्तव में मछली मारने जाना चाहते हो, तो पूछो मत, जाओ। पूछने से कोई सहायता नहीं मिलने वाली। यदि तुम बुद्धत्व को उपलब्ध होना चाहते हो, तब तुम्हें बिलकुल अकेले ही रहना होगा। तब वहां कोई परमात्मा है ही नहीं; तब वहां कोई भी ऐसा नहीं, जो तुम्हारी सहायता कर सके। क्योंकि यदि तुम किसी की सहायता चाहते हो, तो वह सहायता ही एक बंधन बन जायेगी। यदि मैं तुम्हें मुक्त होने में सहायता करता हूं तो तुम मुझ पर आश्रित होने लगोगे। तब बिना मेरे तुम मुक्त होने में समर्थ न हो सकोगे। ध्यान के मार्ग पर सहायता करना सम्भव नहीं है, केवल संकेत दिए जा सकते हैं। बुद्ध ने कहा है—'' बुद्ध केवल मार्ग दिखलाते हैं। वे वास्तविक विधि से कोई सहायता नहीं कर सकते। तुम्हें स्वयं ही अपने पथ पर आगे बढ़ना होगा, तुम्हें अपना प्रकाश स्वयं बनना होगा।''

मैंने एक घटना के बाबत सुना है:

मकान मालिक ने नसरूद्दीन से कहा—'' मैं कुछ दिनों के लिए बाहर जा रहा हूं और मैं तुम्हारे पास सभी चाभियां छोड़े जा रहा हूं। इसमें मेरे भण्डार गृह की चाभी के साथ मेरी सेफ और रत्नजटित आभूषणों के बक्से की भी चाभियां हैं। मैं भलीभांति जानता हूं कि तुम्हारे हाथों सब कुछ सुरक्षित रहेगा, लेकिन वास्तव में मैं आशा करता हूं कि तुम उन्हें छुओगे नहीं।''

जब मकान मालिक अपने सफर से वापस आया तो मुल्ला ने उससे कहा— " मेरे मालिक! अब मैं आपको छोड्कर जाना चाहता हूं।

"आखिर क्यों नसरुद्दीन?"

" क्योंकि आप मुझ पर विश्वास नहीं करते।''

" यह तुम कैसे कह सकते हो, जब मैं अपनी सभी चाभियां ही तुम्हारे पास छोड़ कर गया।''

" यह तो आपने किया मेरे मालिक लेकिन उनमें से कोई भी चाभी किसी ताले में लगी ही नहीं।''

यदि तुम वास्तव में मुझसे बुद्धत्व चुराना चाहते हो, तो किसी भी कुंजी से कोई ताला खुलेगा नहीं—इसलिए नहीं कि मैं तुम्हें गलत कुंजियां दे रहा हूं केवल इसलिए क्योंकि दरवाजा पहले ही से खुला है और वहां कोई ताला है ही नहीं..... और तुम तालों की खोज कर रहे हो, जबकि ताले जैसी किसी चीज का अस्तित्व है ही नहीं। इसलिए तुम कुंजी की वजह से ताले की खोज कर सकते हो, और तुम चूक जाओगे। दरवाजा पहले ही से खुला है, तुम बस मुझमें प्रवेश करो और ' वह ' वहां है। कोई भी तुम्हारा मार्ग रोक नहीं रहा है।

लेकिन इसमें प्रार्थना सहायक न होगी, केवल ध्यान ही सहायता करेगा। ध्यान ही तुम्हें स्पष्ट रूप से देखने की क्षमता देगा।

महान जादूगर हुडनी के जीवन का एक बहुत सुंदर प्रसंग है। उसका पूरा जीवन अत्यधिक सफलता से बीता; और वह चमत्कारों का सफल व्यापारी था। उसने बहुत से ऐसे चमत्कार किए कि यदि वह मनुष्यता को ठगने वाला व्यक्ति होता, तो वह बहुत आसानी से ठग सकता था। लेकिन वह एक बहुत ईमानदार व्यक्ति था। वह कहा करता था—''जो कुछ मैं कर रहा हूं वह और कुछ नहीं बल्कि एक कुशलता है; और उसमें चमत्कार

जैसा और कुछ भी नहीं।'' किसी भी जादूगर ने कभी इतना नहीं किया जितना अधिक चमत्कार हुडनी ने दिखलाया। उसकी शक्ति पर विश्वास करना लगभग असम्भव था। उसे संसार के लगभग सभी अभी यह क्षण समय का भाग नहीं है?

कैदखानों में बडी सुरक्षा में रखा गया, और कुछ ही पलों में वह उनसे बाहर निकल आता था। उसे जंजीरों, हथकड़ियों, बेड़ियों में ताले लगाकर रखा जाता और कुछ ही क्षणों में वह बाहर आ जाता। न जंजीरें काम करतीं और न ताले। कुछ ऐसा घटता कि वह तुरंत मुक्त हो जाता। उसे मुक्त होने में मिनिट भी नहीं, बस केवल कुछ सेकिंड ही लगते।

लेकिन अपने पूरे जीवन में केवल एक बार वह इटली में असफल हुआ। वह रोम के केंद्रीय कारागार में बंदी बनाकर रखा गया और हजारों लोग उसके बाहर आने को देखने के लिए इकट्ठे हो गए। कई मिनट गुजर गए लेकिन उसके बाहर आने का कोई चिह्न न दिखाई दिया। लगभग आधा घंटा गुजर गया और लोगों में बैचेनी बढ़नी शुरू हो गई, क्योंकि ऐसा आज तक कभी भी नहीं हुआ था।

"आखिर हुआ क्या? क्या वह पागल हो गया, क्या वह मर गया अथवा हुआ क्या? अथवा क्या वह महान जादूगार असफल हो गया?

आखिर एक घंटे बाद वह पसीने से तरबतर हंसता हुआ बाहर आया। लोगों ने उससे पूछा—'' आखिर आपको हुआ क्या? एक घंटा? हम लोग तो सोच रहे थे कि कहीं आप पागल तो नहीं हो गये अथवा कहीं मर तो नहीं गए?" यहां तक कि अधिकारी भी यह सोच रहे थे कि चलकर उसे देखा जाये कि उसके साथ हुआ क्या?

उसने उत्तर दिया—''उन लोगों ने मेरे साथ चालाकी की। दरवाजे में ताला लगा ही नहीं था। मेरी सारी कुशलता ताले को खोलने की है और मैं यह खोजने की कोशिश कर रहा था कि ताला है कहां, पर वहां कोई ताला पड़ा ही न था। दरवाजे पर ताला लगाया ही नहीं गया था, वह पहले ही से खुला हुआ था। थक कर, चिंतित, परेशान और उलझन में डूबा जब मैं गिर पड़ा और दरवाजे से ठोकर लगी तो दरवाजा खुल गया। इस तरह मैं बाहर आया; लेकिन इसमें मेरी कुशलता काम न आई।''

ठीक यही मामला मेरे साथ भी है।

यही प्रश्न बोधिधर्म से भी पूछा गया था; उसके पास बहुत सी कुंजियां थीं। कोई भी कुंजी किसी ताले में लगती न थी, और वह अधिक से अधिक कुंजियां इकट्ठा ही किये चले जाता था। प्रश्नकर्त्ता बहुत हिसाब किताब का चतुर व्यक्ति है। अब जब वे कुंजियां नहीं लग रही हैं, वह मुझसे आशीर्वाद मांग रहा है। मेरे आशीर्वाद तो तुम सभी के लिए हैं ही, तुम चाहे उन्हें मांगो अथवा नहीं, लेकिन यह कुंजियां किसी काम की नहीं हैं। इन सभी कुंजियों को फेंक दो। दरवाजा तो खुला ही हुआ है। कोई भी तुम्हारा रास्ता नहीं रोक रहा। लेकिन यदि तुम बुद्धत्व खोज रहे हो, तो उसका मार्ग ध्यान है। यदि तुम्हें शाश्वत लीला की खोज है तो बुद्धत्व की भाषा में सोचने की कोई जरूरत ही नहीं है।

यह दोनों निर्दिष्ट करने वाले मार्ग भिन्न हैं, पूरी तरह एक दूसरे से जुदा। लेकिन अंतिम परिणाम एक ही जैसा है। भक्त या प्रेमी, परमात्मा की सुंदर लीला का भाग बनकर ही उस बोध को प्राप्त करता है, और ध्यानी इस लीला को बहुत सुंदर पाता है जब उसे बुद्धत्व घटता है। लेकिन दोनों भिन्न दिशाओं से भिन्न विधियों और भिन्न व्यवहार के द्वारा वहां पहुंचते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को बहुत स्पष्ट रूप से यह निर्णय लेना होता है, अन्यथा तुम उलझन में पड़ जाओगे। प्रेम अथवा ध्यान बहुत स्पष्टता से चुन लेना है और तब उस पथ पर निष्ठा से थिर हो जाना है। अंतिम रूप से जो दूसरे पथ पर चलने से घटित होता है, वह तुम्हें भी घटता है, इसलिए परेशान

होने की जरा भी जरूरत नहीं। लेकिन यह सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने पर ही घटता है। सभी पथ, पर्वत के शिखर पर पहुंच कर मिल जाते हैं, लेकिन सभी मार्गों पर अलग अलग तरह से चलना होता है।

तीसरा प्रश्न:

पिछले जन्य के अनुभवों करे भ्रम और पागलपन से कैसे पहचाना जाए?

इसकी कोई आवश्यकता है ही नहीं: जो सब कुछ बीत गया वह पूरा अतीत ही एक भ्रम अथवा माया है। यहां अतीत और भ्रम के बीच कोई अंतर है ही नहीं। जो कुछ गुजर चुका, वह अब सत्य रहा ही नहीं। अब इस बात को बहुत गहराई से समझ लेना है।

बीता हुआ कल जा चुका, वह अब रहा ही नहीं। अब एक असली गुजर जाने वाले कल और एक काल्पनिक कल में अंतर क्या रहा? उनमें कोई भी अंतर नहीं है क्योंकि दोनों का अस्तित्व केवल तुम्हारे मन में है—वह चाहे असली कल हो या काल्पनिक कल। दोनों एक तरह की कल्पनाएं ही होंगे। एक असली बीतने वाले कल और नकली कल में क्या अंतर होगा? उनमें कोई भी अंतर नहीं क्योंकि दोनों ही नकली हैं। इन दोनों का अस्तित्व नहीं क्योंकि दोनों ही नकली हैं। इन दोनों का अस्तित्व कहीं भी न होकर केवल तुम्हारे मन में है। पूरा अतीत एक भ्रम और छलावा है, पूरा भविष्य भी एक भ्रम है, क्योंकि वह अभी है ही नहीं, और इन दो के मध्य वर्तमान है। इसीलिए पूरब में हम पूरे अस्तित्व को एक भ्रम अथवा माया कहते हैं, क्योंकि दो भ्रमों के मध्य में वास्तविक सत्य का अस्तित्व कैसे हो सकता है? और आज भी कल होने जा रहा है, आज निरंतर कल में से गुजर रहा है। वर्तमान निरंतर अतीत बनता जा रहा है। लेकिन वास्तविक सत्य, भ्रम कैसे बन सकता है? भविष्य, अतीत में से होकर गुजर रहा है और वर्तमान केवल उसके गुजरने का एक द्वार है, इसके अतिरिक्त वह कुछ भी नहीं है। भविष्य भी भ्रम है, अतीत भी एक भ्रम है, द्वार पर केवल एक क्षण के लिए चीजें प्रकट होकर असली होने लगती हैं। यह किस तरह का सत्य हो सकता है? यह भी भ्रमपूर्ण है। हिंदू कहते हैं कि सब केवल बाह्य आकृति है, और असली जैसा कुछ भी नहीं है।

असली और वास्तविक वह होता है जो जीवित रहे। असली सत्य वह होता है जो हमेशा शाश्वत रूप से यहां होता है। सत्य वह होता है जो समय के पार हो। नकली और झूठा वह होता है जो समय के अंदर हो। अतीत, समय के अंदर बंदी है। वर्तमान को झूठा और नकली के रूप में सोचना ही कठिन होगा, लेकिन शुरुआत अतीत से करो। अतीत को झूठा सोचना बहुत सरल है, क्योंकि वह घटा अथवा नहीं, इससे क्या फर्क पड़ता है? हो सकता है वह हुआ ही न हो। वह केवल तुम्हारे मन में ही हो सकता है, वह केवल तुम्हारा विचार हो सकता है कि वैसा कुछ हुआ है। अतीत के बारे में झूठा या नकली सोचना और ऐसा ही भविष्य के बारे में भी सोचना बहुत आसान है।

इन दो के बीच ही में वर्तमान का संकरा सेतु है। लेकिन दो नकली वास्तविकताओं के बीच असली या प्रामाणिक का अस्तित्व कैसे हो सकता है? मध्य का भाग प्रामाणिक और सत्य कैसे हो सकता है, जब उसके दोनों छोर असत्य और नकली हैं, और जबकि असली सत्य भी निरंतर भ्रम और अवास्तविकता में बदलता जा रहा है? नहीं, यह सभी कुछ जो अनुभव किया गया, वह एक कल्पना है, वह एक स्वप्न की सामग्री है। केवल अनुभव करने वाला व्यक्ति ही सत्य है, केवल देखने वाला ही सच्चा है। जो देखा गया वह दृश्य एक सपना है, उसका दृष्टा, साक्षी ही केवल सत्य है।

मनुष्य जाति के पूरे इतिहास में मनुष्य की चेतना की महानतम खोजों में से यह एक महत्त्वपूर्ण खोज है। इसके मुकाबले कुछ अन्य है ही नहीं। अन्य सभी खोजें मात्र बचपने जैसी चीजें हैं। यह एक खोज ही सभी धर्मों की आधारशिला है: कि तुम हो—तुम एक साक्षी की भांति हो। एक स्वप्न के होने के लिए भी स्वप्न देखने वाले

की आवश्यकता होती हे। एक स्वप्न, एक स्वप्न हो सकता है, लेकिन स्वप्न देखने वाला स्वप्न नहीं हो सकता। धोखा देने के लिए भी, मुझे तो अस्तित्व में होना ही होग, गलती करने के लिए भी, मेरी या मैं की जरूरत होगी ही। बिना मेरे गलती हो ही नहीं सकती। यह साक्षी ध्यान ही की खोज है।

इसलिए इस बारे में फिक्र करो ही मत, कि भ्रमों और पागलपन से पिछले जन्मों के अनुभवों को कैसे पहचाना जाए। इसमें पहचानने जैसा कुछ है ही नहीं। इसकी यहां कोई आवश्यकता है ही नहीं।

मैंने सुना है: मुल्ला नसरुद्दीन अपनी पत्नी को पिछली रात को देखे गये सपने के अनुभव के बारे में बता रहा था—'' वह भयानक स्वप्न था। मैं जो के घर में एक जन्मदिवस समारोह में भाग ले रहा था। जो की मां ने तीन फीट ऊंची एक चाकलेट पका कर तैयार की थी, और जब उसने उसे काटकर प्रत्येक व्यक्ति को उसका एक—एक टुकड़ा परोसा तो वह इतना बड़ा था कि पेट के नीचे लटक रहा था। तब उसने घर में बनाई कुछ आइसक्रीम निकाली। वह भी उसके पास इतनी अधिक थी कि उसने हममें से प्रत्येक को सूप का कटोरा भर—भर कर दी।''

उसकी पत्नी ने पूछा—'' लेकिन इस सपने में भयानक जैसा क्या है?''

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' ओह! मैं उसे चख सकता कि उससे पहले ही मैं जाग गया।''

अतीत से हम निरंतर जाग रहे हैं। प्रत्येक क्षण जागने का ही क्षण है। लेकिन हम निरंतर भविष्य की नींद में गाफिल हो जाते हैं। इसलिए प्रत्येक क्षण नींद और अंधकार में फिर से ठोकर लगने जैसा है। इसलिए असली योग्यता जागने और सोने के बीच भेद कर पाना है। किसी अन्य दूसरी योग्यता का कोई मूल्य ही नहीं है।

इतने अधिक जागृत बनने का प्रयास करो, कि तुम फिर से गहरी नींद में सो न जाओ। इतने अधिक सजग रहो कि भविष्य को तुम्हें फिर से धोखा देने की स्वीकृति न देनी पड़े, जैसे कि तुम उसे पहले से देते आये हो। जो कुछ अतीत बन चुका है, लेकिन एक बार यदि वह तुम्हारा भविष्य है, तब तुम उससे धोखा खाओगे। अब वह भविष्य अतीत बन चुका है, और अब दूसरा भविष्य आ रहा है। प्रत्येक क्षण भविष्य आ पहुंचता है और भविष्य केवल तुम्हें तभी धोखा दे सकता है, यदि तुम सोये हुए हो। तब फिर वह अतीत हो जायेगा। अब मैं एक बात तुमसे कहना चाहता हूं : यदि तुम सजग बने रहे और तुमने भविष्य को धोखा देने की वर्तमान में अनुमति नहीं दी, तो अतीत विसर्जित हो जाता है। तब उसकी कोई स्मृति भी शेष नहीं रह जाती, और उसका कोई चिन्ह तक नहीं रह जाता। तब कोई भी व्यक्ति कोरी स्लेट की तरह हो जाता है, बिना बादलों के एक आकाश की भांति, एक अरहित ज्योति की भांति।

यही है वह बुद्धत्व की दशा—इतनी अधिक सजगता कि केवल साक्षी ही सत्य हो और अन्य दूसरी कोई भी चीज न हो, केवल वह सतह पर पानी की लहरों की भांति हो। प्रत्येक चीज बस गुजर रही है, सब कुछ केवल बहा जा रहा है। केवल एक ही चीज रह जाती है, और वह रह जाती है—तुम्हारी चेतना और तुम्हारी सजगता।

लेकिन हम अतीत के जाल में फंस जाते हैं। जो कुछ सामने से गुजरता है, किसी भी तरह उसमें से कुछ मन में बना रहता है। वह गुजर जाता है, वह वहां ठहरता नहीं, लेकिन किसी तरह मन उससे बंध जाता है।

मैंने सुना है.... एक व्यक्ति ने अपने ऊपर की मंजिल के एपार्टमेन्ट से सीढ़ियों के नीचे वाले एपार्टमेन्ट में खड़े मुल्ला नसरुद्दीन से चीखते हुए कहा— '' यदि तुमने अपना क्लेरीनेट बजाना बंद नहीं किया तो मैं पागल हो जाऊंगा।'' नसरुद्दीन ने उत्तर दिया—'' अब तो बहुत देर हो चुकी है। मैंने एक घंटे पहले ही उसे बजाना बंद कर दिया था।''

लोग निरंतर उन बातों के बारे में परेशान रहते हैं, जो लगभग बीत चुकी होती हैं अथवा गायब हो जाती हैं। अतीत ही तुम्हें पागल बनाता है। तुम सोचे चले जाते हो, तुम अपने घावों को उघाडते उनसे खेलते रहते हो और तुम बार—बार अपने आप को चोटिल बनाते रहते हो। तुम फिर—फिर अपने अहंकार को भोजन देते रहते हो। ऐसा प्रतीत होता है जैसे अतीत तुम्हारा खजाना हो, लेकिन वह और कुछ भी नहीं, केवल बुलबुला भर है, हवा का एक बुलबुला। और ऐसा ही भविष्य भी है: और इन दो के मध्य वर्तमान का क्षण है। सजग रहो, जागरूक बने रहो। किसी अन्य तरह की किसी योग्यता का कोई भी महत्त्व नहीं, केवल एक ही योग्यता महत्त्वपूर्ण है, और वह है सावधान अथवा असावधान बने रहने की।

अब मैं तुमसे यह कह सकता हूं यदि तुम असावधान रहे, तो जो कुछ घटता है वह काल्पनिक है। यदि तुम सजग हो, तब जो कुछ भी घटता है वही सत्य है। क्या तुम अपने भूतकाल में सजग थे? यदि तब तुम सजग थे, तो वही सत्य था। क्या तुम ठीक अभी भी सजग हो? यदि तुम सजग हो, तो जो कुछ भी तुम्हारे सामने घट रहा है, वही सत्य है। क्या तुम कल भी सजग बने रहोगे? तब जो कुछ भी घटेगा, वह सत्य होगा। इसलिए वास्तविक सत्य अथवा असत्य के बारे में भूल ही जाओ' केवल अधिक से अधिक सजग बनने का प्रयास करो।

सत्य अथवा झूठ, इस पदार्थगत संसार के गुण नहीं हैं, वे वैयक्तिक चेतना के गुण हैं। बुद्ध के लिए प्रत्येक वस्तु सत्य है। तुम्हारे लिए जो गहरी नींद में सोते हुए खर्राटे भर रहे हो, प्रत्येक वस्तु नकली और झूठी है। जरा इस तरह से भी विचार करो: तुम एक कमरे में सो रहे हो और दूसरा व्यक्ति तुम्हारे सिरहाने सजग और जागा हुआ बैठा हुआ है। कमरा वही है, दोनों ही उसी कमरे में हैं, एक ही स्थान मे है। एक गहरी नींद में सो रहा है—है, और दूसरा सजग बैठा हुआ है। क्या वे एक ही कमरे में है? क्या वे दोनों एक ही कमरे में हो सकते है? क्योंकि एक व्यक्ति जो सो रहा है वह स्वप्न देख रहा है, वह इस कमरे के अतिरिक्त अन्य दूसरे एक हजार एक कमरों के स्वप्न देख रहा है। क्या तुमने कभी उसी कमरे के बारे में कोई स्वप्न देखा है, जिसमें तुम सो रहे हो? नहीं, कभी भी नहीं। एक स्वप्न हमेशा किसी और जगह का होता है। यही स्वप्न का कार्य है कि वह तुम्हें कहीं अन्य स्थान पर ले जाए। जो व्यक्ति सोया हुआ है, वह स्वप्न देख रहा है। वह इस कमरे के बारे में और इस कमरे की वास्तविकता के बारे में सजग नहीं है। उसके पास अपना अलग काल्पनिक सत्य है। वह व्यक्ति जो उस व्यक्ति की बगल में सजग बना बैठा है, उसकी सजगता उसे पूरी तरह से भिन्न एक अलग गुण का सत्य दे रही है।

बुद्ध एक गांव से दूसरे गांव में टहलते हुए गतिशील रहते थे और उनके साथ उनका शिष्य आनंद रहता था, और दोनों दो भिन्न संसारों में रहते थे। आनंद सोया हुआ स्वप्न देखता हुआ चलता था और बुद्ध बिना स्वप्नों के सदा जागे हुए चलते थे। जब तुम स्वप्न नहीं देख रहे हो, तुम वास्तविक सत्य का सामना कर रहे हो। जब तुम स्वप्न देख रहे हो तो तुम्हारा केवल तुम्हारे सजगता के लिए फिर उसकी कसौटी क्या है?

अधिक से अधिक सजग बनो, तो संसार अधिक सत्य बन जाता है। और भी अधिक सजग रहने से संसार और भी अधिक वास्तविक और सत्य बन जाता है। जब तुम अपनी चेतना के सर्वोच्च शिखर पर होते हो, तो संसार इतना अधिक दीप्तिवान और सत्य से आलोकित हो उठता है कि उसे पदार्थ कहना भी कठिन लगता है। ऐसा व्यक्ति उसे परमात्मा कहता है, कुछ और कहने से काम चलता ही नहीं।

वह एक ऐसा दीप्तिवान सत्य और इतनी शाश्वत वास्तविकता होती है, कि ऐसे व्यक्ति को कहना ही होता है कि समय जैसे रुक गया है। सत्य और वास्तविकता न तो अतीत होता है, न वर्तमान और न भविष्य वह केवल बस होता है। वह यहीं और अभी होता है। अभी, यह अब समय का भाग नहीं है। केवल बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्तियों को ही उसका प्रयोग करने की अनुमति होनी चाहिए क्योंकि तुम्हारे 'अब' अभी केवल यहां नहीं है। तुम 'अब' को क्या कहकर पुकारोगे? जिस क्षण तुम उसे 'अब' कहते हो, वह पहले ही अतीत बन चुका होता है।

अथवा जिसे तुम 'अब' या 'अभी' कहकर पुकारते हो, पहले वह अतीत बनता है, और तब भविष्य हो जाता है। तुम इतने अधिक सोये हुए हो कि जिस समय तुम उस क्षण को पकड़ने के लिए आते हो, वह पहले ही से जा चुका होता है। वह बहुत फिसलने वाला होता है। 'अभी' केवल तभी सम्भव है जब तुम बहुत अधिक सजग हो और तुम्हारे मन में एक भी सपना न हो, विचार की एक भी तरंग न हो। तभी तुम पूरी तरह उपस्थित हो। जब तुम उपस्थित हो तो सत्य भी उपस्थित है। जब तुम 'अभी' में हो, और 'अभी' शाश्वत हो जाता है। तब वह कभी भी न आता है और न जाता है, वह बस वहां होता है। तब कुछ भी न आता है और न जाता है।

बुद्ध के महान शिष्य बोधिधर्म कहा करते थे—'' बुद्ध कभी भी रहे ही नहीं, वह कभी उत्पन्न ही नहीं हुए वह पृथ्वी पर कभी चले नहीं, और न उन्होंने कभी भी कुछ कहा ही। उनके एक शिष्य ने उनसे कहा—'' जो कुछ आप कह रहे हैं, वह केवल असंगत प्रतीत होता है, क्योंकि बुद्ध कपिलवस्तु में एक राजा के यहां उत्पन्न हुए उन्हें एक विशिष्ट नारी ने जन्म दिया। उन्होंने संसार का त्याग किया। ये तो सभी ऐतिहासिक तथ्य है, और आप उनसे भी इंकार किस चले जाते हैं। और आप स्वयं उन्हीं बुद्ध के अनुयायी हैं। यदि वह कभी भी हुए ही नहीं, यदि उनका कभी जन्म ही नहीं हुआ, और वह कभी पृथ्वी पर चले ही नहीं, तब आप किसका अनुसरण करते हैं?"

बोधिधर्म ने उत्तर दिया—'' मैं उसका अनुसरण करता हूं जो कभी उत्पन्न ही नहीं हुआ, कभी पृथ्वी पर चला ही नहीं जिसने कभी एक शब्द का उच्चारण तक नहीं किया और जो कभी मरा ही नहीं। मैं उसका अनुसरण करता हूं वही असली बुद्ध है। और अन्य सभी कुछ जिसे तुम इतिहास कहते हो, वह और कुछ भी नहीं, बल्कि वह सोये हुए लोगों के देखे गये सपने हैं।''

अब यह बात समझने जैसी है। मैं तुमसे बातचीत कर रहा हूं यह एक तथ्य है। मैं तुमसे बात कर रहा हूं तुम मुझे सुने रहे हो, लेकिन फिर भी बोधिधर्म बिलकुल ठीक कहता है: यह अभी भी एक स्वप्न हैं क्योंकि तुम जागे हुए नहीं हो। यदि तुम जाग गए हो तो तुम समझोगे कि मैंने एक शब्द का भी उच्चारण नहीं किया।

तब तुम पूरी तरह भिन्न सत्य को देख सकोगे, जहां शब्दों का उच्चारण नहीं किया जाता, जहां मौन का साम्राज्य है, जहां शब्दरहित सत्य का साक्षात्कार होता है। यदि तुम जागे हुए हो, तो तुम मुझे प्रयास रूप से समझ सकोगे और तुम समग्र घिरता को देख सकोगे, लेकिन यह तुम्हारे मौन पर निर्भर करेगा, यह तुम्हारी स्वप्नविहीन चित्त दशा पर निर्भर करेगा, यह तुम्हारे जागरण पर निर्भर करेगा। तब तुम समझ सकोगे कि तुम्हारे सामने जो व्यक्ति बैठा हुआ है, वह वास्तविक व्यक्ति नहीं है। तब वह कोई अन्य है, उसमें कुछ चीज ऐसी है जो सभी से पूरे तरह अलग है, जो पूर्ण रूप से जुदा है, तब यह सत्य तुम्हारे आगे उद्घाटित होगा।

यही इसका अर्थ है, जब हम बुद्ध को भगवान कहते हैं। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए वास्तविकता और सत्य नहीं है, बल्कि यह सत्य केवल उनके लिए है, जो सजग हो गये हैं: वे उसे पहचानते हैं। जब हम जीसस को परमात्मा का पुत्र कहते हैं, तो यही उसका अर्थ होता है। यह सत्य सभी के सामने उद्घाटित नहीं हुआ, क्योंकि प्रत्येक यही जानता था कि यह व्यक्ति और कोई भी नहीं, बल्कि जोसेफ नाम के बढ़ई का बेटा है, और जो केवल व्यर्थ का दावा कर रहा था कि वह परमात्मा का पुत्र है। लेकिन जो लोग उनसे प्रेम करते थे, जो लोग अत्यधिक सजग और सचेत थे, उनकी इस वास्तविकता के बारे में, कि जोसेफ बढ़ई का पुत्र इस सपनों के झूठे संसार की केवल छाया भर था और उनका परमात्मा का पुत्र होना ही वास्तविक सत्य था। लेकिन तुम इस सत्य को केवल उसी सीमा तक समझ सकते हो, जहां तक तुम स्वयं प्रामाणिक हुए हो। इससे अधिक तुम और कुछ भी नहीं कर सकते।

तथ्य, सत्य नहीं होते। कोई भी व्यक्ति तथ्य तो हो सकता है पर हो सकता है वह सत्य न हो, और कोई भी व्यक्ति सत्य हो सकता है, पर तथ्य नहीं। यह शब्द, तथ्य, लेटिन भाषा के मूल शब्द से निकला है, जिसका अर्थ होता है—करना। यह सुंदर शब्द है। तथ्य वह होता है जिसके बारे में तुम कुछ भी चीज कर सकते हो। लेकिन हमारा करना और कुछ भी नहीं, बल्कि सपने देखने जैसा है। तुम अपने सपने में भी बहुत सी चीजें या काम कर सकते हो, वे तथ्य हैं। तुम अपने सपने के साथ इतने अधिक आवेश में आ जाते हो कि कभी—कभी जब तुम कोई भयानक सपना देखते हो और तब जागने पर भी तुम फिर भी कांपते रहते हो, और पसीने से तरबतर होते हो। भय वहां तब भी बना ही रहता है, हृदय तेजी से धड़कता रहता है। अब तुम यह जानते हो कि वह एक स्वप्न था, अब तुम यह जानते हो कि वह एक बुरा सपना था और उस बारे में चिंता करने की कोई भी जरूरत नहीं, लेकिन फिर भी तुम कांपते रहते हो। सपना तुम्हें इतना अधिक प्रभावित करता है कि वह तुम्हारी वास्तविकता, तुम्हारे शरीर और तुम्हारे मन में गहरे पैबस्त हो जाता है।

लेकिन हम दो तरह की नींदों में जिए चले जाते हैं: एक नींद तो रात में आती है जिसे हम सोना या नींद कहते हैं और दूसरी दिन में होती है जिसे हम जागना कहते हैं। यह जागे हुए सोना है, केवल नाम भर का जागना है यह हमारी आखें तो खुली रहती हैं, लेकिन जब तक सोच विचार पूरी तरह रुक न जाए तुम्हारी असली आख, बोध की दृष्टि बंद ही रहती है।

"भ्रमपूर्ण दृष्टि से पिछले जीवन के अनुभवों को कैसे पहचाना जाये?"

न तो इसका कोई मार्ग है और न यहां इसकी कोई जरूरत ही है, और किसी भी व्यक्ति को इन बेवकूफी की चीजों में समय भी व्यर्थ, बरबाद नहीं करना चाहिए। जो जा चुका, वह जा चुका, जो बीत गया वह पहले ही से एक भ्रम है, एक छलावा है। केवल एक ही चीज बनी रहती है और वह है तुम्हारा साक्षी। बस उसी को थामे रहो, उसकी लीक से हटो मत। उसे पकड़ना कठिन होगा, तुम बार—बार उसकी लीक से हट जाओगे, लेकिन तुम्हें बार—बार अपने को याद दिलाते हुए उसे पकडना है। कई बार तुम लक्ष्य से चूक जाओगे, कई बार तुम्हें उसकी कुछ झलकें मिलेंगी। लेकिन धीमे— धीमे अधिक से अधिक सम्भावनाओं के नये द्वार खुलेंगे। और यदि तुम कुछ मिनटों के साथ ही सजग बने रहे, तो तुम्हारे अंदर से ही एक नये मनुष्य का जन्म होगा। तुम पूरी तरह भूत, अथवा भविष्य अथवा वर्तमान की कोई फिक्र होगी ही नहीं। तुम केवल बस एक भिन्न आयाम में जीवित रहोगे, वह आयाम है शाश्वतता का जहां कुछ भी नहीं गुजरता, न कुछ भी जन्मता है, न कुछ भी मरता है, प्रत्येक चीज ज्यों की त्यों बनी रहती है—शांत, थिर और मौन।

चौथा प्रश्न :

मैं अधिक से अधिक मैत्री भावना से ओत—प्रोत अपने को खेलपूर्ण होने का अनुभव करते हुए, ऊर्जा से भरी हुई हूं लेकिन मैं बात बहुत अधिक करती हूं। मुझे क्या करना चाहिए?

इस बारे में भी खेलपूर्ण ही रहो। इसे कोई गम्भीर चीज मत बनाओ। बातचीत भी खेलपूर्ण तरीके से करो, और यदि उसे कोई नहीं सुनता है, तो इसे भी खेलपूर्ण तरीके ही से लो—क्योंकि यहां यह जरूरी नहीं कि किसी को उसे सुनना ही चाहिए। इससे नाराजगी का अनुभव मत करो। यदि कोई तुमसे बात करने सरलता से तुम्हारे पास आता है, तो उससे बातचीत करो। यदि कोई दूसरा व्यक्ति तुम्हें सुनने के मूड में नहीं है, तो वह उसकी अपनी समस्या है। लेकिन तुम नाराजगी का अनुभव मत करो। बस केवल सजग बनी रहो कि जब तुम बात करना चाहती हो, तो तुम्हारे अंदर क्या घट रहा है। ऐसा बहुत से लोगों के साथ होगा।

जब ध्यान के द्वारा तुम्हारे अंदर ऊर्जा मुक्त होती है, तो वह अभिव्यक्त होने के लिए सभी तरह के मार्ग खोजेगी। यह इस बात पर निर्भर करता है कि तुम्हारे पास किस तरह की प्रतिभा है। यदि तुम एक चित्रकार हो,

और ध्यान से ऊर्जा मुक्त होगी है तुम अधिक चित्र बनाओगे, तुम पागल बनकर चित्रण करोगे। तुम सब कुछ भूल जाओगे, पूरा संसार भूल जाओगे। तुम अपनी पूरी ऊर्जा चित्रण करने में उडेल दोगे। यदि तुम एक नर्तक हो तो तुम्हारा ध्यान तुम्हें एक महान नर्तक बना देगा। यह सब कुछ तुम्हारी क्षमता, प्रतिभा, निजता और तुम्हारे व्यक्तित्व पर निर्भर करता है। इसलिए इसे कोई भी नहीं जानता कि क्या होगा। कभी—कभी आकस्मिक रूप से कई परिवर्तन होंगे एक व्यक्ति जो बहुत शांत था और कभी अधिक बात न करता था, अचानक बातूनी बन जाता है। वह बहुत दमित हो सकता है। हो सकता है उसे कभी भी बात करने की अनुमति न मिली हो। जब ऊर्जा ऊपर उठती है और बहती है तो वह बातें करना शुरू कर सकता है।

लेकिन इस बारे में फिक्र करने की कोई जरूरत ही नहीं। उसका दमन मत करो। यदि तुम यह अनुभव करती हो कि तुम्हारा बोलना दूसरों के लिए भार बन रहा है, तब बस तुम अपने कमरे में बैठकर अकेली ही बात करो। वहां अन्य कोई दूसरा उसे सुने, इसकी जरूरत ही नहीं है। और वास्तव में कौन सुनता है? तुम दीवार से बातें कर सकती हो, और यह कहीं अधिक मानवीय होगा, क्योंकि तुम किसी दूसरे व्यक्ति के लिए कोई दुख निर्मित नहीं करोगी। तुम किसी को सताओगी नहीं, और न तुम किसी अन्य को बोर करोगी।

किसी ने मुझे एक सुंदर घटना लिख कर प्रेषित की है :

पैट रैली अपने पापों को स्वीकार कर रहा था—'' फादर। निश्चित रूप से मैंने पिछली रात सात बार संभोग किया।''

पादरी ने पूछा—'' कितनी स्त्रियों के साथ?'' पैट ने उत्तर दिया—'' ओह मेरे धर्मपिता! स्त्री तो केवल एक ही थी।''

पादरी ने कहा—'' ठीक है। यह इतना बुरा पाप तो नहीं है, जैसा मैंने सोचा था। पर वह स्त्री थी कौन?''—'' फादर! वह मेरी ही पत्नी थी।''

पादरी ने कहा—'' मेरे पुत्र! फिर इसमें कुछ भी तो गलत नहीं है।

पैट ने उत्तर दिया—'' मेरे धर्मपिता! मैं इस बात को जानता हूं लेकिन मैं बस इस बात को किसी को बताना चाहता था।''

यहां ऐसे भी कुछ क्षण होते हैं, जब तुम बस किसी को कुछ बताना चाहते हो। यदि तुम उस बात को न बताओ तो वह, तुम पर एक भार बनी रहती है।

यदि तुम उसे बता देते हो, तो तुम उससे मुक्त होकर तनावमुक्त हो जाते हो। यदि तुम्हें कोई सहानुभूति से सुनने वाला मिल जाए तो अच्छा है, अन्यथा तुम स्वयं अपने से बातें कर सकती हो। लेकिन कभी इसका दमन मत करो। दमन करने से अभी यह क्षण समय का भाग नहीं है? वह तुम पर एक बोझ बन जाएगा। दीवार के ठीक सामने बैठ जाओ, और उससे अच्छी खासी बात करना शुरू कर दो। शुरू में तो यह तुम्हें थोड़े से पागलपन जैसा लगेगा, लेकिन तुम इसे जितना अधिक करोगी, तुम इसमें उतना ही अधिक सौंदर्य देखोगी? यह बहुत कम हिंसक है। यह किसी दूसरे व्यक्ति का भी समय बर्बाद नहीं करता, और यह ठीक वैसे ही कार्य करता है और तुम हल्की हो जाती हो। दीवार के साथ अच्छी तरह बातचीत करने के बाद तुम बहुत बहुत विश्राम का अनुभव करते हो। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को इसे करना चाहिए। यह संसार कहीं अधिक बेहतर और शांत हो जाये, यदि लोग दीवारों से बातचीत करना शुरू कर दें।

इसे आजमा कर देखो। यह एक गहरा ध्यान बन जायेगा— भली भांति यह जानते हुए भी कि दीवार नहीं सुन रही है। लेकिन मुद्दा इस बात का है ही नहीं। मैंने एक महान मनोविश्लेषक के बारे में सुना है, जो काफी वृद्ध हो गया था, लेकिन उसने फिर भी छ: सात और आठ घंटे प्रति दिन मरीजों को सुनने का अभ्यास जारी

रखा। उसका एक शिष्य जो नया—नया काम सीख रहा था, वह मरीजों की बकवास, मानसिक उन्माद और घिसी—पिटी एक जैसी ही बातें तीन चार घंटे सुनकर बहुत अधिक थक गया। उसने अपने वृद्ध गुरु से एक दिन पूछा— आप इतना सब कैसे कर लेते हैं, क्योंकि मैं आपको शाम को भी सुबह जितना ही ताजा पाता हूं जब आप क्लीनिक में आते है। मरीजों की सात— आठ घंटे बकवास सुनकर भी आप वैसे ही ताजादम होकर यहां से जाते हैं। क्या आप कभी थकते नहीं? मैं युवा हूं मैं उन्हें दो तीन घंटे सुनकर ही थक जाता हूं।''

वृद्ध महाशय हंसते हुए बोले—'' सुनता ही कौन है?'' फ्रॉयड ने इसकी व्यवस्था बहुत कुशलता से की थी। यहां तक कि वह मरीज के सामने भी नहीं बैठता था। वह अपने मरीज से एक कोच या आरामकुर्सी पर लेट जाने को कहता था और उसके सामने एक पर्दा पड़ा रहता था और वह उस पर्दे के पीछे बैठता था। और मरीज को कोच पर लेटे हुए छत की ओर देखते हुए बात करनी पड़ती थी। यह वास्तव में बहुत अर्थपूर्ण था। पहली बात तो यह कि जब एक व्यक्ति लेटा होता था तो वह कहीं अधिक विश्राम पूर्ण होता था। बैठे रहने की अपेक्षा लेटे हुए वह अपने गहरे में दबी बातें बतलाता था। वह अपने अचेतन में और गहराई तक उतरता था। खड़े—खड़े एक व्यक्ति यदि बात करे तो वह बहुत अधिक उथली होगी। यदि वह बैठ कर बात करे तो वह थोड़ा अधिक गहरे में उतरता है। उसे लेट जाने दो और तब उसे सुनो, तो वह अपने अंदर और गहरे उतरता है।

और तब, वह सब कुछ किसी व्यक्ति के आमने—सामने नहीं कह रहा है। जब तुम किसी का सामना कर रहे होते हो, तो दूसरे की उपस्थिति ही, दमन करने वाली शक्ति के रूप में कार्य करती है। तब तुम उन बातों को कहना शुरू कर देते हो जिन्हें वह पसंद करे। तब तुम चीजों को इस ढंग से कहना शुरू कर देते हो कि दूसरा नाराज न हो जाये। तब तुम चीजों को इस प्रकार अभिव्यक्त करने की व्यवस्था करते हो जिन पर उसकी सहमति प्राप्त कर सको तुम। तब दमन बहुत अधिक होता है और सत्य कभी भी बाहर नहीं आ पाता। जब कोई भी व्यक्ति तुम्हारे सामने नहीं होता और सामने केवल छत होती है, तो तुम्हें किसी भी व्यवस्था करने की कोई जरूरत नहीं होती। कमरे की छत किसी बात का बुरा नहीं मानती, तुम उससे जो चाहो कह सकते हो। धीमे—धीमे वह व्यक्ति गहरे जाकर सम्बंध जोड़ लेता है। अब यहां फ्रायड के कोच की भी कोई जरूरत नहीं है, केवल तुम्हारी अब ही यह काम पूरा कर देगी। और अब वहां किसी दूसरे व्यक्ति को भी बैठने की जरूरत नहीं है, तुम स्वयं ही बात कर सकते हो और स्वयं ही उसे सुन सकते हो। स्वयं से बात करते हुए स्वयं सुनना तुम्हें एक गहराई देगा, तुम्हें अपने ही मन के बारे में एक गहरी समझ उत्पन्न होगी।

इसलिए दीवार से बातें करो और उन्हें सुनो। तुम बात करने वाली और सुनने वाली दोनों एक साथ बन जाओ। उसका विश्लेषण मत करो, कोई भी निर्णय मत लो, यह मत कहो कि यह अच्छा है और यह बुरा: ऐसा कहना चाहिए था और वैसा नहीं कहना चाहिए था। और न चीजों को शुद्ध या परिष्कृत बनाओ, उन पर कोई भी रंग और रोगन मत लगाओ। जो कुछ भी मन में आए उसे सीधे साफ तरीके से बाहर आने दो—वह चाहे कितना ही कुरूप, भद्दा और असंगत क्यों न हो? अपने मन को पूरा खेल खेलने दो और तुम बस उसे देखती रहो। यह एक बहुत बड़ा ध्यान बन जाएगा।

नवविवाहित युगल, अपने कुंवारे मित्रों के सामने अपने विवाहित जीवन की प्रशंसा में कसीदे पढते हुए कह रहा था—'' हां! सचमुच यह आश्चर्यजनक है। नाश्ता करने से पूर्व हम लोग वह महान और मधुर कार्य किया करते थे। उसके बाद जब मैं बाहर जाता था तो वह छोटी गुड़िया सी स्त्री मुझे एक गहरे आलिंगन में बांधकर, दरवाजे तक आते हुए एक चुम्बन देती थी।

मैं रात के वक्त घर लौटता था, और भोजन मेज पर सजा तैयार मिलता था। उसके बाद मैं अपने कमरे में बैठकर अखबार पड़ता रहता था और वह बर्तन साफ करती थी। फिर वह कपड़े बदलकर आराम से मेरी बगल

में बैठकर मुझसे बतियाती रहती थी। वह बातें और बातें ही करती रहती थी, उसकी बातें कभी खत्म होने पर ही नहीं आती थीं, और मैं चाहने लगता था कि वह बेहोश होकर नीचे गिर जाए।'' अभी यह क्षण समय का भाग नहीं है?

किसी भी दूसरे व्यक्ति को कभी ऐसा अवसर न दो कि वह यह सोचना शुरू कर दे कि तुम बात करते—करते बेहोश होकर गिर पड़ो। यह तुम्हारी अपनी समस्या है। अथवा तुम इसके लिए एक बहुत सुंदर व्यवस्था कर सकती हो। इसी आश्रम में यहां ऐसे बहुत से पागल लोग हैं' तुम उन्हीं में किसी अन्य व्यक्ति को खोज लो जिसकी समस्या भी तुम्हारी जैसी ही हो। तब तुम एक अच्छी व्यवस्था बना सकती हो। एक घंटा तुम बातचीत करो और एक घंटा वह तुम्हारी बात सुने। एक दूसरे से जुड़ने या सम्बंधित होने की इसमें कोई जरूरत नहीं, इसमें संगत होने की भी जरूरत नहीं और न बातचीत करते हुए किन्हीं नियमों का अनुसरण करने की ही कोई जरूरत है। यह बातचीत है ही नहीं। एक घंटा जो कुछ तुम्हारे मन में आए उसे निरंतर बिना सोचे—समझे कहते ही जाना है, और निश्चित रूप से फिर तुम्हें इसकी कीमत चुकानी होगी—एक घंटा फिर तुम्हें उसकी बकवास सुननी होगी। और यह चीज दोनों के ही लिए मूल्यवान होगी।

लेकिन एक बात याद रखना चाहिए कुछ भी दबाना नहीं है। किसी चीज का भी जब दमन किया जाता है जब वह जहरीली बन जाती है। और बातें करना केवल एक निर्दोष कृत्य है, दीवार से ही काम चलेगा। जाओ, वृक्षों के निकट जाओ और वे बहुत खुश होंगे क्योंकि कोई उनसे बातचीत करता ही नहीं। वे हमेशा प्रतीक्षा करते रहे हैं। वे बहुत कृतज्ञ होंगे तुम्हारे। अथवा तुम नदी या चट्टानों के पास जाकर उन्हें अपनी बातें सुनाओ लेकिन उनका दमन मत करो। धीमे— धीमे चीजें साफ और स्पष्ट होने लगेगी और बातें करना समाप्त हो जाएगा। यह केवल शुरुआत है, और तब तुम्हें अपने अस्तित्व की गहरी पर्तो को स्पर्श करने का अवसर मिलेगा बातचीत तुम्हारे जीवन की सबसे उथली पर्त है, केवल ऊपर सतह वाली पर्त। जब ऊर्जा बहती हुई और नीचे जाएगी तो नीचे की पर्ते कँपना शुरू हो जायेंगी, उनमें तरंगें उठने लगेंगी। उन्हें उठने की अनुमति दो। बहुत शीघ्र जब बातें खत्म हो जाएंगी और तुम अपना कूड़ा कबाड़ जिसे तुम पूरे जीवन भर ढोती आई हो, जब तुम उसे बाहर फेंक दोगी, फिर शांति और मौन आयेगा। और फिर वह मौन पूरी तरह से शुद्ध और क्वाँरा होगा।

तुम अपनी बातों को बलपूर्वक दबा भी सकती हो और शांत तथा मौन बने रह सकती हो, लेकिन तुम्हारी यह शांति और मौन असली और प्रामाणिक नहीं होगी। अपने गहरे में तुम कंपती ही रहोगी, कहीं गहरे में किसी भी क्षण ज्वालामुखी का विस्फोट फूट पड़ने को तैयार होगा। तुम उसी ज्वालामुखी के शिखर पर बैठी हुए हो।

लोग बहुत शांत दिखाई देते हैं, लेकिन वे शांत हैं नहीं। मैं चाहता हूं कि तुम वास्तव में प्रामाणिक रूप से शांत बनो, और तरीका केवल एक ही है, गहरे से गहरा रेचन।

मैं जानता हूं कि अमीदा बहुत अधिक ऊर्जा का अनुभव करती है। उसे अपने ऊर्जा—स्रोतों पर हल्के से चोट करनी होगी और उसे अपने को अस्तित्व की जमीन से जोड़ना होगा। इसलिए सभी मार्गों से वह बहुत शक्तिशाली होने का अनुभव करेगी। बातचीत करना मनुष्य जाति की सबसे अधिक आधारभूत विशेषता और अंश है। मनुष्य जाति, मनुष्य जाति इसलिए है, क्योंकि वह बातचीत कर सकती है। किसी अन्य पशु में यह क्षमता नहीं है। और फिर अमीदा एक स्त्री है, वह पुरुष भी नहीं है।

मैंने सुना है....

एक स्त्री अपने पति से कह रही थी कि नया पादरी बहुत अधिक बातूनी था। फिर उसने बताया—'' मैंने ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं देखा, जो इतनी तेजी से बात करता हो। जो कुछ भी वह कहता है, उसे समझना लगभग असम्भव है। उसके शब्द एक दूसरे को आच्छादित करते हुए बाहर निकलते हैं।''

उसके पति ने उत्तर दिया—'' मैं इसका कारण जानता हूं। उसके पिता एक राजनेता थे और उसकी मां एक स्त्री थी।''

अब यह पूरी तरह से संगत साथ है। चूंकि अमीदा एक स्त्री है: बातचीत करना उसके लिए आसान है और उसके कई कारण भी हैं।

क्या तुमने कभी देखा है ?—छोटी लड़कियां जब लड़कों के सामने बात करना शुरू करती हैं तो लडके पिछड़ जाते हैं। स्कूल, कालेज और विश्वविद्यालयों में भी जहां तक भाषा का सम्बंध है, लड़कियां हमेशा लड़कों से बेहतर और आगे रहती हैं। वे हमेशा अधिक अंक प्राप्त करती हैं और कहीं अधिक पारगत होती हैं। स्त्री मन और पुरुष मन के मध्य कुछ चीजें भिन्न प्रतीत होती हैं, पुरुष मन कहीं अधिक कर्त्ता या कार्य करने वाला है और स्त्री मन कहीं अधिक बेहतर बात करने वाला है। ऐसा इसलिए भी हो सकता है क्योंकि जहां तक पुरुष का सम्बंध है उसकी काफी अधिक ऊर्जा कार्य करने में खर्च हो जाती है: और जहां तक स्त्री का सम्बंध है, उसे कार्य करने में इतनी अधिक ऊर्जा खर्च नहीं करनी होती इसलिए उसकी पूरी ऊर्जा एक ही बातें करने की दिशा की ओर मुड़ जाती है।

लेकिन इसमें गलत कुछ भी नहीं है। एक अच्छे बात करने वाले व्यक्ति में कुछ चीज मूल्यवान होती है: वह बेहतर तरीके से संवाद और सम्बंध स्थापित कर सकता है।

किसी कला में पारंगत होना सुंदर है, क्योंकि सूचनाओं का अधिक संचार करना सम्भव होता है। और एक सुंदर संभाषण का अपना अलग सौंदर्य बोध और मूल्य है। लेकिन पहले अंदर रुकी बातों की बाढ़ को बाहर निकालना है। तब चीजें स्वयं छंट जायेंगी और थिर हो जायेंगी।

इस बाढ के गुजर जाने के बाद अमीदा पायेगी कि उसकी चेतना से बहुत छोटे—छोटे वाक्य ही बाहर आ रहे हैं, लेकिन वे हीरों जैसे हैं, और प्रत्येक वाक्य अपने आप में मूल्यवान है। लेकिन पहले शब्दों की इस बाढ़ को गुजर जाने देना होगा। यदि इस बाढ़ को रोका गया, इसका दमन किया गया, तब ये हीरे जैसे वाक्य सदा के लिए खो जायेगे। यही कारण है कि विश्व के सभी महान शास्त्र सूत्रों में लिखे गये, क्योंकि जिन लोगों ने उन्हें लिखा, वे रेचन की बाढ़ से होकर गुजरे थे। जब उनका रेचन पूरा हो गया, तब हीरे जैसे छोटे—छोटे वाक्य, सरल, सुंदर और सौंदर्य बोध से भरपूर चेतना में बुलबुलों के रूप में उमगना शुरू हुए। यह वही चेतना है, जिससे वेदों और कुरान का जन्म हुआ। और इसी चेतना से भाषा के सौंदर्य बाइबिल का जन्म हुआ। फिर कभी इनसे बड़—चढ़ कर श्रेष्ठ वचन नहीं आए।

जीसस अशिक्षित थे, लेकिन कोई भी व्यक्ति उनके वचनों की स्पष्टता को, जो सत्य तक गहरे उतर जाते हैं, उन्हें मात न दे सका। इसके पीछे उनका गहन ध्यान है। पतंजलि के योगसूत्र हों अथवा बादरायण के ब्रह्मसूत्र, अथवा वे नारद के भक्ति सूत्र हों—वे इतने छोटे—छोटे वाक्यों में हैं, जितने अधिक संक्षिप्त होने का तुम केवल विचार कर सकते हो, ये लगभग टेलीग्राफिक हैं, लेकिन उनके अंदर इतना अधिक ज्ञान भरा हुआ है कि प्रत्येक वाक्य में जैसे आणविक ऊर्जा हो। यदि इसका विस्फोट हो, यदि तुम इन्हें प्रेम से अपने अंदर अपने हृदय में ले जाओ, तो जब उनका विस्फोट होगा तुम उनके द्वारा आलोकित हो उठोगे।

लेकिन पहले बाढ़ के पानी को बाहर निकल जाने दो। यह एक शुभ संकेत है कि दमित भावों की बाढ़ आई हुई है। यदि सहानुभूति से सुनने वाले कुछ कान खोज सको, ये अच्छा है। अन्यथा उन्हें वृक्षों और चट्टानों को सुनाओ, लेकिन उनका दमन मत करो।

पांचवां प्रश्न:

मुझे सामने खड़ी मृत्यु दिखाई देती है। मैं इसे स्वीकार करती हूं अथवा ऐसा जब मैं सोचती हूं कि बहुत से लोग बीमार पड़ते है? और अस्पतालों में उनकी मृत्यु भी हो जाती है? तो मैं अपने उदर में भय की इस बड़ी गांव को पाती हूं। मैं मृत्यु से और मरने से इतना अधिक डरी हुई हूं कि मैं अपने को कमल होने जैसा अनुभव करती हूं।

मृत्यु एक समस्या है। तुम उसे टाल सकते हो, स्थगित कर सकते हो, लेकिन तुम उसे पूरी तरह मिटा नहीं सकते। तुम्हें उसका सामना करना ही होगा। उसे मिटाया जा सकता है, केवल तभी जब तुम उसके साथ अंत तक पूरे रास्ते भर उसके संग यात्रा करो।

यह बहुत जोखिम भरा काम है, और तुम्हें अत्यधिक भय देगा। तुम्हारा पूरा अस्तित्व हिलने और कांपने लगेगा: मरने का विचार मात्र ही स्वीकारने योग्य नहीं है। यह इतना अधिक गलत और अर्थहीन दिखाई देता है, और यदि एक व्यक्ति को मरना ही है तो फिर उसके जीवन का क्या अर्थ है? तब मैं क्यों और किसके लिए जी रहा हूं? यदि अंत में मृत्यु होनी ही है तो क्यों न अभी आत्महत्या कर ली जाये? प्रत्येक दिन सुबह उठना दिन भर कठिन परिश्रम करना बिस्तरे पर सोने के लिए जाना, सुबह फिर उठ बैठना कठोर श्रम करना और फिर सो जाना— आखिर किसके लिए? केवल क्या अंत में मर जाने के लिए ही?

मृत्यु केवल आत्मज्ञान की समस्या है। मृत्यु के कारण ही मनुष्य ने विचार करना शुरू किया। मृत्यु के कारण ही मनुष्य गम्भीर विचारक और ध्यानी बना। वास्तव में मृत्यु के कारण ही धर्म का जन्म हुआ। पूरा श्रेय मृत्यु को ही जाता है। मृत्यु ने प्रत्येक व्यक्ति की चेतना को मथ दिया। यह समस्या ऐसी है, जिसे हल करना है। इसलिए इसके साथ गलत कुछ भी नहीं है।

यह प्रश्न पूछा है विद्या ने।

"मैं मृत्यु को सामने खड़े देखती हूं प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु को सामने खड़ा ही देखता है। मार्टिन हैडीगर ने कहा है—मनुष्य मृत्यु की ओर ही बढ़ रहा है। और यही मनुष्य की प्राथमिकता है। जानवर मर जाते हैं लेकिन वे यह नहीं जानते कि उन्हें मरना है अथवा वे मरने जा रहे हैं। वृक्ष मरते हैं, लेकिन वहां उनका मृत्यु से कोई आमना—सामना नहीं होता। यह प्राथमिकता मनुष्य की ही है, कि केवल वही जानता है कि वह मरने जा रहा है। इसीलिए मनुष्य मृत्यु के पार भी विकसित हो सकता है। इसीलिए वहां मृत्यु में गहरे उतरकर उससे निकल आने की सम्भावना है।

''मैं स्वीकार करती हूं और ऐसा ही मैं सोचती हूं नहीं, स्वीकार करना सम्भव नहीं है। तुम धोखा दे सकती हो: तुम यह सोच सकती हो कि तुमने उसे स्वीकार कर लिया, क्योंकि उसकी ओर देखना भी इतना अधिक कष्टकर लगता है। यहां तक कि उसके बारे मे सोचना भी इतना कष्टकर लगता है कि एक व्यक्ति सोचता है—''हां! ठीक है, मैं मरने जा रहा हूं—इसलिये क्या किया जाये? मैं मरने जा रहा हूं लेकिन यह प्रश्न मत उठाओ। इसके बारे में बात तक न करो।'' कोई भी व्यक्ति इस खयाल से दूर रहता है उसे एक किनारे अलग रख देता है, जिससे वह रास्ते पर न आ जाये, उसे केवल अपने अचेतन में ही रखता है।

उसकी स्वीकृति करना सम्भव नहीं है। तुम्हें मृत्यु का सामना करना ही पड़ेगा। जब तुमने उसका सामना किया, तो तुम्हें उसे स्वीकार करने की जरूरत ही नहीं, क्योंकि तब तुम जानती हो कि वहां कोई मृत्यु है ही नहीं।

और तब बहुत से लोग बीमार हो जाते हैं, अस्पतालों में भर्ती होते हैं और मर जाते हैं और मैं अपने उदर में इस भय की बहुत बड़ी गांठ पाती हूं वह कहां है, इसी समस्या का समाधान करना है। उदर ही ठीक भय का वह स्थान है, जहां वह बड़ी गांठ महसूस होती है, उसी स्थान पर मृत्यु घटित होती है। जापानी उसी स्थान को

हारा कहते हैं। बस नाभि के दो इंच नीचे वह बिंदु है, जहां शरीर और आत्मा एक दूसरे से जुड़े होते हैं। जब तुम्हारी मृत्यु होती है, तो यही वह स्थान है जहां शरीर से आत्मा सम्बंध तोड़ती है। मरता कुछ भी नहीं, क्योंकि शरीर मर नहीं सकता, क्योंकि वह पहले ही से मरा हुआ है। और तुम मर नहीं सकते क्योंकि तुम स्वयं ही जीवन हो। केवल तुम्हारे और शरीर के बीच का सम्बंध टूटता है।

यह गांठ या ग्रंथि ही ठीक वह स्थान है, जहां कार्य किये जाना है, इसलिए उस गांठ से बचने की कोशिश मत करो। मैं विद्या से यह कहना चाहता हूं कि तुझे जब भी उस गांठ का अनुभव हो, तो वह क्षण बहुत मूल्यवान है। अपनी आखें बंद कर अपनी पूरी चेतना उस गांठ पर ले जा। यही है हारा। उसका अनुभव करो ,उसे अनुमति दो, उसके पास तुम्हारे लिए कुछ संदेश है, वह तुमसे कुछ कहना चाहता है। यदि तुम उसे अनुमति दो, तो वह तुम्हें संदेश देगा। यदि तुम उसमें विश्रामपूर्ण हो जाओ, यदि तुम उसके अंदर जाओ, तो धीमे— धीमे तुम देखोगे कि वह गांठ विसर्जित हो गई, और उस गांठ के स्थान पर एक कमल के फूल जैसा कुछ खिल उठा है। यह एक बहुत सुंदर अनुभव है। और तुम यदि फिर भी और गहरे जाओ तो तुम एक सेतु देखोगे, वह फूल एक सेतु है। उसके एक ओर शरीर है और दूसरी ओर तुम्हारी आत्मा। और वह फूल उन दोनों को जोड़ रहा है, वह फूल एक सेतु बना हुआ है।

उस फूल की जड़ें शरीर के अंदर फैली हैं, और उस फूल की पंखडिया और उसकी सुवास ही आत्मा है। यह एक जोड्ने वाला सेतु है। लेकिन यदि तुम भयभीत हो गए और तुम वहां नहीं गए तो तुम्हें गांठ होने जैसा ही, खिंचाव और तनाव का अनुभव होगा।

" मैं मृत्यु से और मरने से इतना अधिक डरी हुई हूं कि मैं पागल होने जैसा अनुभव करती हूं।''

यहां पागल होने की कोई जरूरत नहीं है। पागल तो तुम होतीं। यह पूरी तरह स्वाभाविक है कि जब कोई भी व्यक्ति बार—बार और अनेक बार अस्पताल में उपचार के लिए जाता है और वहां मरता भी है तो तुम्हें अपनी मृत्यु का भी स्मरण आता है।

इसमें गलत कुछ भी नहीं है।

मैंने सुना है.....

एक बीटनिक एक मनोविश्लेषक से भेंट करने गया और अपनी बात प्रस्तुत करते हुए कहा—'' आपको मेरी सहायता करनी ही होगी।''

उसने मस्तक पर बल डालते हुए पूछा—'' आखिर आपकी समस्या क्या है?"

उस संगीत का बीटनिक ने कहा— आखिर वक्त मेरी सबसे अधिक मुझे विवश बनाने वाली इच्छा है अपनी दाढी बनाकर शॉवर के नीचे स्नान करने की।''

यदि तुम अभी अपनी दाढ़ी शेव कर शावर स्नान नहीं करना चाहते, तो एक न एक दिन तुम्हें विवश करने वाली यह इच्छा कि तुम आखिरी वक्त शेव कर शॉवर स्नान करो, उठेगी ही। यह कोई भी समस्या नहीं है, ठीक अभी अपनी शेव कर शावर स्नान करो।

तुम मृत्यु को टालना चाहते हो। उसका सामना तो करना ही होगा, वह जीवन के सभी कार्यों का ही एक भाग है। वह एक सबसे बड़ा सबक है जो प्रत्येक व्यक्ति को सीखना ही है। इस बारे में पागल बनने की कोई जरूरत ही नहीं है, इससे कुछ भी सहायता मिलने वाली। उसके अंदर प्रवेश करो और उसका सामना करो। आज अथवा कल तुम्हें अस्पताल में भर्ती होना ही पड़ेगा, आज या कल तुम्हें बीमार पड़ना ही होगा और आज या कल तुम मरने भी जा रहे हो। इसलिए उसे स्थगित किए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इससे अच्छा यही है कि कहीं बहुत अधिक देर न हो जाये, तुम उससे पूर्व ही उसे भली भांति समझ लो।

मुल्ला नसरुद्दीन बीमार पड़ा और चिंतित होकर उसने तुरंत फोन पर मौलवी से सम्पर्क करते हुए यह आग्रह किया कि वह अगले संसार में उसकी भटकती हुई रूह को सहारा देने के लिए प्रतिदिन आकर प्रार्थना किया करे। जब प्रतिदिन की भांति प्रार्थना करने मौलवी उसके पास आया तो उसने मुल्ला नसरुद्दीन को बहुत खुश आनंद से किलकते हुए पाया।

नसरुद्दीन ने अट्टहास करते और उल्लसित होकर कहा—'' श्रीमान! आज मैं बिलकुल ठीक हूं और बहुत आनंदित हूं।

मेरा डॉक्टर कहता है कि मैं अभी दस साल और जिऊंगा, इसलिए अब आपको फिर यहां आने की कोई भी आवश्यकता नहीं है।''

लेकिन तुम बूंद—बूंद कर गुजरते नौ वर्ष, ग्यारह महीने और उन्तीस दिन कैसे गुजारोगे? एक दिन तो तुम्हें मृत्यु का सामना करना ही होगा। बेवकूफ मत बनो, उसे टालो मत। क्योंकि यदि तुम उसे सबसे आखिरी दिन के लिए टालोगे, तो बहुत देर हो चुकी होगी। यह निश्चित नहीं है कि वह आखिरी दिन कब आयेगा? वह दिन आज भी हो सकता है, वह कल ही हो सकता है और वह किसी भी क्षण घटित हो सकता है। मृत्यु के बारे में कोई भी भविष्यवाणी नहीं की जा सकती।

हम मृत्यु में ही जीते हैं, इसलिए वह किसी भी क्षण हो सकती है। उसका सामना करो, उसका साक्षात्कार करो और पेट में वह गांठ जो ठीक स्थान पर है, उसका साक्षात्कार करना है। वही वह द्वार है, जिससे तुम जीवन में प्रवेश करते हो और जिससे होकर ही तुम जीवन के बाहर उस पार जाते हो।

अंतिम प्रश्न:

प्यारे भगवान! आपके प्रेम में डूबकर मैं मिट जाने के भय से आक्रांत है, और मैं समर्पित हूं।

यह पूछा है प्रेम पूर्णिमा ने।

मेरा उत्तर है—तेरा प्रेम में डूबना ही तेरे भय का कारण है और मैं तुझे स्वीकार करता हूं।

आज इतना ही।

सातवां प्रवचन

वे वासना को वासना से ही मारते हैं

बाऊलगीत:

जो लोग मर गये हैं
पर फिर भी वे पूरी तरह जीवित है,
और वे प्रेम के अनुभवों
और उसकी सुवास को भली भांति जानते हैं,
वे लोग ही जीवन—मृत्यु की इस सरिता को देखते हुए
अखण्ड सत्य को खोजते हैं, और वे लोग ही
इस नदी को पार कर लेंगे।
हवा के विरुद्ध चलोग हुए
प्रसन्नता पाने की
उनकी कोई चाह ही नहीं है।
वे वासना को
वासना में रहते हुए ही मारते हैं
और बिना तादात्म्य जोड़े प्रेम नगर में प्रवेश करते हैं।

मनुष्य की ऊर्जा सक्रिय है, वह एक निरंतर होने वाली प्रगति है। वह एक बहुत सृजनात्मक विकास है, जिसमें हजारों सम्भावनाएं हैं और साथ ही उसके लिए अनंत विकल्प भी खुले हैं। मनुष्य इस अस्तित्व के विकास का आरम्भ है, और उसमें इस अस्तित्व की सभी सम्भावनाएं हैं। मनुष्य का शरीर एक लघु बह्माण्ड है, वह वास्तव में है केवल एक बूंद ही, लेकिन उस बूंद में वह सभी कुछ है, जो एक सागर में होता है, वह वास्तव में है एक बूंद ही, लेकिन चेतना की वह एक बूंद है, और चेतना है सागर जैसा अपार, अनंत, जो कोई सीमाएं नहीं जानती। लेकिन जिस मनुष्य की मैं बात कर रहा हूं वह है—बाउलों का सारभूत मनुष्य— आधार—मनुष्य। तुम भी वही बन सकते हो, लेकिन तुम वह हो नहीं। तुम अभी बीज हो। तुम टूट कर, अंकुरित होकर फल—फूल कर हवाओं में अपनी सुवास बिखेर सकते हो, लेकिन अभी तुम वह हो नहीं। इसे भली भांति स्मरण रखना है।

गुरुजिएफ कहा करता था कि मनुष्य आत्मा के साथ नहीं जन्मता, उसे प्रयास के द्वारा आत्मा निर्मित करनी होती है। मनुष्य का जन्म लेना, केवल एक अवसर और सौभाग्य है, जिसका प्रयोग किया जा सकता है, और उसे बर्बाद भी किया जा सकता है, यह सभी कुछ तुम पर निर्भर है। एक व्यक्ति को स्वयं अपना का सृष्टा बनना होता है। माता—पिता ने तुमको शरीर दिया है, लेकिन असली जन्म तो अभी होना है। और इस असली जन्म के लिए तुम्हें अपनी मां, और अपना पिता स्वयं बनना होगा। असली जन्म तो आंतरिक सृजनात्मकता से होता है। तुम्हें अंदर ही गतिशील होकर, अपने ऊर्जा के स्रोत को खोजना होगा, और इतना ही नहीं, बल्कि उस ऊर्जा के यांत्रिक मार्ग को, और उस यात्रा में आने वाले सभी रास्तों को सचेतन बनाने के लिए बदलना होगा।

सामान्यत: ऊर्जा, नीचे की ओर प्रवाहित होती है। यही कारण है कि बाउल उसे वासना कहकर पुकारते हैं। जब वे उसे वासना कह कर पुकारते हैं, तब वे न तो उसका विरोध कर रहे हैं और न उसकी निंदा कर रहे हैं। यह केवल एक तथ्य है, ठीक जैसे पानी नीचे की ओर ही बहता है। पानी के लिए स्वाभाविक यही है कि वह पहाड़ से नीचे की ओर बहे। लेकिन पानी ऊपर भी उठ सकता है, इतना गर्म करना पडेगा, जिससे वह वाष्प बन सके। गर्मी के एक विशिष्ट तापमान पर, सौ डिग्री पर वह ऊपर की ओर उठना शुरू कर देता है। वही पानी जो बहता हुए पहाड़ से नीचे की ओर जाता था, अब पहाड़ के ऊपर की ओर उठना शुरू हो जाता है।

एक रूपांतरण घटित हुआ है, जिसके लिए केवल ताप की आवश्यकता थी। पूरब में इस ऊर्जा को ताप कहते हैं। ताप का अर्थ होता है—गर्मी, ताप शब्द का अर्थ है अपने आप को उष्ण करना गर्म करना।

बाउल गाते हैं:

जब कामना की अग्नि से सारे अंग जलने लगें
फिर भी समय
उसके रस को वासना की ही आँच पर उबालो
जिससे उसके फल में सूक्ष्मता से मधुरता आ जाये।
उसकी चाशनी को जब तक
नियंत्रित ऊष्मा पर मथा न जाये
वह खमीर उठ जाने से खट्टा हो जाता है
कामनाओं से ही भावनाओं का विकास होता है

और वासना के खुरदुरे वृक्ष के तने से ही प्रेम की कोंपलें फूटती हैं। वासना भी वही ऊर्जा है, जैसी प्रेमी की है, अंतर केवल दिशा का है। वासना की ऊर्जा नीचे की ओर बहती है, और प्रेम पहाड़ी पर ऊपर की ओर चढ़ने का प्रारम्भ है। वासना, ठीक वृक्ष की जड़ों जैसी है, और प्रेम पक्षी के पंखों के समान है—लेकिन ऊर्जा वही है। सभी ऊर्जाएं एक जैसी ही होती हैं। ऊर्जा अपने आपमें तटस्थ होती है। उसके बारे में तुम जब तक सचेतन न हो, वह सृजनात्मक नहीं हो सकती। और पहाड़ से नीचे की ओर जाने की गति विनाशात्मक है: तुम केवल अपने आप को भ्रष्ट कर रहे हो। तुम उसके द्वारा बिखरी तरल चेतना को ठोस बनाकर उसका एकीकरण नहीं कर रहे हो—जिसे गुरुजिएफ क्रिस्टलाइज़ेशन कहता है।

प्रत्येक क्षण तुममें ऊर्जा उडेली जा रही है। अस्तित्व तुममें वायु के द्वारा जल के द्वारा, भोजन के द्वारा, सूरज और चंद्रमा के प्रकाश के द्वारा, एक हजार एक तरीकों और सूक्ष्म प्रभावों से तुम्हें ऊर्जावान बना रहा है। ब्रह्माण्ड तुम्हारे अंदर ऊर्जा उडेले जा रहा है। और तुम इस ऊर्जा के साथ कर क्या रहे हो? तुम इससे कोई भी कार्य कर भी रहे हो अथवा उसे केवल बरबाद कर रहे हो? क्या तुम इससे किसी चीज का सृजन कर रहे हो? क्या तुम इस बिखरी बहती चेतना की ऊर्जा को एक निश्चित स्थान पर ठोस बनाकर उसका एकीकरण कर रहे हो? अथवा वह एक छोर से तुम्हारे अंदर प्रविष्ट होती है और दूसरे छोर के द्वारा बाहर निकल जाती है?

यहां ऐसे बहुत से लोग हैं जो एक पाइप की तरह जी रहे है: तुम शरीर के पाइप में एक ओर से चीजें उड़ेलोग हो, और उसके दूसरे सिरे से बाहर निकाल देते हो। एक पाइप बनकर मत जियो।

जब ऊर्जा तुम्हारे अंदर हो, उसके साथ कुछ करो, जिससे उसका कुछ भाग तुम्हारा स्थाई भाग बन जाये। अन्यथा तुम्हारा पूरा जीवन केवल एक पाइप बना ही रह जाएगा: खाना, पीना, व्यर्थ भाग को बाहर निकाल देना, पेशाब करना—ठीक एक पाइप की तरह। तुम्हारी इस ऊर्जा द्वारा सूक्ष्म रस निर्मित होते हैं। यही सेक्स है,

बहुत ही सूक्ष्म रस। अब तुम इसके साथ क्या कर रहे हो? क्या तुम इससे कोई सार्थक कार्य कर रहे हो अथवा इसे केवल बरबाद कर रहे हो?

वासना सेक्स ऊर्जा का सबसे अधिक निम्नतम रूप है, प्रेम इसका सर्वोच्च रूप है। जब तक तुम्हारी वासना प्रेम न बन जाये, तुम लक्ष्य से चूकते रहोगे।

गुरुजिएफ कहा करता था कि मनुष्य में एक विशिष्ट यांत्रिकत्व है, जिसे वह 'कुंड बफर' कहा करता था, यह ठीक कुंडलिनी के ही समानांतर है। कुण्डलिनी एक केंद्र है, लेकिन यह केवल तभी कार्य करता है, जब ऊर्जा का ऊर्ध्वगमन होता है।'कुंड बफर' वह केंद्र है, जो तब कार्य करता है, जब तुम्हारी ऊर्जा नीचे की ओर जाती है। इसी 'कुंड बफर' को पिघला कर नष्ट करना है, क्योंकि यही कई जन्मों के निरंतर अभ्यास से बनी यांत्रिकता है। प्रत्येक मनुष्य शरीर में एक विशिष्ट यांत्रिकत्व और एक मार्ग बन जाता है और जिस क्षण ऊर्जा तैयार होती है, वह इसी मार्ग के द्वारा गतिशील होती है। यह मार्ग तुम्हारे अस्तित्व को बाहर ले जाने के लिए वहां पहले ही से है। यदि यही सत्य है और कुछ अन्य होने की सम्भावना ही नहीं है, तब जीन—पॉल—सार्त्र ठीक ही कहता है कि मनुष्य होना एक व्यर्थ की लालसा या उत्कंठा है। तब तुम पृथ्वी पर कुछ दिनों तक जीवित रहते हो, चीजों को भोजन के रूप में लेते हो, उन्हें अवशोषित करते हो, व्यर्थ का भाग बाहर फेंकते हो और इसके अलावा कुछ भी नहीं करते हो। तब इस सभी कुछ का महत्त्व क्या है?

लेकिन सब कुछ यही नहीं है।'कुंडबफर ' पिघलाया जा सकता और उस मार्ग को तोड़ा जा सकता है। और एक बार वह मार्ग तोड़ दिया जाए तो दूसरा मार्ग कार्य करना प्रारम्भ कर देता है। वह मार्ग पहले ही से है और तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा है। ऐसा नहीं कि वह अस्तित्व में नहीं है, वह पहले ही से है। वह तुम्हारे जन्म के साथ ही आया है, लेकिन तुमने अभी तक उसका प्रयोग नहीं किया है। तुमने अपनी ऊर्जा को उसके द्वारा बहने की अनुमति नहीं दी है। वास्तव में वह पहाड़ी पर ऊपर चढने जैसा श्रमपूर्ण कार्य है और पहाड़ी पर जाने के लिए शक्ति, सजगता, संकल्प साहस और श्रद्धा की आवश्यकता होती है.... बहुत सी अन्य चीजों की जरूरत होती है।

प्रेम करना कोई काल्पनिक स्वप्न नहीं है। प्रेम, वासना की छलनी से छनकर ही विकसित होता है, इसका अनुभव मृत्यु होने जैसा है। जैसे चिकनी मिट्टी से प्रेम करने वाला मृग पूरी तरह जीवित ही पृथ्वी में दफन हो जाता है। और मिट्टी में ही बिल बनाकर रहता है। प्रेमी भली भांति जानते हैं कि वासना से प्रेम का नवनीत कैसे निकाला जाता है यद्यपि एक शक्तिशाली व्यक्ति के लिए भी यह पहाड़ पर चढ़ने जैसा कार्य है।

अत्यंत साहसी, वास्तव में दृढ़ संकल्प और सच्ची जोखिम उठाने वाले लोग ही आत्म— अनुभव अथवा आत्म—रूपांतरण के मार्ग की ओर आकर्षित होते हैं। धर्म है, सबसे बड़ी जोखिम उठाने जैसा अदम्य साहस। गौरीशंकर शिखर पर अथवा चांद पर पहुचना भी कुछ नहीं है, लेकिन अपने ही अस्तित्व के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचना ही असली बात हैं क्योंकि पहले तो हम इस तथ्य के प्रति ही सजग नहीं है कि शिखर जैसी किसी चीज का भी अस्तित्व है। पहले ही हम इतने अधिक मूर्च्छित हैं कि हम यह भी नहीं जानते कि हम क्या कर रहे हैं। हम यह भी नहीं जानते कि हम अपने जीवन के साथ क्या कर रहे हैं?

मैंने सुना है :

एक छोटे विद्युत उत्पादन केंद्र का प्रबन्धक अपना कार्य करते हुए बिजली के चपेट में आकर मर गया। सह—प्रबंधक ने पुलिस, मजिस्ट्रेट और संयंत्र के सभी कर्मचारियों को सूचित किया। उन सभी लोगों ने भय से आक्रांत होकर फर्श पर प्रबंधक के मृत शरीर को पड़ा पाया और वे सभी यह अनुमान लगाने लगे कि इतना अधिक अनुभवी व्यक्ति इतनी अधिक भयंकर भूल कैसे कर सकता है?

सह प्रबंधक ने कहा—''मैं केवल एक ही बात सोच सकता हूं कि बेचारे जो ने अपने एक हाथ में केबिल का यह छोर जरूर उठाया होगा।''

सह प्रबंधक केबिल का एक छोर एक हाथ में उठाकर, बिना सोचे समझे उसे दूसरे हाथ तक ले गया और दूसरे हाथ से सम्पर्क होते ही एक धमाका हुआ।

सह प्रबंधक भी मृत प्रबंधक के शव की बगल में ही मृत पड़ा था लेकिन वह प्रत्येक व्यक्ति के लिए उस रहस्य को सुलझा कर मरा था।

मनुष्य मूर्च्छित है। तुम सभी काम किए चले जाते हो, बिना यह जानते हुए आखिर तुम उन्हें क्यों कर रहे हो? यदि तुम्हें थोड़ा भी होश हो, तो तुम वे काम जो किये चले जा रहे हो, उन्हें कर ही नहीं सकते।

हम जो कुछ अपने जीवन के साथ कर रहे हैं, उसे केवल सोये—सोये कर रहे हैं। चेतना विकसित होनी है। तुम जितने अधिक होशपूर्ण होगे, उतनी ही अधिक ऊर्जा अपने आप ऊपर की ओर बहना शुरू हो जायेगी। चेतना ही ऐसी वह कुंजी है, जिससे सारे ताले खुल जाते हैं, चेतना या होश ही वह संकेत है, जिससे पूरी पहेली हल हो जाती है। चेतना के द्वारा ही वासना प्रेम बन जाती है, इसलिए प्रेम कोई अचेतन कृत्य नहीं है।

जब बाउल कहते हैं कि प्रेम ही द्वार है, तो उनका अर्थ उस प्रेम से नहीं होता, जिसे तुम प्रेम कहते हो। तुम्हारा प्रेम उतना ही मूर्च्छित है, जितने तुम्हारे अन्य कृत्य। वह मूर्च्छित हैं, इसी कारण प्रेम में गिरना ' शब्दों से उसे अभिव्यक्त किया जाता है। हां! यह नीचे गिरने जैसा ही है। बाउल जिस प्रेम की बात कहते हैं, वह प्रेम में नीचे गिरना न होकर ऊपर उठना है। वह नीचे गिरना न होकर ऊपर उठना है। इसलिए गलत मत समझो कि बाउल जिस प्रेम की बात कर रहे हैं, तुम्हारा प्रेम है। तुम्हारा प्रेम तो केवल वासना का ही दूसरा नाम है, यह एक सुंदर और अच्छा नाम है। और अच्छे तथा सुंदर शब्दों से सावधान रहो, क्योंकि वे बहुत धोखेबाज हो सकते हैं। यदि तुम वासना पर प्रेम का लेबिल लगा दो, तो तुम अपने लगाये लेबिल से धोखे में पड़ जाओगे।

वासना तभी होती है, जब तुम मूर्च्छित होते हो। तुम एक स्त्री को देखते हो अथवा एक पुरुष को देखते हो, और तुम उसके प्रेम में पड़ जाते हो, और तुम नहीं जानते कि आखिर क्यों, कभी—कभी तो तुम अपने स्वयं के ही स्वर के विरुद्ध, स्वयं अपने को भुलाकर प्रेम में डूब जाते हो।

लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं—'' हम क्या कर सकते हैं आखिर? हम असहाय हैं। हमें प्रेम हो गया है।'' यह प्रेम बाउलों का प्रेम नहीं है, यह वासना है। जिसे बाउल वासना कहते हैं, वह यही है: मूर्च्छित प्रेम ही वासना है। तब इसकी ऊर्जा नीचे की ओर बहती है। तब यह काम केंद्र से गुजरती हुई फिर इसी संसार में आ जाती है। वासना का ऊर्ध्वगमन ही प्रेम है, लेकिन यह सचेतन या होशपूर्ण होता है। चेतना ही वह सीढ़ी है, जिस पर तुम एक पायदान चढ़ते हुए अधिक से अधिक होशपूर्ण बनते हो। तुम जो कुछ भी करते हो, पूरे होश से करते हो, यहां तक कि चलना, भोजन करना, बिस्तरे पर सोने के लिए जाना, बात करना और सुनना भी एक जीवन की ये सभी छोटी— छोटी चीजें भी जिन्हें तुम करते हो, होशपूर्ण होकर ही करते हो। और जब तुम प्रेम में होते हो, तुम पूरे चैतन्य के ही प्रेम में होते हो। यह प्रेम, तुम्हारे स्वयं अपने ही विरुद्ध नहीं होता। यह ऐसा नहीं होता जो तुम्हें अपने नियंत्रण में ले ले, यह ऐसा नहीं होता, जिसके तुम शिकार हो जाओ, यह वैसा भी नहीं होता, जैसे कोई व्यक्ति चुम्बक की भांति तुम्हें अपनी ओर खींच ले। नहीं, तुम स्वयं ही उसकी ओर सचेतन रूप से गतिशील होते हो।

बाउलों का प्रेम अत्यधिक शीतल होता है। उसमें सजगता की शीतलता होती है। तुम्हारा प्रेम बहुत उतस और उष्ण होता है। उसमें मूच्र्छा का ज्वर होता है।

हम सभी 'कुंड बफर' के द्वारा कार्य करते हैं। ठीक काम केंद्र के मध्य में यह यांत्रिक रूप से कार्य करता है। जो लोग 'कुंड बफर' के द्वारा जीते हैं, वे लोग दो तरह के जीवन जी सकते हैं एक तो अपनी कामनाओं को तुष्ट करने में लगे रहना है और दूसरा है उनका दमन करना—लेकिन दोनों ही एक जैसे ही हैं। सामान्यत जो लोग दमन भरा जीवन जीते हैं उन्हें संत कहा जाता है। यह केवल बेवकूफी है। भिन्न वस्त्रों में ये लोग भी अन्य दूसरों जैसे ही हैं। अपनी कामनाओं को तुष्ट करने में लगे लोगों का जीवन उतना ही मूर्च्छापूर्ण है जितना कि उन लोगों का, जो दमित जीवन जी रहे हैं। वास्तव में ' कुण्ड बफर ' जितना अधिक शक्तिशाली होता है, लोग उतने ही अधिक दमित होते हैं क्योंकि वे उसे नियंत्रित करना चाहते हैं। वे भयभीत रहते हैं। वे भयभीत इसलिए होते हैं क्योंकि वे अपनी कामेच्छाओं के ऊपर अपने अहंकार का नियंत्रण खोने लगते हैं। वे उसे नियंत्रित करने का प्रयास करते हैं, लेकिन उनका नियंत्रण कामेच्छा को गहरे अचेतन में बलपूर्वक धकेलना जैसा होता है। उसके शिखर पर बैठे हुये निरंतर उन्हें उससे संघर्ष ही करना होता है।

और स्मरण रहे यदि तुम्हें किसी चीज से संघर्ष करना अथवा लड़ना है, तो तुम कभी उसे छोड़ नहीं सकते, और न उसके पार जा सकते हो। उसके साथ लड़ने के लिए तुम्हें उसी तल पर बने रहना होगा। उससे लड़ने के लिए तुम्हें चौबीस घंटे उसकी छाती पर चढ़कर बैठे रहना होगा। वहां कोई अवकाश का दिन नहीं होता, और यदि तुम एक क्षण के लिए भी उसे छोड़ दो, तो वह फिर वहां उपस्थित होकर तुम्हें कामनाओं को तुष्ट करने की ओर धकेलता है।

कामनाओं को तुष्ट करने वाला और उनका दमन करने वाला, यह एक ही तरह के व्यक्ति के दो चेहरे हैं। तुम अपने मठों और आश्रमों में दमन करने वालों की श्रेणी ही के लोग पाओगे और संसार में तुम कामनाओं को तुष्ट करने में लगे लोग पाओगे। प्लेबॉय और तथाकथित संत ये दोनों एक दूसरे के विरोधी प्रतीत होते हैं, लेकिन ये दोनो एक दूसरे के पूरक हैं। उन दोनों के मनों में सेक्स ही उमड़ू घुमड़ रहा है, दोनो की मानसिक जड़ता एक जैसी ही है और दोनों की मानसिक रुग्णता एक जैसी ही है। उनका ' कुण्डबफर ' पिघलने की जरूरत है। और क्या किया जा सकता है?

इसमें एक छोटी सी विधि बहुत सहायक होगी। जब कभी तुम्हारे अंदर सेक्स की कामना उठे, तो वहां उसकी तीन सम्भावनाएं है: पहली है, उनको तुष्ट करने में लग जाओ, सामान्य रूप से प्रत्येक व्यक्ति यही कर रहा है, दूसरी है—उसका दमन करो, उसे बलपूर्वक अपनी चेतना के पार अचेतन के अंधकार में नीचे धकेल दो, उसे अपने जीवन के अंधेरे तलघर में फेंक दो। तुम्हारे तथा कथित असाधारण लोग, महात्मा, संत और भिक्षु यही कर भी रहे हैं। लेकिन यह दोनों ही प्रकृति के विरुद्ध हैं। ये दोनों ही रूपांतरण के अंतर्विज्ञान के विरुद्ध हैं।

तीसरी सम्भावना है—जिसका बहुत थोड़े से लोग सदैव प्रयास करते हैं। जब भी सेक्स की कामना उठे, तुम अपनी आंखें बंद कर लो। यह बहुत मूल्यवान क्षण है: कामना का उठना ऊर्जा का जाग जाना है। यह ठीक सुबह सूर्योदय होने जैसा है। अपनी दोनों आंखें बंदकर लो, यह क्षण ध्यान करने का है। अपनी पूरी चेतना को काम केंद्र पर ले जाओ, जहां तुम उत्तेजना, कम्पन और उमंग का अनुभव कर रहे हो। वहां गतिशील होकर केवल एक मौन दृष्टा बने रहो। उसकी निंदा मत करो, उसकी साक्षी बने रहो। तुम उसकी निंदा करते हो, तुम उससे बहुत दूर चले जाते हो। और न उसका मजा लो, क्योंकि जिस क्षण तुम उसमें मज़ा लेने लगते हो, तुम मूर्च्छा में होते हो। केवल सजग, निरीक्षण कर्ता बने रहो, उस दीये की तरह जो अंधेरी रात में जल रहा है। तुम केवल अपनी चेतना वहां ले जाओ, चेतना की ज्योति, बिना हिले डुले थिर बनी रहे। तुम देखते रहो कि कामकेंद्र पर क्या हो रहा है, और यह ऊर्जा है क्या?

इस ऊर्जा को किसी भी नाम से मत पुकारो, क्योंकि सभी शब्द प्रदूषित हो गए हैं। यदि तुम यह भी कहते हो कि यह सेक्स है, तुरंत ही तुम उसकी निंदा करना प्रारम्भ कर देते हो। यह शब्द ही निदापूर्ण बन जाता है। अथवा यदि तुम नई पीढ़ी के हो, तो इसके लिए प्रयुक्त शब्द ही कुछ पवित्र बन जाता है। लेकिन शब्द अपने आप में हमेशा भाव के भार से दबा रहता है। कोई भी शब्द जो भाव से बोझिल हो, सजगता और होश के मार्ग में अवरोध बन जाता है। तुम बस उसे किसी भी नाम से पुकारो ही मत। केवल इस तथ्य को देखते रहो कि काम केंद्र के निकट एक ऊर्जा उठ रही है। उसमें उत्तेजना है उमंग है, उसका निरीक्षण करो। और उसका निरीक्षण करते हुए तुम्हें इस ऊर्जा का पूरी तरह से एक नये गुण का अनुभव होगा। उसका निरीक्षण करते हुए तुम देखोगे कि यह ऊर्जा ऊपर उठ रही है। वह तुम्हारे अंदर मार्ग खोज रही है। और जिस क्षण वह ऊपर की ओर उठना प्रारम्भ करती है, तुम्हें अनुभव होगा कि एक शीतलता तुम पर बरस रही है, तुम पर चारों ओर से एक अनूठी शांति, मौन अनुग्रह आशीर्वाद और आनंद की वर्षा हो रही है। अब कोई पीड़ायुक्त है, यह ठीक एक मरहम जैसा है। और तुम जितने अधिक सजग बने रहोगे, यह ऊर्जा उतनी ही ऊपर जाएगी। यदि यह हृदय तक आ सकती है, जो बहुत कठिन नहीं है, कठिन तो है, लेकिन बहुत अधिक कठिन नहीं है.. यदि तुम सजग बने रहे, तो तुम देखोगे कि यह हृदय तक आ गई है। जब यह ऊर्जा हृदय तक आ जाती है तो तुम पहली बार यह जानोगे कि प्रेम क्या होता है।

अभी तक प्रेम के नाम पर तुम एक नकली चीज ढोये चले जा रहे हो। जब यह ऊर्जा हृदय चक्र पर आती है तो प्रेम में रूपांतरित हो जाती है। एक बार प्रेम में रूपांतरित हो जाये, एक बार वह समझ बनकर मर्म को बेध जाये, एक बार तुम उसका अनुभव कर लो, तो तुम्हारा अस्तित्व शुद्ध होने का अनुभव करेगा। तुम्हें कुंवारे होने का अनुभव होगा, तुम्हें इतना पवित्र और निर्मल होने का अनुभव होगा कि तुम यह सोच भी नहीं सकते कि स्वर्ग कहीं और भी है। तुम जानोगे कि वह तुम्हारे ही अंदर है। और तब स्वर्ग एक सत्य बन जाएगा, तब वह धर्मशास्त्रों की कल्पना मात्र न होगा, वह लगभग एक भूगोल बन जाएगा। तुम ठीक से जान जाओगे कि वह कहां है, और परमात्मा फिर एक कल्पना भर नहीं रह जाएगा। उस शुद्धता में, उस मौन में और प्रेम की उस परिपूर्णता में तुम देखोगे—परमात्मा है— एक सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि एक स्वयं सिद्ध सत्य के रूप में, एक तथ्य, एक प्रमाण, निचोड़ और प्रकृति तथा तर्क के पार के निष्कर्ष के रूप में नहीं, बल्कि वह बस सामान्य रूप से वहां है। उससे इंकार करने का वहां कोई मार्ग ही नहीं। वह वहां इतना अधिक है कि तुम अपने आपसे तो इंकार कर सकते हो, लेकिन तुम परमात्मा से इंकार नहीं कर सकते। परमात्मा की वास्तविकता के सामने तुम स्वयं अपने आपको इतना अधिक धुंधला पाओगे, कि तुम कह सकते हो— " मैं नहीं भी हो सकता हूं लेकिन 'वह' है।

वह उसकी पहली झलक होगी। वह ऊर्जा और भी ऊंचाई पर चढ़ सकती है। जब वह कंठ स्थित विशुद्ध चक्र तक आती है, वह प्रार्थना बन जाती है। लोग प्रार्थना तो करते हैं, लेकिन वे नहीं जानते कि प्रार्थना क्या होती है—'' क्योंकि प्रार्थना प्रेम का सबसे अधिक सूक्ष्म और परिष्कृत रूप है। यदि तुम हृदय चक्र के द्वारा उठती ऊर्जा के साथ गतिशील नहीं होते, तो तुम प्रार्थना तक नहीं जा सकते, तब वहां कोई अन्य मार्ग है ही नहीं। किसी भी व्यक्ति को हृदय चक्र के द्वारा ही जाना होगा। कंठ के चक्र के कारण ही, क्योंकि विशुद्ध चक्र में ही प्रार्थना का अस्तित्व है, और वह वहां ही घटित होती है, लोगों ने प्रार्थना को संस्कारित करना शुरू कर दिया है। लोगों ने प्रार्थनाएं रची हैं, वे कुछ कहते हुए आग्रह करते हैं। लेकिन कंठ चक्र का प्रयोग करते हुए और परमात्मा से कहकर कुछ मांगना प्रार्थना करना नहीं है। प्रार्थना का सम्बंध कंठ के चक्र के साथ तो है, लेकिन मौखिक रूप प्रार्थना के उच्चारण से नहीं है। वह है तो इसी चक्र का अनुभव, और यह अनुभव ठीक ऐसा है, जैसे एक शिशु को

पहली बार मां के स्तनपान से होता है। यह अनुभव तुम्हारे कुछ कहने से नहीं होता बल्कि तुम कुछ चीज प्राप्त करते हुए उसका अनुभव करते हो। परमात्मा से कुछ भी कहना और मांगना प्रार्थना नहीं है, बल्कि परमात्मा से कुछ चीज प्राप्त करना ही प्रार्थना है। परमात्मा, मां बन जाता है, मां का स्तन बन जाता है। प्रार्थना से तुम्हारा पोषण होता है। हां, उसका अस्तित्व कंठ चक्र में ही है और वहीं घटित होती है, क्योंकि कंठ का चक्र ही पोषण प्राप्त करने वाला चक्र भी है। कंठ चक्र ही वह प्रथम चक्र है, जो सबसे पहले शिशु में कार्य करना शुरू करता है, क्योंकि बच्चे को वायु अनी होती है जो कंठ चक्र के द्वारा ही घटती है। और तब उसे दूध चूसना होता है, और यह क्रिया भी कंठ चक्र के द्वारा ही होती है। प्रार्थना ठीक वायु को चूसने जैसी जीवन्त है अथवा वह मां के स्तन से दूध चूसने जैसी है।

इसीलिए जीसस कहते हैं—'' जब तक तुम छोटे शिशु जैसे नहीं बन जाते, तुम परमात्मा के राज्य में प्रवेश नहीं कर सकते।'' वह कंठ चक्र की ही बात कर रहे हैं। लेकिन ईसाइयों ने पूरी तरह से वह लीक ही छोड़ दी। वह प्रतीकात्मक रूप में कह रहे हैं कि तुम फिर से एक शिशु बन जाओ और अपने कंठ चक्र से वही ऊर्जा चूसना शुरू कर दो जो जीवन है। अब यहां वास्तव में मां का स्तन और दूध अदृश्य

क्या तुमने प्रार्थना में लीन किसी व्यक्ति को देखा है ?—वह अनुग्रह में उससे मिलकर एक हो जाता है, वह कितना शांत, कितना विश्रामपूर्ण दिखाई देता है, जैसे उसे अपना घर मिल गया हो। एक छोटे शिशु को दूध पीते हुए और मां के स्तन के चूचक को मुंह में लिए सोते हुए देखो, वह अपने मां के स्तन के साथ गहरी नींद में विश्राम कर रहा है। उस शिशु के चेहरे का निरीक्षण करो, वह चेहरा एक संत का चेहरा भी है, जब वह कंठ चक्र पर पहुंच जाता है और प्रार्थना उमगती है।

प्रार्थना कुछ ऐसी चीज नहीं है, जिससे तुम परमात्मा के लिए कुछ करते हो। प्रार्थना तो कुछ ऐसी चीज है जिससे तुम अपने लिए परमात्मा को कुछ करने की स्वीकृति देते हो। प्रार्थना एक ग्राह्यता है। वह तुम्हारे द्वारा किया जाने वाला कोई कार्य न होकर एक निष्क्रिय स्वागत है। प्रार्थना, परमात्मा से कुछ कहने या निवेदन करने की बात नहीं है। इसके विपरीत यह परमात्मा को सुनना है। यह ' उसकी ' भेंट को पहले से तैयार होकर प्राप्त करना है। उसकी भेंट को तुम्हारे लिए प्राप्त करना कठिन है, क्योंकि तुम्हारे अपने विचार हैं और तुम्हारे पास अपनी योजनाएं हैं। तुम उससे कहे चले जाते हो कि हमें ठीक मार्ग दिखलाओ—'ऐसा करो, तब मैं प्रसन्न हो सकूंगा।'

हमारे पास लोकोक्ति है कि मनुष्य प्रस्तावित करता है और परमात्मा निस्तारित करता है। यह मूढ़तापूर्ण कहावत है, इसमें मात्र मूर्खता है। मामला ठीक इससे उलटा है—परमात्मा प्रस्तावित करता है और मनुष्य निस्तारित किए चले जाता है, क्योंकि तुम्हारे पास स्वयं अपनी योजनाएं हैं।

तुम उसकी बात कभी सुनते ही नहीं, तुम सोचते हो कि तुम उसकी अपेक्षा कहीं अधिक बुद्धिमान हो। तुम उसे परामर्श दिए चले जाते हो—'' ऐसा करो, वैसा मत करो—'' तुम यही सब तो अपनी प्रार्थना में कहते हो।

एक सच्ची प्रार्थना में परमात्मा को सुझाव देने जैसा कुछ भी नहीं है, सिवाय इसके कि तुम एक गहन कृतज्ञता व्यक्त करते हुए उसे धन्यवाद दो। परमात्मा तुम पर जो कुछ भी बरसा रहा है, उसे केवल स्वीकार करना ही प्रार्थना है। प्रार्थना तो उसकी भेंट को स्वीकार करना है।

लेकिन यह सभी कुछ होता है कंठ चक्र में ही। यह प्रेम का सर्वोच्च रूप है। और जब तुम और भी उच्चतम शिखर, अपने सातवें चक्र सहस्रार पर जाते हो, तब वहां समाधि घटित होती है, जो सर्वोच्च परमानंद है, जहां खोजते—खोजते, खोजने वाला खो जाता है, जहां तुम बिलकुल बचते ही नहीं, जहां तुम और परमात्मा अपनी सीमाएं खोकर एक हो जाते हो।

एक सीमा का दूसरी सीमा को आच्छादित करना, कंठ चक्र से ही शुरू हो जाता है: सीमाएं धुंधली होने लगती हैं, वे बहुत स्पष्ट नहीं रह जातीं। लेकिन फिर भी तुम्हारा पृथक अस्तित्व होता है। तुम्हारा केंद्र पृथक और परमात्मा का केंद्र पृथक होता है। प्रार्थना में तुम दोनों मिलोग हो, एक दूसरे की सीमा का अतिक्रमण करते हो। एक तरह से दोनों की परिधिया एक दूसरे से मिल जाती हैं, लेकिन केंद्र फिर भी पृथक बने रहते हैं। तुम्हारी ऊर्जा जितनी ऊपर उठती है, अधिक से अधिक केंद्र एक दूसरे के निकट आते हैं। सातवें चक्र सहस्रार पर तुम्हारे सभी केंद्र एक बन जाते हैं। तब वहां केवल एक ही केंद्र होता है। यही उसका अर्थ है जब जीसस कहते हैं—'' मैं नहीं बल्कि मेरे परमपिता मुझमें निवास करते हैं।'' अब खोजने वाला और जिसकी खोज की गई, वे दो नहीं रहे। अंतिम मुलाकात सम्पन्न हो गई, प्रेम की अंतिम खिलावट हो गई, पूर्णता को उपलब्ध होकर वह फल—फूल चुका। जब काम केंद्र ऊर्जा से धड़क रहा है, उसमें कम्पन हो रहे हैं, जब वह नदी की भांति प्रवाहित हो रहा है—तो कामनाओं की तुष्टि अथवा उनके दमन के मध्य चुनाव किए बिना, यदि तुम निरीक्षण कर्त्ता बनकर मध्य में बने रहे, तो एक विशाल रुपान्तरण स्वयं अपने से घटित होता है।

इसलिए अगली बार जब तुम्हें तीव्र कामवासना का अनुभव हो, तो दो आसानी से उपलब्ध विकल्पों—कामना तुष्टि अथवा उसके दमन की ओर गतिशील न होकर ठीक मध्य में बने रहना, और फिर तुम एक ऐसे स्थान पर हो, जहां से दरवाजा खुल सकता है।

वह हमेशा मध्य ही में खुलता है।

बुद्ध इसी मार्ग को मध्य मार्ग, मज्झिम निकाय कहते हैं। वह कहते हैं—'' हर कहीं, अति पर जाना ही मत। सदा मध्य ही का चुनाव करना। ठीक मध्य ही सभी के पार है। यदि तुम दो विपरीत छोरों तथा दो विरोधों के ठीक मध्य स्थान खोज सके तो तुम उनके पार चले गये, तुम्हारा रूपान्तरण हो गया। रूपांतरण का द्वार ठीक मध्य ही में खुलता है और मध्य में बने रहना ही सभी के पार जाना है।

जब तुम काम केंद्र पर एक साक्षी की भांति खड़े निरीक्षण कर रहे हो, ऊर्जा ऊपर की ओर उठती है।'कुंड बफर' पिघलना शुरू हो जाता है और कुण्डलिनी कार्य करना शुरू कर देती है। कुण्डलिनी ही ठीक मार्ग है, और ' कुण्ड बफर ' का मार्ग गलत है। और कुण्ड बफर इसलिए गतिशील है, क्योंकि हम अनेक जन्मों से इतनी अधिक मूर्च्छा में जीते रहे हैं कि कुण्डलिनी कार्य कर ही नहीं सकती, वह सुप्त पड़ी है। कुण्डलिनी को चेतना के ईंधन की जरूरत है। यदि चेतना की यह गैस नहीं है तो कुण्डलिनी कार्य नहीं कर सकती।' कुण्डबफर ' तो मूर्च्छा के साथ कार्य करता है।

इसलिए यह तुम पर निर्भर है: यदि तुम मूर्च्छा ही में जिए चले जाते हो तो कुण्ड बफर अपना कार्य करता रहेगा, लेकिन यदि तुम चेतना में या होशपूर्वक जीते हो, तो अचानक तुम्हारा जीवन बदल जाता है। तुम अपने अस्तित्व के आंतरिक केंद्र की ओर गतिशील हो जाते हो, जहां गहरे में आत्मा का निवास है।

एक मनुष्य, जो मूर्खों के एक सक को साथ ले चलने में अत्यधिक सफल था, जब उससे पूछा गया कि तुम इन जिद्दी गधों को किस तरह व्यवस्थित कर लेते हो?

उस मनुष्य ने स्पष्ट करते हुए बताया—'' जब वे आगे नहीं बढ़ते तो मैं जमीन से मिट्टी उठाकर उनके मुंह में डाल देता हूं। यह निश्चित बात है कि वे उसे उसे थूक देते हैं, लेकिन नियमानुसार वे फिर चलना शुरू कर देते हैं।

उस व्यक्ति ने पूछा—'' तुम ऐसा क्यों सोचते हो कि यह इसका ही प्रभाव होता है?''

'' मैं निश्चित तो नहीं हूं लेकिन मैं सोचता हूं कि इससे उनके विचारों का प्रवाह बदल जाता है।''

यदि तुम साक्षी होने की शुरूआत करते हो, तो कोई भी यह ठीक—ठीक नहीं जानता कि तुम्हारी ऊर्जा कैसे गतिशील होना प्रारम्भ हो जाती है, लेकिन किसी न किसी तरह ऐसा होता है। हो सकता है यह तुम्हारे विचारों का प्रवाह बदल देती हो। यह एक बहुत बड़ा आघात होता है।

तुम स्वयं प्रयास करो—तुम क्रोधित हो, तुम्हारा क्रोध बढ़ता जा रहा है, तभी अचानक तुम सजग हो जाओ। अपने शरीर को हिलाओ—डुलाओ, और सजग बन जाओ, और देखो क्या होता है? अचानक तुम देखोगे कि कोई चीज तुम्हारे हाथों से फिसल गई है, और तुम्हारा क्रोध अब जाता रहा। अब किसी भी तरह क्रोध करना बेवकूफी लगता है। अथवा जब तुम्हें क्रोध आये तो किसी और के चेहरे पर थप्पड़ मारने के स्थान पर जिससे कोई भी सहायता मिलने वाली नहीं, तुम अपने ही चेहरे पर थप्पड़ मारो। जब भी तुम्हें क्रोध आये, स्वयं अपने ही गाल पर थप्पड़ मारो, और देखो, क्या होता है। जो यांत्रिक व्यवस्था, रुटीन रूप से करने जा रही थी, अचानक आघात पहुचाने से वह कार्य नहीं कर सकती।

यदि तुम अपने चेहरे पर थप्पड़ मारते हो, तो तुम्हारे अंदर एक होश जागृत होता है, यह होश या चेतना तुम्हारे अचेतन ढांचे को तोड़ देता है। इसलिए जब कभी तुम इसे बदलना चाहो, तो स्मरण रहे—होश ही इसकी कुंजी है। अन्यथा हम लगभग एक तरह के पागलपन में जी रहे हैं। थोड़े से लोग तो पागलखानों में बंद हैं और शेष उसके बाहर हैं। लेकिन एक भी समझदार मनुष्य को खोज पाना कठिन है। अंतर केवल डिग्री का है। क्या तुमने इस मामले का कभी निरीक्षण किया है, क्या तुम कभी इस बात से भयभीत हुए हो—कि जो व्यक्ति पागल बन गया है, वह कुछ दिनों पूर्व ठीक तुम्हारे जैसा ही था। कोई भी व्यक्ति कभी यह सोच भी नहीं सकता था कि वह कभी पागल हो जाएगा, और अब वह पागल है। क्या ऐसा तुम्हारे साथ भी नहीं हो सकता?

अमेरिका के सबसे महान मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स के बारे में यह कहा जाता है कि जब वह पहली बार एक पागलखाना देखने गए तो वह घर बहुत उदास होकर लौटे। वह ज्वरग्रस्त होकर लौटे। उनकी पत्नी बहुत चिंतित हुई। उसने पूछा—'' आखिर हुआ क्या? जब तुम यहां से गए थे तो पूरी तरह ठीक थे।''

उन्होंने उत्तर दिया—'' मुझसे बात मत करो। मैं बात करने की मनःस्थिति में हूं ही नहीं।''

और वह कम्बल ओढ़ कर लेट गए और दो तीन दिनों तक बीमार रहे। प्रत्येक चिंतित था। डाक्टर ने भी उन्हें देख कर कहा—'' कुछ भी गलत नहीं है। यह ठीक हैं।'' तब उन्होंने बतलाया कि उनके साथ हुआ क्या ?—''पागलखाने में बहुत से पागलों को देखकर अचानक मेरे मन में एक खयाल आया—कि ऐसा मेरे साथ भी तो हो सकता है।''

इस खयाल ने उन्हें अंदर से कंपा दिया, फिर वह वैसे ही व्यक्ति नहीं रहे, बल्कि इस घटना ने उन्हें बहुत सजग बना दिया।

तुम्हारे मन के अंदर पागलपन निरंतर बना ही रहता हैं— और तुम इसे जानते हो। तुम इसे न जानने की व्यवस्था कर कैसे सकते हो, वह तो तुम्हारे अंदर एक अंतर्प्रवाह की भांति रहता है। परिधि पर तुम ठीक से सब कुछ व्यवस्थित कर लेते हो।

मैंने सुना है एक पादरी को एक पागलखाने में रहने वाले लोगों को उपदेश देने का अवसर मिला। अपने प्रवचन के दौरान उसने नोट किया कि उनमें से एक मरीज ने उसे सबसे अधिक ध्यान देकर सुना, उसकी आंखें एक कील की तरह उनके चेहरे पर जैसे गड़ गईं, और उसका शरीर आतुरता से आगे झुक गया। उसका इस तरह रुचि लेना उन्हें बहुत प्रशंसापूर्ण लगा। प्रवचन के बाद पादरी ने देखा कि उस व्यक्ति ने पागलखाने के अधीक्षक से कुछ कहा। इसलिए जितनी भी. शीघ्र सम्भव हो सका, पादरी ने उनसे पूछा—'' क्या इस व्यक्ति ने आपसे मेरे उपदेश के बारे में कुछ कहा?''

—"जी हां।"

— 'अगर आपको एतराज न हो तो क्या आप बता सकते हैं कि उसने आपसे क्या कहा?"

अधीक्षक ने टालने का बहुत प्रयास किया लेकिन उपदेशक आग्रह ही करता

रहा

अंत में उसने कहा—" जो कुछ उस व्यक्ति ने कहा वह यह वाक्य था— " जरा सोचें यह तो पागलखाने के बाहर हैं और मैं अंदर हूं।"

तुम पागलखाने के बाहर हो सकते हो, और अन्य कोई व्यक्ति उसके अंदर हो सकता है, लेकिन अंतर कुछ डिग्री का ही है। जब तक तुम होशपूर्ण या सचेतन नहीं हो जाते, तुम हमेशा ही पागलपन के सीमांत पर, हमेशा अंदर से उबलोग हुए पहले से तैयार बैठे हो। कोई भी छोटी सी चीज सिद्ध कर सकती है कि ऊंट की पीठ पर लदे बोझ पर एक तिनके का भी भार लादने से वह नीचे भी बैठ सकता है। कोई भी छोटी सी चीज, कोई भी छोटी सी घटना, और तुम सीमा रेखा लांघ सकते हो।

मूर्च्छा में जीना, वास्तव में जीना है ही नहीं। होशपूर्ण बनना सचेतन रूप से गतिशील होना जो कुछ तुम्हारे मन में घट रहा हो, अपने मन से पृथक रहकर उस सभी के प्रति सजग और सचेत रहना, क्योंकि जब तुम किसी चीज का निरीक्षण करते हो तो तुम और तुम्हारी चेतना उस वस्तु से पृथक बनी रहती है— और यही इसका रहस्य है। यदि तुम अपने विचारों का निरीक्षण करते हो, तो तुम अपने विचारों से पृथक हो जाते हो, तुम्हारा उनके साथ कोई तादात्म्य नहीं रह जाता। और जब तुम्हारा उनसे तादात्म्य नहीं रह जाता, तुम उन्हें सहयोग नहीं देते और तुम अपने विचारों को और ऊर्जा नहीं दिए चले जाते और वे धीमे— धीमे विजर्सित हो जाते हैं। जब मेजबान रुचि न ले तो मेहमान स्वयं चले जाते हैं। वे प्राय: इतनी अधिक शीघ्रता से नहीं आते, और यदि वे आते भी हैं, तो अधिक समय तक नहीं ठहरते। उनके बीच अंतराल आने लगते हैं—एक विचार आता है और चला जाता है और तब कुछ मिनट गुजर जाते हैं और दूसरा कोई विचार नहीं आता। इसी अंतराल में तुम सत्य का साक्षात्कार करते हो। तब तुम्हारे और सत्य या वास्तविकता के बीच कोई पर्दा नहीं होता। बिना आवरण या पर्दे के ही सत्य का साक्षात्कार होता है, और यही परमात्मा

आज का गीत है:

वे जो मर गए हैं
पर फिर भी वे पूरी तरह जीवित हैं।
और वे प्रेम के अनुभवों
और उसकी सुवास को भली भांति जानते हैं।
वे लोग ही जीवन—मृत्यु की
इस सरिता को निहारते हुए, अखण्ड सत्य को खोजते हैं, और वे ही इस नदी को पार कर लेंगे।
हवा के विरुद्ध चलोग हुए
प्रसन्नता पाने की
उनकी कोई चाह ही नहीं है।
वे वासना को वासना में रहते हुए ही मारते हैं।
और बिना तादात्म्य जोड़े
प्रेम नगर में प्रवेश करते हैं।

अत्यधिक अनूठे सूत्र हैं, बहुत अधिक महत्त्वपूर्ण सूत्र.... "वे जो मर गए हैं, पर फिर भी वे पूरी तरह जीवित है।" तुम कैसे मर भी सकते हो और फिर भी पूरी तरह जीवित भी बने रहे सकते हो? यदि तुम अपने शरीर के साक्षी बन जाओ, तब तुम जानते हो कि तुम शरीर नहीं हो। शरीर का ही जन्म होता है और शरीर की ही मृत्यु होने जा रही है, जिस क्षण तुम जानते हो, कि तुम शरीर नहीं हो, तुम जानते हो कि तुम न कभी जन्मे थे और न कभी तुम्हारी मृत्यु होगी। इसलिए एक अर्थ में तुम पूरी तरह जीवित बन जाते हो, शाश्वत रूप से जीवित—इसी को जीसस कहते हैं— ' अकूत संपदा से भरा जीवन, अतिरेक से बहता हुआ जीवन।' तब तुम कभी भी खाली नहीं हो सकते: तुम्हारा कोई प्रारम्भ नहीं होता और न तुम्हारा कोई अंत हो सकता है, तुम चिर स्थायी और शाश्वत ऊर्जा हो। तब तुम एक ओर तो पूरी तरह जीवित हो, और क्योंकि तुम जानते हो कि तुम शरीर नहीं हो, तब वह जीवन जिसके बारे में तुम सोचा करते थे कि वह शरीर में है, अब और वहां है ही नहीं।

शरीर पहले ही मर चुका है। तुम उसका प्रयोग करते हो, तुम उसमें रहते हो, लेकिन तुम अब उसके साथ तादात्म्य नहीं जोड़ते।

वे जो मर गए हैं
पर फिर भी वे पूरी तरह जीवित हैं
वे प्रेम के अनुभवों और उसकी सुवास को
भली भांति जानते हैं
और वे लोग ही इस सरिता को पार कर लेंगे

और जब तुम पूरी तरह सजग हो और अब और शरीर के प्रति आसक्त नहीं हो, अब और शरीर के साथ तुम्हारा तादात्म्य नहीं रह गया है, तुम्हारे अंदर अब और यह विचार नहीं रह गया कि तुम शरीर हो, तभी प्रेम का उदय होता है। जिस क्षण तुम मात्र शरीर नहीं रह जाते, तुम्हारे अंदर का ' कुण्ड बफर ' टूट जाता है—क्योंकि ' कुण्डबफर ' केवल तभी बना रह सकता है, जब तुम शरीर से तादात्म्य जोड़ लेते हो। कुण्डबफर, शरीर का ही एक भाग है।

अब जो कुछ मैं कहने जा रहा हूं उस बारे में सावधान और होशपूर्ण हो जाओ।' कुण्डबफर ' तो शरीर का एक भाग है और ' कुण्डलिनी ' शरीर का भाग नहीं है। कुण्डलिनी तुम्हारा भाग है, वह तुम्हारी अपनी चेतना का एक भाग है। इसलिए लोग, और यहां ऐसे बहुत से हैं.... यहां तक कि कुछ डॉक्टरों ने भी यह खोजने का प्रयास किया है कि कुंडलिनी का शरीर में कहां अस्तित्व है। यहां तक कि कुछ लोगों ने यह सिद्ध करने की भी मूर्खता की है कि उसका अस्तित्व यहां अथवा वहां है, वह इस केंद्र अथवा उस केंद्र में है।

कुण्डलिनी इस भौतिक शरीर का भाग है ही नहीं। और गुरुजिएफ ठीक था: यदि लोग यह सिद्ध करने का प्रयास कर रहे हैं कि कुण्डलिनी शरीर का ही एक भाग है, तब वे जो कुछ भी सिद्ध करते हैं वह कुण्ड बफर है, न कि कुण्डलिनी। वहां गुरुजियेफ से कोई भी व्यक्ति यह कहने वाला था ही नहीं कि कुण्डलिनी आत्मा या चेतना का एक भाग है, न कि शरीर का और सभी तथाकथित हिंदू योगी, विशेष रूप से आधुनिक योगी, वे हर तरह से जब भी वे इस बारे में कुछ भी लिखते हैं, वे विज्ञान का ही अनुकरण करते हैं। वे यह दिखाने और सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि योग एक विज्ञान है। तब वास्तव में वे इसी दृष्टिकोण के शिकार बन जाते हैं, जिसके शिकार वैज्ञानिक हैं' उनका दृष्टिकोण शरीर के साथ ही प्रारम्भ होता है और वे सोचते हैं कि यह शरीर ही सब कुछ है। इसीलिए वे यह सिद्ध करने का प्रयास करते हैं कि कुण्डलिनी कहीं न कहीं इस भौतिक शरीर में है और वह शरीर विज्ञान के अंतर्गत कार्य करती है।

गुरुजिएफ कहा करता था कि ये लोग कुण्डबफर के बारे में बातचीत कर रहे हैं: " उनकी कुण्डलिनी कुण्डलिनी न होकर कुण्डबफर ही है, उसका नकली अस्तित्व है।" जब तुम शरीर के साथ बहुत अधिक तादात्म्य जोड़ लेते हो, तब यह नकली कुण्डलिनी तुम्हारे शरीर में ऊपर की ओर उठती है, तुम्हारी चेतना में नहीं। जब तुम्हारा शरीर के साथ कोई तादात्म्य नहीं रह जाता, तो कुण्डबफर विसर्जित हो जाता है। वास्तव में यह कुण्डबफर ही है, जहां से तुम्हारा शरीर से तादात्म्य जुड़ा हुआ है। यही कारण है सेक्स लगभग प्रेम का समानार्थक बन जाता है। जब एक स्त्री का मासिक धर्म बंद हो जाता है तो वह सोचना शुरू कर देती है कि उसका जीवन समाप्त हो गया। जब एक पुरुष को यह पता चलता है कि अब उसमें सेक्स की दृष्टि से पुंसत्व नहीं रहा तो वह यह अनुभव करना शुरू कर देता है कि वह अब व्यर्थ हो गया है। ये गलत दृष्टिकोण इस वजह से बने रहते हैं क्योंकि हमने काम केंद्र के साथ बहुत अधिक तादात्म्य जोड़ लिया है।

यदि साक्षी का उदय हो जाये, तो तुम शरीर से पृथक हो, और तुम जानते हो कि तुम उससे अलग हो—ऐसा नहीं कि तुम उसे दोहराते हो, ऐसा भी नहीं कि चूंकि वेद कहते हैं कि तुम अपने शरीर से पृथक हो, इसलिए तुम उसे दोहराते हो, उसका मंत्र जाप करते हो और उसका निरंतर जाप तुम्हें यह भ्रमित विचार दे देता है कि हां, तुम शरीर से पृथक हो। इससे कोई सहायता मिलने की नहीं। तुम्हारा स्वयं का जानना, अपना अस्तित्वगत अनुभव ही सहायता कर सकता है, अन्य और कुछ भी नहीं। यदि तुम जानते हो कि तुम शरीर नहीं हो, तो अचानक प्रेम का उदय होता है: ऊर्जा हृदय चक्र की ओर गतिशील होना शुरू हो जाती है।

इस हृदय का अस्तित्व फेफड़ों के मध्य नहीं है। यह हृदय शरीर का भाग नहीं है, फेफड़े शरीर का एक भाग है। और हृदय की धड़कन के बारे में तुम जो कुछ सोचते रहे हो, यह केवल फेफड़ों की धड़कन है।

इस धड़कन के पीछे एक अन्य धड़कन है। तुम इसका खयाल इस तरह से कर सकते हो: फेफड़े और हृदय समानांतर हैं। फेफड़े, शरीर का भाग हैं और हृदय आत्मा का। कुण्डबफर और कुण्डलिनी समानांतर हैं: कुण्डबफर, शरीर का भाग है और कुण्डलिनी आत्मा का। सेक्स और प्रेम समानांतर है: सेक्स शरीर का भाग है और प्रेम आत्मा का। संसार और परमात्मा समानांतर है: संसार का सम्बंध शरीर से है, और परमात्मा का आत्मा से। शरीर और आत्मा का भी अस्तित्व समानांतर है, ठीक दो समानांतर रेखाओं की भांति जो हमेशा साथ—साथ तो रहती हैं लेकिन फिर भी कहीं आपस में मिलती नहीं। वे हमेशा से साथ—साथ हजारों जन्मों से एक दूसरे के समानान्तर दौड़ रही हैं और मिलती कहीं भी नहीं। वे एक दूसरे को प्रभावित करती हैं लेकिन उनका मिलना कभी भी नहीं होता। वे एक दूसरे को रंग सकती हैं। जब तुम बहुत अधिक शरीर और मन के नियंत्रण में रहते हो, तुम्हारा शरीर और मन आत्मा को लगभग अपने नियंत्रण में ले लेता है। जब तुम शरीर से पृथक हो जाते हो, तुम्हारा उससे तादात्म्य नहीं रह जाता, तो तुम्हारी आत्मा, तुम्हारे शरीर और मन को अपने नियंत्रण में ले लेती है।

साधारणतया तुम्हारी आत्मा ही गुलाम बनी रहती है और शरीर मालिक बना रहता है। लेकिन जब यह रूपांतरण होता है, तो समझ का उदय होता है। आत्मा फिर से अपना स्वामित्व प्राप्त करती है और शरीर अपने ठीक स्थान पर आकर सेवक बन जाता है, एक बहुत आज्ञाकारी सेवक।

वे जो मर गए हैं
पर फिर भी पूरी तरह जीवित हैं
और वे प्रेम के अनुभवों और उसकी सुवास को भली भांति जानते हैं।
वे लोग ही जीवन मृत्यु की
इस सरिता को देखते हुए, अखण्ड सत्य को खोजते हैं

और वे लोग ही इस नदी को पार कर लेंगे।

अखण्ड सत्य, योग, सभी भागों का मिलकर एकीकरण, बहती तरल चेतना का रवे की तरह ठोस होकर केंद्र पर घनीभूत हो जाना, केंद्रित हो जाना अथवा तुम उसे जिस तरह से भी पुकारना चाहो—वही लक्ष्य है। उसे देखते हुए तटस्थता से देखते हुए.. .यही कुंजी है, जिसे मैं साक्षी होना कहता हूं।

जीवन मृत्यु की सरिता की ओर देखते हुए वे अखण्ड सत्य को खोजते हैं।

वहां तुम्हारे ही अंदर एक सरिता जीवन की और दूसरी मृत्यु की बह रही है। शरीर ही मृत्यु की सरिता है और आत्मा ही जीवन—सरिता है। आत्मा कभी नहीं मरती और शरीर सदा जीवित नहीं रहता। आत्मा—शरीर दोनों साथ—साथ रहते हैं और शरीर आत्मा के जीवन को प्रतिबिम्बित करता है। यह आत्मा के जीवन के साथ ही प्रकाशवान होता है। यह जीवन जैसे उधार लिया हुआ है, यह चन्द्रमा की भांति है। चंद्रमा के पास अपनी स्वयं की किरणें नहीं होती, वह सूर्य को प्रतिबिम्बित करता है। किरणें सूर्य से आती है और चंद्रमा की सतह से टकरा कर वापस लौटती हैं, चंद्रमा उन्हें प्रतिबिम्बित करता है लेकिन तुम उन्हें ऐसे देखते हो, जैसे मानो वे चंद्रमा से ही आ रही हो।

यह ऐसा है, जैसे तुम यदि कमरे में एक छोटा सा दिया जला दो, और बाहर गुजरता हुआ कोई व्यक्ति शीशे की खिड़की द्वारा अंदर दिखाई दे। खिड़की का शीशा दीये के प्रकाश को बाहर भी फैलाता है, लेकिन प्रकाश खिड़की के शीशे से नहीं आ रहा है, वह तो कमरे के अंदर जलोग दीये से आ रहा है, शीशा उसे प्रतिबिम्बित कर रहा है।

तुम्हारा शरीर जीवन को प्रतिबिम्बित करता है—तुम्हारा शरीर आत्मा के जीवन प्रकाश से ही आलोकित है। यही कारण है, जब आत्मा कहीं शून्य से मिल जाती है, शरीर मृत हो जाता है। शरीर सदा से मृत ही था। जाकर कमरे के अंदर दीये को बुझा दो, और खिड़की भी अंधेरे में डूब जायेगी। वह हमेशा अंधेरी थी ही, क्योंकि उसके पास अपना कोई प्रकाश न था।

शरीर मृत्यु की एक सरिता है, और यदि तुम शरीर के साथ आसक्ति को बनाए ही रखते हो, तो तुम बार—बार मृत्यु की नदी में गिरते रहोगे। तुम जन्म लोगे और मर जाओगे, तुम्हारा फिर जन्म होगा और फिर तुम्हारी मृत्यु होगी—इसी को हिंदू कहते हैं—जन्म मरण का चक्र: अपने ही अंदर गहरे जाओ, और उस जीवन के सत्रोत की खोज करो। यह शरीर से पूरी तरह भिन्न है। उसने शरीर को ही अपना घर बनाया है, लेकिन वह शरीर नहीं है। वह जीवन—सरिता का प्रवाह है। उनका निरीक्षण करते हुए उनकी ओर देखते हुए साक्षी रहते हुए... इन दोनों, जीवन और मृत्यु की सरिता के पार, वे उस अखण्ड सत्य को खोजते हैं।

और एक बार तुम्हारी समझ, जीवन और मृत्यु के बारे में—कि वह हैं क्या? पूर्ण हो जाए; तुम अखण्ड हो जाते हो, केंद्रित हो जाते हो। क्योंकि तब शरीर में तुम्हारा कोई केंद्र नहीं रह जाता, तब वहां फिर कोई भ्रम नहीं रह जाता कि तुम शरीर में हो। तब तुम अचानक अपने अस्तित्व के असली केंद्र के प्रति, अपने सबसे अंदर, गहरे में स्थित समाधि के प्रति सचेत होते हो।

हवा के विरुद्ध चलते हुए

प्रसन्नता पाने के लिए

उनकी कोई चाह ही नहीं होती।

बाउल कहते हैं कि सच्चे खोजियों की प्रसन्नता पाने की कोई चाह, हवा के विरुद्ध चलने की होती ही नहीं। वे बस जीवन सरिता के साथ बहते हैं। वे जीवन से कोई भी चीज मांगते ही नहीं, वे केवल प्राप्त करते हैं। जीवन

उन्हें जो कुछ देता है, वे उसी में मस्त, प्रमुदित रहते हैं, लेकिन उनकी कोई मांग नहीं रह जाती। वे कभी तैरते नहीं, वे धारा के विरुद्ध तैरने का प्रयास ही नहीं करते, वे केवल धारा के साथ बहते हैं। यही है उनका समर्पण।

उनका यहां एक सुंदर गीत है....

अरे उतावले अधीर निष्ठुर।
तू आग में भुनने क्यों जा रहा है?
अपने हृदय की कली
को
तू क्यों बलात खिलने के लिए विवश कर रहा है?
जिससे बिना समय का मोल चुकाये
उसकी सुवास कली से मुक्त होकर
चारों ओर व्याप्त हो जाए।
तू मेरे स्वामी—मेरे परमात्मा की ओर देख
कलियां शाश्वत रूप से
स्वयं अपने आप खिल रही हैं,
उन्हें कभी कोई जल्दबाजी होती ही नहीं।
तू अपने भयानक लालच की वजह से
दिन के घंटों पर निर्भर है,
इसके अतिरिक्त, तू और कर ही क्या सकता है?
तू अपनी प्रेमिका की गुहार सुन
और उसे व्यथित मत कर।
ओ मेरे हृदय के स्वामी।
जीवन सरिता अपने आप में मग्न
सहज स्वाभाविक रूप से बही चली जा रही है।
ओ मेरे अधीर मन।
तू उसके शब्दों में छिपे मौन को सुन।

बाउल कहते हैं, किसी भी चीज को बलात् करने का प्रयास मत करो। जीवन को एक गहरे स्वीकार भाव से जियो। जरा देखो, परमात्मा करोड़ों फूल, कलियों पर बलप्रयोग किये बिना प्रति दिन खिला रहा है, वह कभी शीघ्रता नहीं करता, धैर्य से प्रतीक्षा करता है और उन्हें खिलने के लिए उनको समय देता है। बाउल कहते हैं— " प्रत्येक चीज अपने ठीक समय पर स्वयं घटती है, प्रत्येक चीज अपना मौसम आने पर स्वयं अपने आप होती है। प्रतीक्षा करो। अधीर मत हो, और न शीघ्रता करो। सारी जल्दीबाजी करना ही लालच है, और यह एक सूक्ष्म—संघर्ष है। जो कुछ घटने जा रहा है, वह घटेगा ही, तुम्हें अस्तित्व से लड़ने की कोई जरूरत है ही नहीं। तुम उस पर श्रद्धा कर सकते हो, तुम उसे समर्पण कर सकते हो।

यह समझ लेने जैसा है :

यदि यह तुम्हारे अंदर आबोहवा का एक भाग बन जाये, तो यह तुम्हें अत्यधिक आनंद देगा। जब तुम आगे और कोई भी चीज प्रस्तावित नहीं करते हो, तब कोई भी व्यक्ति तुम्हें निराशा नहीं दे सकता। तुम्हारे पास न तो

कोई योजना है, और न ही तुम्हारा कोई लक्ष्य है। तुम कहीं भी नहीं जा रहे हो और तुमने बस अपने आपको ' उसके ' हाथों में छोड़ दिया है, और जहां कहीं भी ' वह ' तुम्हें चाहता है, तुम्हें ले जाता है।

' तेरा साम्राज्य आयेगा और तेरा ही किया हुआ होगा '' उसकी ' इच्छानुसार ही होने दो' बाउलों का यही तरीका है। यह है समर्पण, प्रेम और श्रद्धा का मार्ग। बाउल कोई योगी नहीं है, निश्चित रूप से ' हठयोगी ' तो वह है ही नहीं बाउल एक प्रेमी है, एक भक्त है। उसका विश्वास है कि परमात्मा उसे किसी अज्ञात संसार में ले जा रहा है, और वह सुंदर होना ही चाहिए क्योंकि ' वह ' उसे ले जा रहा है। नदी सागर की ओर बही चली जा रही है, उसे जाना ही चाहिए क्योंकि यह ' उसकी ' नदी है। बच्चों जैसा यह विश्वास और श्रद्धा ही केवल उसका मार्ग है।

हवा के विरुद्ध चलोग हुए
प्रसन्नता पाने की उनकी कोई चाह नहीं है।
वे वासना को
वासना के साथ रहते हुए ही मारते हैं
और उससे तादात्म्य जोड़े बिना ही
प्रेम नगर में प्रवेश करते हैं।

इसी कारण बाउल कहते हैं, यदि वासना का भी अतिक्रमण करना है, तो वह वासना के द्वारा ही।'' यदि, क्रोध का रूपांतरण करना है तो वह क्रोध के द्वारा ही होगा। वे उस रसायन को जानते हैं कि कैसे विष को अमृत में बदला जाए। वे यह नहीं कहते कि यह विष है, इसे फेंक दो। वे कहते हैं—इसका रूपांतरण करो, अमृत इसके पीछे या अंदर ही छिपा हुआ है। विष तो केवल उसका बाहरी खोल है। उसके अंदर छिपे सारतत्व को खोज लो, प्रेम वासना के पीछे ही छिपा है। आत्मा, शरीर के पीछे ही छिपी है। परमात्मा संसार के पीछे ही छिपा है। उसे फेंको मत। वह कोई अत्यधिक मूल्यवान चीज तुम्हारी ओ उछालेगा। हो सकता है तुम अभी भी सजग न हो कि उसका कितना अधिक मूल्य है। तुम सोचते हो कि वह एक पत्थर है। एक जौहरी बनो। इसी को बाउल कहते हैं—' रसिक ', स्वाद पारखी होना। उसका स्वाद जानने के तरीके खोजो और जानो कि वह है क्या? उसके अंदर छिपी वास्तविकता अथवा सत्य के प्रति सजग बनो, उसके द्वार खोलकर उसके अंदर जाओ। वह एक कोहेनूर भी हो सकता है, उसे फेंको मत। यदि परमात्मा ने तुम्हें पत्थर दिया है तो वह कोहेनूर होना ही चाहिए— अन्यथा वह तुम्हें देता ही क्यों? तुम उसकी अपेक्षा अपने को बुद्धिमान मत मानो, उसकी प्रज्ञा और मेधा को ही सर्वोत्कृष्ट मानो। उस पर श्रद्धा रखो। यदि उसने तुम्हें एक पत्थर दिया है, तो वह एक कोहेनूर होना ही चाहिए उसे एक बहुत मूल्यवान हीरा होना ही चाहिए। यह उसकी दी हुई भेंट है, यह अन्यथा हो ही नहीं सकती।

इसलिए वासना में भी वे साधारण संन्यासियों के समान नहीं है। वे उससे लड़ते नहीं, वे उसके गहरे में जाकर खोज करते हैं, वे उसका रसायन खोजने का प्रयास करते हैं। कोई चीज तो वहां होनी ही चाहिए अन्यथा और मनुष्य को तो उसने किसी भी पशु की अपेक्षा कहीं अधिक दिया है। पशुओं में सेक्स मौसमी होता है। वर्ष में एक बार या दो बार ही वे कामुक होते हैं, अन्यथा सेक्स विसर्जित हो जाता है। मनुष्य चौबीसों घंटे, साल के बारह महीने, तीन सौ पैंसठ दिन, प्रति क्षण कामुक ही बना रहता है। कोई चीज वहां उसमें होनी ही चाहिए। मनुष्य को इतनी अधिक काम ऊर्जा आखिर क्यों दी गयी? वह केवल संतान उत्पन्न करने के कारण ही नहीं हो सकती—क्योंकि पशु ठीक पूर्णता से उसे कर रहे हैं। यदि मनुष्य ऋतु आने पर ही कामुक बनता, तो एक तरह से सभी चीजें कहीं अधिक बेहतर रही होती, वर्ष में एक बार एक महीने के लिए और शेष ग्यारह महीने तुम

स्वतंत्र रहते। तुम इस बीच हजारों कार्य कर सकते थे और इस बारे में फिक्र करते ही नहीं। वर्ष में एक महीना यथेष्ट होता।

लेकिन मनुष्य को इतनी अधिक काम ऊर्जा आखिर क्यों दी गई? यह केवल बच्चों के उत्पन्न करने के लिए ही नहीं हो सकती। यह महान कोष किसी दूसरी वजह से दिया गया है: यह अपने साथ अत्यधिक सजग और सचेत बनने की एक छिपी हुई सम्भावना साथ लिए चल रही है। इसी ऊर्जा को प्रेम की ऊर्जा बनना है और इस प्रेम को प्रार्थना बनना है, और इस प्रार्थना को परमानंद का सर्वोच्च शिखर बनना है। संतान उत्पन्न करने वाला भाग, जहां तक मनुष्य का सम्बंध है, बहुत छोटा है। उसमें कोई अन्य चीज जो बहुत अधिक मूल्यवान है, छिपी हुई है। परमात्मा तुम्हें कोई भी चीज बिना किसी विशिष्ट कारण के नहीं दे सकता।

वे वासना को
वासना के साथ रहते हुए ही मारते हैं
और उससे तादात्म्य जोड़े बिना ही
प्रेम नगर में प्रवेश करते हैं

जब वासना रूपांतरित हो जाती है तो तुम उससे निरासक्त बने ही प्रेमनगर में प्रवेश करते हो। स्मरण रहे—यह उनकी प्रेम की परिभाषा है। यदि प्रेम के साथ आसक्ति और लगाव है, तो वह वासना है। यदि प्रेम में कोई बंधन या आसक्ति नहीं है, केवल तभी वह वासना नहीं है। जब तुम वासना में डूबे हो, तब तक वास्तव में दूसरे के बारे में सोच भी नहीं सकते, अपने प्रेमिका या प्रेमी के बारे में भी नहीं सोच सकते। तुम केवल अपने उद्देश्य के लिए ही दूसरे का इस्तेमाल कर रहे हो। और वास्तव में फिर वहां आसक्ति पर लगाव होगा ही, क्योंकि तुम दूसरे पर नियंत्रण करना चाहोगे और तुम उस पर अपना अधिकार हमेशा के लिए करना चाहोगे, क्योंकि कल भी तुम्हें उसकी आवश्यकता हो सकती है, और परसों भी तुम्हें उसकी जरूरत पड़ सकती है। तुम एक प्रेमी या प्रेमिका चाहते हो, जिस पर तुम अपना अधिकार और नियंत्रण रखना चाहते हो।

प्रेम एक उपहार है: तुम्हें इसकी फिक्र करनी ही नहीं चाहिए कि वह कल वहां तुम्हारा स्वागत करने के लिए होगा अथवा नहीं। क्योंकि एक प्रेमी तो अपना प्रेम वृक्षों और चट्टानों को भी दे सकता है। एक प्रेमी तो उसे आकाश की शून्यता को भी दे सकता है। एक प्रेमी तो बस खिल सकता है और अपनी सुवास, यदि वहां लेने को कोई भी न हो, तो उसे हवाओं के द्वारा चारों ओर बिखेर सकता है। जरा खयाल करें : बुद्ध, बोधि वृक्ष के नीचे बैठे हुए हैं, बिलकुल अकेले ऐसा नहीं कि वहां कोई उसे ग्रहण कर रहा है, लेकिन उसे ग्रहण करने के लिए परमात्मा या अस्तित्व वहां हमेशा ही रहता है, अपने कई रूपों में, और कई तरीकों से वह उसे ग्रहण करता है। वासना एक लोभ है, वासना एक बंधन है, वासना में परिग्रह है। प्रेम को किसी पर अधिकार या नियंत्रण करने की जरूरत नहीं है, प्रेम कोई आसक्ति जानता ही नहीं, क्योंकि प्रेम, लोभ नहीं है। प्रेम एक उपहार है। यह एक सहभागिता है। तुमने कुछ पाया है, तुम्हारा हृदय भरा हुआ है, तुम्हारे फल पक गए हैं। तुम्हारी तीव्र उत्कंठा है कि कोई व्यक्ति आए और उसमें सहयोगी बने। यह देना बेशर्त है, यदि कोई सहभागी नहीं भी बनता है, तो भी कोई बात नहीं। लेकिन तुम इतने अधिक भरे हुए हो कि तुम निर्भर होना चाहते हो—जैसे बादल, जल से भरे होते हैं, और वे बरसते हैं। कभी वे जंगल में, कभी वे पहाड़ पर और कभी रेगिस्तान में जल बरसाते हैं, लेकिन वे वर्षा अवश्य करते हैं। यह बात, कि उन्होंने जल कहां बरसाया, असंगत है। वे इतने अधिक भरे हुए हैं कि उन्हें तो बरसना ही हैं।

एक प्रेमी, प्रेम से इतना भरा हुए होता है, कि वह एक बादल बन जाता है, वह प्रेम जल से भरा हुआ होता है: हो उसे बरसना ही होता है। उसका बरसना सहज और स्वाभाविक है।

तथा कथित प्रेमी
प्रेम की सुवास को
बहुत कम जान पाते हैं
एक प्रेमी अकेले प्रेम के लिए ही जीता है
जैसे मछली केवल जल में ही जीवित रहती है।
वह प्रेमी महान है
जो रात—दिन प्रेम कर सकता है
आराधना और प्रार्थना के साथ
जो प्रेम भरा मिलन घटित हो रहा है—
वह उसके प्रति
पूरी तरह समर्पित है।
पुरुष हो अथवा स्त्री
वह अभी भी अकेला ही है।
लेकिन वह प्रेमी तभी बनता है
जब उन दोनों की आत्माएं मिलती है।

सामान्यतया एक पुरुष अकेला है, एक स्त्री भी अकेली है। वहां अकेलापन है। भले ही यदि तुम किसी पुरुष अथवा स्त्री अथवा किसी मित्र से जुड़े हो, और यदि यह केवल वासना का ही सम्बंध है, तो भी तुम अकेले ही रहोगे। क्या तुमने कभी इसका निरीक्षण नहीं किया? एक स्त्री से बंधना, अथवा एक पुरुष से बंधना, लेकिन इस बंधन के बावजूद, अकेलापन रहता ही है। कहीं न कहीं गहरे में एक दूसरे के साथ कोई संवाद नहीं होता, तुम एक निर्जन द्वीप की तरह सभी से कटे रहते हो। तुम्हारे बीच संवाद असम्भव प्रतीत होता है। प्रेमी सामान्यतया एक दूसरे के साथ कभी बातचीत करते ही नहीं, क्योंकि प्रत्येक बात से तर्क—वितर्क उत्पन्न होता है और प्रत्येक बात संघर्ष ले आती है। धीमे— धीमे वे मौन बने रहना सीख लेते हैं, धीमे— धीमे वे यह सीख जाते हैं कि किसी भी तरह दूसरे से दूर रहा जाए अथवा उसे टाला जाए अथवा अधिक से अधिक उसे बरदाश्त किया जाए। लेकिन वे रहते हैं अकेले ही। यदि दूसरा वहां है भी, फिर भी वहां एक रिक्तस्थान रहता है, आंतरिक स्थान अतृप्त बना रहता है।

बाउल कहते हैं :

पुरुष हो अथवा स्त्री
वह अभी भी अकेला ही है।
लेकिन एक व्यक्ति प्रेमी तभी बनता है
जब उनकी आत्माएं मिल जाती हैं।

यह प्रश्न दो शरीरों का नहीं है, यह प्रश्न दो शरीरों के मिलने, एक दूसरे का आलिंगन करने और एक दूसरे में प्रवेश करने का ही नहीं है। प्रश्न है दो आत्माओं के एक दूसरे की गहराई में जुड़ जाने का। जब दो आत्माएं एक दूसरे के आर—पार एक दूसरे को समझती हैं, तब अकेलापन हमेशा के लिए विसर्जित हो जाता है। तब पूरी तरह से एक नूतन संसार उदित होता है, जहां तुम कभी भी अकेले नहीं हो सकते। तुम अखण्ड बन जाते हो।

पुरुष आधा है, स्त्री भी आधी है।
जब प्रेम होता है तो अखण्डता घटती है।

विष और अमृत
जब एक दूसरे में मिल जाते हैं,
ठीक उस बजने वाले और सुने जाने वाले संगीत की तरह
जो अकेला एक कृत्य बन जाता है।
मनुष्य का हृदय
सभी अधूरेपन से मुक्त है,
और शाश्वत रूप से बोध को उपलब्ध है। वह जैसे भलाई और बुराई को देखता है,
ठीक वैसे ही समय और स्थान को देखता है।
एक शिशु मां के स्तन से
जीवनदायी दूध चूसता है
और उसी स्त्री के स्तन पर लगी जोंक
उसका रक्तपान करती है।

"विष और अमृत मिलकर एक हो जाते हैं—" प्रेम और वासना भी मिलकर एक हो जाते हैं, जीवन और मृत्यु मिलकर एक हो जाते हैं। यह तुम पर निर्भर करता है कि तुम क्या चुनने जा रहे हो? एक शिशु मां के स्तन से दूध पीता है, और एक जोंक उसी स्तन से रक्त चूसती है। यह तुम्हीं पर निर्भर है। वासना बुरी नहीं है, लेकिन प्रेम और वासना मिलकर एक हो गए हैं।

प्रेम का चुनाव करो, वासना में से निकाल कर प्रेम को बाहर लाओ। अपने जीवन को एक सजगता से भरा जीवन बनने दो, जिससे तुम जो कुछ भी करो, वह इतने होश या चेतना से किया जाये, कि केवल जो कुछ मूल्यवान है, वही चुना जाए और जो निर्मूल्य है उसे छोड़ दिया जाए।

पूरा जीवन और कुछ भी नहीं, बल्कि मृत्यु के विरुद्ध जीवन को चुनने का एक महान प्रयास है, यह वासना के स्थान पर प्रेम को चुनने का, संसार के स्थान पर परमात्मा को चुनने का और झूठ, धोखा तथा असत्य की बजाय, सत्यम् शिवम् और सुंदरम को चुनने का एक महान प्रयास है।

ओ मेरे हृदय!
तू किस उलझन में पड़ा है?
जैसे—जैसे दिन गुजरते जाते हैं
तुझे उत्तराधिकार में मिली सम्पत्ति
लुटकर कपूर सी उड़ती जाती है
और तू सपनों में खोया हुआ,
केवल दिन रात ऊंधता ही रहता है।
और पांच घरों में रहते हुए भी
तेरा उन पर कोई नियंत्रण नहीं
ओ मेरे हृदय!
लुटेरा तेरे साथ ही
तेरे ही कक्ष में विश्राम कर रहा है।
लेकिन तू इसे कैसे जान और देख सकता है
तेरी आंखें तो नींद और मूर्च्छा से मूंदी हुई हैं।

यही बेखबरी और मूर्च्छा है, सजगता का अभाव है: " ओ मेरे हृदय! लुटेरा तेरे ही साथ, तेरे ही कक्ष में विश्राम कर रहा है, लेकिन तू इसे कैसे जान और देख सकता है? तेरी आंखें तो नींद और मूर्च्छा से मुंदी हुई हैं।" अपनी आंखें खोल! निरीक्षण कर, तेरे अंदर और बाहर क्या कुछ घट रहा है। जीवन और मृत्यु की सरिता के प्रति सजग बन, और धीमे— धीमे जीवन की सरिता में बहते हुए उसके साथ एक और अखण्ड हो जा।

जब भाव और अनुभव उमड़ कर मिलोग हैं
तो प्रेम के सोते फूट पड़ते हैं
दो अलग—अलग रूप और आकृतियां
अपने को एक मानकर
एक ही पथ पर चल पड़ते हैं।
दो प्रेमी हृदय
दो समानांतर सरिताओं की भांति भागे चले जा रहे हैं,
पर प्रेम के परमात्मा तक पहुचने के लिए
मार्ग बहुत लम्बा है।

यदि तुम्हारा प्रेम, वासना न होकर केवल प्रेम है, तब धीमे— धीमे तुम पाओगे कि तुम और तुम्हारी प्रेमिका दोनों साथ—साथ गाते और नाचते हुए उस सर्वोच्च—प्रेमी की ओर बढे चले जा रहे हैं, उस स्थान की ओर, जहां वह प्रीतम प्यारा रहता है, और केवल वहीं कोई भी व्यक्ति विश्राम पा सकता है। तब तुम अपने अंतिम घर की ओर बढ़ रहे हो। लेकिन यदि वहां वासना है, तब तुम कहीं भी गतिशील ही नहीं हो रहे हो।

वासना है—एक रुके हुए जल के तालाब की तरह मृत, और प्रेम है एक बहती हुई नदी की भांति। और यदि तुम किसी से प्रेम करते हो, तो तुम दोनों की सरिताए एक दूसरे के समानांतर सागर की ओर दौड़ रही हैं। यह अच्छा है कि तुम अपनी प्रेमिका के साथ नाचते हुए यह अच्छा है कि तुम अपने हाथ में उसका हाथ थामे हुए और अच्छा होगा यदि तुम उसके साथ हृदय से हंसते गाते हुए चलो। लेकिन स्मरण रहे यदि तुम्हारा जीवन एक रुके जल का तालाब बन जाता है, तब समझना, वह वासना है। प्रेम तो सदा बहता और सक्रिय होता है, जबकि वासना बासी और थिर, अथवा रुकी हुई होती है

सौंदर्य के सार—तत्व को
उसके चेहरे पर टकटकी लगाकर देखते हुए
प्रेम के दर्पण में
तुम उसके दृश्य रूप में उस अरूप को देखो।
उसके हाथों में आकर अग्नि शीतल हो जाती है,
और चांदी जैसे शुभ्र बर्फ के ढेले
अग्नि की ज्वाला बन जला देते हैं।

प्रेम एक चमत्कार है। एक बार प्रेम घट जाये, तो निरंतर चमत्कार होते ही रहते हैं: हाथों में आकर अग्नि शीतल हो जाती है और चांदी जैसे शुभ्र बर्फ के ढेले, अग्नि की ज्वाला बन जला देते हैं।

प्रेम का अपना ही एक अलग संसार है। वासना एक पृथक कानून और नियम के अंतर्गत जीवित है। रहस्यदर्शी इसे वासना का नियम अर्थात गुरुत्वाकर्षण का नियम कहकर पुकारते हैं: जिसके अंतर्गत कोई भी व्यक्ति नीचे की ओर खींच लिया जाता है। और प्रेम का नियम अनुग्रह का नियम है: कोई भी व्यक्ति ऊपर की ओर खींच लिया जाता है।

मैंने सुना है : एक सूफी रहस्यदर्शी किसी व्यक्ति के घर में ठहरा हुआ था, और उसके बारे में लोगों का खयाल था कि वह एक पागल है, इसलिए पूरा परिवार थोड़ा भयभीत था। वह रहस्यदर्शी विश्वास करने योग्य न था, वह कभी भी कुछ भी कर सकता था। लेकिन वह एक महान रहस्यदर्शी के रूप में भी जाना जाता था, इसलिए वे लोग उसे घर से भी नहीं निकाल सकते थे और वे सभी इस बात से भी भयभीत थे।'' उसे रात में कहां रखा जाये, उसे कहां सोने दिया जाये " इसका खयाल रख उन्होंने तलघर में उसका बिस्तर बिछाया।

अचानक आधी रात में उन्होंने ऊपर छज्जे से उसके खिलखिलाकर हंसने की आवाज सुनी। वे उसकी हंसी को तुरंत पहिचान गये, वह उसी पागल की ही हंसी थी।

लेकिन वह ऊपर छज्जे पर कैसे पहुच गया? उसे तो तलघर में रखा गया था। वे लोग सीढ़ियां चढ़कर ऊपर भागे: वह पागलों की तरह वहां हंसे ही जा रहा था, और हंसते हुए छज्जे पर ही लोटपोट हो रहा था।

उन्होंने पूछा—'' आखिर हुआ क्या? आप यहां कैसे आ गए?" उसने कहा— " मैं इसी वजह से तो हंस रहा हूं। मैं नीचे तलघर में सो रहा था और तभी चमत्कारों का एक चमत्कार हुआ। अचानक मैं नीचे से ऊपर आकर गिरा। मैं इसीलिए हंस रहा हूं।''

यह कहानी बहुत सुंदर है। रहस्यदर्शी ऊपर की ओर चले जाते हैं। प्रेम भी ऊपर की ओर उठाता है। यह एक दूसरे संसार का भाग है, ऐसा एक अन्य नियम के अंतर्गत होता है: वह है अनुग्रह का नियम।

आकाश की प्राचीरों पर
प्रकाश फूटने लगा है
और अंत में वह कृपा निधान
सुबह टहलता हुआ आखिर आ ही पहुंचा,
और मैंने उसे अपने चेहरे के निकट ही मौजूद पाया।
उगते प्रेम—सूर्य की ऊष्मा से
रात की चमक पिघलने लगी है
और पत्तियों पर पड़ी ओस नीचे टपक रही है
मुर्झाये फूल फिर से खिलने लगे हैं
और पंख फड़फड़ाते पक्षी उड़ रहे हैं।
प्रेम ही वह उगता हुआ सूर्य है
और वासना ही आत्मा की अंधेरी रात है।
ओ मेरे असंवेदनशील हृदय!
तू अपने ही शरीर में
अपने स्वभाव की स्वयं खोजकर
जब तक तू अपने सारतत्व को नहीं जान लेता
परमात्मा की पूजा पाठ से कुछ भी नहीं होने वाला।
इसी शरीर में सात स्वर्गों का निवास है
इस जीवन सरिता की यात्रा में
तू गलतियां ही करेगा।
क्योंकि तूने कभी भी
अपने मित्रों और शत्रुओं को पहचानना सीखा ही नहीं

जो तेरे अपने ही शरीर में जीवित हैं।

इसलिए आधारभूत कार्य है अपने ही शरीर में बसे मित्र और शत्रुओं को जानना। मुख्य कार्य यह जानने का है कि तुम किस तरह के हो और किस तरह के नहीं हो, जिससे तुम मृत्यु और जीवन, वासना और प्रेम तथा कुण्ड बफर और कुण्डलिनी के मध्य होने वाले भेद को पहचान सको।

यहां से तुम्हें कहीं और जाने की कोई भी आवश्यकता नहीं है। जो कुछ भी घटने जा रहा है वह तुम्हारे ही अंदर घटने जा रहा है। इस शरीर में वहां सभी कुछ दिया गया है, वह सभी कुछ पहले ही से दिया गया है। केवल थोड़े से अंतर को समझने के लिए थोड़े से होश और सजगता की जरूरत है। अपने ही अस्तित्व को प्रकाश में लाओ। बाहर संसार की ओर से आंखें बंद कर अपने ही अंदर अपनी आंखें खोलो। तुम्हारे ही शरीर में लघु रूप में पूरा ब्रह्माण्ड समाया हुआ है।

रहस्यदर्शी कहते हैं: जैसा ऊपर है, वैसा ही नीचे है।

हिंदू कहते हैं: जो कुछ भी ब्रह्म में है, और जो कुछ भी ब्रह्माण्ड में है, वह सभी कुछ मनुष्य में भी है।

मनुष्य पूरे ब्रह्माण्ड का एक छोटा सा नक्शा है। तुम्हारे ही अंदर सीमित और असीमित दोनों का ही अस्तित्व है, तुम्हारे ही अंदर पदार्थ और चेतना दोनों ही हैं: तुम्हारे ही अंदर निम्नतम और उच्चतम दोनों का ही अस्तित्व है।

नीत्शे कहा करता था कि मनुष्य दो खाइयों और दो अनतताओं के बीच एक तनी हुई रस्सी की भांति है।

हां! मनुष्य एक रस्सी है, एक सेतु है। तुम एक सीढी हो: जिसका एक भाग पृथ्वी पर टिका है, और दूसरा भाग जिसे तुम कभी भी देख नहीं सकते, वह परमात्मा के चरणों से लगा है। इसे देखो, इसे पहचानो, और ठीक दिशा को महसूसो और गतिशील हो जाओ। बस चलना शुरू कर दो।

आज इतना ही।

आठवां प्रवचन

केवल तुम्हारे लिए ही अस्तित्व में बना हुआ हूं

प्रश्नसार:

पहला प्रश्न: जब कोई व्यक्ति तुमसे घृणा करता है, तो तुम क्या करो?

चाहे कोई व्यक्ति तुमसे घृणा करे या कोई व्यक्ति तुमसे प्रेम करे, तुम्हें इससे कोई फर्क पड़ना ही नहीं चाहिए। यदि तुम 'हो ', तो तुम वैसे ही बने रहते हो, और ' तुम नहीं हो ' तब तुम तुरंत बदल जाते हो। यदि तुम हो ही नहीं, तब कोई भी व्यक्ति तुम्हें खींच सकता है, तुम्हें धक्का दे सकता है: तब कोई भी व्यक्ति तुम्हारा कोट पकड़ कर धकिया सकता है और तुम्हें बदल सकता है। तब तुम एक गुलाम हो, तब तुम मालिक नहीं हो। तुम्हारी मालकियत तब शुरू होती है, जब बाहर जो कुछ भी घटना घटे, वह तुम्हें बदलती नहीं, तुम्हारा आंतरिक वातावरण और आबोहवा वैसी ही बनी रहती है।

एक मनोविश्लेषक एक अधिवेशन में भाग ले रहा था। एक भाषण के दौरान एक कुरूप स्त्री, जो उससे अगली सीट पर बैठी हुई थी, उसने उसे एक चिकोटी काटी। नाराज होकर वह लगभग उसे कोई सख्त प्रत्युत्तर देने ही जा रहा था, तभी उसने अपना इरादा छोड़ कर विचार किया— " मुझे क्रोधित क्यों होना चाहिए आखिरकार यह उसकी अपनी समस्या है।"

चाहे कोई भी व्यक्ति तुमसे घृणा करे या प्रेम, यह उसकी अपनी समस्या है। यदि ' तुम ' उपस्थित हो, यदि तुमने अपने होने को समझ लिया है, तो तुम अपने होने के साथ लयबद्ध बने रहते हो। तुम्हारी आंतरिक लय को कोई भी भंग नहीं कर सकता। यदि कोई व्यक्ति तुमसे प्रेम करता है तो ठीक है, यदि कोई व्यक्ति तुमसे घृणा करता है—तो भी ठीक है। दोनों ही तुम्हारे कहीं बाहर ही बने रहते हैं। यह वही है जिसे हम मालकियत कहते हैं, यही है वह, जिसे हम बहती तरल चेतना का एकीकृत होकर ठोस बनना और सभी प्रभावों और छापों से मुक्त होना कहते हैं। तुम पूछ रहे हो— " जब कोई व्यक्ति तुमसे घृणा करता है तो तुम क्या करो? मैं कर ही क्या सकता हूं? यह उस व्यक्ति की अपनी समस्या है। उसके पास मेरे साथ करने के लिए कुछ और है ही नहीं। यदि मैं यहां नहीं होता, तो उसने किसी दूसरे व्यक्ति से घृणा की होती। उसे घृणा करनी ही थी। यदि वहां कोई भी न होता और वह अकेला ही होता, तो उसने स्वयं से ही घृणा की होती। धृणा करना उसकी अपनी समस्या है। उसका मुझसे किसी भी तरह कुछ भी लेना—देना ही नहीं। मूल रूप से उसका मुझसे कुछ सम्बंध ही नहीं, मैं तो बस एक बहाना भर हूं। किसी दूसरे अन्य व्यक्ति ने भी उसके लिए बहाना बनकर वही कार्य उतनी ही अच्छी तरह किया होता।

क्या तुमने कभी निरीक्षण नहीं किया कि जब तुम क्रोधित होते हो, तुम बस क्रोध में होते हो? ऐसा नहीं होता कि तुम्हारा क्रोध किसी व्यक्ति विशेष के लिए हो। वह व्यक्ति और कुछ भी न होकर, केवल एक बहाना भर होता है। क्रोध में भरे हुए तुम आफिस से घर लौटते हो, और अपनी पत्नी पर बरस पड़ते हो। क्रोध में भरे हुए ही तुम घर से बाहर निकलोग हो और आफिस जाकर तुम चपरासी, क्लर्क अथवा इस पर और उस पर अपना क्रोध प्रकट करते हो। यदि तुम अपने चित्त की दशाओं का विश्लेषण करो तो तुम देखोगे कि वे तुम्हीं से सम्बंधित हैं। तुम अपने ही संसार में रहते हो लेकिन तुम उसे दूसरों पर प्रक्षेपित किए चले जाते हो।

जब तुम क्रोध में होते हो, तो तुम मुझ पर नहीं, स्वयं ही पर क्रोधित हो। जब तुम घृणा से भरे होते हो, तो तुम ही घृणा से भरे होते हो, मुझसे घृणा नहीं होती तुम्हें। जब तुम प्रेम से भरे होते हो तो तुम ही प्रेम से आपूरित होते हो, तुम्हारा प्रेम मुझ पर नहीं होता। एक बार तुम इसे समझ लो, तो तुम संसार में कमल के पत्ते की भांति बने रहते हो। तुम रहते जल में हो, लेकिन जल तुम्हारा स्पर्श नहीं करता, वह तुम्हें छूता तक नहीं। तुम रहते संसार में ही हो, और फिर भी उससे अलग रहते हो। तब कोई भी व्यक्ति तुम्हारी शांति को भंग नहीं कर सकता, और न कोई व्यक्ति तुम्हारा ध्यान भंग कर सकता है। तुम्हारी करुणा प्रवाहित होने लगती है। यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो तुम मेरी करुणा प्राप्त करते हो। यदि तुम मुझसे घृणा करते हो, तो तुम मेरी करुणा ग्रहण न कर सकोगे—इसलिए नहीं कि मैं उसे तुम्हें दूंगा नहीं। मैं तो तुम्हें उसे निरंतर दे ही रहा हूं जितनी अधिक से अधिक मैं उन लोगों को दे रहा हूं जो मुझसे प्रेम करते हैं। लेकिन तुमने ही अपने द्वार बंद कर लिए होगे और तुम उसे ग्रहण न कर सकोगे।

एक बार जो बोध को उपलब्ध हो जाता है, वह करुणा से भर जाता है, बेशर्त करुणा उससे प्रवाहित होती है। ऐसा नहीं कि वह कुछ क्षणों में ही करुणावान होता है और कुछ क्षणों में वह करुणावान नहीं होता। तब करुणा उसका प्राकृतिक स्वभाव और स्थायी चित्तवृत्ति बन जाती है, करुणा उसके अस्तित्व का अभिन्न भाग बन जाती है। तब तुम जो कुछ भी करते हो, उसकी करुणा तुम पर बरसती ही रहती है। लेकिन वहां कुछ क्षण ऐसे होते है जब तुम खुले होगे, तो तुम उसे ग्रहण कर लोगे, और कुछ क्षण वहां ऐसे होते हैं जब तुम उसे ग्रहण न कर सकोगे, क्योंकि तुम्हारे हृदय के द्वारा बंद होंगे।

इसलिए घृणा में तुम उसे ग्रहण न कर सकोगे, लेकिन प्रेम में तुम उसे ग्रहण कर सकोगे। और तुम इसका अंतर भी महसूस कर सकते हो—क्योंकि एक व्यक्ति जो मुझे प्रेम करता है, विकसित होना शुरू हो जायेगा, और जो व्यक्ति मुझसे घृणा करता है, सिकुड़ना शुरू हो जायेगा। दोनों ही पूरी तरह से इतने अधिक भिन्न हो जायेगे, कि तुम यह भी सोच सकते हो कि मैं उस व्यक्ति को, जो मुझसे प्रेम करता है, कुछ अधिक दे रहा हूं और जो व्यक्ति मुझसे घृणा करता है, अथवा जो मुझसे नाराज है अथवा जिसके द्वार मेरे लिए बंद हैं, मैं उन्हें अपनी करुणा नहीं दे रहा हूं। लेकिन मैं ऐसा नहीं कर रहा हूं। बादल वहां हैं और वे वर्षा कर रहे है यदि तुम्हारा पात्र टूटा हुआ नहीं है तो वह भर जाएगा, अथवा यदि तुम्हारा पात्र टूटा न भी हो लेकिन औंधा रखा हुआ हो, तुम तब भी चूक जाओगे। घृणा वह मनःस्थिति है, जब हृदय का पात्र औंधा रखा होता है। तब वर्षा तो होती ही रहेगी, लेकिन तुम खाली रहोगे, क्योंकि तुम वहां मेरे प्रति खुले हुए नहीं हो, इसीलिए चूक जाओगे।

एक बार तुम अपने पात्र को सीधा कर लो, जो ऊपर की ओर खुला हुआ हो, बस यही है—प्रेम। प्रेम और कुछ भी नहीं बल्कि अपने द्वार खोलना है, वह एक ग्राहकता, एक निमत्रंण और एक स्वागत भाव है, जो कहे—" मैं अब तैयार हूं। कृपया पधारिए।"

बाउल गाते चले जाते हैं— " आओ प्रीतम प्यारे! मेरे पास आओ! " वे उसे आने के लिए आमंत्रित किए चले जाते हैं। प्रेम है— आमंत्रण और घृणा है—दूर हटाना, खदेड़ना। यदि तुम मुझे प्रेम करते हो, तो तुम बहुत अधिक प्राप्त कर सकोगे— इसलिए नहीं कि मैं तुम्हें विशेष रूप से कुछ अधिक दे रहा: लेकिन यदि तुम मुझसे घृणा करते हो तो तुम कुछ भी प्राप्त ही न कर सकोगे—इसलिए नहीं, कि मैं तुम्हें नहीं दे रहा हूं। बल्कि इसलिए क्योंकि तुम्हारे द्वार बंद हैं। लेकिन मैं स्वयं में ही बना रहूंगा।

मेरा शरीर के साथ कुछ भी तादात्म्य नहीं है, और न मेरा कोई तादात्म्य मन के साथ रह गया है। मैं अपने घर आ गया हूं।

यदि तुम्हारा तादात्म्य शरीर के साथ जुड़ा है और कोई तुम्हारे शरीर पर चोट करता है तो तुम क्रोधित हो जाओगे क्योंकि वह तुम्हें चोट पहुंचा रहा है। यदि तुम्हारा तादात्म्य मन के साथ है और कोई व्यक्ति तुम्हारा अपमान करता है, तो तुम क्रोधित हो जाओगे, क्योंकि वह तुम्हारे मन को चोट पहुंचा रहा है। एक बार तुम्हारा तादात्म्य अपने अस्तित्व के साथ हो जाये तो कोई भी तुम्हें चोट नहीं पहुंचा सकता, क्योंकि किसी भी व्यक्ति ने अभी वह खोज नहीं की है जिससे अस्तित्व या आत्मा पर चोट पहुंचाई जा सके।

शरीर को चोट पहुंचाई जा सकती है, मन को घायल किया जा सकता है.. लेकिन आत्मा को तो स्पर्श तक नहीं किया जा सकता।

उसे चोट पहुंचाने का कोई तरीका है ही नहीं, उसे पीड़ित करने का वहां कोई भी उपाय है ही नहीं। उसका स्वभाव ही परमानंद है। तुम मेरे शरीर को चोट पहुंचा सकते हो: बहुत आसान सी बात है, लेकिन यदि मेरा तादात्म्य शरीर से है तो मुझे क्रोध आयेगा, क्योंकि मैं सोचूंगा कि तुमने मुझे चोट पहुंचाई। यदि तुम मेरा अपमान करते हो तब वह चोट मन तक पहुंचती है। यदि मेरा तादात्म्य मन के साथ है तो तुम मुझे दुश्मन लगते हो। लेकिन न तो मेरा तादात्म्य शरीर के साथ है, और न मन के साथ। मैं साक्षी हूं। इसलिए तुम जो कुछ भी करते हो, वह मेरे साक्षी के केंद्र तक कभी पहुचता ही नहीं। वह पूरी तरह अप्रभावित साक्षी बना रहता है। एक बार झूठे जोड़े गए तादात्म्य गिर जाते हैं, तुम्हारी व्यग्रता भी समाप्त हो जाती है, तब तुम चक्रवात के केंद्र बन जाते हो, और तूफान उग्रता से तुम्हारे चारों ओर घूमता रहता है, लेकिन अंदर गहरे में तुम थिर और शांत बने रहते हो, तुम्हारे अस्तित्व का छोटा सा केंद्र, जो कुछ भी घट रहा है, उससे पूरी तरह अलग बना रहता है।

मैंने सुना है

एक दार्शनिक, एक हज्जाम और गंजा बेवकूफ तीनों साथ—साथ यात्रा कर रहे थे। रास्ता चलकर उन सभी को खुले स्थान पर सोने के लिए विवश होना पड़ा, और खतरे को टालने के लिए यह तय किया गया कि वे बारी—बारी से देखभाल करेंगे। पहली बारी हज्जाम की आई, जिसने केवल मजाक में सोते हुए दार्शनिक के सिर पर उस्तुरा फेरकर उसे सफाचट्ट बना दिया। तब उसने उसे देखभाल के लिए जगा दिया। दार्शनिक ने अपना हाथ ऊपर उठाकर अपना सिर खुजाया और बोला— ''तुमसे एक छोटी सी गलती हो गई तुमने मेरी बजाय उस गंजे बेवकूफ को जगा दिया है।''

तुम्हारी पहचान और तादात्म्य जोड़ लेना ही तुम्हारी मूल समस्या है। यदि तुमने शरीर के साथ तादात्म्य जोड़ लिया है, तब तुम निरंतर कठिनाई में पड़ने जा रहे हो, क्योंकि तुम्हारा शरीर निरंतर बदल रहा है, तुम्हारी पहचान कभी भी एक बिंदु पर थिर होकर विश्राम न कर सकेगी। एक दिन शरीर युवा है और दूसरे दिन वह वृद्ध जैसा थका हुआ है। एक दिन वह स्वस्थ है तो दूसरे दिन वह रुग्ण है। एक दिन तुम बहुत युवा और दीप्तिवान हो, और दूसरे ही तुम्हारे शरीर का ढांचा निराशा से टूटा—फूटा और नष्टप्राय है। निरंतर शरीर जैसे एक प्रवाह में बहा जा रहा है।

यही कारण है कि जो लोग अपने शरीर के साथ तादात्म्य जोड़ लेते हैं, वे निरंतर उलझन में पड़कर, बिना यह जाने कि वे कौन हैं भ्रमित होते रहेंगे। तुमने ऐसी चीज से पहचान बनाई है जो विश्वसनीय नहीं है। एक दिन वह जन्म लेती है, और दूसरे दिन मर जाती है। वह निरंतर मर ही है और निरंतर बदल रही है। तुम उसके साथ आराम से कैसे रह सकते हो?

यदि तुमने मन के साथ तादात्म्य जोड़ लिया, तब वहां और भी अधिक कठिनाई होगी। क्योंकि शरीर का तो कम से कम एक निश्चित ढांचा है, वह बदलता तो है लेकिन यह बदलाव बहुत धीमे— धीमे होता है। तुम कभी भी इस परिवर्तन का अनुभव नहीं कर पाते। यह परिवर्तन बहुत खामोशी से होता है और इसमें वर्षों लग

जाते हैं, और वास्तव में तभी एक विशिष्ट परिवर्तन होता है। एक बच्चा एक रात में जवान नहीं हो जाता और एक व्यक्ति रातों रात का नहीं हो जाता। इसमें वर्षों लग जाते हैं और यह परिवर्तन बहुत धीमी गति से होता है, और इतने सूक्ष्म और छोटे परिवर्तन होते है कि कोई व्यक्ति इनके प्रति कभी सजग नहीं हो पाता। लेकिन मन के साथ तुम निरंतर एक उपद्रव में पड़े रहते हो, उसमें प्रत्येक क्षण परिवर्तन होता रहता है। एक क्षण में तुम अपने को परम भाग्यशाली होने का अनुभव करते हुए इस संसार के शिखर पर होते हो, और दूसरे ही क्षण तुम नर्क में होते हो और आत्महत्या करने के बारे में सोचने लगते हो। इस मन के साथ तुम कैसे पहचान बना सकते हो? आत्मा वह है, जो सदैव शाश्वत रूप से जस की तस बनी रहती है। उसका कोई रूप या आकृति नहीं है, इसलिए वह बदल नहीं सकती, उसके पास कोई विषय सामग्री नहीं होती, इसलिए भी वह नहीं बदल सकती। आत्मा बिना किसी विषय सामग्री के अरूप होती है। उसका कोई नाम रूप नहीं होता—पूरब में हम इसी को नाम रूप से परे ' कहते हैं। केवल यह दो ही चीजें बदलती हैं—नाम और रूप। वह इनमें से कोई भी नहीं है। वह बस केवल होना भर है, सभी विषय सामग्री और रूप से रिक्त। एक बार तुम इस रिक्तता या शून्यता मे 'प्रविष्ट हो जाओ, फिर कुछ भी तुम्हें परेशान नहीं कर सकता, क्योंकि वहां परेशान करने वाला कोई है ही नहीं। कोई भी तुम्हें चोट नहीं पहुचा सकता, क्योंकि वहां अंदर कोई भी या कुछ भी चोट पहुंचाने वाला है ही नहीं।

तब यदि तुम मुझसे घृणा करते हो, तो तुम्हारी घृणा का तीर मुझसे होकर गुजर जाएगा, लेकिन वह मुझे चोट नहीं पहुंचा सकता, क्योंकि वहां कोई है ही नहीं। तुम मुझे अपना लक्ष्य नहीं बना सकते। चाहे तुम मुझसे प्रेम करो अथवा घृणा, तुम मुझे अपना निशाना नहीं बना सकते। इसलिए इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। और मैं कुछ करता ही नहीं हूं। मैं बस अपने स्वयं में बना रहता हूं।

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन मुझसे कह रहा था— "हां! मैं कभी राजनीति में कुछ हुआ करता था, पर उससे पहले दो वर्ष मैंने इस शहर में कुत्तों को पकड़ने का कार्य किया, और अंत में मुझे उस नौकरी से हाथ धोना पड़ा।"

मैंने उससे पूछा— " आखिर मामला क्या है? क्या मेयर को बदलने का मामला है या कुछ और बात है?

उसने उत्तर दिया— " नहीं! मैने अंत में कुत्ता पकड़ ही लिया।"

और यही बात मैं तुमसे भी कहना चाहता हूं: अंत में मैंने कुत्ता पकड़ ही लिया। अब मेरे करने को कोई काम बचा ही नहीं। मैं बेकार और बेरोजगार हूं। मैं कुछ भी कर ही नहीं रहा हूं: सारी कामनाएं लुप्त हो गई हैं, सभी कुछ करना छूट गया है। मैं बस यहां हूं। मैं केवल तुम्हारे लिए ही यहां हूं। यदि तुम मुझसे प्रेम करते हो, तुम महान स्वागत के साथ मुझे प्राप्त कर सकोगे, और तुम्हारा अत्यधिक कल्याण होगा। यदि तुम मुझसे घृणा करते हो, तो तुम चूक जाओगे, और जिम्मेदारी तुम्हारी होगी। अब यह तुम पर है कि तुम चुनाव करो। लेकिन मैं कोई भी कार्य कर ही नहीं रहा हूं।

दूसरा प्रश्न:

आप ध्यान अथवा भक्ति दोनों में से किसी एक का अनुमोदन कर रहे हैं मैं दोनों को सहायक याता है दोनों एक ही लक्ष्य की ओर ले जाती है? वह है— परमानंद? जब कभी मैं अनुभव करता हूं कि मैं वह हूं अथवा वस्तुत: यह अर्थात वही सारभूत मनुष्य हूं और कभी—कभी मैं तीव्र भावोद्वेग में एक भक्त बन जाता है नाचते गाते हुए प्रार्थना करते हुए उसके बारे में खेली दिव्य लीलाओं की चर्चा करता हूं क्या मैं दोनों एक साथ हूं? मेरी सच्ची प्रकृति क्या है? मेरे विकास के लिए आप किस मार्ग का सुझाव देगे?

आपसे संन्यास लेने के बाद पंद्रह महीने आपके साथ रहते हुए? मृत्यु का भय तो चला गया है? शरीर 'उसका' दिव्य मंदिर बन चुका है, और मन उसके प्रयोग के लिए एक वाद्य— यंत्र बन गया है! आपके सभी

वचन बहुत मधुर है, लेकिन उससे भी कहीं अधिक ध्यान और मधुर है आपका मौन? जिससे मैं अपने जीवन का दिशा—निर्देश प्राप्त करता हूं: कुछ करो ही मत, स्वीकार करो, अभिनय करो जो मेरे विकास के लिए बहुत अच्छी तरह कार्य कह रहा है

कृपया बोध देने की अनुकम्पा करें।

यदि चीजें इतने सुंदर रूप से होती जा रही हैं, तो फिर क्यों समस्या खड़ी कर रहे हो? क्या तुम अपनी अंतर्दृष्टि को स्वीकार नहीं कर सकते? क्या तुम्हें हमेशा एक गवाह की जरूरत है? क्या तुम्हें हमेशा किसी अन्य व्यक्ति की स्वीकृति की आवश्यकता पड़ती है? यदि मैं चला गया तो तुम उलझन में पड़ जाओगे। जब तुम इतनी अधिक प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हो, तो क्या यह प्रसन्नता ही अपने आप में पर्याप्त प्रामाण नहीं है कि तुम ठीक मार्ग पर हो।

लेकिन अपने जीवन में कई बार तुम इतनी अधिक गलतियां कर चुके हो कि तुम्हें स्वयं पर से विश्वास उठ गया है।

यह फिर से सीखने और समझने की एक बहुत मूलभूत बात है— " तुम स्वयं पर विश्वास करो।" जब प्रत्येक चीज बहुत सुंदर रूप से हो रही है और तुम परमानंद तथा प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हो, तो यह भूल जाओ— "कि मैं क्या कह रहा हूं। उसके बारे में फिक्र करो ही मत। तुम जानते हो कि सभी ठीक से हो रहा है। अपने स्वयं के अनुभव के प्रति संशय और संदेह उत्पन्न क्यों कर रहे हो?

मैंने सुना है……..

मुल्ला नसरुद्दीन डेट्रोइट की यात्रा करते हुए रास्ते में पड़ने वाले दृश्य देखता जा रहा था। जेफरसन एवेन्यू पर आकर बस के ड्राइवर ने दिलचस्पी के सभी स्थानों के बारे में बताना शुरू किया।

उसने माइक से घोषणा की— " अपनी दाहिनी ओर हम डॉज हाउस देख रहे हैं।"

मुल्ला ने पूछा— " क्या जोन डॉज?"

"जी नहीं श्रीमान होरेस डॉज। अपनी बात जारी रखते हुए उसने आगे बताया— " वहां दूर बाएं कोने पर ' हम फोर्ड हाउस ' देख रहे हैं।"

मुल्ला ने सुझाव देते हुए कहा— " कोई नही—हेनेरी फोर्ड।"

"जी नहीं श्रीमान, एडसेल फोर्ड। और जेफरसन के आगे जाने पर बाएं मोड़ के पास हम क्राइस्ट चर्च देखेंगे।"

क्या जीसस क्राइस्ट? अथवा मैं फिर गलत हूं? मुल्ला नसरुद्दीन ने भेड़ की तरह मिमियाते हुए पूछा।

मैं समझता हूं कि तुमने अपने जीवन में कई बार चीजों को गलत ही पाया है और तुमने अपना आंतरिक अनुभव—ज्ञान ही खो दिया है। तुम्हारा स्वयं पर से विश्वास जाता रहा है। तुम्हारा आत्मविश्वास खो गया है, इसीलिए तुम्हें दूसरों से पूछना पड़ता है। यदि तुम परमानंद का भी अनुभव कर रहे हो, तो भी तुम्हें किसी अन्य व्यक्ति से पूछना होगा— "क्या मैं ठीक हूं?"

परमानंद का अनुभव पर्याप्त संकेत है।

इसलिए अब दो सम्भावनाएं है: या तो तुम्हें वास्तव में परमानंद का वैसा ही अनुभव हो रहा है, जैसा तुम अपने प्रश्न में लिख रहे हो—तब इसमें मुझसे पूछने की कोई जरूरत ही नहीं है: अथवा तुम केवल कल्पना कर रहे हो कि तुम उसे जानते हो— और इसीलिए तुम मुझसे पूछ रहे हो। यह बात भी अपने अंदर गहरे उतर कर तुम्हें ही तय करनी होगी, क्योंकि काल्पनिक परमानंद, कोई आनंद है ही नहीं। तुम उसकी कल्पना कर सकते हो। मनुष्य की कल्पना शक्ति अपरिमित है। तुम उन चीजों की कल्पना कर सकते हो क्योंकि मैं निरंतर

परमानंद की चर्चा करता रहता हूं प्रेम, ध्यान और शिखर अनुभव के बारे में बताता रहता हूं। तुम उन शब्दों को पकड़ सकते हो, और तुम्हारा लोभ तुम्हारे साथ ही लीला खेलना शुरू कर सकता है, जैसे तुम उस दिव्य परमात्मा के साथ ही लीला खेल रहे हो। तुम्हारा लालच तुम्हारे साथ ही लीला खेल सकता है, और तुम्हें यह सभी विचार दे सकता है। लेकिन यदि यह सभी कुछ काल्पनिक है तो तुम्हें हमेशा संशय बना रहेगा, क्योंकि अपने गहरे में तो तुम जानते ही हो कि यह केवल काल्पनिक कथा है। यदि तुम्हारे मामले में ऐसा ही है, तब तुम्हारा पूछना पूरी तरह अर्थपूर्ण है।

यह तय तुम्हें ही करना है। यदि ऐसा वास्तव में घटित हो रहा है और तुम वास्तव में आनंदित हो, यदि यह एक तथ्य है और तुम कोई कल्पना नहीं कर रहा हो, तब तुम ठीक रास्ते पर चल रहे हो—क्योंकि परमानंद के अनुभव के अतिरिक्त इसका और कोई संकेत है ही नहीं।

जब तुम परमानंद का अनुभव कर रहे हो तो तुम ठीक उसी मार्ग पर चल रहे हो, जिस पर तुम्हें आगे बढ़ना चाहिए। क्योंकि केवल यह आनंद तभी बढ़ता है जब तुम परमात्मा के निकट पहुंचते जाते हो, और किसी अन्य तरीके से ऐसा अनुभव

होता ही नही। यदि तुम परमात्मा से दूर जा रहे हो तो पीड़ा और वेदना उत्पन्न होती है। तुम अधिक से अधिक निराशा का अनुभव करते हो, तुम्हें अधिक से अधिक ऊब और कष्टों का अनुभव होता है। कष्टो का होना ही इस बात का संकेत है कि तुम भटक गए हो, यह एक स्वाभाविक संकेत है कि तुम सत्य के मार्ग से दूर हो गए हो। परमानंद केवल यही बतला रहा है कि तुम अखण्ड के साथ मिलने उसकी ही सीध में जा रहे हो। सभी चीजों में एक लय बद्धता आ जाती है, क्योंकि प्रीतम का उद्यान निकट आता जा रहा है शीत्तलमंद सुगंध वायु का अनुभव होता है, जो अपने साथ फूलों की सुवास, ताजगी और एक नूतन उल्लास और उमंग साथ ला रही है। तब समझना, तुम प्रीतम प्यारे के नंदन कानन की और ही बढे जा रहे हो। हो सकता है, तुम अभी इसे देख नहीं सकते, लेकिन तुम्हारी दिशा ठीक है।

इसलिए स्वयं पर श्रद्धा रखो। लेकिन यदि तुम केवल कल्पना ही कर रहे हो तो अपनी सारी कल्पनाएं गिरा दो।

तीसरा प्रश्न :

दर्शन के समय जिस तरह से आपने मुझे बताया था, उससे स्पष्ट है कि मेरा ध्यान है— समग्रता से यहीं और अभी में जीना। आपने यह स्पष्ट कर दिया था कि मुझे आशा में नहीं जीना है। टी: एस इलियट ने कहा है— "मैने अपनी आत्मा से कहा— शांत हो जा और बिना कोई आशा किए प्रतीक्षा कर, आशा के लिए आशावादी बनना गलत चीज है! प्रेम के बिना भी प्रतीक्षा कर, प्रेम के लिए, होने वाले प्रेम की आशा करना गलत है। यद्यपि वहा फिर भी दृढ़ विश्वास है? लेकिन दृढ़ विश्वास या आस्था प्रेम और आशा यह सभी, प्रतीक्षा कराती हैं " भगवान? इस पर आप क्या कहेगे?

यह प्रश्न है प्रदीपा का।

वह पूरी तरह ठीक से समझ गई है, जो मैं उसे दिखाने का प्रयास कर रहा हूं। परिपव्कता तभी आती है, जब तुम बिना आशा के जीना शुरू कर देते हो। आशा बहुत बचकानी होती है। तुम परिपव्क तभी बनते हो, जब तुम भविष्य में आशा को प्रक्षेपित नहीं करते। वास्तव में तुम समझदार या परिपव्क तभी होते हो, जब तुम्हारे पास कोई भविष्य नहीं होता, तुम केवल क्षण— क्षण में जीते हो—क्योंकि यहां केवल यही वास्तविकता अथवा सत्य है। अतीत में धर्म, इस बारे में चर्चा किया करते थे कि यहां इसके बाद क्या होगा। वे धर्म के बचकाने और अपरिपव्क दिन थे। अब धर्म 'यहीं और अभी ' के बारे में बात करता है, धर्म अब बीते युग के पार

आया है। वेदों, कुरान और बाइबिल का मूलभूत लक्ष्य यहां के बाद की चर्चा है। लेकिन अब मनुष्य की बुद्धि इतनी अधिक बचकानी नहीं है। इस तरह का परमात्मा और इस तरह का धर्म अब मृत हो चुका है। वह भविष्य का धर्म था, वह आशा का धर्म था।

अब पूरे विश्व में एक दूसरी तरह का धर्म अपना दावा प्रस्तुत कर रहा है, और यह धर्म है—वर्तमान में यहीं और अभी के बारे में जीने का। यहां के सिवा कहीं और नहीं जाना है और यहां रहने के लिए कोई दूसरा समय या स्थान है भी नहीं, केवल यही स्थान और यही समय है—यहीं और अभी। इसी क्षण में जीवन को बहुत त्वरा से जीना है। वह मनुष्य जो आशा में जीता है, जीवन में बिखर जाता है। वह जीवन को फैला देता है और वह विरल बन जाता है। और जब वह बहुत अधिक संकरा और तंग हो जाता है, तो वह कभी प्रसन्न नहीं हो सकता। प्रसन्नता का अर्थ है तीव्रता और अत्यंत गहराई। यदि तुम अपनी आशा का वितान भविष्य में फैला दो, तो जीवन बहुत सिकुड़ जाएगा और अपनी गहराई खो देगा।

जब मैं कहता हूं सभी आशाओं को छोड़ दो, तो मेरे कहने का अर्थ है कि इस क्षण को इतनी अधिक त्वरा से जी लो कि भविष्य की कोई आवश्यकता ही न रह जाए। तब वहां एक मोड़ आता है, एक रूपांतरण होता है। तुम्हारे लिए समय की गुणात्मकता बदल जाती है और वह शाश्वत बन जाता है। तुम आशा के साथ कर ही क्या सकते हो? वास्तव में तुम क्या आशा कर सकते हो? तुम नूतन या आने वाले अनजाने भविष्य के लिए कोई आशा नहीं कर सकते। तुम केवल उस पुराने से ही आशा कर सकते हो, जो पहले कभी घटा था—हो सकता है वह थोड़े से यहां— वहां के संशोधन के साथ, कुछ अधिक सजे रूप में हो। लेकिन आशा और कुछ भी नहीं, बल्कि बीता अतीत तुमने किसी चीज को जीकर देखा, तुमने किसी चीज का अनुभव किया और तुम अब बार—बार उसके लिए ही आशा कर रहे हो। यह एक दोहराना मात्र है, इसकी गति चक्राकार है।

आशा करने का अर्थ है— अतीत का भविष्य में पुन: प्रक्षेपण। तुमने कल एक व्यक्ति से प्रेम किया था, तुम आने वाले कल भी उसी व्यक्ति से प्रेम करना चाहते हो। और तुम जानते हो कि कल का अनुभव तृप्तिदायक नहीं था, इसीलिए तुम आशा कर रहे हो। कल यथेष्ट नहीं था, आशा इसीलिए है। कल तुम किसी चीज से चूक गए। अब वही चूका गया अंतराल तुम्हें कष्ट दे रहा हैं, वह पीड़ा सृजित कर रहा है। तुम आशा करते हो कि कल फिर वही व्यक्ति तुम्हें प्रेम करने को उपलब्ध होगा, और कल वास्तव में प्रेम मिलेगा।

पर बीते गए कल और आने वाले कल के मध्य आज है। यदि तुम वास्तव में प्रेम करना चाहते हो तो उसे आज ही यहीं और अभी क्यों नहीं करते? अन्यथा जब आज, कल बन जाएगा, तुम फिर से प्रक्षेपण करना शुरू कर दोगे। अधूरे अनुभव ही प्रक्षेपित किए जाते हैं। अधूरी कामनाओं को ही प्रक्षेपित किया जाता है। यदि तुम इस क्षण समग्रता से सच्चा प्रेम करते हो, तो तुम फिर से इस क्षण के बारे मे कभी विचार तक न करोगे। वह समाप्त हो चुका वह पूरा हो चुका, वह पूर्ण है। वह अब विसर्जित हो गया और अपने पीछे कोई चिन्ह तक न छोड़ गया।

यह वही है जिसे कृष्णमूर्ति कहते हैं— 'समग्रता से किया गया कर्म।' समग्रता से किया गया कर्म कोई कर्म निर्मित नहीं करता। वह कर्म की कोई शृंखला सृजित नहीं करता, वह कोई बंधन उत्पन्न नहीं करता। यदि वह समग्रता से किया गया है, तो तुम फिर कभी उसका स्मरण तक नहीं करते, वहां उसकी कोई आवश्यकता ही नहीं है।

हम केवल उसी बात का स्मरण रखते हैं, जो अधूरी रह गई हो। मन की प्रवृत्ति चीजों को पूरा करने की है। और तुम्हारे पास इतने अधिक अधूरे अनुभव हैं: वे भविष्य में तुम्हें प्रक्षेपित किए चले जाते हैं। अतीत जा चुका है— अब अतीत में उन्हें पूरा किए जाने का कोई भी उपाय नहीं है, और वर्तमान तुम्हारे हाथों से तेजी से

फिसला जा रहा है, इसलिए तुम नहीं समझते कि वह कोई जरूरी चीज है, क्योंकि वर्तमान में उन्हें पूरा किए जाने की कोई सम्भावना नहीं है। भविष्य बहुत लम्बा है: तुम यह जीवन, अगला जन्म, यह संसार, और दूसरा संसार भी प्रक्षेपित कर सकते हो—तुम अनंत समय तक को प्रक्षेपित कर सकते हो। तुम्हें चैन तभी मिलेगा। तुम कहते हो, " मेरा कोई भी नुकसान नहीं हुआ है, क्योंकि कल है वहां, फिर वहां अगला जन्म होगा।" धीमे—धीमे तुम एक गलत ढांचे के जाल में फंसते जा रहे हो।

नहीं, आशा कोई भी ठीक चीज नहीं है। वर्तमान में ही इतनी अधिक गहराई, और इतनी अधिक पूर्णता से जियो कि कुछ भी शेष न रह जाये। तब वहां प्रक्षेपण नहीं होंगे। तुम बहुत आसानी से वर्तमान का कोई भी भार लिए बिना कल की ओर गतिशील हो जाओगे। और जब वहां बीता हुआ कल तुम्हारे अंदर नहीं घूम रहा है, तब वहां कोई आने वाला कल भी नहीं होगा। जब तुम्हारे चारों ओर अतीत नहीं लटक रहा, तब वहां कोई भविष्य भी नहीं है।

प्रदीपा ने इसे ठीक से समझ लिया है, इसी कारण मैं उसे समझाने का प्रयास कर रहा हूं आशा एक बीमारी है, यह मन का एक रोग है। यह आशा ही है, जो तुम्हें जीने की अनुमति नहीं दे रही है। आशा कोई मित्र नहीं है, स्मरण रहे: यह तुम्हारी शत्रु है। आशा के ही कारण तुम हर चीज कल पर टालोग चले जाते हो। लेकिन कल भी तुम वैसे ही बने रहोगे और कल भी तुम किसी भविष्य की आशा करोगे। और इस तरह तुम अनंत काल तक जा सकते हो और चूके जा सकते हो। कल पर टालना बंद करो। और कौन जाने, भविष्य तुम्हारे लिए क्या प्रकट करने जा रहा है? इस बारे में जानने का कोई उपाय है ही नहीं। यह तो शुरुआत है और सभी विकल्प खुले हुए हैं। वास्तव में क्या घटने जा रहा है, इसकी कोई भविष्यवाणी नहीं कर सकता। लोगों ने बहुत कोशिश करके देख ली।

इसी वजह से लोग ज्योतिषियों के पास अथवा ' आई चिंग ' के पास जाते हैं और दूसरी तरह के उपाय करते हैं। ' आई चिंग ' लोगों को सम्मोहित किए चले जाता है, और ज्योतिषी लोगों को प्रभावित किए चले जाते हैं। लोगों को ज्योतिष में अभी भी एक महान शक्ति दिखाई देती है। आखिर क्यों ?—क्योंकि लोग जिस चीज से चूक रहे हैं, वे भविष्य के लिए उसकी आशा कर रहे हैं। वे कुछ संकेत जानना चाहते हैं कि आगे क्या होने जा रहा है, जिससे वे उस तरह से प्रबंध कर सकें। ये चीजें बनी ही रहेंगी, भले ही वैज्ञानिकता ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि सभी कुछ व्यर्थ है। यह चीजें बनी ही रहेंगी, क्योंकि यह प्रश्न विज्ञान का न होकर मनुष्य की आशा का है।

जब तक आशा नहीं छोडी जाती, ' आई चिंग ' भी नहीं मिट सकता। मनुष्य के मन पर इस बड़ी शक्ति का प्रभाव हो ही, क्योंकि तुम आशा की डोरी से बंधे हुए हो। तुम भविष्य के बारे में छोटे—छोटे संकेत जानना चाहते हो, जिससे तुम आश्वस्त होकर आगे बढ़ सको, तुम अधिक विश्वास से प्रक्षेपण कर सको, और तुम बहुत सी चीजों को टाल सको।

यदि तुम आने वाले कल के बारे में कुछ बातें जान लो, तो मेरा खयाल है कि तुम आज भी जी न सकोगे। तुम कहोगे— " इसकी आवश्यकता क्या है? हम कल जी लेंगे।" यहां तक कि कल के बारे में बिना कोई भी बात जाने हुए भी तुम वही कर रहे हो। कल कभी नहीं आता... और जब वह आता है, वह हमेशा आज ही होता है। और तुम यह जानते ही कि आज कैसे जिया जाए?

इसलिए तुम एक बड़े जाल में फंसे हुये हो। इस पूरे ढांचे को ही ध्वस्त कर दो। आशा ही मनुष्य का बंधन है, आशा ही ' समसार ' है और आशा ही संसार है। एक बार जब तुम आशा छोड़ देते हो, तुम एक संन्यासी बन जाते हो, तब तुम्हें फिर कहीं भी नहीं जाना है।

मैंने सुना है.....

एक दिन मुल्ला नसरुद्दीन बहुत ही गहरी ध्यान ही मुद्रा में अपने कुत्ते के

निकट बैठा हुआ, एकल नाटक में अभिनय करते हुए कह रहा था— " तुम केवल एक कुत्ते हो, लेकिन मैं चाहता हूं कि काश! मैं तुम्हारे जैसा ही होता। जब तुम सोने के लिए जाते हो तो बस तीन बार चारों ओर घूमते हो और लेट जाते हो। जब मैं बिस्तरे पर सोने जाता हूं तो उससे पहले मुझे सारे दिन किए काम को समेटना होता है, बिल्ली को कमरे से बाहर निकालना होता है, और कपड़े उतारने होते हैं और तभी मेरी पत्नी की आख खुल जाती है और वह बड़बड़ाने लगती है, और तभी बेबी जाग जाता है और रोने लगता है, और मुझे उसे गोद में लेकर घर में घूम—घूम कर उसे बहलाना होता है और तभी मैं बिस्तरे पर सोने जा सकता हूं जिससे सुबह ठीक समय पर मैं फिर उठ सकूं। जब तुम सोकर उठते हो, तो तुम अपने अंगों को फैलाकर अंगड़ाई लेते हो, अपनी गर्दन को थोड़ा सा हिलाते—डुलाते हो और जाग जाते हो। मुझे उठते ही आग जलानी होती है, उस पर केतली रखकर चाय बनानी होती है, पत्नी के साथ थोड़ी नोंक—झोंक के बाद मुझे स्वयं नाश्ता तैयार करना होता है। तुम सारे दिन बड़े मजे मारते मस्ती से लेटे रहते :हो और मुझे सारा दिन काम करते हुए ढेर सारी मुसीबतों का सामना करना होता है। जब तुम मर जाओगे, तो बस हमेशा के लिए मर जाओगे और जब मैं मरूंगा तो मुझे फिर कहीं और जाना होगा।"

इस— "फिर कहीं और ' को ही नर्क कहकर पुकारो, या स्वर्ग कहकर, लेकिन ' कुछ कहीं ' है, और परमात्मा है—यहीं, और तुम हमेशा कहीं न कहीं जा ही रहे हो।

परमात्मा तुम्हारे चारों ओर है, और तुम हमेशा उससे चूक रहे हो, क्योंकि तुम वर्तमान से चूक रहे हो। परमात्मा के पास केवल एक ही काल है— और वह है वर्तमान उसके लिए भूतकाल और भविष्यकाल का अस्तित्व ही नहीं है। मनुष्य, वर्तमान में न रहकर, भूतकाल या भविष्य में रहता है, परमात्मा, भूत और भविष्य में न होकर वर्तमान में रहता है। इसलिए दोनों का मिलन कैसे हो? हम भिन्न आयामों में जी रहे हैं, या तो परमात्मा, भूत और भविष्य में रहना शुरू कर दे तब यह मुलाकात हो जाती है, लेकिन तब वह परमात्मा न रहेगा, वह ठीक तुम्हारे जैसा एक सामान्य मनुष्य होगा: अथवा तुम वर्तमान में जीना शुरू कर दो—तभी होगा मिलन। लेकिन तब तुम एक साधारण मनुष्य नहीं रह जाओगे, तुम दिव्य बन जाओगे। केवल दिव्य का ही दिव्य के साथ मिलन हो सकता है, केवल समान ही समान के साथ मिल सकता है।

आशा छोड़ दो।

आशा के ही कारण तुम परमात्मा से चूके जा रहे हो। और समस्या है—यही दुष्चक्र: जितने अधिक तुम परमात्मा से चूकते हो, तुम उतनी ही अधिक आशा करते हो: जितना अधिक तुम आशा करते हो, अधिक चूक जाते हो। एक बार गहरे में तुम आशा को, उसके ढांचे और अपने पर उसकी पकड़ को समझ और देख लो, तो उसी समझ और दृष्टि से आशा अपने आप गिर जाएगी। अचानक तुम यहीं और अभी होगे, और देखोगे, जैसे मानो तुम्हारी आंखों के आगे पड़ा पर्दा हट गया, तुम्हारी ज्ञानेंद्रियों के आगे पड़ा आवरण हट गया। तुम अत्यधिक ताजे और युवा बन जाओगे और देखोगे कि तुम चारों ओर पूरी तरह से एक आलोकित और नूतन संसार में हो। वृक्ष हरे होंगे लेकिन एक अलग तरह की अत्यधिक गहरी हरियाली होगी और उस हरेपन में एक आलोक, एक प्रकाश और एक दीप्ति होगी। यहां तुम्हारी आंखें ही हैं, जो केवल धूल से ढकी हैं, जो अपने चारो ओर हर कहीं तितली के पंखों के विविध रंग नहीं देख सकतीं।

आशा को त्याग दो।

लेकिन मैं जब भी किसी व्यक्ति से आशा त्यागने को कहता हूं तो वह सोचता है कि मैं उसे निराश बनने के लिए कह रहा हूं। नहीं, मैं ऐसा नहीं कर रहा हूं। जब तुम आशा का त्याग कर देते हो तो वहां निराश बनने की कोई सम्भावना ही नहीं रह जाती, क्योंकि केवल आशा के ही कारण निराशा का अस्तित्व है। तुम आशा करते हो, और वह पूरी नहीं होती, तभी निराशा जन्मती है। तुम आशा करते हो और तुम बार—बार आशा किए जाते हो, लेकिन परिणाम कुछ निकलता नहीं, तभी निराशा का जन्म होता है। निराशा है एक निष्फल आशा।

जिस क्षण तुम आशा छोड़ देते हो, निराशा भी गिर जाती है। तुम केवल बिना आशा और बिना निराशा के होते हो। और यही सबसे अधिक सुंदर क्षण है, जो एक मनुष्य को घट सकता है, क्योंकि इसी क्षण वह व्यक्ति परमात्मा के राज्य में प्रवेश करता है।

चौथा प्रश्न:

आपके सभी कुछ बताने के बावजूद भी मैं अभी भी ध्यान के मार्ग और प्रेम के मार्ग के मध्य किसी एक का चुनाव नहीं करना चाहता! मेरा हृदय इस संसार को बहुत अधिक प्रेम करता है? और कहना चाहिए कि यही मेरे लिए पर्याप्त है? और मेरा मन समर्पण को दीन हीन मानकर उसका उपहास करता है! गुरुजिएफ एक चौथे मार्ग की बात करता है? जिसमें शरीर? हृदय और मन सभी एक साथ संलग्न होते हैं? क्या इस मार्ग का अनुसरण करने की कोई सम्भावना नहीं है?

अपनी चालबाजी के प्रति सजग हो जाओ। तुम यहां समर्पण नहीं कर सकते और तुम सोचते हो कि तुम गुरुजिएफ के प्रति समर्पण करने में समर्थ हो सकोगे? समस्या मेरे या गुरुजिएफ के साथ नहीं है, तुम्हारी समस्या है मेरे साथ, कि तुम समर्पण नहीं कर सकते। और गुरुजिएफ बहुत सख्त, दोषों को क्षमा न करने वाला कठोर सद्गुरु था, बोधिधर्म के बाद जितने भी अभी तक खतरनाक सद्गुरु हुए हैं, वह उनमें से एक था। समस्या तुम्हारे साथ ही है। देखने की जरूरी बात यह है— जब मैं प्रेम पर चर्चा करता हूं तो लोग मेरे पास आते हैं और कहते हैं— " यह हमारे लिए कठिन है, क्या हम ध्यान नहीं कर सकते? और यदि मैं उनसे ध्यान करने के लिए कहता हूं तो वे कहते हैं— " यह तो इतना अधिक कठिन है। क्या वहां कोई और दूसरा मार्ग नहीं है? वे टालना चाहते हैं।

अब तुम पूछ रहे हो—क्या हम गुरुजियेफ का अनुसरण नहीं कर सकते? मैं एक बात पूछ रहा हूं तुमसे: " क्या तुम अनुसरण करने को तैयार हो? अनुसरण करना कठिन है। अनुसरण करने का अर्थ है—समर्पण करना। अनुसरण करने का अर्थ होता है कि अब तुमने मन और बुद्धि उठाकर एक ओर रख दी। गुरुजिएफ तो अभी एक बहाना है, इसलिए अपने अंदर तुम यह सोच सकते हो, " यदि मैं इस व्यक्ति के प्रति समर्पित नहीं हूं तो कम से कम मैं गुरुजिएफ के प्रति तो समर्पण करने को तैयार हूं।" लेकिन तुम गुरुजिएफ को खोजने कहां जा रहे हो? और यदि तुम कभी उसके सामने पड़ भी गए तो तुम दूसरे सद्गुरुओं के बारे में सोचना शुरू कर दोगे, क्योंकि वहां बहुत सी अन्य सम्भावनाएं भी हैं। तुम यही प्रश्न गुरुजिएफ से भी पूछोगे... कि मेरे लिए आपको समर्पण करना तो कठिन है, और शरीर मन और आत्मा तीनों पर एक साथ कार्य करना बहुत कठिन है—क्योंकि अलग से इनमें से एक पर ही कार्य करना कठिन है। तीनों चीजों पर एक साथ कार्य करना और भी अधिक जटिल और श्रमपूर्ण होने जा रहा है। इसलिए तब तुम कह सकते हो—क्या मैं बाउलों के पथ का अनुसरण नहीं कर सकता?

इसी तरह से तुम अपने अनेक जन्मों में यात्रा करते रहे हो। स्मरण रहे, तुम इस पृथ्वी पर नये नहीं हो। और स्मरण रहे, तुम कई सद्गुरुओं के साथ रहे हो— अन्यथा तुम यहां होते ही नहीं। तुम पूरी तरह भूल गए हो, लेकिन तुम कई बार चूके हो। यह कोई पहला अवसर नहीं है कि तुम चूके जा रहे हो। हो सकता है तुम बुद्ध के साथ भी उनके पथ पर चले हो जीसस के भी साथ चले हो सकते हो। यहां ऐसे लोग हैं, जिन्हें मैं जानता हूं कि

निश्चिय ही वे जीसस के साथ चले हैं, लेकिन वे उन्हें चूक गए। यहां ऐसे भी लोग हैं जो बुद्ध के साथ चले हैं, और चूक गए।

लेकिन खोज जारी रहती है।

जब भी कोई व्यक्ति मुझसे संन्यास लेना चाहता है तो पहली चीज, जो मैं खोजने का प्रयास करता हूं कि वह व्यक्ति नया है अथवा पुराना पापी है। अब तक मैं ऐसे किसी व्यक्ति के सम्पर्क में नहीं आया, जिसने धर्म में पहली बार ही दिलचस्पी ली हो और ताजा व नया हो। नहीं, वह व्यक्ति कई सद्गुरुओं के साथ रहता हुआ कई मार्गों पर यात्रा कर चुका है, पर कहीं भी वह समग्र रूप से कभी रहा ही नहीं। अब तुम भी इस अवसर से चूक सकते हो।

मैंने सुना है— एक युगल ने अपनी साठ से उनहत्तर वर्ष की आयु में अपने विवाहित जीवन के पैंतालीस वर्ष, जो जितना कलह और संघर्ष से भरे थे, उतने ही प्रेम से भी भरे हुए थे, किसी तरह आखिर गुजार ही दिए। जब पति अपने पैंसठवें जन्मदिवस के दिन आफिस के घर लौटा तो उसकी पत्नी ने उसे दो सुंदर टाई उपहार में दीं। वह इतना अधिक भावुक हो उठा कि उसकी पत्नी को रात्रि भोजन घर पर न पका कर, शीघ्र ही नहा धोकर और कपड़े बदलकर उसे रात्रि भोजन के लिए कहीं बाहर चलने को कहा। वे कोमलता से भरे प्रेम के दुर्लभ क्षण थे। कुछ मिनटों के बाद जब पति कपडे बदल कर सुहानी शाम नगर के किसी होटल में गुजारने के लिए सीढ़ियां उतर कर नीचे आया तो वह उपहार में मिली टाइयों में से एक टाई पहने हुए था। उसकी पत्नी ने अपनी हुक्म देने वाली अपनी तार्किक शक्ति और आदत के वशीभूत होकर एक क्षण के लिए उसे घूरते और गुर्राते हुए कहा— '' आखिर बात क्या है, क्या दूसरी टाई अच्छी नहीं है?''

लेकिन अब एक व्यक्ति एक बार में एक टाई ही तो पहन सकता है: ''आखिर बात क्या है, क्या दूसरी टाई अच्छी नहीं है?''

यदि तुम केवल तर्क—वितर्क ही करना चाहते हो, तब तुम गुरुजिएफ का अनुसरण कर सकते हो। लेकिन अभी जो अवसर तुम्हें उपलब्ध है, उस अवसर को यह केवल टालना भर होगा। आखिर कुछ तो करो। यदि तुम गुरुजिएफ का अनुसरण करना चाहते हो, तो गुरुजिएफ का ही अनुसरण करो, लेकिन कृपया अनुसरण तो करो। तुम स्वयं अपने ही साथ चालबाजी के खेल मत खेलो। एक व्यक्ति बहुत चालाक हो सकता है, एक व्यक्ति स्वयं अपने को ही धोखा दे सकता है। यह कोई बहुत अधिक खतरनाक बात नहीं है। जब तुम दूसरों को धोखा देते हो, क्योंकि देर—सबेर वे लोग जान ही लेंगे कि तुम उन्हें धोखा दे रहे हो। यह बहुत देर तक नहीं चल सकता। लेकिन जब तुम स्वयं को ही धोखा दे रहे हो, तो यह बहुत कठिन बात है। इसे खोजने आखिर कौन जा रहा है? तुम यहां अकेले ही हो, और यदि तुम ही धोखा दे रहे हो

मैंने सुना है कि एक व्यक्ति रेलगाड़ी से यात्रा कर रहा था। वह स्वयं अकेले ही ताश खेल रहा था। उसी डिब्बे में बैठा एक दूसरा व्यक्ति उसे खेलोग देख रहा था और तभी उसने सजग होकर देखा कि वह व्यक्ति स्वयं अपने आप को ही धोखा दे रहा था। वह खेलने वाला अकेला था और वह दूसरा व्यक्ति सजगता से देख रहा था कि वह स्वयं ही को धोखा दे रहा था।

आखिर उसने टोकते हुए कहा— आखिर यह मामला क्या है? आप यह कर क्या रहे हैं? क्या आप नहीं समझते कि आप स्वयं अपने को ही धोखा दिए चले जा रहे हैं?

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया—मैं ऐसा ही अपने पूरे जीवन भर करता रहा हूं। ' दूसरे व्यक्ति ने पूछा— ''क्या आप स्वयं अपने आपको धोखा देते नहीं पकड़ सकते?''

उसने उत्तर दिया— '' मैं बहुत अधिक चालाक हूं।''

चालाकी करना एक बहुत बड़ा विरोध बन सकता है, क्योंकि चालाकी करना, बुद्धिमानी या प्रज्ञा नहीं है। बेईमानी के लिए चालाकी एक अच्छा नाम है। इसके प्रति सजग बनो।

यदि तुम गुरुजिएफ के पथ का ही मुनसरण करना चाहते हो, तो जरूर करो अनुसरण, यह पूरी तरह ठीक है, वह मार्ग पूर्ण रूप से ठीक है।

लेकिन तब तुम यहां अपना समय व्यर्थ नष्ट कर रहे हो? उसी मार्ग का अनुसरण करो। फिर तुम किसकी प्रतीक्षा कर रहे हो? लेकिन यदि तुम यहां हो, तब गुरुजिएफ और अन्य हर चीज को भूल जाओ। यदि तुम यहां मेरे साथ बने रहना चाहते हो, तब मेरे साथ यहीं बने रहो, जिससे कुछ चीज वास्तव में घटे।

लेकिन यह एक सामान्य बात है, इसमें असाधारणता कुछ भी नहीं: लोग अपने सद्गुरुओं को बदलोग रहते हैं, वे एक स्थान से दूसरे स्थान जाते रहते हैं। वे जब यह महसूस करने लगते हैं कि वे काफी अधिक बढ़ चुके हैं और वे उसके प्रति प्रतिबद्ध होकर किसी उलझन में पड़ सकते हैं, तो वे उसे बदल देते हैं। वे कहीं और फिर से यही खेल खेलना शुरू कर देते हैं। जब वे वहां भी यह अनुभव करते हैं कि वह क्षण आ पहुचा है और उन्हें कुछ चीज करनी ही होगी—वे फिर स्थान बदल देते

यह एक विवाह सम्बंध है मेरे सान्निध्य में रहने का अर्थ ही मेरे साथ विवाह करने जैसा है। लोग मेरे साथ उसी बिंदु तक ठहरते हैं, जहां तक प्रेम सम्बंध जारी रहता है। एक बार जब प्रतिबद्ध होने की, उसमें डूबने की समस्या आती है, वे भयभीत हो उठते हैं। तब वे किसी दूसरे मार्ग के बारे में विचार करना शुरू कर देते हैं। फिर उन्हें कोई भी मार्ग चलेगा—क्योंकि वास्तव में यह प्रश्न मार्ग का है ही नहीं। यह प्रश्न है समर्पण का। किसी भी मार्ग के प्रति समर्पण करो, सत्य तुम्हें घटेगा ही—क्योंकि वह किसी मार्ग के कारण नहीं घटता, वह घटता है केवल समर्पण के कारण।

कुछ वर्ष पहले एक राजनीतिक नेता को एक किसान अपने इक्के पर गांव ले जा रहा था। तभी एक उड़ता हुआ पतंगा, इक्के के घोड़े के सिर के चारों ओर और कुछ देर बाद उन नेता के सिर के चारों ओर चक्कर लगाने लगा।

उस राजनेता ने किसान से पूछा— " चचा! यह किस तरह का पतंगा है?" बूढ़े किसान ने उत्तर दिया— " यह घुड़मक्सी है।"

" घुड़मक्सी? वह क्या होती है?"

" सिर्फ यह एक ऐसी मक्खी है, जो घोड़े, खच्चरों और गधों के सिरों के ऊपर ही मंडराती रहती हैं। चूंकि वह मक्खी अभी भी नेताजी के सिर पर मंडरा रही थी इसलिए उन्हें थोड़े से परिहास करने का अवसर दिखाई दिया और उन्होंने कहा— " कहीं तुम्हारे कहने का यह मतलब तो नहीं कि मैं एक घोड़ा हूं?"

"नहीं। आप निश्चित रूप से एक घोड़े नहीं है "

ठीक है, फिर तुम्हारे कहने का क्या यह अर्थ है कि मैं एक खच्चर हूं? किसान ने कुछ उत्तेजित होकर कहा— " आप खच्चर कैसे हो सकते है?" तब उस राजनेता ने आग्रहपूर्वक पूछते हुए कहा— " अब चचा! जरा मेरी ओर देखकर बताइये, क्या मैं आपको एक गधा दिखाई देता हूं? निश्चित रूप से आपके कहने का यह अर्थ हरगिज नहीं हो सकता कि आप मुझे गधा कहें।" "नहीं श्रीमान्! मैं आपको गधा कैसे कह सकता हूं और आप मुझे गधे जैसे दिखाई भी नहीं देते। लेकिन आप जरा समझिए आप उस घुडमक्सी को तो बेवकूफ नहीं बना सकते।"

बहुत चालाक मत बनो और न चालाकी दिखाओ, क्योंकि तुम परमात्मा अथवा अस्तित्व को मूर्ख नहीं बना सकते। तुम केवल स्वयं को ही मूर्ख बना सकते हो। अंतिम विश्लेषण में तुम अपने सिवा किसी भी अन्य

व्यक्ति को मूर्ख नहीं बना सकते। इसलिए अपने उठाये प्रत्येक कदम का, जो तुम्हारा मन उठाता है, निरीक्षण करो। मैं यह नहीं कर रहा हूं कि मेरा अनुसरण करो। मैं कह रहा हूं— अनुसरण करो। कहीं भी जहां कहीं भी तुम्हारा हृदय तुम्हें ले जाए जहां भी तुम अपने और सद्गुरु के मध्य एक विशिष्ट लयबद्धता का अनुभव करो, वहीं जाओ, और उन्हीं का अनुसरण करो। लेकिन अनुसरण करो। केवल विचार करने से ही कोई सहायता नहीं मिलने वाली।

तुम इस अस्तित्व को मूर्ख नहीं बना सकते।

पांचवां प्रश्न—

आश्रम के बाहर रहना कभी—कभी मेरे लिए बहुत कठिन हो जाता है? क्योंकि मैं देखता हूं कितने कठोर लोग है वहा जो एक दूसरे को कुचलते हुए चलते हैं इससे मुझे बहुत चोट पहुंचती है? जब कभी शारीरिक पीड़ा भी होती है और मैं अपने को एक छोटे बच्चे की भाति पाता हूं जिस पर सरलता से आघात किया जाता सकता है।

मैं इस स्थिति में कैसे क्या करूं? मुझे बताने करई कृपा करें।

इस संसार में सदा से ही समस्याएं रही हैं, और यह संसार भी हमेशा से ऐसा ही रहा है और यह संसार ऐसा रहेगा भी। यदि तुम बाहर काम करना शुरू करो, तो परिस्थितियों को बदलने, लोगों को बदलने, एक काल्पनिक आदर्श संसार के बारे में सरकार को बदलने, आर्थिक राजनीतिक और शिक्षा जगत के ढांचे को बदलने का विचार करते हुए ही, तुम खो जाओगे। यह एक जाल है, जिसे राजनीति कहते हैं। इसी तरह बहुत से लोग अपना जीवन बरबाद कर देते हैं। इसके बारे में बहुत स्पष्ट रूप से यह समझ लो: ठीक अभी तुम ही वह व्यक्ति हो, जो अपनी सहायता स्वयं कर सकते हो। अभी तो तुम किसी भी व्यक्ति की कोई सहायता नहीं कर सकते। इससे केवल एक आंतरिक संघर्ष ही हो सकता है, जो कवल मन की ही एक चाल है। तुम अपनी ही समस्याओं को समझो, तुम अपने ही मन और उसकी व्यग्रता को समझो और पहले इसे ही बदलने की कोशिश करो।

ऐसा बहुत से लोगों के साथ होता है: जिस क्षण वे किसी भी तरह के धर्म, ध्यान और प्रार्थना की ओर रुचि लेने लगते हैं, तुरंत ही मन उनसे कहता है— "तुम यहां चुपचाप बैठे आखिर क्या कर रहे हो, संसार को तुम्हारी जरूरत है, वहां बहुत से गरीब लोग हैं, वहां बहुत संघर्ष, हिंसा और आक्रमण है। तुम मंदिर में प्रार्थना करते हुए आखिर क्या कर रहे हो? जाओ और लोगों की सहायता करो।" तुम उन लोगों की कैसे सहायता कर सकते हो, क्योंकि तुम भी ठीक उन्हीं जैसे हो। तुम उनके लिए और अधिक समस्याएं ही सृजित कर सकते हो, लेकिन उनकी कोई सहायता नहीं कर सकते। इसी तरह से सभी क्रांतियां हमेशा असफल हो गईं। कोई भी क्रांति अभी तक सफल नहीं हुई, क्योंकि क्रांतिकारी भी उसी नाव में सवार थे। एक धार्मिक व्यक्ति वह है, जो इस बात को समझता है—मैं बहुत बौना हूं मैं बहुत सीमित हूं। इस सीमित ऊर्जा से यदि मैं स्वयं को ही बदल सकता हूं तो वह एक चमत्कार होगा।"

और यदि तुम स्वयं को ही बदल सकते हो, यदि तुम पूरी तरह से एक भिन्न अस्तित्व हो जाओ, तो तुम्हारी आंखों में एक नये जीवन की दीप्ति होगी और तुम्हारे हृदय की धड़कनों में एक नया गीत गज रहा होगा, तब तुम दूसरे लोगों के लिए भी सहायक हो सकते हो, क्योंकि तब तुम्हारे पास कुछ चीज ऐसी होगी जिसे तुम बांट सकोगे।

ठीक दूसरे दिन शिवा ने मुझे बाशो के जीवन का एक सुंदर प्रसंग भेजा। बाशो जापान की हाइकू कविताओं का महान कवि है, वह हाइकू कविताओं का कुशल कारीगर है। लेकिन वह केवल एक कवि ही नहीं है। कवि बनने से पूर्व वह एक रहस्यदर्शी था, इससे पहले कि वह सुंदर कविताओं में माधुर्य बरसाना शुरू करता,

वह स्वयं अपने ही केंद्र पर गहरे में रस—वर्षा से भीग उठा। वह एक ध्यानी था। यह कहा जाता है कि जब वह एक युवा था, तभी वह एक यात्रा में प्रविष्ट हुआ। यह यात्रा स्वयं को खोजने का प्रयास था। कुछ समय बाद जंगल में उसे एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी—हो सकता है। उस समय वह एक वृक्ष के नीचे ध्यान में था या ध्यान करने का प्रयास कर रहा था, कि तभी उसने जंगल में एक छोटे बच्चे के रोने की अकेली आवाज सुनी। तब उसने अपना सामान उठाया, और बच्चे को उसके अपने भाग्य पर छोड़कर अपने रास्ते पर आगे बढ़ गया।

अपनी डायरी में उसने लिखा: " पहले एक व्यक्ति को वह सब कुछ करना चाहिए जिसकी उसे स्वयं के लिए आवश्यकता है, तभी वह व्यक्ति दूसरों के लिए कुछ कर सकता है।"

यह बहुत कठोर दिखाई देता है एक बच्चा जंगल में अकेला रो रहा है और यह व्यक्ति इस बात पर ध्यान कर रहा है कि वह उसके लिए कुछ करे अथवा नहीं।, क्या वह उस बच्चे की कुछ सहायता कर सकता है, क्या सहायता करना ठीक होगा अथवा नहीं। एक असहाय अकेला बच्चा भयानक जंगल में मर सकता है— और बाशो इस पर ध्यान करता है और अंत में निर्णय लेता है कि वह किसी और की सहायता कैसे कर सकता है, जब कि उसने अभी तक स्वयं की ही सहायता नहीं की है। वह स्वयं अभी निर्जन जंगल में भटक रहा है और स्वयं अपने आप में एक छोटे बच्चे की तरह अकेला है। फिर वह कैसे किसी अन्य दूसरे की सहायता कर सकता है?

यह घटना बहुत कठोर दिखाई देती है, लेकिन है बहुत अर्थपूर्ण है। मैं यह नहीं कह रहा हूं कि जंगल में यदि तुम्हें कोई रोता और चीखता हुआ बच्चा मिले तो उसकी सहायता मत करो। लेकिन इसे समझने का प्रयास करे: अभी तुम्हारा स्वयं का दिया नहीं जला है और तुमने दूसरे की सहायता करनी शुरू कर दी। तुम्हारा आंतरिक अस्तित्व अभी तक पूर्ण अंधकार में है और तुमने दूसरों की सहायता करना प्रारम्भ कर दिया।

तुम स्वयं अभी तक दुख झेल रहे हो और तुम लोगों के सेवक बन गये। तुम अभी तक आंतरिक क्रांति के द्वारा स्वयं ही नहीं गुजरे हो और तुम एक क्रांतिकारी बन गए। यह विचार ही निरर्थक और व्यर्थ है, लेकिन यह प्रत्येक व्यक्ति के मन में उठता जरूर है। दूसरों को सहायता करना इतना अधिक सरल दिखाई देता है। वास्तव में जिन लोगों को स्वयं अपने आपको बदलने की जरूरत है, वे ही लोग हमेशा दूसरों को बदलने में दिलचस्पी लेते हैं। यह एक व्यवसाय बन जाता है जिसमें व्यस्त होकर वे स्वयं को भूल सकते हैं।

यह जो कुछ भी है, मैंने इसका निरीक्षण किया है। मैंने ऐसे बहुत से समाज सेवकों को देखा है, सर्वोदयी लोगों को देखा है, और मैंने इनमें से एक भी व्यक्ति ऐसा कभी भी नहीं देखा जिसके पास किसी की भी सहायता करने के लिए कोई अंतर्प्रकाश हो। लेकिन वे प्रत्येक व्यक्ति की सहायता करने का कठोर प्रयास कर रहे हैं। वे समाज को बदलने के लिए उसके पीछे पागलों की तरह लगे हुए हैं और वे सभी लोगों और उनके मन को बदलना चाहते हैं, लेकिन वे पूरी तरह यह भूल ही गए है कि उन्होंने ऐसा अभी स्वयं अपने लिए ही नहीं किया है। लेकिन लोग व्यस्त बने रहते हैं।

एक बार एक पुराने क्रांतिकारी और समाजसेवी मेरे साथ ठहरे हुए थे। मैंने उनसे पूछा— " आप अपने कार्य में पूरी तरह खो चुके हैं। क्या कभी आपने इस बात पर विचार किया है कि जो कुछ आप वास्तव में चाहते हैं, यदि वैसा ही किसी चमत्कार से रातों रात हो जाए तो अगली सुबह से फिर आप क्या करेंगे?

वह हंसे—पर वह हंसी पूरी तरह खोखली हंसी थी—लेकिन तब वे थोड़ा उदास हो गए। उन्होंने कहा—"यदि यह सम्भव हो जाये, तब मेरे करने के लिए फिर कुछ होगा ही नहीं। यदि यह संसार ठीक वैसा ही हो जाए जैसा कि मैं चाहता हूं तब मेरे करने के लिए फिर कुछ होगा ही नहीं। मुझे आघात सा लगेगा और मैं वैसी दशा में आत्महत्या भी कर सकता हूं।"

ये सभी इसी में व्यस्त हो गए हैं, यही विचार निरंतर उनके मन में घूमते रहते हैं। और उन्होंने एक ऐसे हठ को चुना है जो कभी भी पूरा नहीं हो सकता। इसलिए जन्मों—जन्मों तक तुम दूसरों को बदलने के काम में व्यस्त बने रह सकते हो। पर ऐसा करने वाले तुम होते कौन हो?

यह भी एक तरह का अहंकार है: कि दूसरे लोग आपस ही में एक दूसरे के प्रति बहुत कठोर हैं और वे एक दूसरे को कुचलते हुए आगे बढ़ रहे हैं। केवल यह विचार मात्र कि दूसरे लोग निर्दय और कठोर हैं। तुम्हें यह महसूस कराता है कि तुम बहुत कोमल हो। नहीं, तुम ऐसे नहीं हो। यह तुम्हारी एक तरह की महत्त्वाकांक्षा ही है: लोगों की सहायता करना, उदार और कोमल बनकर सहायता करना, जिससे उनकी सहायता कर तुम और अधिक दयालु और करुणावान बन सको।

खलील जिब्रान ने एक छोटी सी कहानी लिखी है वहां एक कुत्ता था। उसे देखकर कोई भी व्यक्ति उसे एक महान क्रांतिकारी कह सकता था। वह शहर भर के कुत्तों को हमेशा यही शिक्षा दिया करता था— " केवल व्यर्थ ही भौंकते रहने के कारण ही हम लोग विकसित नहीं हो पा रहे हैं। तुम लोग अपनी ऊर्जा भौंकने में व्यर्थ बरबाद कर रहे हो।"

एक डाकिया गुजरता है और अचानक एक पुलिस वाला या एक संन्यासी सामने से निकला नहीं कि कुत्ते किसी भी तरह की वर्दी के विरुद्ध हैं, किसी भी व्यक्ति के ऊपर से नीचे तक एक ही तरह के कपड़े हों, और चूंकि वे क्रांतिकारी हैं, फौरन वे भौंकना शुरू कर देते हैं।

वह नेता सभी से कहा करता था— "बंद करो भौंकना। अपनी ऊर्जा व्यर्थ नष्ट मत करो, क्योंकि यही ऊर्जा किसी उपयोगी सृजनात्मक कार्य में लगाई जा सकती है। कुत्ते पूरी दुनिया पर शासन कर सकते हैं, लेकिन तुम लोग व्यर्थ ही अकारण अपनी ऊर्जा भौंकने में नष्ट कर रहे हो। इस आदत को छोड़ना होगा। केवल यही तुम्हारा पाप और अपराध है, यही मूल पाप है।"

सभी कुत्तों को यह सुनकर हमेशा यह अहसास होता था कि वह बिलकुल ठीक और तर्कपूर्ण बात कह रहा था 'तुम लोग आखिर क्यों भौंकते चले जाते हो? और ऊर्जा भी व्यर्थ नष्ट होती है, कोई भी कुत्ता भौंक— भौंक कर थक जाता है। दूसरी ही सुबह वह फिर भौंकना शुरू कर देता है और फिर रात होने पर ही वह थकता है। आखिर इस सभी की क्या तुक है?

वे सभी अपने नेता की कही बात को समझ सकते थे, लेकिन वे यह भी जानते थे कि वे लोग बस कुत्ते भर हैं, बेचारे विवश कुत्ते। आदर्श बहुत महान था और उनका नेता वास्तव में एक ज्ञानी था, क्योंकि वह जिस बात का उपदेश दे रहा था, वह वैसा कर भी रहा था। वह कभी भी भौंकता नहीं था। तुम उसका चरित्र भली भांति देख सकते हो, उसने जिस बात का उपदेश दिया, स्वयं उसी के अनुरूप चला भी।

लेकिन धीमे— धीमे निरंतर उससे उपदेश सुनते सुनते वे लोग आखिर थक गए। एक दिन उन्होंने तय किया—वह उनके नेता का जन्मदिवस था और उन्होंने यह निर्णय लिया कि कम से कम आज की रात, अपने नेता की बात का सम्मान रखते हुए वे रात भर भौंकेगे नहीं और यही उनका नेता के लिए उपहार होगा। इसकी अपेक्षा वे किसी और बात से इतने अधिक खुश न हो सकते थे। उस रात सभी कुत्तों ने भौंकना बंद कर दिया। यह बहुत कठिन और श्रमपूर्ण था। यह ठीक उसी तरह था, जैसे तुम ध्यान कर रहे हो तो विचारों को रोकना कितना कठिन हो जाता है। उन सभी के लिए वैसी ही समस्या थी वह। उन्होंने भौंकना बंद कर दिया, जब कि वे हमेशा भौंका ही करते थे। और वे लोग कोई महान संत नहीं थे, बल्कि मामूली कुत्ते थे। लेकिन उन्होंने कठिन प्रयास किया। यह बहुत श्रमपूर्ण था। वे सभी आंखें बंद किए अपनी— अपनी जगह छिपे हुए थे। आंखें बंद कर

दांत भींचे हुए वे खामोश बैठे थे, न वे कुछ देख सकते थे और न कुछ सुन सकते थे। वजह एक महान अनुशासन का पालन कर रहे थे।

उनका नेता पूरे शहर में चारों ओर घूमा। वह बहुत उलझन में पड़ गया। वह उपदेश किन्हें दे? अब शिक्षा किन्हें दे? आखिर यह हुआ क्या—पूरी तरह शांति व्यास है चारों ओर। तभी अचानक जब आधी रात गुजर चुकी थी, वह इतना अधिक उत्तेजित हो उठा, क्योंकि उसने कभी सोचा तक न था कि सभी कुत्ते उसकी बात सुनेंगे। वह भली भांति जानता था कि वे लोग कभी उसकी बात सुनेंगे ही नहीं क्योंकि कुत्तों के लिए भौंकना एक स्वाभाविक बात थी। उसकी मांग अप्राकृतिक और अस्वाभाविक थी, लेकिन कुत्तों ने भौंकना बंद कर दिया। उसकी पूरी नेतागीरी दांव पर लगी हुई थी। आखिर कल से वह करेगा क्या? क्योंकि वह केवल उपदेश और शिक्षा देना जानता था। उसकी पूरी शासन व्यवस्था दांव पर लगी हुई थी। और तब पहली बार उसने महसूस किया, क्योंकि वह निरंतर सुबह से लेकर रात तक उन्हें शिक्षा और उपदेश ही देता रहता था, इसी वजह से उसे कभी भी भौंकने की जरूरत महसूस नहीं होती थी। उसकी ऊर्जा उसी में इतनी अधिक लगी हुई थी, कि वह एक तरह का भौंकना ही था।

लेकिन उस रात कहीं भी, कोई भी गलती करता मिला ही नहीं। और उस उपदेशक कुत्ते में भौंकने की तीव्र लालसा शुरू हो गयी।

एक कुत्ता आखिर एक कुत्ता ही तो होता है। तब वह एक अंधेरी गली में गया और उसने भौंकना शुरू कर दिया। जब इसे दूसरे कुत्तों ने सुना तो सोचा कि किसी एक कुत्ते ने समझौते को तोड़ दिया है, तब उन्होंने कहा— "फिर हमीं लोग आखिर यह दुख क्यों सहे?" पूरे शहर ने ही जैसे भौंकना शुरू कर दिया। तभी उस नेता ने वापस लौटकर कहा— "अरे मूर्खों! तुम लोग भौंकना कब बंद करोगे? क्योंकि तुम लोगों के भौंकने से ही हम लोग केवल कुत्ते ही बनकर रह गए हैं, अन्यथा पूरे संसार पर हमारा अधिकार होता।"

यह बात भली भांति याद रहे, कि एक समाज सेवक और एक क्रांतिकारी असम्भव की मांग कर रहे हैं— लेकिन यह बात उन्हें व्यस्त बनाए रखती है। और जब तुम दूसरी समस्याओं में व्यस्त रहते हो, तो तुम स्वयं अपनी ही समस्याओं को भूल जाते हो, यही तुम्हारी प्रवृत्ति है। पहले तुम अपनी समस्याओं को सुलझाओ, क्योंकि तुम्हारा मूल दायित्व यही है।

एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक ने मजाक—मजाक में एक खेत खरीदा। वह हर बार खेत में हल चलवा कर उसमें खुदी तंग नालियों में बीज बिखेर देता था, तभी कांव— कांव करते काले कौओं की फौज झपट्टा मारते हुए बोये बीजों को झपट लेती थी। अंत में अपने गर्व को यों कौओं द्वारा निगला कर ध्वस्त होते देख उस मनोवैज्ञानिक ने अपने पुराने पड़ोसी मुल्ला नसरुद्दीन से कुछ करने का अनुरोध किया।

मुल्ला नसरुद्दीन डग भरता हुआ खेत में गया और वह पूरे खेत में इस तरह घूमता रहा जैसे वह बीज बो रहा हो, लेकिन वह बिना बीजों के ही बीज बोने का अभिनय कर रहा था। कौए झपट्टा मारकर नीचे उतरे, बीज न पाकर उन्होंने कांव— कांव कर संक्षिप्त विरोध व्यक्ति किया, फिर वे उड़ गए। मुल्ला नसरुद्दीन ने अगले दिन और फिर उससे अगले दिन भी बार—बार उसी प्रक्रिया को दोहराया और हर बार कौओं और चिड़ियों को भ्रमित और भूखा वापस लौटा दिया। अंत में चौथे दिन उसने खेत में बीज बो दिए एक भी कौवे ने वहां आने की फिक्र नहीं की।

जब उस मनोवैज्ञानिक ने मुल्ला को धन्यवाद देने का प्रयास किया तो मुल्ला खरखरी आवाज में बोला— "ठीक सीधा—सादा मनोविज्ञान है यह तो। क्या कभी आपने इसके बाबत सुना नहीं?"

स्मरण रहे—यह बहुत सीधा सरल मनोविज्ञान है—दूसरों के मामलों में नाक मत धुसाओ। यदि वे कोई चीज गलत कर रहे हैं, तो यह उनके ऊपर है कि वे उसे महसूस करें। कोई दूसरा अन्य व्यक्ति उन्हें इसका अहसास नहीं करा सकता। जब तक वे स्वयं यह निर्णय नहीं लेते कि उसे महसूस करने का अन्य कोई तरीका वहां है ही नहीं, तुम व्यर्थ ही अपना मूल्यवान समय और ऊर्जा नष्ट ही करोगे। तुम्हारी पहली जिम्मेदारी यही है कि तुम स्वयं को ही बदलों। और अपना अस्तित्व ही रूपांतरित हो जाता है, तो चीजें अपने आप घटना शुरू हो जाती हैं। तुम एक दीप्तिवान प्रकाश बन जाते हो और तुम्हारे प्रकाश के द्वारा वे अपनी राह खोजना शुरू कर देते हैं। ऐसा नहीं कि तुम उनके पास जाते हो, यह भी नहीं, कि तुम उन्हें देखने और समझने को विवश करते हो। तुम्हारा प्रकाश, तुम्हारी आलोकित दीप्ति ही पर्याप्त आमंत्रण होता है: और लोग आना शुरू हो जाते हैं। प्रकाश की जिसको भी आवश्यकता होगी, वह आयेगा ही। किसी भी व्यक्ति के पीछे जाने की कोई जरूरत है ही नहीं, क्योंकि तुम्हारा जाना ही मूर्खता होगी। कोई भी व्यक्ति किसी को भी उसकी इच्छा के विरुद्ध आज तक नहीं बदल सका। चीजों के घटने का यह तरीका है ही नहीं। यह एक सीधा सरल मनोविज्ञान है, क्या कभी तुमने सुना नहीं इसके बाबत? केवल तुम स्वयं के ही साथ बने रहो।

छठवां प्रश्न:

मैं निराश हूं! मैं चाहती हूं कि कुछ ऐसा घटे जिससे मैं अधिक से अधिक ऊर्जा प्राप्त कर गहरे तथाता में जा सकूं। अंत में मुझे प्राय: कुछ क्षणों को ऐसा अनुभव होता है जैसे मैं कहीं किसी चीज में गिरती ही चली जा रही हूं, यह अनुभव समुंद्र में गिरने जैसा अथवा आकाश में छाए विशाल अद्‌भुत और सुंदर बादलों के बीच खो जाने जैसा होता है! लेकिन यह अनुभव जितना ही प्रगाढ़ होता है? तो इसका दूसरा भाग जो उतना ही शक्तिशाली है? वह मेरे, अहंकार है? जो मुझे खामोश कर मुझे फिर से सो जाने को बाध्य करता है और कहता है— कि हर चीज काल्पनिक और गोबर जैसी है? यह विचार इतना अविश्वसनीय पर प्रबल होता है कि मुझ संकल्प शक्ति जैसी कोई चीज दिखाई ही नहीं देती। मैं पूरी तरह शक्तिहीन होने का अनुभव करती है, जो मुझे असहायता और निराशा का अहसास कराती है और कभी—कभी मैं कुंठाग्रस्त हो जाती हूं। कृपया मेरी सहायता करें।

लगता है, तेरे मन में कुछ गलतफहमियां हैं। यह अहंकार नहीं है जो तुझे यह संदेश देने का प्रयास कर रहा है कि तू कल्पना में विचरण कर रही है। लेकिन कल्पनाएं बहुत सुंदर होती है और तू कल्पना ही में विचरण कर रही है। तू मीठे मधुर स्वप्न देख रही है।

यह अहंकार नहीं है जो तुझे नीचे खींचता है, अहंकार वह है, जो स्वप्न देख रहा है और जो कल्पनाओं में ले जा रहा है। वह भाग जो तुझे स्वप्न से नीचे की ओर खींचना चाहता है वह तेरा होश और चेतना है। तू इस सम्बंध में भ्रमित हो रही है। चेतना सदैव तुझे वास्तविक यथार्थ मे वापस लाती है। वास्तव में अहंकार है—एक स्वप्न, यह एक झूठी मानसिक दृष्टि है। अहंकार कभी भी किसी भी व्यक्ति को कल्पनाओं में जाने .से रोकता नहीं है, क्योंकि अहंकार कल्पनाओं का पोषण करता है। अहंकार ही सबसे बड़ी कल्पना और सनक है। फिर वह कल्पनाओं में जाने से तुझे कैसे रोक सकता है? वह चाहता है कि तू स्वप्न ही देखती रहे, वह चाहता है कि तेरे स्वप्न भी दूसरे संसार के महान सपने हों।

यह अहंकार नहीं है जो तुझे इस पृथ्वी पर नीचे खींच रहा है। जो भाग तुझे वास्तविक यथार्थ संसार में नीचे खींच रहा है, वह तेरी चेतना है, लेकिन तू चेतना की निंदा कर रही है और तू अधिक से अधिक कल्पनाओं में जाना चाहती है। नहीं तू पूरी तरह गलतफहमी में पड़ गई है।

"मैं अधिक से अधिक ऊर्जा का अनुभव करती हूं और चाहती हूं कि मुझे गहराई में जाकर तथाता का अनुभव घटे। अंत के कुछ क्षणों में मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कहीं किसी चीज में नीचे गिरती जा रही हूं। यह अनुभव समुद्र में गिरने जैसा अथवा आकाश में छाए विशाल, अद्‌भुत और सुंदर बादलों के बीच खो जाने जैसा होता है

यह सब कुछ कहीं भी नहीं है, ये सभी तुम्हारी कल्पनाएं हैं।

"लेकिन यह अनुभव जितना प्रगाढ़ होता है, तो इसका दूसरा भाग जो उतना ही शक्तिशाली है, वह मेरा अहंकार है, जो मुझे खामोश कर, फिर से सो जाने को बाध्य करता है और कहता है—कि हर चीज काल्पनिक है।"

यह गोबर जैसा ही है, लेकिन यह तुम्हें कठोर और अरुचिकर लगता है।

मैं तुम्हें एक घटना के बाबत बताना चाहता हूं—

लंदन स्कूल की एक शिक्षिका की कक्षा में सभी धर्मों और सभी देशों के बच्चे एक साथ मिले—जुले पढ़ते थे। एक दिन उसने कक्षा में प्रश्न किया— " अभी तक जितने भी महान मनुष्य हुए हैं, उनमें सबसे अधिक महान कौन था? और जो छात्र ठीक उत्तर देगा। उसे एक शिलिंग मिलेगा।"

पहला बच्चा अमेरिकन था। उसने उत्तर दिया— ' जार्ज वाशिंगटन। अगला बच्चा था पेट्रिक ओ ' कैली और उसने उत्तर दिया—सेंट पेट्रिक ही अभी तक हुए मनुष्यों में सबसे अधिक महान था। तब बारी आई एक भारतीय बच्चे की जिसने गौतम बुद्ध का नाम लिया, और एक चीनी बच्चे ने लाओत्से को महानतम बतलाया।

तब पंक्ति में अगला बच्चा ऐबे था जिसने बिना किसी हिचक के उत्तर दिया— "जीसस।"

शिक्षिका ने उसे तुरंत एक शिलिंग दिया और उससे पूछा— " मुझे बताओ, ऐसा कैसे हुआ कि तुमने एक यहूदी होते हुए भी, जो जीसस के क्राइष्ट होने पर विश्वास नहीं करता, उन्हें अभी तक हुए महान लोगों में उनके होने का उल्लेख किया?"

ऐबे ने उत्तर दिया— " अपने हृदय की गहराई में मैं जानता हूं कि सबसे अधिक महान तो मोजेज ही थे, लेकिन व्यापार तो आखिर व्यापार है।"

अपने हृदय की गहराई में तुम भी जानती हो कि यह सभी कल्पनाएं गोबर जैसी ही हैं। इसी वजह से तुम बार—बार इसी पृथ्वी की ओर खींच ली जाती हो। पृथ्वी पर वापस उतरो, कल्पना से कोई सहायता मिलनी वाली नहीं।

वहां एक काव्य है, यह अलग तरह का काव्य है जो वास्तविक यथार्थ से उमगता है। हां! वहां बहुत सुंदर मेघों की घटाएं हैं और वहां असीम विराट सागरों का सौंदर्य भी है, लेकिन वह अस्तित्व से तभी उत्पन्न होता है, जब तुम्हारी जड़ें पृथ्वी में हों। तब वहां वास्तविकता अर्थात् सत्य और सौंदर्य के मध्य कोई भी संघर्ष नहीं होता। वह सौंदर्य और कुछ भी नहीं होता बल्कि सत्य स्वयं अपने सम्पूर्ण सौंदर्य को अभिव्यक्त करता है। लेकिन अभी तो तुम जो कुछ भी कर रही हो, वह कल्पनाएं हैं। इसलिए इस दबाव को हटाओ और तुम अपने आग्रह को बदलो। यह अहंकार है, जो तुम्हें कल्पनाओं के आकाश में उड़ाये लिए जा रहा है, और वह तुम्हारी चेतना है जो तुम्हें नीचे पृथ्वी की ओर खींच रही है।

चेतना को अधिक से अधिक कार्य करने की अनुमति दो और सपने देखने में अधिक समय नष्ट मत करो।

मैंने सुना है.....

दो मछुवारे अपने पिछले दिन के अनुभव एक दूसरे को बतला रहे थे। एक ने कहा कि कल उसने तीन सौ पौंड वजन की सोलोमन मछली पकड़ी।

दूसरे ने टोकते हुए कहा— " लेकिन कोई भी सोलोमन मछली कभी भी तीन सौ पौंड वजन की होती ही नहीं।"

"तो भी, जो मछली मैंने पकड़ी, वह तीन सौ पौंड वजनी ही थी। पर तुमने क्या पकड़ा?"

दूसरे मुछवारे ने उत्तर दिया— " कुछ खास नहीं। सिर्फ जंग लगा एक पुराना योग लैंप मेरे जाल में आया। लेकिन उसके पेदे पर खुदा हुआ था— " क्रिस्टोफर कोलम्बस की सम्पत्ति 1492"। और जब मैंने उस लैंप को खोला तो मैं देखकर हैरान रह गया कि उसमें एक मोमबत्ती जमी खड़ी थी और तुम जानते हो कि वह मोमबत्ती उस समय भी जल रही थी।

पहले मछुवारे ने अगला कदम उठाते हुए कहा— " अब हमें दोनों कहानियों को इकट्ठा करके आगे चर्चा करना चाहिए यदि तुम इस नारकीय मोमबत्ती को बुझा हुआ मान लोगे तो मैं सोलोमन मछली का वजन दो सौ पाउण्ड कम कर सकता हूं।"

एक व्यक्ति चाहता है कि उसके पास मीठे मधुर अनुभव हों, और एक व्यक्ति सुंदर अनुभवों की इच्छा करता है। लेकिन केवल इच्छा भर करने से तुम उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते, तुम केवल उनके बारे में स्वप्न देख सकते हो। तुम केवल कामना करने के द्वारा ही उन्हें प्राप्त नहीं कर सकते, बल्कि तुम स्वयं कठोर परिश्रम करके ही उन्हें प्राप्त कर सकते हो। अत्यधिक प्रयास करने की आवश्यकता होती है। तभी एक दिन सत्य उद्घाटित होता है। और तब उसकी जो कांति और दमक होती है, वह किसी भी सपने में कभी भी हो ही नहीं सकती। क्योंकि सपना केवल सपना ही है, वह मन का ही एक विचार है, भले ही उस विचार में कई रंग भरे हों, लेकिन फिर भी वह एक विचार ही है। जब सत्य प्रकट होता है तो वह पूरी तरह भिन्न होता है, वह किसी भी स्वप्न की अपेक्षा लाखों गुना अधिक सुंदर होता है। सपने देखने में व्यर्थ समय नष्ट मत करो, इस शरीर में रहते हुए ही, पृथ्वी पर ही चलो और अपने होश में वापस आओ।

अंतिम प्रश्न:

यह प्रश्न है दिव्या का प्यारे सदगुरू! मैं प्रेम और ध्यान के सम्बंध में कुछ और नहीं सुनना चाहती: वे दोनों मेरे लिए एक ही हैं मैं सत्व खोज रही हूं और आप ही उसके साधन हैं मेरी भक्ति और मेरी प्रार्थनाएं? केवल कृतज्ञता की ही अभिव्यक्ति है प्रेम बस है और मैं हूं कभी—कभी मुझे आश्चर्य होता हैं कि आप हैं भी अथवा नहीं, या मैं ही निरंतर आपको सृजित किये जा रही हूं, अथवा क्या मेरा अस्तित्व? आपके अस्तित्व से पृथक है! यदि आप इतने अधिक सुंदर हैं तो मुझे परमात्मा जरूर बनना है आपके प्रति मेरा प्रेम, मेरी कृतज्ञता ही केवल निश्चित है? जो बनी ही रहती है?

और यही सत्य है। मैं जितना कुछ जानती हूं, लेकिन फिर भी प्रत्येक बार जब आपको यह कहते हुए सुनती हूं— प्रेम अथवा ध्यान तभी आप मुझे पकड़ पाते हैं कि मैं अपने केंद्र से दूर हूं, क्योंकि सभी श्रेणियां कार्य है: मैं यह हूं अथवा वह? यह हमें अभी समझना है!

आपके निकट पहुंचाना कितनी सुंदर यात्रा है।

*ब*हुत—बहुत धन्यवाद दिव्या।

नौवां प्रवचन

अपने अंदर के अरूप में स्थित हो जाओ

बाऊल गीत:

ओ मैरे हृदय!
तू अपने आपको उस वेष में सज्जित कर
जिसमें सभी स्त्रियोचित सार तत्व हों,
तू अपनी प्रकृति और आदतों को बदल कर
ठीक उन्हें उनके विपरीत बना ले।
तभी, जैसे लाखों करोड़ों सूर्यों का विस्फोट होगा
और उसकी चमक तथा प्रकाश में
वह अरूप, हर कहीं विविध रूपों में दिखाई देगा।
तू वह देख सकेगा
लेकिन केवल तभी
यदि तू स्वयं अपने अंदर के
अरूप में स्थित हो जाए।

यह गीत अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। यह बाउलों के दृष्टिकोण का मूल है। परमात्मा के निकट आने के दो उपाय हैं। पहला है पुरुष चित्त—जो सक्रिय और आक्रामक है, और दूसरा है स्त्रैण चित्त—जो निष्क्रिय और ग्राहक है। बाउलों का मार्ग दूसरा है। जैसे कि लाओत्से और च्वांग्त्सु का भी दूसरा ही मार्ग है। महावीर और पतंजलि के पहुंचने का मार्ग पहला है।

पुरुष चित्त सदा खोजता है, और परमात्मा की खोज करता रहता है; जैसे मानो परमात्मा कहीं और है और उसे कहीं खोजना है। स्त्रैण—चित्त केवल प्रार्थना करता है और प्रतीक्षा करता है। स्त्रैण—चित्त का दृढ़ विश्वास है— "जब मैं पहले ही से तैयार हूं तो परमात्मा मेरे पास आयेगा ही।" यह परमात्मा ही है, जो उसके पास आता है; ऐसा नहीं कि खोजने वाला परमात्मा के पास जाता है। और वास्तव में तुम परमात्मा को कैसे खोज सकते हो? तुम उसे जानते नहीं; तुम्हें उसका पता—ठिकाना नहीं मालूम, न तुम उसकी दिशा जानते हो, और न तुम उसकी परिभाषा ही जानते हो। और यदि तुम उसके कभी सामने भी पड़ जाओ, तो तुम उसे पहचानोगे कैसे? क्योंकि पहचान केवल तभी सम्भव है, यदि तुम पहले से जानते हो।

एक तरह से सभी खोज व्यर्थ हैं और पुरुष चित्त के कारण ही संसार में नास्तिकता बहुत प्रमुख हो गई है। यह पुरुष चित्त की विफलता ही है; कि नास्तिकता इतनी अधिक प्रचलित हो गई है। पश्चिम में वास्तव में निरीश्वरवाद अथवा नास्तिकता ही महानतम धर्म बन गया है—क्योंकि पश्चिम, पुरुष चित्त प्रधान है। उसके चित्त का झुकाव ही जीतने में है जैसे मानों वहां मनुष्य और परमात्मा के मध्य एक युद्ध चल रहा है, जैसे मानो वहां एक सतत संघर्ष और कुश्ती चल रही है। इसके फलस्वरूप पश्चिम में जो भी प्रयास हुए हैं उससे परमात्मा पूरी तरह मिट गया है। नीत्शे ने घोषणा की कि " परमात्मा मर गया है।" नीत्शे—पुरुष चित्त का सार तत्व है: सत्ता और शक्ति पाने की इच्छा, अधिकार और नियंत्रण की इच्छा सब कुछ पाने की इच्छा।

यदि तुम ' उसकी ' बहुत खोज करोगे तो तुम्हारी खोज ही एक अवरोध बन जाएगी।

कुछ लोग यहां ऐसे भी हुए हैं जो इस मार्ग के द्वारा सत्य को उपलब्ध हुए— जैसे महावीर और पतंजलि लेकिन ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं और यह संघर्ष बहुत अधिक दीर्घकालीन और अनावश्यक है। परमात्मा स्वयं तुम्हारी ओर आता है, परमात्मा सदा तुम्हारी ओर आ रहा है।

बाउल कहते हैं— " वह तुम नहीं हो, जो उसे खोज रहे हो; यह, ' वह ' ही है, जो तुम्हें खोज रहा है।" ऐसा नहीं है कि तुम उसकी प्रार्थना करते हो। वह ही तुम्हारी प्रार्थना कर रहा है। जरा सुनो, निष्क्रिय ग्राहक बन जाओ। वह तुम्हारा दरवाजा खटखटा रहा है, और अपने कमरे के अंदर तुम उसे खोजने और तलाशने में इतने अधिक व्यस्त हो कि तुम दरवाजे पर उसकी दस्तक तक नहीं सुन सकते। मनुष्य, परमात्मा को खोज ही नहीं सकता, केवल परमात्मा ही मनुष्य को खोज सकता है। यह एक गढ़ सत्य है जो समझ लेने जैसा है, क्योंकि तुम परमात्मा को कैसे खोज सकते हो? तुम उससे कैसे सम्बंध जोड़ोगे? तुम इतने अधिक अंधेरे और मूर्च्छा में हो, तुम इतने अधिक बुझे—बुझे से, सोये—सोये से इतने अधिक अज्ञानी हो—कि तुम उसे खोजने कैसे जाओगे? और तुम जो कुछ भी खोजोगे, वह तुमसे अधिक बड़ा नहीं हो सकता। तुम्हारा परमात्मा, तुम्हारा अपना ही बनाया परमात्मा होगा।

यदि घोड़े परमात्मा को खोजें, तो वे परमात्मा की एक छवि भी बनाएंगे, लेकिन वह छवि एक घोड़े की ही होगी—मनुष्य की नहीं—क्योंकि मनुष्य ने कभी भी घोड़ों के लिए कोई भी काम अच्छा नहीं किया है। और वास्तव में यदि उनकी शैतान के बारे में कोई पौराणिक कथाएं होंगी, तो मनुष्य की छवि का ही शैतान होगा। यदि वृक्ष परमात्मा की खोज कर रहे हैं, तो वे वृक्ष की ही छवि का परमात्मा खोजेंगे, क्योंकि हम अपनी आकृति के पार नहीं जा सकते। हमारी रूप और आकृति ही हमारी सीमा होगी। इसलिए यदि तुम खोजने निकले तो वह तुम्हारा ही परमात्मा होगा, और तुम्हारा परमात्मा लगभग परमात्मा तो नहीं ही है।

उसे ही खोजने दो तुम्हें। उसे इसकी अनुमति दो। उसका हाथ तुम्हारे लिए निरंतर आगे बढ़ता है, केवल स्वीकार भाव से यथावत बने रहो। उससे दूर मत भागो, और इतना ही बहुत है। उसे विधायक रूप से खोजने की कोई जरूरत है ही नहीं, सिर्फ उससे पलायन मत करो। उसे प्रकट होने दो, उसका स्वागत करो, ग्राहक होकर उसे सुनो। उसी ग्राहकता और सुनने में ही वह तुम्हारे अंदर गहरे में प्रविष्ट हो जाएगा। स्त्रैण चित्त बनो, एक स्त्री ही बन जाओ।

बुद्ध एक स्त्री जैसे ही हैं।

वह छ: वर्षों तक खोजते रहे, उन्होंने पुरुष चित्त साधना से पहुंचने का प्रयास किया। वह एक राजा के पुत्र और एक महान योद्धा थे, और उनकी शिक्षा—दीक्षा, युद्ध, लड़ाई और संघर्ष के अनुरूप ही की गई थी। उनके लिए स्वाभाविक था कि वह परमात्मा की खोज करते। उन्होंने प्रयास किया और कठोर प्रयास किया। वह एक गुरु से दूसरे गुरु के पास गए और वह इतने अधिक सत्यनिष्ठ थे कि कोई भी गुरु उनसे यह न कह सका— "तुम इतना अधिक श्रम करके ठीक नहीं कर रहे हो और इसी कारण तुम नहीं पहुंच रहे हो। वह अपने प्रयास के प्रति इतने अधिक ईमानदार थे कि उनके शिक्षकों ने उनसे कहा— " हमारे पास सब कुछ इतना ही था तुम्हें बताने को। और यदि कुछ नहीं घट रहा है तो तुम दूसरे सद्गुरु को खोजो। हम लोग अक्षम हैं। हम इससे अधिक और कुछ भी नहीं कर सकते।"

एक दिन उन्होंने पूरे संसार को त्याग दिया और संन्यासी बन गये— और एक दिन उन्होंने उसकी व्यर्थता समझ कर उसकी तलाश भी छोड़ दी। वह केवल अंधेरे में टटोल रहे थे। उस रात जब उन्होंने खोज करना भी

छोड़ दिया तो जैसे एक स्त्री बन गए। उस रात उन्होंने बोधि वृक्ष के नीचे विश्राम किया, अब वहां करने के लिए कुछ बचा ही नहीं था।

पुरुष करने वाला कर्त्ता है। स्त्री है प्रेम करने वाली एक प्रेमिका वह कर्त्ता नहीं है। पुरुष मस्तिष्क है और स्त्री है हृदय। मनुष्य चीजों का सृजन कर सकता है लेकिन जीवन को जन्म नहीं दे सकता। उसके लिए ग्राहकता की आवश्यकता होती है, पृथ्वी जैसी ग्राह्यता शक्ति। बीज पृथ्वी पर गिरता है और जमीन के नीचे कहीं खो जाता है, और एक दिन एक नया जीवन प्रस्फुटित होता है। इसी तरह से एक बच्चे का जन्म होता है।

परमात्मा को जन्म देने के लिए एक गर्भ की जरूरत होती है और तुम्हें स्वयं को ही जन्म देना होता है। तुम्हें इसके लिए गर्भ बनना होगा।

उस रात्रि बुद्ध एक गर्भ बने, और उन्होंने सब कुछ छोड दिया। अब वहां करने को कुछ भी नहीं था, बस कुछ न करते हुए उसी पर ध्यान करना था। उनके लिए संसार समाप्त हो गया था, वहां कुछ खोजने को था ही नहीं। अब आध्यात्मिक खोज भी समाप्त हो गई थी। प्रत्येक चीज पूरी तरह शांत और घिर हो गई थी। जब वहां खोजने को कुछ बचा ही न था तो वहां कोई कामना भी नहीं थी: जब वहां कोई कामना नहीं बची थी तो वहां विचार भी नहीं थे, और जब वहां न कोई कामना न थी, कोई विचार नहीं थे और न कोई खोज थी, तो अहंकार कैसे बना सकता था वहां। उसका अस्तित्व तभी है जब कर्त्ता हो करने वाला हो। उस क्षण भविष्य भी जाता रहा। जब तुम्हें कुछ करने के लिए कहीं जाना ही नहीं है, तो भविष्य रखने की आवश्यकता ही क्या है? भविष्य की जरूरत एक स्थान की तरह होती है जहां तुम अपनी कामनाएं प्रक्षेपित कर सको। प्रक्षेपण करने के लिए भविष्य की आवश्यकता होती है।

उस रात भविष्य तिरोहित हो गया, वास्तव में समय ही मिट गया। जब तुम एक कर्त्ता नहीं रहे, फिर समय का उपयोग क्या? बुद्ध विश्राम में चले गये। यह विश्राम परिपूर्ण, समग्र और अखण्ड था। उन्होंने स्वयं में ही विश्राम किया—कहीं भी अब जाना नहीं है, अब तो स्वयं ही में विश्राम करना है: न कोई कामना, न कोई विचार, प्रत्येक चीज व्यर्थ सिद्ध हो चुकी थी। वास्तव में जो व्यर्थ सिद्ध हुआ था, पुरुष चित्त की ओर उन्मूख मन, जो कर्त्ता है। भोर के समय जब आखिरी शुक्र तारा अस्त हो रहा था, उन्होंने अपने नेत्र खोले। पूरी रात स्वप्नरहित सुखद नींद थी, क्योंकि सपने भी कामनाओं से उत्पन्न होते हैं। क्या तुमने कभी इसका निरीक्षण किया है? जब तुम कुछ करना चाहते हो, तो रात में नींद आना कठिन हो जाता है: और सुबह बहुत उत्तेजनापूर्ण होती है। आने वाला कल भी उत्तेजक होता है, क्योंकि तुम्हें कुछ करना है। यदि तुम छुट्टी मनाने हिमालय पर भी जा रहे हो, तो भी तुम रात में सो नहीं पाते, योजनाएं बनाना जारी रहता है। तुम्हें यह करना है, वह करना है, उसका रिहर्सल या अभ्यास चलता रहता है। नींद का आना कठिन हो जाता है..... और सपने

बुद्ध पहली बार गहरी नींद सोए। वह निद्रा, समाधि थी: न कोई विचार न कोई कामना और न कोई स्वप्न। वह अपने केंद्र पर विश्राम में चले गये, और जब उन्होंने अपने नेत्र खोले, तो वह एक छोटे से शिशु के समान थे—एकदम ताजा, युवा। उन्होंने अस्त होते हुए आखिरी तारे को देखा, और जैसे ही तारा मिटा, वह भी मिट गये। वह बुद्धत्व को उपलब्ध हो गए। लेकिन बुद्धत्व एक गहरे स्त्रैण चित्त की दशा में घटा।

इसीलिए जैनों और बौद्धों में एक सतत संघर्ष चलता रहता है—क्योंकि महावीर हैं—पुरुष चित्त की ओर उम्मुख, एक योद्धा और विजेता जैसे। महावीर शब्द का भी यही अर्थ है। यह उनका वास्तविक नाम नहीं है, उनका असली नाम तो वर्द्धमान है। लेकिन उन्होंने सत्य पर विजय प्राप्त की। और वह इतने अधिक वीर थे, और उनका साहसिक अभियान इतना अधिक महान था, कि वह महावीर के नाम से स्मरण किए जाते हैं: वह व्यक्ति जो महान साहसिक है। जैनों और बौद्धों के मध्य एक सूक्ष्म संघर्ष बना रहता है। सदियों में एक दूसरे के विरुद्ध वे

तर्क—वितर्क करते आये हैं। इसे भली भांति समझा जा सकता है। कारण है—पुरुष चित्त और स्त्रैण— चित्त, यिन और यांग, सक्रिय और निक्रिय, दिन और रात। दिन, प्रतीक है पुरुष का, और रात प्रतीक है स्त्री का। दिन क्रिया—कलाप से भरा हुआ होता है, और रात में होता है बस विश्राम। दिन में चमक है, प्रकाश है क्योंकि वहां सूरज है। तुम सभी चीजों को स्पष्टता से देख सकते हो: तुम जान सकते हो, क्या, क्या है और कौन— कौन है। रात में चारों ओर अंधेरा रहता है। पूरा अस्तित्व अंधेरे की चादर से ढका होता है। तुम पहचान नहीं सकते कि क्या—क्या है, तुम देख नहीं सकते कि तुम कहां हो और तुम कौन हो।

सभी चीजों के विस्तृत वर्णन और सभी सीमाओं के पार यह एक अद्‌भुत विश्राम है। स्त्री को सदा से ही अंधेरी रात और पृथ्वी की भांति जाना जाता रहा है। उस रात बुद्ध एक स्त्री बन गए और बुद्धत्व को उपलब्ध हो गए।

बाउल कहते हैं:

ओ मेरे हृदय।

तू अपने आपको उस वेष में सज्जित कर

जिसमें सभी स्त्रियोचित सार—तत्व हों।

एक स्त्री बन जाओ। वास्तव में उनका कहने का तात्पर्य है मनौवैज्ञानिक और आध्यात्मिक रूप में। इसका तुम्हारे शरीर से कोई लेना—देना न होकर तुम्हारे व्यवहार और तौर—तरीकों से है। स्त्री में धैर्य होता है। थोड़ा विचार करें उस पुरुष का, जो नौ महीने तक अपने पेट में बच्चा रखे रहे। तुम कल्पना तक नहीं कर सकते कि एक पुरुष इसे सहने में समर्थ हो सकेगा—यह असम्भव है। एक स्त्री में अपार सहिष्णुता और स्वीकार— भाव होता है। स्त्री की सहनशक्ति पुरुष की अपेक्षा अधिक दृढ़ है। वास्तव में मनुष्य का सेक्स निर्बल है। जहां तक मांसपेशियों का सम्बंध है वह शक्तिशाली हो सकता है, लेकिन मसल्स, शक्ति का मापदण्ड नहीं हैं। सौ लड़कियों के अनुपात में एक सौ पंद्रह लड़कों का जन्म होता है। विवाह की आयु तक आते— आते पंद्रह लड़के मर जाते हैं। प्रकृति को अधिक लड़कों को जन्म देना होता है क्योंकि इनमें से कुछ मर जाने वाले हैं। पुरुष की अपेक्षा स्त्रियां अधिक समय तक जीवित रहती है, लगभग पांच वर्ष अधिक यही कारण है कि तुम संसार में इतनी अधिक विधवाएं देखते हो। रुग्णता और बीमारी का स्त्रियां अधिक प्रतिरोध करती हैं। स्त्रियों में कहीं अधिक सहिष्णुता और स्वीकार भाव होता है। कहां से आती है यह शक्ति?—यह आती है उनकी ग्रहणशीलता से।

जब तुम किसी कार्य को करने वाले कर्त्ता होते हो, तुम अपने आपको थका लेते हो।

एक स्त्री और पुरुष प्रेम कर रहे हैं पुरुष अपने को थका लेता है, स्त्री प्रेम करने के बाद और समृद्ध और पोषित होती है, क्योंकि वह ग्रहणशील छोर है। प्रेम करने में पुरुष अपनी शक्ति खोता है और स्त्री उसे प्राप्त करती है। यही कारण है कि पूरे संसार में स्त्रियों को दबा कर दमित करके रखा जाता है। यदि उन्हें दबा कर न रखा जाये तो वे पुरुषों को मार ही डालें किसी भी पुरुष का, किसी भी स्त्री को संतुष्ट कर पाना असम्भव है। अब आधुनिक खोजी कहते हैं स्त्रियों के पास संभोग के कई उच्च शिखर होते हैं। एक स्त्री रात में एक दर्जन पुरुषों से प्रेम कर सकती है और फिर भी ताजगी का अनुभव करती है और ऊर्जा से भरी रहती है। एक पुरुष केवल एक बार प्रेम करने में थक जाता है। पुरुष अपनी ऊर्जा बाहर फेंकता है और स्त्री उस ऊर्जा को ग्रहण करती है।

ऐसा ही परमात्मा के साथ भी होता है। बाउल कहते हैं— "स्त्रैण बनकर ग्रहणशील हो जाओ।" लेकिन स्मरण रहे, जब वे निष्‌क्रिय बने रहने को कहते हैं, तो इसका अर्थ आलसी बनने से नहीं है। आलसी बनना भी सक्रिय बनने जैसा ही है। आलस्य, निष्क्रिय नहीं होता। भले ही वह कार्य न कर रहा हो, लेकिन अपने मन में वह कार्य किए चले जाता है। हो सकता है वह वास्तव में कोई भी कार्य न कर रहा हो, पर अपने मन में वह बहुत से

काम किए चले जाता है, औरों से भी कहीं अधिक, क्योंकि उसके पास पूरी ऊर्जा उपलब्ध है और उसे करना कुछ भी नहीं है। वह सोचे चला जाता है और मन ही मन बहुत से काम किए चला जाता है, निष्क्रियता का अर्थ अकर्मण्यता या आलस्य नहीं है, इसका अर्थ है—बहुत आशापूर्ण सहिष्णुता, बहुत सक्रिय सहनशीलता और जीवंत धैर्य। आलसी मनुष्य बुझा—बुझा सा मृतप्राय होता है। निष्क्रियता में मुर्दापन नहीं होता। वह पूरी तरह जीवंत होती है: उसका कुण्ड ऊर्जा से भरा हुआ होता है, लेकिन वह कहीं भी जा नहीं रहा है और न वह किसी खोज में लगा है, वह अपने प्रीतम प्यारे के आने की केवल प्रतीक्षा कर रहा है।

यही कारण है कि स्त्री कभी भी प्रेम प्रसंगों में पहला कदम नहीं उठाती—वह उठा ही नहीं सकती। और यदि एक स्त्री प्रेम प्रसंगों में पहल करती है तब उसे स्त्री— मुक्ति— आदोलन का एक भाग होना चाहिए। तब वह किसी तरह अपना स्त्रीत्व खो रही है। वह प्रतीक्षा करती है ' पहल पुरुष की ओर से होना चाहिए। स्त्री प्रतीक्षा करती है—ऐसा नहीं, कि वह प्रेम नहीं करती, वह अत्यधिक प्रेम करती है। कोई पुरुष भी उतनी गहराई से प्रेम नहीं कर सकता—लेकिन वह प्रतीक्षा करती है। वह विश्वास करती है कि चीजें अपने ठीक समय पर घटित होगी, और शीघ्रता करना ठीक नहीं है। एक स्त्री तनावमुक्त होती है, लेकिन ऊर्जा से भरी हुई, इसीलिए स्त्री में एक सौंदर्य होता है। स्त्री शरीर की गोलाई केवल शारीरिक चीज नहीं है —ऐसा ही उसके मनोविज्ञान में भी है। उसकी आकृति गोलाई लिए हुये, चिकनी, उष्ण और धुल जाने को तैयार होती है, लेकिन आक्रामक नहीं होती। निष्क्रियता का अर्थ है— चूसनाक्रामकता और अहिंसा, यह आलस्य नहीं है।

मैंने सुना है स्विज लोग, विशेष रूप से वे लोग राजधानी बर्न में रहते हैं, उनके बारे में कहा जाता है कि वे घोंघे की तरह सुस्त होते हैं, इसलिए एक दिन बर्न में रहने वाले दो मित्र बाहर टहलने के लिए गए। एक घंटे बाद एक मित्र ने कहा— " क्रिसमस का त्यौहार बहुत सुंदर होता है।"

जब दूसरा घंटा बीत गया तो उसके मित्र ने उत्तर दिया— " हां प्रेम भी बहुत सुंदर होता है।"

काफी समय गुजर जाने के बाद पहले मित्र ने उत्तर दिया— " तुम ठीक कहते हो लेकिन क्रिसमस तो अक्सर बार—बार आता है।"

आलस्य एक तरह की जड़ता है, आलस्य इच्छाविहीन बनना है और आलस्य एक आत्मघात है— धीमा, बहुत धीमा। इसलिए स्मरण रहे, निष्क्रियता, ऊर्जा का न होना नहीं है। निष्क्रियता ऊर्जा का कुण्ड है जिसमें कम्पन धड़कन और प्रवाह है, जो ग्रहण करने को तैयार है लेकिन चूसनाक्रामक है।

एक बार ऐसा हुआ एक सूफी रहस्यदर्शी एक वृक्ष के नीचे बैठा हुआ था। उधर से गुजरने वाले एक व्यक्ति ने उससे पूछा— "आप यहां बैठे क्या कर रहे हैं? आपका घर तो जल रहा है।"

ठीक उसके सामने ही उसका घर जल रहा था।

"मैं जानता हूं अजनबी।" उस तथाकथित सूफी ने उत्तर दिया।

उत्तेजित होकर चीखता हुआ अजनबी बोला— "तब आप उस बारे में कुछ भी क्यों नहीं कर रहे हैं?"

रहस्यदर्शी ने कहा— " मैं कर तो रहा हूं। जब से आग लगना शुरू हुई है। मैं वर्षा होने के लिए प्रार्थना ही तो कर रहा हूं।"

बाउल आलसी नहीं है। वह क्रिया या कर्म से भरा हुआ है। लेकिन वह निष्क्रिय है।

यह विशेषता समझने जैसी है।

तुम प्रयोग के इरादे से कुछ भी न करते हुए बैठ सकते हो और तुम मन को सक्रिय, व्यस्त और सम्बंध बनाते देख सकते हो। तुम अधिक क्रियाकलाप में व्यस्त भी हो सकते हो और मन निष्क्रिय बना हुआ। तुम्हारा सभी से अलग भी हो सकता है। वे लोग सक्रिय होने के विरोध में नहीं है। वे अपने अंदर निरंतर व्यस्त बने रहने

के विरोध में हैं, क्योंकि तब तुम परमात्मा को अपने अंदर प्रवेश करने के लिए स्थान नहीं दे सकते। तुम द्वार बनाने को उसे पर्याप्त स्थान लेने की भी अनुमति नहीं देते। तुम्हारे अंदर का संसार रद्दी कबाड़ से इस तरह भरा हुआ है कि वह ठहरने को स्थान तक नहीं पा सकता। अंदर गहरे में एक रिक्तता या खाली स्थान की आवश्यकता है, वही आंतरिक शून्यता गर्भ बन जाती है।

इसलिए मैं यह नहीं कह रहा हूं कि सभी क्रिया छोड़कर कुछ करना ही रोक दो, उसे केवल बाहर ही बाहर होने दो। अंदर से स्त्री की भांति शांत, खाली बनकर अपने द्वार खोल कर उसकी प्रतीक्षा करो।

मां के गर्भ में स्त्री का अंडा केवल प्रतीक्षा करता है और कहीं भी नहीं जाता। पुरुष का शुक्राणु तीव्र गति से यात्रा करता हुआ अंदर पहुंचता है। पुरुष शुक्राणु की स्त्री के अंडे तक यात्रा करने के लिए वास्तव में यह दूरी बहुत अधिक है, शुक्राणुओं में एक महान प्रतियोगिता प्रारंभ हो जाती है। पुरुष प्रारंभ ही से प्रतियोगी है, यहां तक कि जन्म लेने के पूर्व ही से। स्त्री से प्रेम करते हुए पुरुष वीर्य के साथ करोड़ों शुक्राणु मुक्त करता है और वे सभी स्त्री के अंडे की ओर तेजी से दौडते हैं। तीव्र गति की आवश्यकता होती है, क्योंकि उन सभी में केवल एक ही अंडे तक पहुंचने में समर्थ होगा। उनमें केवल एक ही नोबेल पुरस्कार विजेता बनने जा रहा है। वहां एक असली ओलम्पिक दौड़ शुरू होती है और यह कोई मामूली दौड़ न होकर जीवन—मरण का प्रश्न है और प्रतियोगिता बहुत बड़ी है लाखों करोड़ों शुक्राणु लड़ते हुए तेजी से दौड़ रहे हैं, मंजिल तक केवल एक पहुंचेगा। कभी—कभी ऐसी भी होता है कि एक ही समय पर दो शुक्राणु पहुंच जाते हैं,इसलिए जुड़वां बच्चे जन्म लेते हैं।

क्योंकि एक बार जब एक शुक्राणु गर्भ में प्रविष्ट हो जाता है तब उसका द्वार बंद हो जाता है। कभी—कभी दो या तीन शुक्राणु ठीक एक ही समय वहां पहुंचते हैं, द्वार खुला होता है इसलिए तीनों प्रविष्ट हो जाते हैं। तब वहां, दो, तीन अथवा चार और यहां तक कि कभी छ: बच्चों तक का जन्म एक साथ होता है लेकिन ऐसा बहुत कम होता है। सामान्यतया एक क्षणांश में ही एक शुक्राणु दूसरों से ठीक पहले पहुंच जाता है। द्वार खुला है, एक बार जब एक अतिथि प्रविष्ट हो गया, तो द्वार बंद हो जाता है। लेकिन स्त्री का अंडा वहां केवल निष्क्रिय प्रतीक्षा करता है.. .उसे महान विश्वास होता है।

यही वजह है कि स्त्रियां प्रतियोगी नहीं हो सकतीं, वे लड़ नहीं सकतीं, वे संघर्ष नहीं कर सकतीं। और यदि तुम कहीं ऐसी स्त्री पाते हो, जो लड़ती है, संघर्ष करती है, जो प्रतियोगी है तो उसके स्त्रीत्व में कहीं कुछ चूक हो रही है। शारीरिक रूप से वह एक स्त्री हो सकती है, लेकिन मनोवैज्ञानिक रूप से एक पुरुष है। इसलिए स्मरण रहे, निष्क्रिय होना आलस्य नहीं है। निष्क्रियता अपने आप में एक तरह की गतिविधि है, जो तनावमुक्त और विश्रामपूर्ण है।

दो कछुवे, एक रेगिस्तान में घिसटते हुए चल रहे थे और वे दोनों बहुत प्यासे थे। कुछ देर बाद खोज करते हुए उन्हें एक बड़ी कोकाकोला की बोतल मिली। वे कछुवे जरूर ही अमेरिकन रहे होंगे। वे दोनों खुशी से उछल पड़े। लेकिन शीघ्र ही उन्हें अहसास हुआ कि उनके पास बोतल खोलने की चाभी नहीं है।

उन लोगों ने उसे खोलने का कठोर प्रयास किया लेकिन बोतल खुलने का कोई अवसर वहां था ही नहीं, इसलिए उन्होंने तय किया कि उनमें से एक वापस गांव जाएगा और दूसरा उसकी रखवाली करेगा। एक लम्बा समय बीत गया, पांच घंटे, दस घंटे, एक दिन, दो दिन, पांच दिन और फिर सात दिन। तब पहले कछुवे ने फिर बोतल खोलने का प्रयास किया। तुरंत ही पास ही में भुरभुरी रेत में दुबका दूसरा कछुवा चिल्लाता हुआ बोला— " यदि तुम शुरू ही इस तरह करोगे तो मैं गांव कभी जाऊंगा ही नहीं।"

बाउल बहुत सक्रिय लोग हैं, वे पनचक्की की भांति घूमते हुए नाचते और गाते हैं, और फिर भी जहां तक परमात्मा का सम्बंध है, वे लोग बहुत निष्क्रिय हैं। वे कहते हैं— " तुम्हें जब भी हमारा खयाल आ जाए कि

यही ठीक समय है, तभी आ जाना और तुम हमें प्रतीक्षा करते हुए ही पाओगे। और मैं तो असहाय हूं मैं यह भी नहीं जानता कि ' तुम ' हो कहां। मैं निरुपाय हूं मैं नहीं जानता कि ' तुम्हें ' कैसे " खोजा जाए। मेरी केवल यही प्रार्थना है कि 'तुम' मेरी सहायता करो जिससे मैं

' तुम्हें ' अनुमति दे सकूं कि ' तुम्हीं, मुझे खोज लो। वे लोग नाचते हैं और प्रतीक्षा करते हैं, वे गाते हैं और प्रतीक्षा करते हैं। परमात्मा के लिए उनकी यह प्रतीक्षा करना ही उनकी प्रार्थना है।

यदि तुम प्रतीक्षा कर सकते हो, तो तुम एक महान रूपांतरण से होकर गुजरोगे। इसके लिए करना कुछ भी न होगा, करनी होगी केवल प्रतीक्षा—लेकिन इसके लिए महान श्रद्धा की जरूरत है। अन्यथा मन कहेगा—" आखिर तुम कर क्या रहे हो? यदि तुम उसे खोजने नहीं जा रहे हो, तो तुम उसे कभी न पा सकोगे।" ठीक लाओत्से की ही तरह बाउल कहते हैं— " तुमने खोजा नहीं कि तुम चूक गये। खोजो मत और उसे पा लो।" वह यही है तुम्हारा खोजना तुम्हें कहीं और ले जाता है। वह तो पहले ही से आ गया है। मेहमान द्वार पर खड़ा दस्तक दे रहा है। लेकिन तुम्हारे मन के अंदर इतने अधिक विचार भरे है—वह ' उसके ' विचार से भी घिरा हो सकता है और हो सकता है वह उसका ही खयाल कर रहा हो, लेकिन वह इतना अधिक व्यस्त और भरा है कि तुम इस क्षण को सुन ही नहीं सकते और न यहीं और अभी के लिए अपने द्वार खोल सकते हो।

ओ मेरे हृदय!
तू अपने आपको उस वेष में सज्जित कर
जिसमें सभी स्त्रियोचित सार—तत्व हों
तू अपनी प्रकृति और आदतों—को बदलकर
ठीक उन्हें उनके विपरीत बना ले।

पतंजलि इसे उल्टी दिशा में लौटना या ' प्रत्याहार ' कहते हैं— " स्रोत की ओर वापस लौटना। महावीर इस परिवर्तन को ' प्रत्याक्रमण ', बाहर न जाकर अपने अंदर लौटकर गिरना कहते हैं। सामान्यतया तुम्हारा मन भविष्योन्मूख है, हमेशा यह कहीं अन्यत्र चला जाता है, और परमात्मा को भविष्य में कहीं और देखता रहता है। बाउल कहते है—वह तो हमेशा यहां ही बहुत प्रारम्भ ही से है। वह भविष्य में नहीं है। वही सभी का कारण है, सभी का वही स्रोत है, इसलिए उसे भविष्य में खोजने की कोई जरूरत ही नहीं है। केवल तुम अपनी ही आत्मा में गहरे उतरो और तुम पाओगे कि वह तुम्हारी घर वापस लौटने की प्रतीक्षा कर रहा है। वह वहां पहले ही से विराजमान है।

और तुम अपनी प्रकृति और आदतों को
उलटकर उन्हें विपरीत बना लो।

अपनी प्रकृति और आदतों को उलटकर विपरीत बनाने से आखिर उनका क्या मतलब है? सामान्यतया मनुष्य में उतार—चढ़ाव होते रहते हैं। चूसनावश्यक वस्तुएं तुम्हारे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण बन जाती हैं और तुम सारपूर्ण आवश्यक चीजों को खोते चले जाते हो। तुम समुद्र की सीपियों धोंधों, शंखों और रंगीन पत्थरों को इकट्ठा किये चले जाते हो, और एक क्षण के लिए भी तुम इसके प्रति सजग नहीं होते कि तुम अपना जीवन बरबाद कर रहे हो, और केवल वही सबसे मूल्यवान चीज है।

मैंने सुना है. लुटेरों द्वारा मुल्ला नसरुद्दीन को चाकू मार दिया गया, लेकिन अस्पताल में मरने से पूर्व उसने अपनी पत्नी को एक पत्र लिखा। उसके अंतिम पैराग्राफ में उसने लिखा— " मैं बहुत बड़ा भाग्यशाली हूं क्योंकि केवल एक दिन पहले ही मैंने अपना सारा धन और हस्तांतरण करने योग्य बांड, बैंक के लॉकर में रख दिए हैं, इसलिए वास्तव में मैं कुछ भी नहीं खो रहा हूं सिवाय अपने जीवन के।"

लेकिन जीवन ही सब कुछ है। इसके अतिरिक्त और है ही क्या यहां? यदि तुम अपना जीवन खोकर पूरा संसार भी पा लेते हो, तो भी तुम क्या प्राप्त कर रहे हो? और यदि अपना जीवन पाकर, पूरा संसार भी खो देते हो, तो तुम कुछ भी नहीं खोते। बाउल कहते हैं— " तुम्हें अपनी आदतें बदलनी होंगी, तुम्हें अपनी प्रकृति को उलट कर लगभग उसके विपरीत बनाना होगा। ठीक अभी तो परमात्मा की खोज कर रहे हो, तुम्हें उसे अनुमति देनी होगी कि वह तुम्हें खोज सके। ठीक अभी तो तुम भौतिक वस्तुओं के प्रति आसक्त हो जिनमें कोई भी मूल्य अंतर्निहित नहीं है, तुम्हें अपने को आध्यात्मिक मूल्यों के साथ जोड़ना होगा, जिनका वास्तव में शाश्वत मूल्य है। अभी तो तुम जीवन के ही साथ संघर्ष किए जा रहे हो। लगभग प्रत्येक व्यक्ति का यही विश्वास है कि संघर्ष के बाद जो शक्तिशाली है, वही जीवित रहता है, इसलिए वह लड़ता ही चला जाता है, संघर्ष और संघर्ष ही करता रहता है। बाउल कहते है— " प्रेम करो, लड़ो मत। परमात्मा को कभी लड़कर या संघर्ष द्वारा नहीं जाना जा सकता। लड़ने से कुछ भी प्राप्त नही होता, और केवल प्रेम से ही द्वार खुलता है।"

ठीक अभी तो हम यह सोचे चले जाते हैं कि भविष्य में किसी दिन हम प्रसन्न, प्रमुदित होकर उत्सव और आनंद मनायेंगे। बाउल कहते हैं— " तुम मूर्ख हो, यदि तुम प्रसन्न, प्रमुदित और उत्सवपूर्ण होना चाहते हो, तो किसी चीज की कभी कहां है? ठीक अभी, इसी क्षण तुम हंस सकते हो, नाच सकते हो। यही क्षण पर्याप्त और सब कुछ है उत्सव आनंद मनाओ।" लोग मेरे पास आते हैं और यदि मैं उनसे कहता हूं— " अपने जीवन में उत्सव आनंद मनाओ, " तो वे कहते हैं— " जी हां! हम इसी वजह से तो यहां आए हैं जिससे यह सीख सकें कि वे स्थितियां कैसे सृजित की जायें, जिनमें हम उत्सव आनंद मना सके! " यह स्थिति तो पहले ही से मौजूद है— वृक्ष मस्ती में झूमते हुए नाच रहे है, पक्षी गीत गा रहे है। और उनके पास है ही क्या? उनका न कोई बैंक बैलेंस है, और न उनके पास प्रतिष्ठा और शक्ति है। वे राष्ट्राध्यक्ष अथवा प्रधानमंत्री भी नहीं हैं। लेकिन क्या तुमने कभी वृक्षों और पक्षियों को चिंतन करते, परेशान होते अथवा भविष्य के बारे में सोचते हुए देखा है? नहीं, वे बस सहजता से जीते हैं। आखिर मनुष्य को ही क्या हो गया है?

बाउल कहते हैं— " इस क्षण उत्सव आनंद मनाओ।" यही है वह जिसे जीसस रूपांतरण कहते हैं। एक सौ अस्सी डिग्री घूम जाना, इससे कम से काम नहीं चलेगा। इसी को मैं संन्यास कहता हूं एक सौ अस्सी डिग्री का मोड़, इससे कम से कुछ भी नहीं होगा। यह प्रश्न जीवन को त्यागने का नहीं, यह प्रश्न है—पुरानी आदतें को त्यागने का। यह प्रश्न है केवल अधिक सजग बनने का, और यह देखने का कि क्या सारभूत है और क्या नहीं है। यदि तुम अत्यावश्यक अथवा सारभूत को चुनते चले जाओ, तो देर—सबेर तुम उस सारभूत मनुष्य तक पहुच जाओगे, जिससे बाउल ' आधार मनुष्य ' कहते हैं। और इस ' आधार—मनुष्य ' तक पहुंचने का मार्ग है—सहज मनुष्य स्वाभाविक और सरल मनुष्य बनना। सहजता और स्वाभाविकता ही प्रार्थना बननी चाहिए लेकिन हम लोग बहुत चालाक और बईमान हैं।

मैं एक बार एक बहुत योग्य विशेषज्ञ के साथ ठहरा हुआ था। जब हम लोग सोने के लिए जाने लगे, तो वह अपने बिस्तरे पर बैठ गए और कहा— " अब मैं प्रार्थना करूंगा।" इसलिए मैं उनका निरीक्षण करने लगा कि जरा देखूं तो, वह प्रार्थना में करते क्या हैं। उन्होंने आकाश की ओर देखा और कहा— ' डिटो "

मैं आश्चर्यचकित रह गया: यह किस तरह की प्रार्थना है? इसलिए मैंने उनसे पूछा— " यदि आप बुरा न मानें, और नाराज न हों तो कृपया मुझे बताइये। मैंने कई तरह की प्रार्थनाएं सुनी हैं, लेकिन— " डिटो।" यह तो पूरी तरह कुछ नई चीज है।" उन्होंने कहा— " मैं वर्ष में केवल एक बार प्रार्थना करता हूं साल के पहले दिन। और तब उसी प्रार्थना को प्रति दिन दोहराने की आवश्यकता क्या है। मैं कह देता हू—डिटो, पानी ठीक वही प्रार्थना, और परमात्मा इसे जरूर समझ लेगा।"

अब प्रार्थना भी एक हिसाब—किताब और गणना बन गई। प्रार्थना करने में लोग इतने कंजूस हो गए हैं। वह आज परमात्मा तक से कुछ भी नहीं कहना चाहते।

वास्तव में उनकी मूढ़ता का आधार उनकी ही चालबाजी और बेईमानी है। उनकी मूर्खता का आधार ही उनकी चालाकी और काइयांपन एक प्रज्ञावान व्यक्ति क्षण— क्षण जीता है, उससे स्वयं उत्तर आता है। वह अपने हृदय को आज्ञा देता है कि वह प्रार्थना में जाए वह हृदय पर बलात् कोई चीज थोपता नहीं, वह केवल उसे परमात्मा की ओर बहने की अनुमति देता है। वास्तव में तुम्हें सदा स्मरण रखना चाहिए कि प्रार्थना, परमात्मा का हृदय बदलने के लिए नहीं है, प्रार्थना तुम्हें ही बदलती है। लेकिन लोग प्रार्थना इस तरह से करते हैं, जैसे मानो वे परमात्मा को सलाह या सुझाव दे रहे हों: इसे करना और इसे मत करना।"

यदि सभी प्रार्थनाओं को छोटा करते हुए उनका सार—संक्षेप लिया जाए तो उसका अर्थ होगा कि लोग परमात्मा से कह रहे हैं— " मेरे दयानिधान परमात्मा! तू दो और दो को चार मत होने दे। मुझ पर करुणा कर। इस बार तो कम से कम दो और दो पांच बना दे।"

प्रार्थनाएं शिकायतें होती हैं, अपने असंतोष को प्रकट करने का उपाय होती हैं। तब इस प्रार्थना का वजूद ही क्या?

प्रार्थना, परमात्मा को बदलने के लिए नहीं होती, उसे किसी परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं। प्रार्थना तो तुम्हें स्वयं को बदलने के लिए होती है। लेकिन " डिटो " कहने से तुम कैसे बदल सकते हो? यदि तुम " डिटो " कहते हो, तो तुम ठीक वैसे के वैसे ही अर्थात् " डिटो " ही बने रहते हो, वहां बदलने की कोई सम्भावना ही नही 'है। इस बात का सदा स्मरण बना रहे कि प्रार्थना कभी भी परमात्मा को नहीं बदलती। उसे किसी परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं। उसे जैसा होना चहिए वह वही है और उसका अस्तित्व जैसा होना चाहिए वैसा ही परिपूर्ण है। बदलाव की जरूरत तो तुम्हारे अंदर हृदय में होनी चाहिए। तुम्हारी प्रार्थना तुम्हें बदलती है। जब तुम रोते हो और आंसू बहने लगते हैं, अथवा जब तुम नाचते और गाते हो, वही तुम्हें बदलता है।

वास्तव में, जब तुम्हारी चित्तवृत्ति या मूड कुछ अलग, स्त्रैण और ग्रहणशील होता है, परमात्मा तुम्हारे निकट आ सकता है; तुम उसे आकर्षित करते हो, उसे अनुमति देते हो; तुम उसके लिए खुले द्वार बन जाते हो। प्रार्थना, परमात्मा की ओर अपने को खोलना है। उसके सामने यह हृदय खोल कर रखने जैसा है, जिससे उसकी उपस्थिति तुम्हें बदल सके। और तुम्हारे पूरे जीवन का यही तौर तरीका होना चाहिए। यह प्रश्न दिन में एक बार अथवा वर्ष में एक बार, अथवा जीवन में एक बार प्रार्थना करने का नहीं है, इसे तो वहां प्रत्येक क्षण होना चाहिए।

बाउल कभी भी किसी मंदिर, मस्जिद अथवा किसी गुरुद्वारे में नहीं जाते। वे जहां कहीं भी होते हैं, वे प्रार्थना में ही होते हैं।

जो लोग अस्वाभाविक और असहज होकर जीते हैं, वे विचारों की भीड़ से घिरे रहते हैं, और वे विचार भी उधार के होते हैं। सभी विचार उधार के होते हैं। जानकारी या ज्ञान, जैसा भी है, वह सभी उधार लिया हुआ है। केवल जानना ही शुद्ध और तुम्हारा होता है, लेकिन जानकारी या ज्ञान तुम्हारा नहीं होता। जो लोग सहज सरल और स्वाभाविक नहीं होते, यंत्रवत बन जाते हैं। वे देखते ही नहीं कि क्या स्थिति और क्या प्रकरण है, वे केवल उसे उसी दृष्टि से देखते हैं, जिससे उनके विशेषज्ञ और उनकी विशिष्ट योग्यता उन्हें देखने की अनुमति देते हैं। उनकी आंखों पर तांगे में जुते घोड़े की आंखों पर बंधे चमड़े के पट्टे जैसे बंधे रहते हैं, वे उनसे केवल सामने एक सीध में ही देखते हैं।

मैंने सुना है मुल्ला नसरुद्दीन की पत्नी छत से नीचे गिरने से भयंकर रूप से घायल व अचेत दशा में अस्पताल लाई गई। सर्जन ने संक्षिप्त जांच के बाद अपना अभिप्राय बतलाने को अपना सिर हिलाया और सहानुभूति पूर्वक आतुर उसके पति की ओर घूम कर बोला— " मुल्ला! तुम्हें यह बताते हुए मुझे बहुत अफसोस हो रहा है कि तुम्हारी पत्नी मर चुकी है।"

— 'नहीं, मैं जीवित हूं।" अपनी एक आख खोलकर मुल्ला की पत्नी ने कहा, जिसे मुर्दा समझ लिया गया था।

नसरुद्दीन ने डांटते हुए कहा— " तुम चुप रहो। क्या डॉक्टर तुमसे बेहतर नहीं जानता?"

विशेषज्ञ प्रत्येक स्थान पर हर कहीं है। जहां तक सांसारिक चीजों का सम्बंध है, यह अच्छा है, लेकिन आध्यात्मिक आयाम में वहां कोई भी विशेषज्ञ नहीं है, क्योंकि आध्यात्मिक आयाम यह अनुमति देता ही नहीं कि उसे स्पष्ट किया जाए उसे सिद्धांतों में ढालकर उसे परिभाषित किया जाए। यह न तो रेखागणित है और न बीजगणित, यह मात्र एक काव्य है। यह कोई सीमाएं नहीं जानता, इसीलिए बाउलों के गीत सहज और स्वाभाविक हैं। यह लोग दार्शनिक नहीं है, और न यह आत्मज्ञानी हैं, यह साधारण गीत गाने वाले कवि हैं। और उनकी कविता, शास्त्र के नियमों के अनुरूप नहीं है और उनका काव्य वह नहीं है, जिसे लोग कविता के रूप में जानते हैं। वे किसी मात्रा आदि को नहीं जानते, वे उसकी भाषा के बारे में कोई फिक्र नहीं करते, वे सहज साधारण लोग है। उनका काक उनके हृदय में उमड़ते और उससे बहते भावों का अतिरेक है।

"और अपनी प्रकृति और आदतों को उलट कर उन्हें उसके विपरीत बना लो "

इस सूत्र की कुंजी यही है सचेत बनो, क्योंकि तुम्हारी सभी आदतें अचेतन मन के नियंत्रण में हैं। तुम सभी काम सपने में चलने वाले व्यक्ति की भांति कर रहे हो। सचेत बनो और तुम्हारी आदतें भी बदल जायेंगी, और रूपांतरण घटित होगा। तुम जो कुछ भी कर रहे हो लेकिन उन्हें करते हुए अधिक सचेत या होशपूर्ण बनो। एक यंत्रचालित रोबो न बनकर एक मनुष्य बनो।

बाउल कहते हैं कि एक बार तुम्हारे अस्तित्व में होश या चेतना प्रविष्ट हो गई, तो तुम्हारे अंदर एक नये चरित्र और दृष्टिकोण का उदय होगा, नये—नये पुष्प खिलेंगे, और उस नये वातावरण में नये—नये पक्षी गीत गाते हुए तुम्हारे चारों ओर नये नीड़ बनायेंगे, और उस नई चेतना दृष्टि से, तुम्हें अपने निकटतम सत्य अथवा परमात्मा का अनुभव होगा। परमात्मा सबसे निकटतम सत्य है। वह तुममें है और तुम्हारे बिना भी है। लेकिन परमात्मा कोई सिद्धांत नहीं है, जिस पर चर्चा—परिचर्चा की जाये, उसकी व्याख्या की जाये, वह कुछ ऐसा है, जिसे जिया जाये। वह एक अनुभव है।

वे लोग गाते है—वह मुझसे बातचीत करता है
लेकिन वह मुझे अपने को देखने नहीं देता
वह मेरे हाथों के आस—पास ही गतिशील होता है
लेकिन मेरी पहुंच के बाहर होता है
मैं उसे आकाश और पृथ्वी में
हर स्थान पर खोजता हूं।
मैं कौन हूं? और वह कौन है?
उसे न जानने की गलती के चारों ओर
चक्कर लगाता मैं उसे खोजता हूं।

वह मुझसे बातचीत करता है, लेकिन वह मुझे अपने को देखने नहीं देता। वह मुझे निष्क्रिय होने की अनुमति देता है, और सक्रिय होने की आज्ञा नहीं देता। वह मेरे हाथों के निकट ही घूमता रहता है, मैं उसे लगभग स्पर्श कर सकता हूं लेकिन जिस क्षण मैं उसे छूने का प्रयास करता हूं वह दूर चला जाता है। वह मेरे हाथों के निकट ही घूमता रहता है, लेकिन मेरी पहुंच के बाहर होता है, क्योंकि उस तक पहुंचने के लिए फिर क्रियाशील होना होगा। वह तभी तुम्हारे निकट आता है जब तुम केवल प्रतीक्षा कर रहे होते हो। उस पर झपटने की कोशिश मत करो। वह पकड़ में आने वाला नहीं है। जिस क्षण तुम आक्रामक पुरुष चित्त के हो जाते हो, वह चला जाता है, जिस क्षण तुम स्त्रैण चित्त के बन जाते हो, वह वहां होता है।

ओ मेरे स्वामी! मेरे मालिक!
तुम अपने हृदय के द्वारा
मेरी निष्ठा परखते हुए
सत्पथ पर मेरा मार्ग निर्देशन करो।
ठीक वैसे ही
जैसे बिना आपकी बजाई हुई बांसुरी
कभी स्वयं कोई धुन नहीं निकाल सकती
जबकि आप तो बांसुरी पर मधुर तान छेड़ते ही रहते हैं।

"ओ मेरे सद्गुरु! तुम अपने हृदय के द्वारा मेरी निष्ठा परखते हुए सत्पथ पर मेरा निर्देशन करो

बाउल कहते हैं— " मैं नहीं जानता कि कौन सा ठीक रास्ता या सत्पथ है, तुम्हीं मेरा मार्ग निर्देशन करो। और मुझे लक्ष्य के बारे में तो कुछ कहना ही नहीं है। आपका ही हृदय इसका निर्णय करे। आप जो कुछ तय करेंगे वही मेरी मंजिल होगी। मेरा पथ प्रदर्शन ठीक वैसे ही करो, जैसे तुम बांसुरी पर धुन बजाते हो। बिना तुम्हारे बजाए स्वयं कोई धुन नहीं निकल सकती।

बाउल, खाली बांस की एक पोगरी बन जाता है। यही है वह निष्क्रियता। यदि परमात्मा गीत गाने को तैयार है, तो बाउल उसके गीत को उतनी दूर तक, जितनी दूर तक उसकी क्षमता है, उसे ग्रहण करने को तैयार है—लेकिन वह उसे स्वयं नहीं गा सकता। सभी गीत उसी के गीत हैं। अधिक से अधिक हम तो बांस की खाली पोगरी ही बन सकते हैं, जो रास्ते में कोई अवरोध न बने। यदि यही प्राप्त हो जाता है, तो प्रत्येक चीज प्राप्त हो जाती है। यदि तुम उसके गीत में बाधा न बनो, तो इतना ही पर्याप्त है। मनुष्यता इससे अधिक और कुछ भी नहीं कर सकती।

अपने अंदर बिना हृदय के वह मनुष्य
सामान्य सत्पथ पर चलने के लिए
कैसे खड़ा हो सकता है?
उसके वृक्ष की जडें आकाश में जमी हैं
और उसकी शाखाएं पृथ्वी की ओर लटक रही हैं।
उस वृक्ष में फूल तो खिलोग हैं,
लेकिन उसके लिए कभी उसमें फल नहीं लगते
नदी प्यास से मर रही है
और जला कर नष्ट करने वाली अग्नि
जम कर बर्फ जैसी शीतल हो गई है।

पक्षी जल में अपने घोंसले बनाते हैं।

और वह अपने स्वामी से

श्मशान भूमि में ही मिलता है

सामान्यत: यह जीवन एक अव्यवस्था है। सभी चीजें वहां नहीं है, जहां उन्हें होना चाहिए। प्रत्येक चीज गलत जगह पर रखी है। जड़ें आकाश में जमी हैं, और शाखाएं पृथ्वी की ओर लटक रही हैं। वृक्ष में फूल खिलोंग हैं, लेकिन उसमें कभी फल नहीं आते। नदी वहां बह रही है और कोई व्यक्ति प्यास से मर रहा है। परमात्मा वहां है, लेकिन तुम सिर के बल खड़े हो, इसलिए तुम उसे देख नहीं सकते, अथवा यदि तुम उसे देखते भी हो, तो उसे उसके ठीक और स्पष्ट रूप में न देखकर उसे विकृत रूप में देखते हो।

मन की यांत्रिक व्यवस्था सभी चीजों को खण्ड—खण्ड कर विकृत और अस्पष्ट बना देने की है। इसलिए यदि तुम प्रेम के मार्ग पर हो या ध्यान के मार्ग पर, दोनों मार्गों में एक चीज की जरूरत है, जो मूलभूत आवश्यकता है, वह यह है कि मन को हटाकर एक ओर अलग रख देना चाहिए। मन प्रत्येक चीज को खण्ड—खण्ड कर विकृत रूप में अस्पष्ट देखता है।

लाखों करोड़ों सूर्यों का विस्फोट होगा

और उसके प्रकाश तथा चमक में वह अरूप

हर कहीं विविध रूपों में दिखाई देगा।

परमात्मा भयंकर तीव्र प्रकाश का अनुपम सौंदर्य और चमक का एक अद्‌भुत अनुभव है। परमात्मा एक शब्द नहीं है, वह एक दिशा है। वह एक विशाल सागर जैसा है जिसमें तुम एक छोटी सी बूंद के समान खो जाते हो।

लाखों करोड़ों सूर्यों का विस्फोट होगा

और उसके तीव्र प्रकाश और चमक में

वह अरूप हर कहीं विविध रूपों में दिखाई देगा।

और एक बार तुमने उसका स्वाद ले लिया, तब प्रत्येक रूप, उसी का रूप बन जाता है। तब उस अरूप का चारों ओर विस्फोट जैसा होता है। लेकिन पहले एक व्यक्ति को उसका स्वाद पाना होगा। यदि मैं तुमसे कहूं कि वह इन हरे वृक्षों में है, वह जो हरा है—यह शब्द ही तुम तक पहुंचेंगे, लेकिन उससे भेंट न होगी। मैं जो कुछ कह रहा हूं तुम उसे समझ जाओगे, पर फिर भी तुम उसे समझ कर भी नहीं समझ पाओगे। तुम शब्दों को समझ लोगे: खोल तुम अपने साथ ढोये जाओगे,लेकिन उस खोल में बंद वह रस खो जायेगा। यदि तुमने उसका स्वाद पा लिया है, तो प्रत्येक वस्तु में उसी का स्वाद और हर चीज में उसी का रूप है। चट्टान में " वह ही ' चट्टान है, वृक्ष में, वही वृक्ष है, फूल में ' वह ही ' फूल है। सितारों में वह ही सितारा है। तब सभी रूप उसके ही रूप है। अनेक रूपों में लाखों रूपों में वह अपने को अभिव्यक्त कर रहा है। परमात्मा है—एक अभिव्यक्ति, एक प्रत्यक्ष साक्षात्कार—और एक दिव्य अनुभव। यदि तुम स्वयं अपने होने को देख सके तभी तुम उसे समझने में समर्थ हो सकोगे।

यदि तुममे कुछ प्रतिभा या कला है, यदि तुम चित्र बना सकते हो, यदि तुम गीत गा सकते हो, अथवा यदि तुम कोई कविता रच सकते हो, तब जब तक तुम ऐसा कर न लो, तुम प्रसन्नता का अनुभव न कर सकोगे, तुम्हें अपनी पूर्णता का अहसास न होगा।

जब तक अंतिम लक्ष्य तक पहुंच कर तुम्हारा सृजन परिपूर्ण न हो जाये, जब तक तुम्हारा केंद्र ही सृजनात्मक न हो जाये तुम्हें अनुभव होगा कि तुम कहीं किसी चीज से चूक रहे हो। तुम जान भी सकते हो, और

नहीं भी जान सकते हो, लेकिन तुम्हें एक रिक्तता का अनुभव होगा, तुम्हें अपने जीवन में एक बड़ा खालीपन सा लगेगा। तुम्हारे पास वह सभी कुछ हो सकता है, जो जीवन तुम्हें दे सकता है, लेकिन यदि तुमने वह अंतर्चेतना नहीं पाई, जो तुम्हारे अस्तित्व को अपने को अभिव्यक्त करने की अनुमति देती है, तब तुम गुलाब की उस झाड़ी की तरह होगे, जिसमें कभी भी फूल नहीं खिलोग। तब गुलाब की झाड़ी उदास बनी रहेगी, क्योंकि बिना गुलाब के गुलाब की झाड़ी ही व्यर्थ होती है। वहां उसके होने का आखिर महत्त्व ही क्या है? एक बाहर उसमें फूल आ जायें, तो गुलाब की झाड़ी को अपने होने का अर्थ और महत्त्व प्राप्त हो गया, गुलाब की झाड़ी सृजनात्मक बनी। उसकी आत्म मुक्त हुई, अब वह किसी बंधन में न रही।

यदि तुम मुझसे पूछो कि मोक्ष या मुक्ति क्या है, तो मेरे लिए तो मोक्ष तब है, जब तुम अपनी आत्मा को बंधन से मुक्त करते हो। मैं तुमसे यह नहीं कह रहा हूं कि मठों अथवा मंदिरों में जाओ और हिमालय की गुफा में बैठकर अपना समय नष्ट करो। मैं तुमसे सृजनात्मक आयाम की ओर गतिशील होने के लिए कह रहा हूं क्योंकि यही आयाम परमात्मा का भी है। यदि तुम्हारे पास गाने के लिए कोई गीत है, तो गाओ, और वही तुम्हारा मोक्ष होगा। यदि तुम्हारे अंदर कहीं चित्रण करने की चाह, तुम्हें चित्र बनाने को बाध्य कर रही है, तो चित्र बनाना ही तुम्हारे लिए मोक्ष बन जायेगा। नाचो, यदि नृत्य तुम्हारे हृदय में धड़क रहा है, तब उसे प्रकट होने दो। एक बार उसे अभिव्यक्ति मिली तो वह मुक्त हो जायेगा।

जैसा कि मैं देखता हूं तथाकथित धार्मिक लोग, सृजनात्मक लोगों की अपेक्षा कम धार्मिक हैं। मेरे लिए तुम्हारे तथाकथित महात्मा की अपेक्षा एक कवि कहीं अधिक धार्मिक है, क्योंकि वह सृजनात्मक हैं, और ये सभी लोग तुम्हारे तथाकथित महात्मा से कहीं अधिक धार्मिक हैं। ये लोग लगभग ऐसे मूर्ख लोग हैं, जो अपनी ताजगी खोकर शुष्क होते जा रहे हैं। ये लोग उस गुलाब की झाड़ी की भांति हैं, जिसमें गुलाब के फूल खिलना बंद हो चुके हैं और उन्हें गुलाब की झाड़ी भी कहना ठीक नहीं लगता। वे केवल अपना एकाकी और शुष्क जीवन जैसे किसी तरह काट रहे हैं।

भारत में एक बहुत बड़ा हादसा हुआ: और ऐसे साधु संतों को सम्मान दिया गया, जिनमें कोई सृजनात्मकता थी ही नहीं, और सम्मान देने के कारण मूर्खतापूर्ण

उनमें से कोई व्यक्ति उपवास रख सकता था— अब यह एक असृजनात्मक प्रक्रिया है, अथवा कोई व्यक्ति तपती धूप में घंटों खड़ा रह सकता था— अब यह काम सरकस में करना तो अच्छा है, लेकिन जीवन इससे समृद्ध नहीं होता: अथवा कोई व्यक्ति कांटों की शैथ्या बनाकर उस पर लेट सकता था? इसकी आखिर आवश्यकता क्या है, और ऐसा करके तुम क्या सृजित कर रहे हो? एक व्यक्ति कांटों पर लेटकर बहुत असंवेदनशील बन जाता है, और शरीर में ऐसे कई मृत स्थान हैं, जिन्हें यदि तुम खोजने का प्रयास करो तो उन्हें खोजने में समर्थ हो सकते हो। केवल अपनी पत्नी या पति से कहो कि वे एक कांटा या सुई लेकर तुम्हारी पीठ पर कई स्थानों पर उन्हें चुभायें। तुम देखोगे कि कुछ स्थानों पर तुम्हें पीड़ा का अनुभव होगा और कुछ स्थानों पर कोई अनुभव होगा ही नहीं, यही वे असंवेदनशील स्थान हैं। ये तुम्हारी पीठ के मृत बिंदु हैं। एक व्यक्ति को केवल उन्हें खोजना होता है, कि वे हैं कहां, तब तुम कांटों की शैय्या पर लेट सकते हो। और धीमे— धीमे शरीर सख्त, प्रतिरोधक और सुरक्षित बन जाता है। लेकिन ये लोग सारी संवेदनशीलता खो देते हैं, ये लोग कभी एक गीत को जन्म नहीं दे सकते, ये कभी भी नृत्य नहीं कर सकते। लेकिन भारत में इनके बारे में यह सोचा जाता है कि ये महात्मा हैं। यह एक कुरूपता और मूर्खता है, यह बहुत खतरनाक बात है—क्योंकि पूरा देश असृजनात्मकता की पूजा या सम्मान कर रहा है।

नर्तकों और गायकों का सम्मान करो, कवियों, चित्रकारों का सम्मान करो, सृजनात्मक लोगों का सम्मान करो—क्योंकि परमात्मा की केवल एक ही परिभाषा है कि वह सृजनहार है, उसमें सृजनात्मकता है, इसलिए सर्जक बनना तुम्हारा अपना अधिकार है। तब तुम्हारी जीवन सरिता उसके प्रवाह के समानांतर प्रवाहित होने लगती है। और यदि तुम वास्तव में सर्जक बन जाते हो, तुममें परिपूर्ण सृजनात्मकता आ जाती है, तुम उसकी सरिता में समाहित हो जाते हो। तुम्हारे माध्यम से वही कार्य करना शुरू कर देता है, सारी सृजनात्मकता उसी की होती है, इसीलिए तुम जब भी सृजन करते हो, तुम प्रार्थनापूर्ण होते हो। तुम भले ही मस्जिद अथवा मंदिर जाते हो या नहीं यह बात ही असंगत है।

बाउल बहुत सृजनात्मक सरल सा और सहज होते हैं। इसे मैं भारत में होने वाली बहुत बड़ी दुर्घटना या हादसा मानता हूं क्योंकि इसी के कारण बहुत सी चीजें लुप्त हो गई: इस देश में प्रतिभा और प्रतिभाशाली लोग ही लुप्त हो गए। उपवास करने में किसी प्रतिभा की कोई जरूरत नहीं होती, तुम्हें जरूरत होती है एक जिद्दी, सनकी और खच्चर जैसे मस्तिष्क वाले व्यक्ति की, केवल इतना सब ही काफी है, तुम्हें जरूरत होती है, स्वयं को दुःख देने वाले एक निर्दय चित्त और विध्वंसक व्यक्ति की, और इतना ही सब कुछ है।

इसीलिए तुम्हारे तथाकथित, महात्मा और कुछ नहीं, बल्कि स्वयं अपने को दुःख देकर उसमें सुख का अनुभव करने वाले विकृत चित्त के विध्वंसक लोग हैं। यदि तुम किसी अन्य व्यक्ति को भूखा मारो, तो तुम पुलिस द्वारा पकड लिये जाओगे, लेकिन यदि तुम स्वयं को भूखे रखकर अपने को ही मारो ,तो तुम्हें महात्मा समझ कर सम्मानित किया जाता है। लेकिन दोनों ही दशाओं में तुम दुःख और दर्द ही उत्पन्न कर रहे हो।

मैं हजारों साधुओं, मुनियों और भिक्षुओं के सम्पर्क में रहा हूं जिनमें हिंदू जैन और बौद्ध सभी साधु सम्मिलित हैं। ऐसा बहुत कम हुआ है कि मैं इनमें से किसी ऐसे व्यक्ति से मिला हूं जो बुद्धिमान और प्रज्ञावान हो, और मुझे यह देखकर थोड़ा आश्चर्य हुआ। लेकिन ये लोग कुछ विशिष्ट कार्य कर रहे हैं, जो सम्मान योग्य बन गए हैं, और कोई भी व्यक्ति यह पुनर्मूल्यांकन नहीं करता कि यदि तुम असृजनात्मक कार्यो का सम्मान करोगे तो धीमे— धीमे देश और भी अधिक असृजनात्मक होता जाएगा।

तुम जहां कहीं भी सृजनात्मकता देखो, आदर से अपना सिर झुका दो, क्योंकि परमात्मा और कुछ भी नहीं, बल्कि एक सृजनात्मकता है। इसीलिए जहां कहीं भी सृजनात्मकता के हस्ताक्षर हैं, वहां परमात्मा के ही हस्ताक्षर हैं। वह पहले ही से वहां है। भले ही कवि स्वयं इसे न जानता हो, लेकिन कहीं पार से किसी दिव्य चीज के स्पर्श का उसे अनुभव होता रहा है।

रवींद्रनाथ जब भी कविता लिखने के मूड में होते थे, वह अपने कमरे का दरवाजा अंदर से बंद कर लेते थे—कभी—कभी तो पूरे दिन, और कभी—कभी तो दो या तीन दिन वह कमरे से बाहर निकलोग ही नहीं थे। वह भोजन के बारे में भी भूल जाते थे, वह बाथरूम तक नहीं जाते थे, और वे अन्य प्रत्येक चीज के बारे में भूल जाते थे। उनका पूरा परिवार और उनके शिष्य चिंतित हो उठते थे। एक बार उन्होंने उनसे कहा— " आखिर ऐसा कब तक चलेगा?" और उन्होंने कहा था कि उनके इस कार्य में कभी भी कोई बाधा न डाली जाए क्योंकि जब भी उनकी चित्त दशा कविता लिखने की होती है, तो वहां परमात्मा होता है। इसलिए उनके कार्य में बाधा डालना, परमात्मा के कार्य में बाधा डालना है। वह रोते रहते, उनकी आंखों में आंसू भरते रहते और जैसे उनका रूप और आकृति ही बदल जाते।

एक बार ऐसा हुआ कि कुछ लोगों का समूह उनसे भेंट करने के लिए आया और वे सभी साथ—साथ चाय पी रहे थे। तभी अचानक रवींद्रनाथ के हाथों से प्याला फिसल गया और उन्होंने अपने नेत्र मूंद लिए। लोग समझ गए उन सभी ने इस सुंदर घटना को क्षण भर के लिए देखा। उनका पूरा चेहरा बदल गया—वह एक

अद्भुत दीप्ति, एक नूतन चमक से आलोकित हो उठा, जैसे कोई अदृश्य शक्ति उनमें प्रविष्ट हो गई हो। वे सभी बिना उन्हें बाधा पहुंचाए धीमे— धीमे चले गए। उनमें केवल एक व्यक्ति रह गया, जो यह देखने के लिए कि आखिर क्या घट रहा है, एक वृक्ष की ओट में छिप गया। वह व्यक्ति वहां पहली ही बार आया था। उसी व्यक्ति ने स्वयं मुझे बताया— " मैंने किसी भी व्यक्ति के रूप और आकृति में ऐसा परिवर्तन कभी भी नहीं देखा। धीमे— धीमे रवींद्रनाथ एक मनुष्य नहीं रह गए—वह एक दिव्य मनुष्य बन गये, उनमें जैसे एक दिव्यता और महान आनंदपूर्ण आवेश प्रविष्ट हो गया। और मैं उनके चेहरे पर वह दिव्य आलोक देखता रह गया, और तभी उन्होंने झूमते हुए गुनगुनाना और गीत गाना शुरू कर दिया। वे शब्द जैसे उनसे नहीं आ रहे थे, वे केवल माध्यम बन गये थे। वे तीन दिनों तक उसी भाव दशा में रहे।"

कविता का जन्म सदा तभी होता है, जब कवि खाली बांस की एक पोंगरी बन जाये। चित्र तभी जन्मता है जब चित्रकार अपने विचारों को चित्रण न करते हुए परमात्मा द्वारा अपने अधिकार में ले लिया जाता है। वह आवेशित हो उठता है। स्मरण रहे मैं चाहता हूं—मेरे संन्यासी सृजनात्मक बनें, क्योंकि मैं परमात्मा के निकट आने के लिए अन्य कोई दूसरा मार्ग जानता ही नहीं।

इन सभी असृजनात्मक धर्मों और असृजनात्मक धार्मिक लोगों ने और कुछ भी न करते हुए आपस में तर्क—वितर्क करते हुए और झगड़ते हुए और एक दूसरे की हत्या करते हुए मनुष्यता का बहुत बड़ा नुकसान किया है। किसी अज्ञात और पूर्व कल्पित वस्तु को सत्य मानने की समस्या के सम्बंध में एक चीज बहुत जटिल है कि तुम कुछ भी सिद्ध नहीं कर सकते। सभी अनुभव धुंधले और अस्पष्ट होते हैं। ईसाई यह सिद्ध नहीं कर सकते कि वे ठीक हैं। हिंदू भी सिद्ध नहीं कर सकते कि वे ठीक नहीं है। नहीं, कोई निर्णय कुछ भी तय नहीं कर सकता, इसलिए वे लोग लड़ते और झगड़ते रहते हैं। पूरी ऊर्जा जो सृजनात्मक बननी चाहिए वह विध्वासात्मक बन जाती है।

यह बात भी याद रखने जैसी है ' यदि तुम ऊर्जा का प्रयोग सृजनात्मक रूप से नहीं करते हो, यदि यह ऊर्जा, एक नृत्य, एक हास्य और एक प्रसन्नता नहीं बनती है, तो यही ऊर्जा हानिप्रद और विषैली बन जाएगी। वह विध्वंसक बन जाएगी। यह कहा जाता है कि एडोल्फ हिटलर एक चित्रकार बनना चाहता था लेकिन चित्रकला एकेडेमी ने उसे प्रवेश देने से इंकार कर दिया। जरा विचार करें: तब पूरा संसार पूरी तरह कुछ भिन्न हुआ होता, यदि उसे चित्रकला एकडेमी ने स्वीकार कर लिया होता। फिर वहां द्वितीय विश्व युद्ध हुआ ही न होता। पूरी मनुष्यता पूरी तरह भिन्न हुई होती। लेकिन यह व्यक्ति सृजनात्मक न बन सका। वह सृजनात्मक बनना चाहता था, उसके पास ऊर्जा थी, निश्चित रूप से उसके पास अत्यधिक ऊर्जा थी: उसने पूरे संसार को विनाश के गर्त में धकेल दिया और अन्य कोई भी व्यक्ति कभी ऐसा करने योग्य हुआ ही नहीं। लेकिन यह ऊर्जा वही थी, जो सृजनात्मक बन सकती थी, लेकिन विध्वंसक बनी।

मैंने सुना है:

एक पिता अपने पुत्र को सीख देते हुए मुक्केबाजी करके झगड़े तय करने के तरीके से होने वाले अनिष्ट के बारे में बतलाते हुए कह रहा था— " क्या तुम यह नहीं जानते कि जब तुम बड़े हो जाओगे, तो झगड़ों को निबटाने के लिए फिर तुम अपनी कलाइयों का प्रयोग नहीं कर सकते, और इसलिए तुम्हें शांतिपूर्ण और मित्रतायुक्त साधनों का प्रयोग करते हुए ही किसी निर्णय पर पहुंचना चाहिए। चीजों का रहस्य जानने के लिए उन्हें समझने की कोशिश करो, तर्क और प्रमाणों के द्वारा यह खोजने का प्रयास करो कि क्या ठीक है और ठीक होने से ही स्थायित्व आता है। स्मरण रहे कि शक्ति से तुम प्रत्येक को ठीक कर सकते। यद्यपि कमजोर व्यक्ति पर

शक्तिशाली व्यक्ति विजय प्राप्त कर सकता है, लेकिन फिर भी यह सिद्ध नहीं होता कि जो व्यक्ति निर्बल था, वह गलत था।"

लड़के ने घास पर ठोकर मारते हुए उत्तर दिया— " डैड। यह मैं जानता हूं पर यह मामला ही कुछ अलग था।"

— "अलग? क्यों अलग? कैसे अलग? ऐसी क्या बात थी जिसके बारे में तुम और जोनी बहस कर रहे थे कि तुम्हें उससे लड़ना ही होगा।"

— "उसने मुझसे कहा कि वह मुझे पीट सकता है और मैं उसे नहीं पीट सकता और यह जानने का वहां केवल एक ही रास्ता था कि हममें में ठीक कौन था?"

इसे मित्रतापूर्ण साधनों से तय नहीं किया जा सकता। यदि प्रश्न यही होता तो कौन किसे पीट सकता है, तब केवल मारपीट ही निर्णय कर सकती थी। विध्वंसात्मक व्यक्ति हमेशा बहुत अहंकारी होते हैं, क्योंकि वे यह नहीं जानते कि अपने अहंकार को कैसे छोड़ा जाए। सृजनात्मक लोगों को ही निरहंकारिता की झलकें मिलती है। वह निरहंकार होने की स्थिति भलीभांति जानता है। सृजनात्मक क्षणों में वह इतना अधिक अभिभूत हो जाता है कि उसे संसार के पार किसी चीज का स्वाद मिल जाता है। लेकिन एक विध्वंसात्मक वृत्ति का व्यक्ति निरहंकारिता की स्थिति को जानता ही नहीं, उसका अहंकार एक ही केंद्र पर इकट्ठा होकर बहुत शक्तिशाली हो जाता है। और तब पूरे संसार में युद्ध शुरू हो जाता है; हिंदू मूसलमानों से लड़ने लगते हैं मुसलमान, हिंदुओं से लड़ने लगते हैं ईसाई, यहूदियों से और यहूदी, ईसाइयों से लड़ने लगते हैं और पूरे संसार में केवल युद्ध और संघर्ष ही रह जाता है। सृजनात्मक होने से सभी मिलकर एक मधुर संगीत का आस्केस्ट्रा बन सकते थे, लेकिन होता है केवल युद्ध।

धर्म को सृजनात्मक बनना होगा। असृजनात्मक होने के बारे में सोच ऐसी होनी चाहिए जैसे वह मूल रूप से एक पाप है, और सृजनात्मक होने के बारे में सोच ऐसी होनी चाहिए जैसे केवल वही सर्वश्रेष्ठ सदाचार है।

लाखों करोड़ों सूर्यों का विस्फोट होगा
और उसके प्रकाश तथा चमक में
वह अरूप
हर कहीं, विविध रूपों में दिखाई देगा।

यदि तुम ठीक दिशा की ओर गतिशील हो—ग्रहणशील, सृजनात्मक, प्रमुदित, प्रेमपूर्ण और उत्सवपूर्ण हो—तो करोड़ों सूर्यों का विस्फोट होगा और एक दिन तुम अपने अंदर गहरे में अपने केंद्र या अपने तीर्थ पर पहुंच जाओगे।

और वह अरूप
हर कहीं विविध रूपों में दिखाई देगा।
तुम वह देख सकोगे
जो देखा नहीं जा सकता।
लेकिन केवल तभी
जब तुम स्वयं अपने अंदर के
अरूप में स्थित हो जाओ।

स्मरण रहे: तुम यह केवल तभी देख सकते हो यदि तुम अपने में ही अरूप हो सकते हो। यदि तुम उस अरूप को देखना चाहते हो तो तुम्हें अपने अंदर स्वयं ही अरूप बनना होगा, क्योंकि जब केवल वेवलैंथ समान

होती है, सहभागिता और अंतर्संवाद तभी संभव है। जब तुम अपने अंदर स्वयं आकृतिहीन या अरूप होते हो, तभी अचानक कुछ चीज जैसे क्लिक कर जाती है, कोई जैसे तुम्हारा द्वार खटखटा देता है और तुम परमात्मा के साथ एक हो जाते हो। वह भी अरूप है और तुम भी अरूप हो, फिर वहां दो अरूप हो ही नहीं सकते। वहां रूप और आकृतियां तो लाखों हो सकती हैं, लेकिन अरूप तो केवल एक ही हो सकता है।

यह अंदर का अरूप अथवा आकृतिविहीनता को कैसे उपलब्ध हुआ जाए? अहंकार को गिरा दो। यह तुम्हें एक सीमा में आबद्ध कर रहा है। ' मैं ' शब्द को ही पूरी तरह गिरा दो। इसका प्रयोग केवल बाहर के संसार में करो, यह वहीं उपयोगी है, लेकिन इसे अपने घर में कभी मत लाओ। अपने अंदर कभी भी ' मैं ' मत कहो, क्योंकि यह एक सीमा बना देती है, और इसी अवरोध के कारण तुम कभी भी अपने प्रीतम प्यारे के पास जाने में समर्थ न हो सकोगे, और न कभी तुम प्रीतम प्यारे को अपने निकट आने की स्वीकृति देने में समर्थ हो सकोगे। यदि तुम परमात्मा को समझना चाहते हो, तो कुछ न कुछ परमात्मा की ही भांति बनो। सृजनात्मक बनो— यह है पहली बात और दूसरी बात है— अरूप बनो।

कोमल भावनाओं और दीनता के द्वारा
कर्त्तव्यनिष्ठा अथवा माता—पिता के वात्सल्य के द्वारा
अथवा प्रेम के द्वारा शांत होकर
शांति प्रदान करने वाले उन भावों को खोज
जो तेरे साथ ही जन्मते हैं
और तब तू पूरी दृढ़ता से
उनका सम्मान कर!
ओ मेरे हृदय!
क्या तूने कभी हिसाब लगाया है,
कि प्रेम नगर में उसे खोजने के
जाने कितने मार्ग हैं?
अपने जीवन के अनमोल हीरे को पाने के लिए
नासमझी से आशा और अपेक्षा करने की गलती मत कर बैठना।
यह संसार एक उत्सव आनंद का समारोह है
जहां प्रेमी मिलकर
बच्चों की तरह खेल खेलोग हैं।
जीवन के अनमोल हीरे को पाने के लिए
अपनी संवेदनशीलता की प्रकृतियों को केंद्रित कर!
वह रास्ते में जहां तक आ पहुंचा है
प्रत्येक खोज ' उसी ' तक पहुंचने की है।

वह रास्ते में जहां तक आ पहुंचा है, प्रत्येक खोज ' उसी ' तक पहुंचने की है.....।

बाउल कहते हैं कि ' उस ' तक पहुचने के कोई भी निर्धारित नियम और कानून नहीं है। वहां इसकी कोई विधि भी नहीं है। उस तक पहुंचने का कोई भी राजमार्ग न होकर केवल छोटे—छोटे पदचिन्ह हैं। और प्रत्येक व्यक्ति को उसे अपने ढंग से खोजना होता है। निश्चित ही एक कवि को उसे अपने ढंग से खोजना होता है, एक नर्त्तक या नर्त्तकी को उसे अपने तरीके से खोजना होता है, एक प्रेमी उसे अपने ढंग से खोजता है और एक ध्यानी

को उसे अपने ढंग से खोजना होता है। इसलिए तुम्हें कभी वह सभी कुछ सुनना ही नहीं चाहिए जो दूसरे कह रहे हैं सुनो तो अपने भावों और संवेदनाओं की सुनो। तुम स्वयं प्रामाणिक बने रहो, और तुम परमात्मा के प्रति सच्चे और प्रामाणिक बने रहोगे। उसने कुंजी तो तुम्हें पहले ही से सौंप दी है— और वह कुंजी है तुम्हारी संवेदनाएं। कभी भी अनुकरण मत करो ,क्योंकि सभी के लिए एक ही मार्ग नहीं है! यदि तुम मुझे ठीक से समझ गए तो वास्तव में यह धार्मिक संसार, बिना धर्मों का एक संसार होगा—जहां न कोई हिंदू न कोई मुसलामन न कोई ईसाई और न कोई जैन होगा। एक सच्चा और वास्तविक संसार जो धार्मिक होकर सभी धार्मिक लोगों का होगा जहां प्रत्येक व्यक्ति अपने— अपने ढंग से खोज कर रहा होगा। और परमात्मा असीम है, वह किसी मार्ग तक ही सीमित नहीं है।

जीसस कहते हैं— " मेरे परमात्मा के महल में बहुत से भवन हैं।" हां! वहां उसके लाखों द्वार हैं। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति के लिए वहां एक अलग और विशिष्ट द्वार है, तुम्हारे सिवा कोई अन्य व्यक्ति उस द्वार में प्रवेश नहीं कर सकता। इसलिए अनुकरण मत करो अनुकरण करने से, झूठापन, नकलीपन और अप्रामाणिकता उत्पन्न होती है। केवल अपने ढंग से अनुभव करो और इस बारे में फिक्र मत करो कि दूसरे क्या कहते हैं। यह किसी अन्य व्यक्ति से सम्बंधित बात नहीं है। इसकी भी फिक्र मत करो कि उपासना—स्थल और धर्म—संस्थाएं क्या कहती हैं—केवल अपने हृदय की बात सुनो।

बाउल बहुत ही वैयक्तिक हैं। धर्म को वैयक्तिक ही होना चाहिए क्योंकि यह प्रत्येक अस्तित्व को अलग—अलग तरह से बदलने की विधि है। लेकिन अभी तक सभी धर्मों ने, व्यक्ति की निजता को नष्ट करने और प्रत्येक व्यक्ति को भीड़ का एक भाग बनाने का प्रयास करने के सिवा और किया ही क्या है? उन्होंने व्यक्तिगत लोगों को नष्ट कर, भीड़ भरे समाज का गठन किया है। इस बारे में बाउल विद्रोही है।

वह जिसने अपने प्यारे कल्याण मित्र का—
सौंदर्य देख लिया
वह उसे कभी भी भूल नहीं सकता।
रूप और आकृति तो देखने के लिए होते हैं
न कि संभाषण अथवा बात करने के लिए
जैसे कि सुंदरता की कोई तुलना होती ही नहीं।
जिसने उसके रूप की द्युति
अपने हृदय के दर्पण में देख ली,
उसके हृदय का अंधकार मिट गया।
जीवन मृत्यु की सरिता के मध्य
उसका हृदय
सदा सौंदर्य में भक्ति— भाव से डूबा हुआ
देवताओं को चुनौती देता है।

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ही दृष्टि पर आना होता है, और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी ही आंखों के द्वारा देखना होता है। तुम मेरी आंखों से नहीं देख सकते और तुम मेरे हाथों के द्वारा उसका स्पर्श नहीं कर सकते। यदि फिर भी मैं तुम्हारा हाथ पकड़कर ' उसके ' हाथ पर रख दूं फिर भी वह कभी उस तक पहुंचेगा नहीं क्योंकि तुम पहले से तैयार ही नहीं हो। यदि तुम तैयार हो, तो वह हमेशा तुम्हारी पहुंच में है। बाउलों की दृष्टि में पहले से तैयार होना क्या है—वैयक्तिक।

स्मरण रहे, परमात्मा बहुत मौलिक हैं वह कभी भी ठीक वैसा ही प्रतिरूप फिर नहीं बनाता। एक बुद्ध, एक ही बुद्ध हैं, एक कृष्ण, एक ही कृष्ण है—वह कभी उन्हें दोहराता नहीं। इसलिए गीता और धम्मपद को लादे हुए मत चलो। उन्हें सुंदर साहित्यिक रचना की तरह पढ़ो: उन्हें एक काव्य के रूप में पढ़ो, लेकिन उन्हें धर्म मानकर मत पढ़ो। महान कला और साहित्य के रूप में उनका अध्ययन करो, लेकिन धर्म की तरह नहीं। कुरान के उच्चारण को सुनो—वह अत्यंत सुंदर है, भले ही तुम उसे समझो अथवा नहीं, भले ही तुम उस भाषा को भी जानो या नहीं। कुरान शब्द का अर्थ है—उसका उच्चारण करना, उसे गाना। किसी भी अन्य ग्रंथ से, जो इतनी सुंदरता से गाते हुए पढ़ा जाए इसकी तुलना नहीं की जा सकती। इसमें एक सौंदर्य बोध है, इसमें ध्वनि की अत्यधिक सुंदरता है। इसे सुन कर देखो।

बाइबिल को पढ़ो—जीसस के दृढ़ता से दिए गए साधारण वक्रव्यों या वचनों

का अतिक्रमण करने में कभी भी कोई साहित्य समर्थ नहीं है—लेकिन उसे धर्म मानकर कभी मत पढ़ो। धर्म तो तुम्हें स्वयं ही खोजना होगा। तुम उसमें काव्य पा सकते हो, सुंदर वक्तव्य पा सकते हो। और मैं यह नहीं कर रहा हूं कि उन्हें पढ़ो मत, क्योंकि वे तुम्हारी पैतृक सम्पत्ति हैं। उन्होंने तुम्हें समृद्ध बनाया है। एक व्यक्ति जिसने बुद्ध के बारे में नहीं पढ़ा है, और जिसने उनके वक्तव्यों और वचनों को नहीं पढ़ा, समकालीन नहीं बन सकता। किसी चीज से वह चूकता रहेगा। यदि तुमने कुरान और बाइबिल को और महावीर की वाणी को नहीं पढ़ा, तब तुम्हें किसी बहुत सारभूत चीज का अभाव बना रहेगा। तुम उसके बिना निर्धन बने रहोगे। उसे पढ़ो—एक महान साहित्य की भांति। उसका आनंद लो, प्रसन्न चित्त बने रहो, लेकिन उस पर विश्वास मत करो। एक कविता विश्वास करने के लिए नहीं होती, वह तो आनंदित होने के लिए होती है।

विश्वास उधार लिया होता है। तुम्हें अपना विश्वास स्वयं खोजना होगा, तुम्हें अपनी श्रद्धा स्वयं खोजनी होगी। कठिन है मार्ग, रास्ते बहुत श्रमपूर्ण हैं। प्रारम्भ में तो पहुंचना लगभग असम्भव दिखाई देता है, लेकिन मैं तुमसे कहता हूं यह केवल आकृति है। यदि तुम चलना शुरू करोगे, यदि तुम प्रार्थना करना प्रारम्भ कर दोगे, यदि तुम नाचना शुरू कर दोगे और यदि तुम उसके नाम पर गीत गाना शुरू कर दोगे तो ' वह ' आ पहुंचता है।

क्या तुम मेरे अंदर स्थित घर को देखना चाहते हो?
और मेरे हृदय के अमृत का पान करना चाहते हो?
जहां प्रेमी, उत्सव आनंद के समारोह में—
प्रेम—गीत गाते आगे बढ़ते हैं
कहीं तुम उसमें प्रवेश करने में असफल तो नहीं हो जाओगे?
तब उस तक जाने वाले मार्ग में
सौंदर्य का दीप अपने साथ रखना।
अपने लोभ और अपनी वासना को,
संसार की सारी विशेषताओं और तौर—तरीकों को पीछे छोड़ देना।
आरोप और हिंसा।
बूढ़ी होती उम्र, और मृत्यु
प्रातःकाल की उजास और शाम का धुंधलका
वहां रहते ही नहीं।
केवल सतरंगी किरणें
वहां दमकती दीप्ति फैलाती रहती हैं

जो नहीं देखा जा सकता, तुम वह देखोगे। असम्भव लगने वाला ही घटित होगा। धर्म एक असम्भव और कठिन विद्रोह है। लेकिन यह घटता है—यह विश्वास करना लगभग असम्भव है, पर यह होता है। यह साधारण मन के इतने अधिक पार है: यह तर्क से इतना परे है, यह इतना अधिक बुद्धि के पार है, कि विश्वास करना कठिन हो जाता है, यह घट सकता है— और यह घटता है। मेरी आंखों में झांको, जरा मेरी ओर देखो, निरीक्षण करो और अनुभव करो, कि यह घटा है। यह तुम्हें भी घट सकता है।

तुम वह देख सकोगे
जो देखा नहीं जा सकता।
लेकिन केवल तभी
जब तुम स्वयं अपने अंदर के अरूप में स्थित हो जाओ।

लेकिन इसकी कला केवल यही है कि तुम्हें यह सीखना है कि अपने अंदर अरूप में कैसे स्थित हुए जाये। कैसे वह अहंकार गिराया जाये, जो सभी धर्मों का केंद्र—बिंदु है, कैसे अपने मैं को, स्वयं को पूरी तरह मिटाया जाए इतनी पूर्णता से कि तुम्हारा कक्ष मात्र एक शून्यता रह जाए जैसे तुम बस एक कक्ष, केवल एक स्थान, एक शुद्ध शून्यता भर हो। उसी परिपूर्ण शून्यता में किसी भी व्यक्ति को वह दीखना शुरू हो जाता है, जो देखा नहीं जा सकता, और उसे वह सुनाई देना प्रारम्भ हो जाता है, जिसे सुना नहीं जा सकता, और एक व्यक्ति को उस स्पर्श का अनुभव होना शुरू हो जाता है, जिसे स्पर्श नहीं किया जा सकता, और तब कोई उस बिंदु पर पहुंचता है, जहां सारी खोज, सारी कामनाएं और सारी भटकन विलुप्त हो जाती है। वह परिपूर्ण तृप्त हो जाता है।

यह आशीर्वाद, तुम्हारा जन्मसिद्ध अधिकार है। और यदि तुम इससे चूक रहे हो, तो इसके लिए कोई दूसरा उत्तरदायी नहीं है। केवल तुम, और केवल तुम ही जिम्मेदार हो। यदि तुम इसके चूक रहे हो तो अब और, एक क्षण के लिए भी चूकने की कोई जरूरत नहीं है। एक बार यह बात समझ में आ जाए फिर समस्या क्या है? तुम स्वयं अपने आपको उठाकर एक ओर अलग क्यों नहीं रख सकते? तुम उस स्थिति में क्यों नहीं बने रह सकते, जहां किसी भी ' मैं ' का अस्तित्व ही न हो? कभी—कभी ऐसा किसी संयोग से भी घट जाता है। किसी सुंदर महान संगीत को सुनते हुए कभी—कभी ऐसा हो जाता है, कि तुम यह भूल जाते हो कि तुम हो। तुम हो, जितने कभी पहले थे, तुम उससे भी कहीं अधिक हो—कहीं अधिक जमीन से जुड़े हुए कहीं अधिक केंद्रित, लेकिन फिर भी तुम भूल जाते हो कि ' तुम ' हो। महान संगीत में यह विलुप्त हो जाता है। हिमालय के शिखर का निरीक्षण करते हुए कभी—कभी यह ' मैं ' मिट जाता है। यह इतनी अधिक आश्चर्यजनक इतनी अद्भुत, और इतनी अधिक पवित्र है... हिमालय की, बिना किसी के द्वारा स्पर्श की गई, यह अछूती सुध बर्फ कि एक क्षण के लिए तुम अपने ही अस्तित्व के सर्वोच्च शिखर को छू लेते हो, और तुम्हारा अहंकार, कहीं नीचे गहराई में छूट जाता है।

कभी—कभी, यदि रात में तुम अचानक जाग जाते हो, तो एक क्षण के लिए तुम इस बारे में उलझन में पड़ जाते हो, कि तुम कौन हो और कहां हो। यदि तुमने इसे नहीं देखा है, तो अपनी पत्नी या पति से कहो, कि वे एक दिन तुम्हें रात में हिलाकर अचानक जगा दें, फिर देखो, कुछ क्षणों के लिए ही तुम होते हो, लेकिन इस बात का अनुभव नहीं होता है—कि तुम कौन हो? तुम्हारा नाम, तुम्हारी आकृति, और पहचान वहां होती ही नहीं। तुम इतनी गहरी नींद से आ रहे हो, कि अहंकार को वस्त्र पहिन कर वापस आने में थोड़ा समय लगेगा।

ऐसा प्रेम में भी होता है। पास बैठे हुए दो प्रेमी दो नहीं है—उन दोनों के बीच कुछ चीज ऐसी है जो गिर गई है, मिट गई है। अवरोध मिट गए हैं। उन्होंने एक दूसरे को आच्छादित कर लिया है। ऐसा संयोग से भी होता

है, लेकिन यदि तुम इसे समझ गए हो, तो धीमे— धीमे तुम अपने में उसे विकसित होने की अनुमति दो। धर्म के बारे में यही सब कुछ है।

ओ मेरे हृदय।
तू अपने आपको उस वेष में सज्जित कर
जिसमें सभी स्त्रियोचित सार—तत्व हों।
तू अपनी प्रकृति और आदतों को बदल कर
ठीक उन्हें उनके विपरीत बना ले।
तभी जैसे लाखों करोड़ों सूर्यों का विस्फोट होगा,
और उसकी चमक तथा प्रकाश में
वह अरूप, हर कहीं विविध रूपों में दिखाई देगा।
तू वह देख सकेगा
जो देखा नहीं जा सकता,
लेकिन केवल तभी
यदि तू स्वयं अपने अंदर के—अरूप में स्थित हो जाए।
आज इतना ही।

दसवां प्रवचन

प्रेम है एक मृत्यु

प्रश्नसार:

पहला प्रश्न : प्यारे भगवान! अब वहां न कोई खोज रही और न कोई तलाश रही वह सब कुछ बंद कर दिया मैने उसमें कुछ भी तो विशिष्ट नहीं पाया, लेकिन अब मैं अपने को स्वतंत्र पाता है जैसे सभी से मुक्त हो गया हूं मैं अपने काम धंधे पर बाहर जाता जरूर हूं पर बिना किसी व्यग्रता के यह मेरे लिए वरदान और आशीर्वाद जैसा है? और मैं यहां आपकी उपस्थिति में उमड़ती कृतज्ञता की एक बाढ़ का अनुभव करता हूं।

यहां खोजने के लिए कुछ भी विशिष्ट या खास नहीं है। किसी विशिष्ट की खोज ही भ्रमपूर्ण है, पूरी तरह से एक धोखा है। मन कुछ विशिष्ट चीज की खोज करना चाहता है, मन के साथ यही समस्या है। परमात्मा कोई विशिष्ट चीज अथवा कोई विशिष्ट अस्तित्व नहीं है।परमात्मा है—पूर्ण अस्तित्व। जो सभी कुछ है, वही परमात्मा है। परमात्मा एक महान विश्वजनीन व्यापकता, और एक परम नियम है। तुम उसे कहीं भी खोज नहीं सकते, क्योंकि वह हर कहीं है। तुम उसे किसी खास स्थान में नहीं खोज सकते, क्योंकि वह पूर्ण और अखण्ड है। तुम उसकी ओर इशारा नहीं कर सकते, जो भी इशारा होगा, वह गलत ही होगा। वह सभी दिशाओं में है। वह सभी में है और सभी के बिना भी है।

मन बहुत संकीर्ण है, वह उसे बहुत एकाग्रता से खोजे चला जाता है। एकाग्रता के द्वारा तुम परमात्मा के निकट नहीं पहुंच सकते। एकाग्रता, मन का मार्ग है। परमात्मा सर्वत्र, सभी जगह है, इसलिए तुम्हें विश्राममय होना होगा, तुम्हें ध्यानी बनना होगा। एकाग्रता और ध्यान में यही अंतर है। एकाग्रता है मन को किसी चीज पर पूरी तरह केंद्रित करना। और कामना क्या है: एक एकाग्र मन, एक ऐसा मन जिसका कहीं पहुचने का इरादा है, किसी चीज तक पहुंचना है, एक महान खोज करनी है—लेकिन इसे संकीर्ण बनाना होता है और परमात्मा है अनंत।

तुम्हें विश्राममय होना होगा, और तुम्हें सारी खोज छोड़नी होगी—केवल तभी तुम उसे पा सकोगे। खोजो, और तुम उसे कभी भी नहीं पाओगे। जो कुछ तुम्हारे चारों ओर है, केवल उसके साथ बने रहो और वह वहां तुम्हारे चारों ओर सदा से ही है। उसने एक क्षण के लिए भी कभी तुम्हें छोड़ा ही नहीं, क्योंकि तुम उसके बिना जीवित ही नहीं रह सकते। एक क्षणांश भी उसके बिना जीवित रहना असम्भव है। ' वह ' तुम्हारा जीवन है। वह तुम्हारा अस्तित्व है। तुम भोजन के बिना महीनों तक जीवित रह सकते हो, तुम बिना पानी के भी कुछ दिनों तक जीवित रह सकते हो, तुम कुछ क्षणों तक बिना वायु के भी जीवित रह सकते हो, लेकिन तुम बिना परमात्मा के क्षण के एक छोटे से भाग अर्थात् क्षणांक भी जीवित नहीं रह सकते। यह असम्भव है।

यहां मेरा प्रयास यही है: विश्राममय होने में तुम्हारी सहायता करना। मैं यहां तुम्हें तनावपूर्ण और महत्त्वाकांक्षी बनाने के लिए नहीं हूं। मैं इसलिए भी नहीं हूं यहां, कि तुम परमात्मा को खोजने की कामना में लगे रहो। एक व्यक्ति जो खोज रहा है, वह अभी संसार में ही है। खोजी संसार का ही एक भाग है। एक दिन वह धन, शक्ति और प्रतिष्ठा खोज रहा था, अब वह परमात्मा, आशीर्वाद और स्वर्ग खोज रहा है, लेकिन खोज जारी है, उसने केवल खोज की वस्तुएं बदल दी हैं, लेकिन वह वैसा ही बना हुआ है। मैं यहां तुम्हारी सहायता करने के लिए हूं जिससे तुम यह आवश्यक बात समझ लो कि परमात्मा की स्थिति तो पहले ही से वही है। तुम ठीक उस

मछली की तरह हो, जो पहले ही से सागर में है। यह हो सकता है कि सागर इतना अधिक विराट और स्पष्ट है कि तुम उसे देख नहीं सकते: तुम उसी में जन्मे हो, तुम उसी से पोषित हुए हो और उसी में लुप्त हो जाओगे। यह प्रश्न पहचान का है, खोज का नहीं है।

एक खोजने वाला चित्त एकाग्र बन जाता है। विश्राममय होकर उसे पहचानो। इसलिए मैं तुमसे परमात्मा खोजने के लिए नहीं कहता, मैं तुमसे ठीक अभी उसे जीने के लिए कहता हूं। वहां उसे खोजने की कोई आवश्यकता ही नहीं—ठीक अभी उसका आनंद लो, उत्सव मनाओ। इसे एक समारोह और त्यौहार बनाओ। वह पहले ही से घटित हो चुका है। वह केवल तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा है कि तुम उसके साथ नाचो और आनंद मनाओ।

अच्छा है। गिरीश पूरी तरह ठीक कह रहा है: '' मैंने उसमें कुछ भी विशिष्ट नहीं पाया।'' सबसे आवश्यक बात यही है: कुछ भी उसमें विशिष्ट या खास नहीं मिला उसे..... ''लेकिन मैं स्वतंत्र होने का अनुभव करता हूं मैं जैसे सभी से मुक्त हो गया हूं..... '' ठीक यही बिंदु समझने जैसा है। एक बहुत बड़ी मुक्ति की आवश्यकता है—इच्छाओं से मुक्ति, खोज से मुक्ति, तलाश करने की मुक्ति और संकीर्ण मस्तिष्क से मुक्ति। एक व्यक्ति सभी आयामों में बस विश्राम ही करता है। जब तुम विश्राम करते हो, तुम बहुआयामी बन जाते हो, जब तुम खोजते हो, तो एक ही आयाम में रहते हो। जब तुम विश्राम करते हो, तुम अखण्ड के एक भाग बन जाते हो, जब तुम खोज करते हो, तो तुम अहंकार में बने रहते हो।

यह कुछ नहीं ही वह परमात्मा है, और यह स्वतंत्रता, यह अपरिमित मुक्ति— जिसमें तुम्हें बांधने को फिर कोई कामना रहती ही नहीं, किसी भी बंधन का कोई भी अस्तित्व रहता ही नहीं, वहीं मोक्ष है, और वहीं मुक्ति है। मोक्ष या मुक्ति कोई भौगोलिक चीज नहीं है।

ऐसा नहीं कि यह कहीं किसी स्थान में हो, या तुम्हारे मरने के बाद मिलने वाली कोई चीज हो, यह ' यहीं ' और अभी ' में रहने की एक पहचान है। सारी खोज और तलाश से मुक्त हो जाओ।

इस संसार में यहां केवल दो ही तरह के लोग हैं पहली तरह के लोग निरंतर खोजते ही रहते हैं। वे खोजते हैं और वे कभी भी पाते नहीं, क्योंकि पाने का मार्ग खोजना नहीं है। वे एक चीज खोजते हैं, तब दूसरी चीज, तब फिर कोई अन्य चीज, वे निरंतर अपनी वस्तुएं बदलोग रहते हैं, लेकिन वे खोज जारी रखते हैं। ये सभी एक आयामी लोग हैं। वे परमात्मा से चूक जाते हैं क्योंकि परमात्मा बहुआयामी है। यह सभी एक सीधी रेखा में चलने वाले लोग हैं और परमात्मा सभी दिशाओं में व्यास है। तुम उसे रेखीय तर्क के द्वारा नहीं पा सकते।

तब यहां दूसरी तरह के लोग भी हैं—बहुत थोड़े से लोग, जो खोजते ही नहीं, जो आनंद मनाते हैं, जो कुछ भी उन्हें उपलब्ध हो उसी में प्रसन्न रहते हैं, जो नाचते और गाते हैं। ये बाउल हैं, ये ही लोग वास्तव में प्रामाणिक धार्मिक मनुष्य हैं।

परमात्मा कहीं भविष्य में नहीं है। यदि तुम आनंदित हो, तो वह यहीं है। यदि तुम उत्सव मना रहे हो तो तुम उसे ठीक अपनी बगल में पाओगे, लेकिन यदि तुम उसे खोज रहे हो, तो तुम उसे कहीं भी न पाओगे। खोजने वाला मन कभी सत्य तक पहुंचता ही नहीं। और कोई भी जो बहुत अधिक खोजी बन जाता है, धीमे— धीमे बहुत अधिक अभ्यास से वह अपने को नियमित और नियंत्रित कर लेता है। इसीलिए तुम खोज करते ही जाते हो। तुम कल भी खोज रहे थे, तुम आज भी खोज रहे हो, तुम कल भी खोजोगे, अपने पूर्व जन्मों में भी तुम खोज रहे थे, इस जीवन में भी तुम खोज रहे हो, और भविष्य के जन्मों में भी तुम उसे खोजोगे। खोजना एक आदत बन जाती है। वह एक ढांचा बन जाता है। इस ढांचे को गिरा दो।

यही मेरा संदेश है। 'वह' यहीं, अभी, इसी क्षण है। ' उससे ' चूको मत। यहां खोजने की कोई आवश्यकता ही नहीं है, तुम्हें भी केवल यहीं बने रहना है, इस समय ' वह ' यहीं है, और उससे मुलाकात, अंतर्संवाद, और परमानंद की अनुभूति, सभी कुछ हो सकती है तुम उसके साथ मिलकर एक बन सकते हो।

"मैं अपने काम— धंधे के सम्बंध में बाहर जाता जरूर हूं पर बिना किसी उत्कंठा के—"बहुत सुंदर है। क्योंकि तब हर चीज उसी की है, काम धंधा भी उसी का है। जब तुम स्नान कर रहे हो, तो तुम उसी को नहला रहे हो। जब तुम शावर के नीचे खड़े हो, तो 'वह' ही तुम पर बरस रहा है। जब तुम भोजन कर रहे हो, तो वह ही खा रहा है, और जब तुम तृप्त होने का अनुभव कर रहे हो तो वह ही तृप्त हो रहा है।

जब तुम गीत गा रहे हो, वह ही तुम्हारे अंदर गा रहा है, और वही उसका श्रोता भी है। वह ही तुम्हें सुन भी रहा है। प्रत्येक क्षण और प्रत्येक कर्म उसकी उपस्थिति से आलोकित हो उठता है—जागने पर वही तुममें जागता है, सोते हुए वह ही सोता और विश्राम करता है—तब वहां कुछ भी उलझन होती ही नहीं। तब एक लयबद्धता घटित होती है। यही है वह धार्मिक जीवन, और इस बारे में यही सब कुछ है। धार्मिक जीवन, साधारण जीवन से कोई पृथक चीज नहीं है। यह किसी मंदिर या मठ का जीवन नहीं है, यह वह जीवन है, जो पूर्ण रूप से, बेशर्त, समग्रता से परमात्मा को समर्पित है। अब कोई इस तरह जीता है, क्योंकि वह चाहता है कि तुम जीवित रहो। और कोई इस कारण प्रसन्न रहता है, क्योंकि उसने तुम्हें अपना उपकरण बनाने के लिए चुन लिया है। तब तुम उसके अधरों की एक बांसुरी बन जाते हो तब प्रत्येक चीज अत्यधिक सुंदर बन जाती हैं। यह वही है जिसे बाउल कहना चाहते हैं

"और मैं यहां आपकी उपस्थिति में, उमड़ती कृतज्ञता की एक बाढ़ का अनुभव करता हूं।" कृतज्ञता तब उमड़ती है, तुम जब भी परमात्मा की उपस्थिति अपने चारों ओर अनुभव करते हो, और तब कृतज्ञता ही रह जाती है। तब तुम्हारी पूरी ऊर्जा एक अहोभाव बन जाती है, तब तुम्हारा पूरा अस्तित्व धन्यवादी बन जाता है, वह एक प्रार्थना बन जाता है—क्योंकि तुम किसी भी चीज से नहीं चूक रहे हो, और यह संसार इतना अधिक पूर्ण और समृद्ध है, और यहां प्रत्येक चीज है, जिस प्रकार उसे होना चाहिए। कृतज्ञ होना स्वाभाविक है। कृतज्ञता कोई ऐसी चीज नहीं है, जिसका अभ्यास किया जा सके। तुम्हें कृतज्ञ होना सिखाया गया है, लेकिन तुम हो नहीं सकते। कृतज्ञता एक परिणाम है, जब तुम परमात्मा को अपने निकट महसूस करते हो, कृतज्ञता स्वयं उमडती है। यह एक बाई—प्रोडक्ट है। सम्मान भाव सहज रूप से उठता है। यह सम्मान भाव कुछ ऐसी चीज है, जो तुमसे परे है। तुम्हें सिखाया गया है कि तुम अपने माता—पिता के प्रति कृतज्ञ बनो, तुम्हें सिखाया गया है कि तुम अपने शिक्षकों के प्रति और अपने से बड़ों के प्रति कृतज्ञ बनो, लेकिन यह सभी केवल अनुशासन और आदतों में ढालने का प्रयास है। जब असली कृतज्ञता का जन्म होता है तब तुम देख सकते हो कि उसमें वहां कितना बड़ा अंतर होता है। जो कृतज्ञता सिखाई गई थी, वह केवल एक धारणा थी, एक मृत कर्मकाण्ड था। तुम ठीक एक मशीन की तरह उसका पालन कर रहे थे। जब असली कृतज्ञता तुम्हारे अस्तित्व में ऊर्ध्वगामी होती है, तब तुम्हें पहली बार यह अनुभव होता है कि क्या होती है प्रार्थना और क्या होता है प्रेम?

अच्छा है, यह स्मरण बना ही रहे, यह विश्राम बना ही रहे, यह अनुभव जो तुम्हें हो रहा है, इसे खोना नहीं है यह जारी रहे, यह अनुभव केवल वह अनुभव है, जो जीवन को अर्थपूर्ण बनाता है, जो जीवन को एक दीप्ति और एक वरदान देता है। तुम धन्यभागी हो, लेकिन इस गैल को कभी छोड़ना नहीं है। इसे पाना बहुत कठिन है और इसे खो देना भी बहुत सरल है—क्योंकि मन का एक लम्बा इतिहास रहा है और यह बहुत शक्तिशाली है, और यह नया अनुभव अभी ठीक एक अंकुर जैसा है, बहुत कोमल, नाजुक। मन की वजनी चट्टान उसे किसी भी क्षण कुचल सकती है, इसलिए बहुत सजग रहना है।

जो लोग परमानंद के आध्यात्मिक अनुभव जैसी कोई भी चीज नहीं जानते हैं, जिन्होंने कभी भी परमात्मा की कोई उपस्थिति महसूस नहीं की है, उन्हें बहुत सजग होने की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन वह व्यक्ति जिसे उसका अनुभव है, जिसने एक झलक देखी है, जिसे एक छोटी सतोरी लगी है, उसके पास खोने के लिए बहुत कुछ है। उसे बहुत सावधान रहना होगा। अधिक सावधान बनो। उसे घटने की स्वीकृति दी जो तुम्हें घटा है और अधिक से अधिक जिसे घटना है। अपनी जड़ें और गहराई तक ले जाओ जिससे नाजुक अंकुर मजबूत हो जाये और जो कुछ नया है उसकी जड़ें तुम्हारे अस्तित्व में गहराई तक उतर जायें।

वास्तव में जो लोग खोज रहे हैं, उसे तलाश कर रहे हैं, वे ही इस बारे में अधिक शोर करते हैं, क्योंकि ये ही लोग पूरी तरह बेखबर हैं, और जब वे अंत में वहां पहुंचते हैं, वे पाते हैं कि वहां कुछ भी नहीं है।

मैंने सुना है :

एक वकील मुल्ला नसरुद्दीन से, जो गवाही दे रहा था, प्रश्न पूछ रह था। उसने पूछा— " और आप यह कहते हैं कि आप दूसरी मई को श्रीमती सुलाना से भेंट करने उनके घर गये? अब क्या आप जूरी को यह बतायेंगे कि उन श्री मतीजी ने आपसे कहा क्या ?"

मुल्ला के पक्ष के वकील ने टोकते हुए कहा— "यह प्रश्न पूछे जाने से मुझे ऐतराज है।" और दोनों वकीलों के बीच लगभग एक घंटे तक इसी बाबत बहस चलती रही। अंत में न्यायाधीश ने प्रश्न पूछने की अनुमति दे दी।

पहले वकील ने फिर शुरुआत करते हुए पूछा— " और जैसा कि मैं कह रहा था कि आप दो मई को श्रीमती सुलाना से मुलाकात करने के लिए उनके घर गये थे, अब आप बतायें उन्होंने आपसे क्या कहा?"

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया— " कुछ भी नहीं। वह घर पर मिली ही नहीं।"

एक दिन जब तुम पहुंच जाते हो, तुम आश्चर्य में पड़ जाते हो कि जिस चीज के लिए तुम जन्मों—जन्मों से खोज कर रहे थे, जो वहां कभी थी ही नहीं, और जो वहां थी ही नहीं, वह तुम्हारे ही पास थी और उसे खोजने की कोई जरूरत थी ही नहीं।

प्रसन्न रहो, आनंदित रहो। परमात्मा कोई वस्तु नहीं है, वह एक तरीका या एक दिशा है, वह उत्सव आनंद के समारोह को मनाने का एक ढंग है। उदासी छोड़ो। वह तुम्हारे इतने अधिक निकट है नाचो! लम्बो लटके चेहरों से उसे चोट लगती है क्योंकि वह तुम्हारे अत्यंत निकट है। अपने छोटे—मोटे दुखों और चिंताओं को भूल जाओ। महत्त्वहीन चीजों के बारे में सोचे ही मत जाओ, वह तुम्हारे इतने अधिक निकट है। उसे स्वीकृति दो कि वह तुम्हारा हाथ थाम ले। वह काफी लम्बी अवधि से तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रहा है।

दूसरा प्रश्न :

यदि आपको कभी एक बाउल, एक तात्रिक और एक योगी से मिलने का अवसर मिले तो आप किसके साथ चाय पीना पसंद करेंगे?

यह बहुत जटिल प्रश्न है। उत्तर देना आसान नहीं है, लेकिन फिर भी मैं प्रयास करूंगा।

मैं योगी से कहूंगा कि वह एक प्याला चाय तैयार करे, क्योंकि ये लोग बहुत शुचिता और शुद्धता से रहते हैं। और मैं तांत्रिक से कहूंगा कि वह उसे ' सर्व ' करे क्योंकि वे जानते हैं कि किसी चीज को कैसे भेंट या प्रस्तुत किया जाये, वे इसके सारे नियम कानून और कर्मकाण्ड जानते हैं।

लेकिन मैं चाय तो बाउल के ही साथ पीने जा रहा हूं।

तीसरा प्रश्न :

जब कोई सभी विचारों से खाली हो जाता है? सारी योजनाएं और सभी इच्छाओ से शून्य हरे जाता है? तो उस व्यक्ति के बाह्य और आंतरिक जीवन में किस तरह का रूपांतरण घटित होता है? वह किस तरह का आचरण करेगा? वह कैसे चीजों को देखकर और वह संसार में कैसे रहेगा? कृपया बताने का कष्ट करें?

यह निर्भर करता है, यह व्यक्तिगत रूप से निर्भर करता है। इस बारे में कोई भी अधिकृत वक्तव्य नहीं दिया जा सकता, क्योंकि वैयक्तिक रूप से प्रत्येक व्यक्ति अनूठा होता है। जब बाशो बुद्धत्व को उपलब्ध हुआ तो उसने कविता गाना शुरू कर दिया, कविताएं और बुद्ध ने ऐसा कभी नहीं किया। जब कृष्ण बुद्धत्व को उपलब्ध हुए उन्होंने नाचना और गाना शुरू कर दिया, पर महावीर ने ऐसा कभी नहीं किया। जब महावीर बुद्धत्व को उपलब्ध हुए तो वह वर्षों तक मौन ही रहे, परिपूर्ण मौन, एक विचार की तरंग को भी उठने की अनुमति नहीं थी। मीरा ने ऐसा नहीं किया। जब वह बुद्धत्व को उपलब्ध हुई वह वह गांव—गांव जाकर नाचने लगी, उसने कृष्ण की महिमा के गीत गाये। इस बारे में कोई अधिकृत वक्तव्य देना, इसलिए बहुत कठिन है।

यहां ऐसे भी लोग हैं, कि वे जब बुद्धत्व को उपलब्ध हुए तो उन्होंने संसार और जीवन को ही छोड़ दिया, और समाज से जितनी दूर जाना सम्भव था, हिमालय में चले गए। यहां ऐसे भी लोग है कि वे जब बुद्धत्व को उपलब्ध हुए तो यदि वे हिमालय में रहे रहे थे उन दिनों, वे वापस संसार में आ गए और लोगों के साथ फिर से रहना प्रारम्भ कर दिया। यहां ऐसे भी लोग हुए हैं, जो बुद्धत्व घटने पर भी, सम्राट ही बने रहे। झेन सद्गुरु, बहुत साधारण जीवन व्यतीत करते चले जाते थे और उनको पहचानना भी कठिन हो जाता था। यदि तुम्हारे पास अंतर्तम तक उतर जाने वाली वह दृष्टि नहीं है, तो तुम उन्हें पहचान न सकोगे।

महान झेन—सद्गुरु रिनझाई के बारे में यह कहा जाता है—सम्राट उनसे भेंट करने के लिए आए। वह अपने आश्रम के ठीक सामने लकड़ियां काट रहे थे। सम्राट ने पूछा— " तुम्हारे सद्गुरु कहां है? रिनझाई ने कहा— "वह अंदर आश्रम में हैं।" अब निश्चय ही सम्राट ने सोचा कि उन्हें आश्रम के अंदर जाना चाहिए इसलिए वे आश्रम के अंदर गए। रिनझाई किसी दूसरे द्वार से भागता हुआ कमरे में सद्गुरु की कुर्सी पर आंखें बंद किए बैठ गया। जब सम्राट वहां पहुंचा तो उसने पहचान लिया— " यह व्यक्ति तो ठीक उस जैसा ही, ठीक लकड़हारे जैसा दिखाई देता है।"

उन्होंने पूछा—यह मामला क्या है? आप हैं कौन? क्या आप मुझे मूर्ख बना रहे हैं अथवा आप वास्तव में सद्गुरु ही हैं?"

रिनझाई ने उत्तर दिया— " लेकिन मैंने आपको बतलाया कि वह अंदर हैं और उस समय आप मुझे समझ नहीं सके इसीलिए मुझे भाग कर यहां आकर इस कुर्सी पर बैठना पड़ा। हो सकता है आप गहराई में न समझकर उथलापन ही समझते हों। मैं तब वहां भी अपने को प्रकट करने को तैयार था, लेकिन आपने प्रतीक्षा ही नहीं की। हां! मैं ही सद्गुरु हूं अब आप मुझसे चाहते क्या हैं ?और मेरा अधिक समय व्यर्थ नष्ट मत कीजिए क्योंकि मुझे अभी भी बची लकड़ियां काटने के लिए बाहर जाना है।"

झेन सद्गुरु बहुत साधारण जीवन बिताते थे, वे लकड़ियां काटते थे, कुंए से पानी निकालकर उसे इधर से उधर ढोकर ले जाते थे, वे रसोईघर में स्वयं भोजन पकाते थे। जब तक तुम्हारे पास वह दृष्टि न हो, तो उन्हें समझ पाना बहुत कठिन है। वे किसी भी तरह का कोई भी असाधारण जीवन व्यतीत नहीं करते थे, क्योंकि वे कहते थे— " असाधारण बनने की खोज ही अहकारपूर्ण है। ' केवल साधारण बन कर रहना ही एक धार्मिक व्यक्ति का असली व्यवहार होता है। और स्मरण रहे असाधारण बनने की प्रवृत्ति ही बहुत साधारण है। इस बारे में वहां असाधारण कुछ भी नहीं है, क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति असाधारण बनना चाहता है। साधारण बनना ही बहुत असाधारण है, क्योंकि कौन साधारण बनकर रहना चाहता है?

इसलिए यह बहुत कठिन है, और मैं तुम्हें इसका निर्णय करने को कोई भी मापदण्ड या कसौटी न दे सकूंगा, क्योंकि ये मापदण्ड बहुत हानिकारक और विध्वसंक सिद्ध हुए हैं। एक बार तुम्हारे साथ जब यह मृत मापदण्ड होंगे, तो तुम बहुत से प्रामाणिक लोगों से चूक जाओगे और तुम बहुत से नकली लोगों से धोखा खा जाओगे। जो कोई भी व्यक्ति उस मापदण्ड पर पूरा उतर सकेगा, तुम्हे लगेगा कि वही बुद्ध हैं।

उदाहरण के लिए: महावीर बुद्धत्व को उपलब्ध हुए वह नग्न हो गए। अब कोई भी व्यक्ति नग्न खड़ा हो सकता हैं इस सम्बंध में यहां कुछ भी विशेष बात नहीं है। कोई भी पागल व्यक्ति ऐसा कर सकता है। और तुम इसे देखने किसी भी नग्न लोगों की क्लब में जा सकते हो, लेकिन वे लोग महावीर नहीं है। बुद्ध, बुद्धत्व को उपलब्ध हुए वह एक विशिष्ट आसन, पद्यासन में बैठ गए। तुम भी पद्मासन में बैठ सकते हो। यदि तुम पूरब के हो, तब तुम्हारे लिए यह बहुत सरल है, और यदि तुम पश्चिम के हो, तो इसके अभ्यास के लिए छ: माह लगेंगे, और इतना सब कुछ यथेष्ट है। तुम पद्मासन की मुद्रा में बैठ सकते हो, लेकिन यह तुम्हें बुद्ध न बना सकेगा।

तुम बहुत सरलता से अनुकरण कर सकते हो, और ऐसे ही जाने कितने अनुकरण करने वाले यहां पूरे संसार में हैं। जाओ, और जाकर किसी जैन मुनि को देखो : वह पूरी तरह अनुकरण करता है, लेकिन कुछ भी नहीं है वहां।

बुद्धत्व हमेशा नूतन और ताजा होता है—वह अनुकरण नहीं होता, वह अनुकरण नहीं होता, वह कोई कार्बन कापी नहीं होता, वह हमेशा मालिक होता है। इसलिए मैं तुमको यह ठीक—ठीक नहीं बता सकता कि वह कैसे व्यवहार या आचरण करेगा, लेकिन मैं तुमको यह बता सकता हूं कि उसे कैसे ग्रहण किया जाए। यदि वहां ऐसा कोई व्यक्ति है, जिसके पास उस अज्ञात की सुवास जैसी कुछ चीज उसके चारों ओर बिखरी हुई एक वातावरण उत्पन्न कर रही है— "तब उसे ग्रहण कैसे करोगे? सारे विचार, सभी बुद्धिगत विचारों को गिरा दो। यह मत पूछो कि उसे उसके समान होना चाहिये, बस, केवल उसके सान्निध्य में बने रहो। केवल उसके साथ मौन में बैठो अपने हृदय के द्वार खोलकर बैठो। यदि वह व्यक्ति बुद्धत्व को उपलब्ध हो गया है, तो अचानक तुम्हें अंदर ऐसे स्पंदन का अनुभव होगा, जिन्हें इससे पहले तुमने कभी भी नहीं जाना, तुम्हारी ऊर्जा ऊपर उठना शुरू हो जायेगी। तुम देखोगे कि तुम्हारे अंदर एक गहन मौन व्यास हो गया है, और बूंद—बूंद कर परम आनंद की रसधार तुम्हारे अस्तित्व के आंतरिक केंद्र पर बरस रही है।

एक बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति, यदि तुम उसे अंदर प्रवेश करने की अनुमति दो, तुम्हें स्वयं स्पष्ट प्रमाण दे देगा। लेकिन वे प्रमाण बुद्धिगत नहीं होंगे, वे मन के तर्क नहीं होगे। वह अपने पूरे अस्तित्व से प्रमाण देता है। उसका प्रमाण उसकी उपस्थिति ही है—इसलिए उसकी उपस्थिति को महसूसो और कोई अन्य मापदण्ड लेकर मत चलो। यदि तुम जैन हो, तो बुद्ध से चूक जाओगे, यदि तुम जैन हो तो जीसस से चूक जाओगे! यदि तुम ईसाई हो, तो तुम महावीर से चूक जाओगे। तुम विचारों का एक स्थाई निश्चित ढांचा अपने साथ लिये यदि तुम यह अनुभव करते हो कि वहां कोई ऐसा व्यक्ति है जो तुमसे अधिक जीवंत, तुमसे अधिक दीप्तिवान, तुमसे कहीं अधिक समझ वाला है और उसके अस्तित्व से करुणा प्रवाहित हो रही है, तब केवल उसकी उपस्थिति में, उसके साथ बनो रहना। यह वही है जिसे हम सत्संग कहते है: केवल उसकी उपस्थिति में बने रहना। यदि वह कहीं पहुंच गया है, तो तुम्हें अकस्मात् अपने अस्तित्व में एक एक खिंचाव का अनुभव होगा—तुम किसी अज्ञात केंद्र की ओर खींच लिए जाते हो। और तुम्हें अत्यधिक, बोध प्रज्ञा तथा सभी गुणों के संग्रह से उत्पन्न एक अद्‌भुत सौंदर्य और आनंद का अनुभव होगा। तुम्हें लगेगा जैसे आनंद तुम पर चारों ओर से बरस रहा है। केवल यही इसकी कसौटी होगी, लेकिन इसके लिए तुम्हें पहले से तैयार होना होगा।

सामान्य रूप से लोग पूछते हैं—हमें कोई वस्तुगत मापदण्ड दीजिए। ऐसा कोई है ही नहीं। मापदण्ड केवल यही हो सकता है कि तुम खुले हुए रहो। यह जानने का ही कौन सा मापदण्ड है कि यह फूल, गुलाब है अथवा नहीं? मापदण्ड केवल एक ही है कि तुम अपनी आंखें खुली रखो, अपने नासापुटों को खोल उन्हें शो, उस सुवास को अपनी आत्मा तक पहुंचने दो, केवल उसी से पता चलेगा। लेकिन यदि तुम्हारे पास दृष्टि ही नहीं है और तुम गंध लेने की संवेदना ही खो चुके हो, तब यह जानना तुम्हारे लिए बहुत कठिन हो जाएगा कि यह फूल गुलाब ही है या कुछ और है। वह एक प्लास्टिक या कागज का भी गुलाब हो सकता है, वह तुम्हें धोखा दे सकता है।

इसलिए मैं तुम्हें पदार्थगत सत्य का कोई भी विवरण नहीं दूंगा कि जब सत्य घटता है तो क्या होता है—यह वैयक्तिक है, एक व्यक्ति में यह हमेशा समान न होकर अलग— अलग और अनूठा होता है—लेकिन मैं इसे अनुभव करने का एक वैयक्तिक ढंग तुम्हें दे सकता हूं।

मैंने सुना है.....

एक उत्तेजित और पागल रोमन, नंगी तलवार लिए हुए गांव में आया और पुरुषों, स्त्रियों और बच्चों को काट मार कर उसने प्रत्येक को आतंकित कर दिया। झेन मठ के द्वार पर पहुचते हुए उसने तलवार की मूठ से दरवाजा तोड़ दिया, और लम्बे—लम्बे डग भरता हुआ सद्गुरु के निकट आया, जो जाजेन ध्यान में शांत बैठा था, उसने अपनी तलवार ऊपर उठाई थिरता और मौन जैसी कोई चीज उस तक पहुंची। वह क्रोध से चीखते हुए बोला— " क्या तुम्हें यह महसूस नहीं होता कि तुम्हारे सामने एक ऐसा व्यक्ति खडा हुआ है, जो बिना पलकें झपकाये ही तुम्हें दो टकड़ों में काट सकता है?"

सद्गुरु ने शांति से उत्तर दिया— " क्या तुझे यह अनुभव नहीं होता कि तेरे सामने एक ऐसा व्यक्ति बैठा हुआ है जो बिना पलक झपकाये दो टुकड़ों में कटने के लिए तैयार बैठा है। इसलिए आगे बढ़। मेरे मौन के कारण तू अपने को रोक मत। तू वही कर, जिसको तूने तय कर लिया है।" लेकिन उस पागल के अन्तर्तम में वह मौन प्रविष्ट हो गया, सद्गुरु की शांति और मौन ने उसके हृदय को स्पर्श कर लिया था, अब उसके लिए मारना असम्भव था।

इसलिए बस अपने हृदय के द्वार खुले रखो।

यदि तुम एक पागल भी हो और खुले हुए हो, तो भी तुम बुद्धत्व को पहचान लोगे, वह कहीं भी किसी भी रूप में प्रकट हुआ हो। और यदि तुम एक महान दार्शनिक बुद्धिजीवी और तर्कनिष्ठ भी हो, यदि तुम स्वयं को मौन और आनंद के मूल तत्व को ग्रहण करने की अनुमति नहीं देते हो, तो तुम चूक जाओगे। तुम्हें अपने को बहुत—बहुत खुला हुआ रखना होगा। तुम्हें स्वीकार भाव में रहना होगा। तुम्हें स्वीकार भाव में रहना होगा और तब बुद्धत्व का प्रमाण इतनी दृढ़ता से तुम तक आता है। यह इतना अधिक निश्चित है कि तुम प्रत्येक चीज से तो इंकार कर सकते हो, लेकिन तुम बुद्धत्व को उपलब्ध व्यक्ति से इंकार नहीं कर सकते—ऐसा करना असम्भव है। तुम इसे दूसरों को सिद्ध करने में, हो सकता है सफल न हो सको, क्योंकि यहां इसे सिद्ध करने का कोई उपाय नहीं है—लेकिन तुम्हारे लिए तो यह अनुभूति स्थायी रूप से तुम्हारे अंतर्तम में उतर गई। और एक बार यह तुम्हारे अंतर्तम में उतर गई, एक बार तुम एक बुद्धपुरुष के सम्पर्क में आ गए तो एक सेतु निर्मित हो गया। अब तुम कभी भी पहले जैसे नहीं रह सकते। यह वास्तविक घटना ही कि तुम एक बुद्ध को पहचान सके, पर्याप्त है, और यह तुम्हारे बुद्धत्व की आधारशिला बन जायेगी। इतना पर्याप्त है कि यह तुमकी एक नई दिशा, एक नया अस्तित्व और एक नया जन्म दे गई।

चौथा प्रश्न :

मैं देख रहा हूं कि मेरे स्वयं के अंदर कोई भी चीज जो घट रही है? वह नकली? भ्रमपूर्ण और मन की ही एक आमोद यात्रा है? मैं ठीक कर रहा हूं या नहीं? और मेरे मन की इस आमोद यात्रा की पहचान, मन की ही एक लधु यात्रा है।

*बि*लकुल ठीक!

जब तक विचार चल रहे हैं, प्रत्येक चीज मन की ही यात्रा है। जब विचार रुक जाते हैं और तुम देखते हो कि तुम्हारा मन अब विचारों की भीड़ से मुक्त है, जब तुम स्पष्टता से देखते हो कि तुम्हारे चारों ओर अब विचारों का कोई भी धुंवा नहीं रह गया, जब तुम्हारी दृष्टि, सरल, निर्दोष और विचारों के प्रदूषण से मुक्त हो जाती है, तब यह मन की यात्रा नहीं है। केवल ध्यान ही मन की यात्रा नहीं है इसके अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु मन की यात्रा है। अथवा प्रेम भी मन की यात्रा नहीं है, इसके अतिरिक्त प्रत्येक वस्तु मन की ही यात्रा है। यदि ध्यान अथवा प्रेम तुम्हें घटे हैं तो तुम उसे जानोगे, जिसकी ओर मैं संकेत कर रहा हूं। गहरे प्रेम के क्षणों मे 'विचार रुक जाते हैं। यह क्षण इतना अधिक उत्सुकता से भरा और इतना अधिक शक्तिशाली और प्रबल रूप से जीवंत होता है कि सोचने की प्रक्रिया रुक जाती है। तुम एक महान आश्चर्य से जैसे ठगे हुए स्तब्ध हो जाते हो। अथवा गहरे ध्यान में भी जब मौन के क्षण आते हैं, तो तुम पूरी तरह थिर, अकंम्प और शांत हो जाते हो, फिर तुम्हारी चेतना की ज्योति हिलती और कांपती नहीं और वह सीधी और अकंम्प बनी रहती है—तब विचार प्रक्रिया रुक जाती है। तब तुम मन की पकड़ के बाहर होते हो, अन्यथा प्रत्येक चीज, मन की ही यात्रा है।

इसे स्मरण रखें, एक व्यक्ति को मन के पार जाना ही है, क्योंकि मन ही ' समसार ' है और मन ही संसार है। यह तुम्हारे सोचने के कारण है कि तुम सत्य से चूक रहे हो। एक बार विचार जब रुक जाते हैं, तो तुम सत्य के आमने—सामने होते हो। मन के पर्दे पर विचारों की फिल्म निरंतर चलती रहती है, जिससे सत्य धुंधला हो जाता है। यह ऐसे है, जैसे तुम लहरों से भरी झील में झांक रहे हो। यह पूर्णिमा की रात है और झील सुंदर और पूर्ण चन्द्रमा को प्रतिबिम्बित कर रही है—लेकिन झील में लहरें उठ रही हैं। चंद्रमा की छवि हजारों खण्डों में बिखर जाती है, और तुम सभी खण्डों को एक साथ मिलाकर पूर्ण चंद्रमा को नहीं देख सकते हो। पूरी झील में चारों ओर चंद्रमा के बहुत से चांदी जैसे शुभ्र श्वेत खण्ड चारों ओर फैले हुए प्रतीत होते हैं। तभी हवा थम जाती हैं, लहरें उठना बंद हो जाती हैं और चंद्रमा के सभी खण्ड एक शुभ्र पूर्ण चंद्र के रूप में बदलना शुरू हो जाते हैं। वह चांदी सी चमक जो झील में चारों ओर फैली हुई थी, अब एक ही स्थान पर सघन हो जाती है। जब झील पूरी तरह से बिना लहरों के होती है, तो चंद्रमा पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित होने लगता है।

जैसे मन विचारों के साथ होता है, वैसे ही झील भी लहरों के साथ होती है: और जब मन बिना विचारों के होता है, वैसे ही झील बिना लहरों के होती है। परमात्मा तुम्हारे अंदर पूरी तरह तभी प्रतिबिम्बित होता है जब तुम्हारे अंदर विचारों की एक भी तरंग नहीं होती।

परमात्मा के बारे में सभी कुछ भूल जाओ, केवल करना इतना ही है कि कैसे तुम तरंग विहीन बन सको, तुम कैसे विचार शून्य या निर्विचार बन सको, कैसे तुम निरंतर विचारों से नियंत्रित मन को गिरा सको। यह गिराया जा सकता है, क्योंकि यह तुम्हारे सहयोग देने के कारण ही है, जो निरंतर मिलता रहता है। यह तुम्हारी ही ऊर्जा है, जो उसे जीवित बनाए रखने के लिए तुम उसे दिए चले जाते हो। यह ठीक साइकिल पर सवार उस व्यक्ति की भांति है जो पैडिल चलाये चला जाता है— और यह उसकी ही ऊर्जा है, जो साइकिल को चलाए जा रही है। एक बार वह पैडिल चलाना बंद कर दे, तो साइकिल थोड़ी दूर तो अतीत के संवेग के कारण चलती जाएगी, लेकिन फिर उसे रुक जाना होता है।

अपने विचारों को ऊर्जा मत दो। निरपेक्ष, तटस्थ और सभी से अलग एक साक्षी बनो। केवल विचारों को देखो, और किसी भी तरह उनसे सम्बंध मत जोड़ो।

इस तथ्य पर ध्यान दो: विचार वहां है, लेकिन इस या उस तरह से उनका चुनाव मत करो, न उनके पक्ष में रहो और न विपक्ष में, न आगा सोचो और न पीछा। केवल एक निरीक्षण कर्त्ता बने रहो। मन के यातायात को चलने दो, बस एक किनारे खड़े होकर उसे देखते रहो, बिना उससे प्रभावित हुए जैसे मानो तुम्हारा उससे कुछ लेना या देना है ही नहीं।

जब कभी इसे आजमाओ: सबसे अधिक व्यस्त सड़क पर चले जाओ, जहां भीड़ और यातायात सर्वाधिक हो। सड़क के एक किनारे खड़े होकर यातायात को देखते रहो—बहुत अधिक लोग इधर से उधर आ जा रहे है, कारें साइकिलें, ट्रक और बसें गुजर रही हैं। तुम केवल एक किनारे पर खड़े होकर उहें देखते रहो, और यही सब अंदर भी देखते रहो: अपनी आंखें बंद कर अपने ही अंदर झांको—मन भी विचारों का एक यातायात है, विचार तेजी से इधर—उधर दौड़ रहे हैं। तुम निरीक्षण करते हुए उनके केवल एक निरीक्षणकर्त्ता बने रहो। धीमे— धीमे तुम देखोगे कि यातायात कम से कम होता जा रहा है, तुम देखोगे, सड़क अब खाली है, उससे होकर कोई भी नहीं गुजर रहा है। इन्हीं दुर्लभ क्षणों में समाधि की पहली झलक तुम्हारे अंदर प्रविष्ट हो जायेगी।

समाधि के तीन तल होते है। पहला है, जब तुम अंतरालों के द्वारा झलकों तक पहुंचते हो, एक विचार आता है, तब वह चला जाता है, और दूसरा अभी तक आया नहीं है। वहां इन दोनों के मध्य कुछ क्षणों का अंतराल हो सकता है, इसी अवकाश में सत्य तुम्हारे अंदर गहराई से तीर की तरह प्रविष्ट होता है— और मन की झील में खण्डित चन्द्रमा का प्रतिबिम्ब पूर्ण चंद्र बन जाता है। यह प्रतिबिम्ब वहां केवल एक क्षण के लिए होता है, लेकिन तुम पहली झलक पा सकोगे।

यह वही है जो जिसे जेन सतोरी कहते हैं। धीमे— धीमे यह अंतराल और लम्बे व बड़े होते जायेंगे और तुम सत्य को अधिक स्पष्टता से समझ सकोगे, सत्य की यह झलक तुम्हें बदलती है। तब तुम वैसे ही नहीं बने रह सकते, क्योंकि तब तुम्हारी दृष्टि तुम्हारा ही सत्य अथवा वास्तविकता बन जाती है।

यह जो कुछ तुम देख रहे हो, यह तुम्हारे अस्तित्व को प्रभावित करता है। तुम्हारी दृष्टि धीमे— धीमे पच कर अवशोषित कर ली जाती है। यह समाधि का दूसरा तल है।

और तब आता है तीसरा तल: जब अचानक पूरा यातायात ही विलुप्त हो जाता है, जैसे मानो तुम गहरी नींद सोते हुए सपने देख रहे थे, और किसी ने तुम्हें झकझोर दिया और तुम जाग गए और सपनों का सारा यातायात अचानक रुक गया। इस तीसरे तल में तुम सत्य के साथ एक हो जाते हो, क्योंकि अब वहां तुम्हें विभाजित करने वाला कुछ रहा ही नहीं। वह मेड़ जो तुम्हें दो भागों में अलग— अलग बांट रही थी, अब मिट गई। यह दीवार वहां रही ही नहीं। यह दीवार, विचारों, कामनाओं, अनुभवों और भावों की ईंटों से बनी हुई है, और एक बार यह दीवार ध्वस्त हो जाती है—जो बहुत पुरानी और मजबूत चीन की दीवार जैसी है—लेकिन एक बार जब यह मिट जाती है, तो तुम्हारे और परमात्मा के बीच कोई भी अवरोध नहीं रह जाता। जब समाधि की यह तीसरी स्थिति पहली बार घटित होती है, तो यह वही स्थिति है, जिसके लिए उपनिषद घोषणा करते है— " अहं ब्रह्मास्मि— " मैं ही परमात्मा हूं मैं ही ब्रह्म हूं। यह वही स्थिति है, जहां के लिए सूफी रहस्यदर्शी मैसूर घोषणा करता है— अन अल हक—मैं ही सत्य हूं। यह वही स्थिति है जहां जीसस कहते हैं—मै और मेरा परमात्मा एक ही है—मैं और मेरा पिता एक है।

पांचवां प्रश्न :

एक ओर तो आप हमें अंतिम मुक्ति या परिपूर्ण स्वतंत्रता, हम जो कुछ चाहें उसे करने के लिए दे रहे है? और दूसरी ओर आप हमें दायित्व भी दे रहे हैं। इस दायित्व के साथ मैं स्वतंत्रता शब्द का उपयोग, जैसे मैं चाह वैसे नहीं कर सकता, इसलिए मुझे स्वतंत्रता शब्द के ठीक अर्थ के लिए प्रतीक्षा करनी होगी! जिस क्षण मैं उसे पाता हू मैं उसे दायित्व के ही साथ पाता हूं।

भगवान! जब मैने इसका अर्थ समझा मैं आपके लिए कृतज्ञता का ही अनुभव करता है अन्यथा मैं तो स्वतंत्रता शब्द का जो प्रयोग एक लाइसेसं की भाति पहले ही से कर रहा था और आगे भी करना चाहता था।

*स्व*तंत्रता और उत्तरादायित्व का प्रश्न, मनुष्यता के स्थायी प्रश्नों में से एक है। यदि तुम स्वतंत्र हो, तो तुम इसका अर्थ यह लेते हो, जैसे मानो अब वहां कोई दायित्व रहा ही नहीं। केवल सौ वर्ष पूर्व ही नीत्शे ने घोषणा की थी— " परमात्मा मर चुका है और मनुष्य अब स्वतंत्र है।" और उसने जो अगला वाक्य लिखा वह है— " अब तुम वह सब कुछ कर सकते हो, जो तुम करना चाहते हो। अब वहां तुम्हारी कोई जिम्मेदारी ही नहीं। परमात्मा मर चुका है और अब मनुष्य स्वतंत्र है और वहा उसकी अब कोई जिम्मेदारी ही नहीं है।" लेकिन वहां वह पूरी तरह गलत था, जब वहां कोई परमात्मा ही नहीं है, फिर तो तुम्हारे कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ जाती है। यदि वहां परमात्मा है तो वह तुम्हारी जिम्मेदारी में सहयोग दे सकता है। तुम उस पर अपना दायित्व थोप सकते हो, और कह सकते हो— " यह तुम ही हो, जिसने यह संसार बनाया, यह तुम ही हो जिसने मुझे इस तरह कर बनाया, इसलिए अंतिम रूप से तुम ही जिम्मेदार हो—मैं नहीं। अंतिम रूप से मैं कैसे जिम्मेदार हो सकता हूं? मैं तो केवल तुम्हारा एक सृजित प्राणी हूं और तुम हो सर्जक या सृष्टिकर्त्ता। तुमने क्यों शुरू से ही मेरे अंदर पाप और भ्रष्टाचार के बीज रखे? जिम्मेदार तुम हो, मैं तो स्वतंत्र हूं।"

वास्तव में यदि परमात्मा नहीं है, तब मनुष्य ही अपने कार्यों के लिए पूरी तरह से जिम्मेदार है, क्योंकि अब किसी अन्य दूसरे पर जिम्मेदारी थोपने का वहां कोई उपाय है ही नहीं।

जब मैं तुमसे कहता हूं कि तुम स्वतंत्र हो, तो मेरा कहने का अर्थ होता है कि तुम ही उत्तरदायी हो। तुम किसी अन्य दूसरे पर जिम्मेदारी नहीं डाल सकते, तुम ही अकेले जिम्मेदार हो। और तुम जो कुछ भी करते हो, वह तुम्हारा ही कृत्य है। तुम यह नहीं कह सकते कि किसी अन्य व्यक्ति ने तुम्हें वह सब कुछ करने को विवश किया था—क्योंकि तुम स्वतंत्र हो, इसलिए तुम्हें कोई भी विवश नहीं कर सकता। क्योंकि तुम स्वतंत्र हो, तो कुछ भी चीज करने या न करने का यह तुम्हारा ही निर्णय है। स्वतंत्रता के साथ ही उत्तरदायित्व भी आता है। स्वतंत्रता एक दायित्व है। लेकिन यह मन बहुत बेईमान है, मन इसका अर्थ अपने ही ढंग से लेता है वह हमेशा वही सुने चले जाता है जो कुछ वह सुनना चाहता है। वह चीजों की व्याख्या और अर्थ अपने ढंग से निकाले चले जाता है। मन कभी यह समझने का प्रयास करता ही नहीं कि वास्तव में सत्य क्या है। वह पहले ही से निर्णय ले चुका होता है।

मैंने सुना है:

एक पीड़ित व्यक्ति मनोविश्लेषक से कह रहा था— " डॉक्टर! मैं एक प्रतिष्ठित व्यक्ति हूं लेकिन बाद में, अपने पर लगाए गये आरोपों को अनदेखा करने और अपराध बोध के कारण मेरा जीवन असहनीय बन गया है।"

अपनी बात जारी रखने से पूर्व, मरीज ने अपनी पीड़ा को जैसे निगलोग और दबाते हुए कहा— " आप मेरी बात कृपया समझने की कोशिश करें, हाल ही में मैं एक अनियंत्रित प्रवृत्ति का शिकार बन गया हूं जो मुझे जैसे पिन चुभो कर उकसा कर विवश करती है कि मैं लड़कियों को प्रेम करने नीचे तहखाने में ले जाऊं।" मनोविश्लेषक डॉक्टर उसे सांत्वना देते तथा धैर्य बंधाते हुए बोला— " मेरे प्रियवर! हम निश्चित रूप से आपकी

सहायता करेंगे, जिससे आप इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रवृत्ति से छुटकारा पा सकें। मैं आपकी पीडा को अच्छी तरह समझ रहा हूं।"

मरीज अत्यंत व्यग्रता से तेजी से बोला— " डॉक्टर! यह प्रवृत्ति कोई खास बात नहीं है, जिससे मैं छुटकारा पाना चाहता हूं। असली समस्या तो अपराध बोध की है।"

लोग स्वतंत्रता के बारे में बातें किए चले जाते हैं, लेकिन वे स्वतंत्रता को यथार्थ रूप में नहीं चाहते, वे जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहते हैं। वे स्वतंत्रता के लिए कहते जरूर हैं लेकिन अपने गहरे अचेतन में वे जिम्मेदार न होने का लाइसेंस लेना चाहते हैं।

स्वतंत्रता एक विकास और परिपव्कता है और लाइसेंस लेना बहुत बचकानी बात है। स्वतंत्रता केवल तभी संभव है जब तुम इतने ईमानदार हो जाओ, कि तुम स्वतंत्र होने की जिम्मेदारी उठा सको। यह संसार स्वतंत्र नहीं है, क्योंकि लोग अभी पूरी तरह विकसित नहीं है। क्रांतिकारी सदियों से इसके लिए बहुत से प्रयास करते रहे हैं, लेकिन उनके सभी प्रयास असफल हो गए। एक आदर्श सुखी संसार की कल्पना करने वाले चिंतक भी निरंतर विचार करते रहे हैं कि मनुष्य को स्वतंत्र कैसे बनाया जाए लेकिन कोई भी इस बात की फिक्र नहीं करता, क्योंकि मनुष्य तब तक स्वतंत्र नहीं बन सकता, जब तक वह अखण्ड और ईमानदार न हो। केवल एक बुद्ध स्वतंत्र हो सकते हैं, महावीर स्वतंत्र हो सकते हैं, क्राइस्ट और मुहम्मद स्वतंत्र हो सकते हैं, एक जरथुस्त्र स्वतंत्र हो सकते हैं, क्योंकि स्वतंत्रता का अर्थ है कि मनुष्य अब सचेत है। यदि तुम होशपूर्ण या सचेत नहीं हो, तो राज्य की जरूरत है, सरकार की जरूरत है, पुलिस और कोर्ट कचहरी की जरूरत है। तब प्रत्येक जगह से स्वतंत्रता को हटाना होगा। तब स्वतंत्रता का अस्तित्व केवल नाम भर को रह जाएगा, वास्तव में वह अस्तित्व में होगा ही नहीं। जब सरकार का अस्तित्व है तो स्वतंत्रता का अस्तित्व कैसे हो सकता है?—यह असम्भव है। लेकिन फिर क्या किया जाए?

यदि सरकार नहीं रहती, तो वहां केवल अराजकता होगी। यदि सरकार की संस्था मिट जाती है तो स्वतंत्रता भी नहीं आयेगी, और वहां केवल अराजकता होगी। वह जैसी स्थिति अब है, उससे भी कहीं अधिक खराब स्थिति होगी। वह पूर्ण रूप से पागलपन होगा। पुलिस की जरूरत इसीलिए है क्योंकि तुम सजग नहीं हो। अन्यथा हर चौराहे पर एक पुलिस के सिपाही को खड़ा करने की जरूरत क्या है? यदि लोग सजग हैं, तो पुलिस का सिपाही हटाया जा सकता है, उसे हटाना ही होगा क्योंकि वह अनावश्यक है, उसकी कोई जरूरत ही नहीं है। लेकिन लोग सचेत या होशपूर्ण नहीं है।

इसलिए जब मैं स्वतंत्रता की बात कहता हूं तो मेरे कहने का अर्थ जिम्मेदार

बनने से होता है। तुम जितने अधिक जिम्मेदार बनते हो, उतने ही अधिक तुम स्वतंत्र होते हो, अथवा तुम जितने स्वतंत्र बनते हो, तुममें उतनी ही अधिक जिम्मेदारी आती है। तब जो कुछ तुम कर रहे हो, जो कुछ तुम कह रहे हो, तुम्हें उसके लिए बहुत सजग होना होगा। अपनी छोटी—छोटी मूर्च्छापूर्ण मुद्राओं और भावाभिव्यक्तियो के सम्बंध में भी तुम्हें बहुत सजग होना होगा—क्योंकि तुम्हें नियंत्रित करने वाला वहां कोई अन्य व्यक्ति नहीं होगा, केवल तुम ही होगे वहां। जब मैं तुमसे कहता हूं कि तुम स्वतंत्र हो, तो मेरा अर्थ होता है कि तुम परमात्मा हो। स्वतंत्रता, कोई भी कुछ भी करने का अनुमति पत्र या लाइसेंस नहीं है, यह बहुत बड़ा अनुशासन है।

छठवां प्रश्न:

आपको पिछले नौ दिनों से सुनते हुए और आपके आश्रम में सुबह शाम ध्यान—प्रयोग करते हुए, में इस निष्कर्ष पर पहुंची हूं कि विवेक बहुत सौभाग्य वाली है लेकिन मैं उसके प्रति इष्यिालु नहीं हूं, मैं अनुभव करती हूं कि वह आश्रम में आपकी प्यारी शिष्या के परमपद पर प्रतिष्ठित है इस स्थिति तक कैसे पहुंच जाए?

मन ऐसे ही अजीब ढंग से कार्य करता है। तुम यहां ध्यान करने के लिए आई हो, इसका किसी अन्य व्यक्ति से कुछ लेना—देना ही नहीं है। वास्तव में एक सच्चा ध्यानी यह देखेगा ही नहीं कि दूसरों को क्या घट रहा है। एक सच्चा ध्यानी तो अपने ही अंदर उतरेगा।

बायजीद के बारे में यह कहा जाता है कि वह अपने सद्गुरु के साथ बारह वर्षों तक रहा, और प्रत्येक दिन सद्गुरु के निकट आने के लिए उसे एक बड़े कक्ष से होकर गुजरना होता था। एक दिन सद्गुरु ने बायजीद से कहा— " तुम उस बड़े कक्ष में वापस जाकर वहां आलमारी में रखी एक किताब उठा लाओ।"

बायजीद ने उत्तर दिया— " मैं चला तो जाऊंगा, लेकिन मैंने वहां कभी देखा नही कि वहां कोई अलमारी भी है।"

सद्गुरु ने कहा— " तुम मुझसे मिलने बारह वर्षों से प्रतिदिन निरंतर उस बड़े कक्ष से होकर ही गुजरते हो, क्या तुमने उसके चारों ओर कभी देखा नहीं?"

उसने उत्तर दिया— " प्यारे सद्गुरु। मुझे आपके निकट आना होता था। मैं यहां यह देखने के लिए नहीं आया हूं कि उस बड़े कक्ष में है क्या, वहां कोई आलमारी या शेल्फ है अथवा नहीं, और उसमें कोई किताब भी है अथवा नहीं। मैं इसके लिए यहां नहीं आया हूं। मेरा पूरा मकसद आप हैं, मेरा पूरा अस्तित्व केवल आपके ही लिए है। मैं केवल आपके लिए ही खुला हुआ हूं। मैं जाऊंगा और उसे खोजूंगा।"

सद्गुरु ने कहा— " उसकी कोई जरूरत ही नहीं है, और उस किताब की भी कोई जरूरत नहीं है।

वास्तव में वहां कोई पुस्तक है ही नहीं, और न वहां कोई आलमारी है। यह केवल एक परीक्षा थी, सिर्फ यह देखने के लिए कि तुम ध्यान से डिगे तो नहीं हो? मैं खुश हूं कि तुम्हारा मन कई दिशाओं में नहीं भाग रहा।"

अब यह प्रश्न, मन के भिन्न दिशाओं में जाने का प्रश्न है। तुम्हें किसी दूसरे व्यक्ति से मतलब क्या? तुम्हें ध्यानपूर्ण होना चाहिए अथवा अधिक से अधिक तुम्हारा हृदय मेरी ओर खुला होना चाहिए। लेकिन मन नई—नई जटिलताएं और मुसीबतें सृजित किए चले जाता है।

यह प्रश्न चूंकि एक स्त्री की ओर से आया है, इसलिए यह कुछ चीज स्त्रैण— चित्त को प्रदर्शित कर रहा है। उसकी रुचि मेरी अपेक्षा विवेक में अधिक है। यदि तुम्हें किसी के उत्कर्ष पर ईर्ष्या का अनुभव होता है, तो यह ईर्ष्या मुझसे करो। लेकिन एक स्त्री आखिर एक स्त्री ही होती है, भले ही वह यहां ध्यान करने के लिए आई हो, इससे जरा भी फर्क नहीं पड़ता। और फिर भी वह कहती है— " मैं उसके प्रति ईर्ष्यालु नहीं हूं लेकिन मैं उसे भाग्यशाली समझती हूं।" ऐसा मन में हमेशा ही चलता रहता है यदि कोई व्यक्ति किसी के भाग्यवान होने के बारे में सोचता है, तो हम इसे ईर्ष्यालु कहते हैं और यदि हमें ईर्ष्या होती है तो हम कहते हैं कि यह तो केवल किसी के भाग्यशाली होने के बारे में एक विचार मात्र है। यह तो दोहरा व्यवहार है।

किसी को भाग्यशाली मानने का विचार है क्या? यह और कुछ भी नहीं केवल निष्क्रिय—ईर्ष्या है। हो सकता है ईर्ष्या अधिक मजबूत चीज हो और तुम्हारा यह विचार थोड़ा निष्क्रिय हो। अंतर केवल कुछ डिग्री का हो सकता है, लेकिन यह गुणों का न होकर केवल मात्रा का है। किसी के उत्कर्ष अथवा सौभाग्यशाली होने का विचार किसी भी क्षण ईर्ष्या बन सकता है, यह विचार है—विकसित होती हुई ईर्ष्या। मन से ऐसे सभी विचारों और ईर्ष्या को निकाल दो।

उसने पूछा है— " इस स्थिति तक कैसे पहुंचा जाये? पहली चीज है—किसी के सौभाग्यशाली होने का विचार और ईर्ष्या को गिरा देना, अन्यथा फिर कोई सम्भावना ही नहीं है, क्योंकि जहां ऐसा विचार और ईर्ष्या है, वहां प्रेम भी नहीं रह सकता। तब तुम्हारी खोज एक निश्चित तरह की सत्ता पाने की हो — तुम प्रेम के नाम पर केवल अहंकार को तृप्त करने का प्रयास कर रही है। और इसे गिराना बहुत श्रमसाध्य है, क्योंकि प्रेम केवल अस्तित्व में तभी आता है, जब मन के सभी नकारात्मक तत्व गिरा दिए जायें। यह बहुत श्रमपूर्ण है। तुम विवेक से पूछ सकती हो कि वह कितना अधिक श्रमपूर्ण है।

केवल कुछ ही दिनों पूर्व वह मुझसे कह रही थी— " आप तो गुरुजिएफ से भी बुरे हैं।" अब यह बहुत बड़ी प्रशंसा है। गुरुजियेफ वास्तव में अपने शिष्यों के प्रति बहुत कठोर था, और वह कहती है— " आप तो गुरुजिएफ से भी खराब हैं।" लेकिन मैं समझ सकता हूं मैं कठोर हूं। मुझे कठोर होना पड़ता है। तुम मेरे जितने निकट आते हो, तुम मुझे उतना ही कठोर पाओगे। जब केवल तुम एक दर्शक की भांति आते हो, तब तो ठीक है, मैं उतना कठोर नहीं हूं। मुझे बहुत विनम्र होना ही होता है। क्योंकि तुम एक दर्शक के रूप में आए हो—वह एक जाल है। जब एक बार तुम जाल में फंस गए फिर मैं कठोर बन जाता हूं।

उस स्त्री ने अभी तक संन्यास भी नहीं लिया है, पहले उसे संन्यास लेकर तो देखना चाहिए।

मेरे निकट आना.. .तुम अपनी मृत्यु के ही निकट आओगे। प्रेम, मृत्यु ही है। तुम्हें मरना ही होगा, केवल तभी तुम मेरे निकट आ सकते हो। तुम्हें अपने आपको पूरी तरह मिटाना होगा, केवल तभी तुम मेरे निकट आ सकते हो।

लेकिन लोग समझते हैं कि प्रेम गुलाब के बगीचे में आने का एक आश्वासन है। हां! अंतिम रूप से वह गुलाब बाग ही है, लेकिन उसका रास्ता एक बड़े नरक से होकर गुजरता है।

मैं तुम्हें एक घटना के बाबत बताना चाहता हूं:

एक महान दार्शनिक ने पूरी तरह जीवन के अर्थहीन होने का अनुभव कर, अपने को फांसी लगाकर आत्महत्या करने का निश्चय किया। तभी कमरे में उसका एक मित्र आया और उसने उसे अपनी कमर के चारों ओर रस्सी बांधे हुए वहां खड़े पाया, और उसने उससे पूछा कि तुम आखिर क्या करने की कोशिश कर रहे हो? दार्शनिक ने उसे बताया कि वह स्वयं को फांसी लगाकर अपना ही जीवन समाप्त करने जा रहा था। उसके मित्र ने पूछा— " लेकिन, तुमने यह रस्सी फिर अपनी कमर में क्या क्यों बांधी है?

दार्शनिक ने उत्तर दिया — "जब मैंने इसे गर्दन के चारों ओर लपेट कर फंदा कसा तो मेरी सांस घुटने लगी।"

प्रेम, गर्दन के चारों ओर बंधी रस्सी ही है, इससे तुम्हारी दम घुटने लगेगी, यह तुम्हें मार देगी। केवल वे ही लोग जो स्वयं को मार देने का साहस जुटा पाते हैं, एक आध्यात्मिक आत्महत्या—जो वास्तव में मरने के पहले ही की गई तैयारी है, केवल वही फिर से नया जन्म लेते हैं, और केवल वे ही मेरे निकट आ सकते हैं इसमें मेरे करने को कुछ भी नहीं है। मैं तो यहां प्रत्येक के लिए उपलब्ध हूं। यहां मेरा निमंत्रण तुम्हारे आने के लिए है। यह तुम पर निर्भर करता है। लेकिन यदि तुम केवल मेरे निकट, अन्य दूसरों से जो पहले से मेरे निकट है, ईर्ष्यालु बनकर आना चाहती हो, तो तुम मेरे निकट गलत कारणों से आ रही हो। तब तुम्हारी रस्सी केवल कमर के चारों ओर ही बंधी रहेगी, और तुम कहोगी— " मैं इसे अपनी गर्दन पर नहीं रख सकती, क्योंकि इससे मेरी दम घुटती है।"

लोग मेरे निकट गलत राजनीतिक कारणों से भी आ सकते हैं। अब इस स्त्री के पास एक राजनीतिक मन है — यह सोचती है कि विवेक परम पद पर, सबसे अधिक ऊंची स्थिति पर आसीन है, यह खोज शक्ति पाने के लिए है।

जो लोग मेरे निकट हैं, वे निकट इसलिए हैं, क्योंकि उन लोगों ने अपने को मिटा दिया। कम से कम वे ईमानदारी से कोशिश कर रहे हैं। यह बहुत सख्त और कठोर काम है, लेकिन वह लोग प्रयास कर रहे हैं।

मैं एक छोटा सा प्रसंग पढ़ रहा था: वहां स्काउट बच्चों का एक छोटा सा शिविर था। शिविर का परामर्शदाता नये खेल के नियमों को स्पष्ट करते हुए कहा रहा था— " यदि तुम्हारा शत्रु युद्धक्षेत्र में अपनी ओर से तुम्हारा नंबर पुकारे तो अपने को तुरंत एक मृत व्यक्ति मान लेना चाहिए। वहीं गिर जाना जहां तुम हो। ऐसे लेट जाना जैसे तुम मर गए हो, पूरी तरह से मृत हो गए हो।"

दस मिनट बाद सबसे छोटे स्काउट की पीड़ा से भरी हुई फुसफुसाहट सुनाई दी— " कृपया अब क्या मैं आगे बढ़ सकता हूं। मैं एक मरा हुआ इंसान हूं लेकिन मैं इस वक्त एक चीटियों के टीले पर हूं।"

तुम बहाना बना सकते हो कि तुमने अपने आप को मिटा दिया, तुम विनम्र होने का बहाना बना सकते हो, तुम बहाना बना सकते हो कि तुम अपना अहंकार गिराने को तैयार हो, लेकिन बहानों से कुछ भी सहायता मिलने वाली नहीं। देर— सबेर सत्य सामने आ जाता है। और किसी भी व्यक्ति को गलत कारणों से दिलचस्पी लेना ही नहीं चाहिए।

एक युवती अत्यधिक धनी थी और युवक था मुल्ला नसरुद्दीन, जो बहुत गरीब था। वह उसे पसंद करती थी और मुल्ला नसरुद्दीन इसे जानता था।

एक रात अपने सामान्य स्वर से थोड़ा और अधिक कोमलता से साहस जुटाकर मुल्ला ने कहा— " तुम तो बहुत अधिक धनी हो।"

उसने स्पष्टता से उत्तर देते हुए कहा— " हां! मेरे पास दास लाख रुपये हैं।" " और मैं बहुत गरीब हूं।"

" हां! "

" क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?"

" नहीं।"

" मेरा भी यही खयाल था कि तुम नहीं करोगी।"

" तब नसरुद्दीन! फिर तुमने यह प्रश्न मुझसे पूछा ही क्यों?"

नसरुद्दीन ने उत्तर दिया— " आह! सिर्फ यह देखने के लिए कि एक मनुष्य को कैसा अनुभव होता है जब वह दस लाख रुपये खोता है।"

ऐसे प्रश्न पूछो ही मत, क्योंकि वे गलत कामनाओं से जन्मते हैं। पहले निरीक्षण करो, कि वे कहां से उठ रहे हैं और बहुत—बहुत सजग बनो जितनी अधिक स्पष्टता से सम्भव हो, उन्हें देखो और समझो। अपने को शब्दों की आड़ू में मत छिपाओ। अपनी ईर्ष्या को, प्रशंसित विचार कहकर मत पुकारो। तुम स्वयं अपने लिए ही बहुत कठोर बनो। केवल तभी तुम्हारा औपचारिक वक्तव्य सहायक बनेगा, और ठीक प्रश्नों का जन्म होगा यदि तुम गलत प्रश्न पूछोगी, तो तुम समय व्यर्थ नष्ट करोगी।

अंतिम प्रश्न:

बाउल कौन हैं? कृपया आप उसकी परिभाषा देने का कष्ट करें!

इस प्रश्न को तो प्रारम्भ में ही पूछा जाना चाहिए था, अब तो यह प्रवचनमाला का अंतिम दिन है। लेकिन एक तरीके से यह ठीक है। यदि प्रारम्भ ही में तुमने बाउल की प्रकृति, चरित्र और उसकी छवि के बारे में पूछा

होता, तो उस समय उसके बारे में कुछ भी कहना लगभग असम्भव होता। ऐसा नहीं है कि मैं अब इसकी परिभाषा दे सकता हूं लेकिन कम से कम इतना तो कह ही सकता हूं कि यह अव्याख्य है, इसको परिभषित किया ही नहीं जा सकता।

बाउल कोई सैद्धांतिक आत्मज्ञानी नहीं हैं, वह रहस्य का एक वातावरण और एक जलवायु है। मैं तुम्हें इस रहस्य में भाग लेने के लिए आमंत्रित कर सकता हूं लेकिन कोई परिभाषा देना सम्भव नहीं है। इसलिए मैं कोई परिभाषा देने नहीं जा रहा, इसके स्थान पर मैं तुम्हें एक कहानी सुनाऊंगा। हो सकता है कि उससे तुम्हें उसकी प्रकृति, व्यवहार छवि और उसका अर्थ स्पष्ट हो जायें, लेकिन उसे तो तुम्हें स्वयं खोजना होगा।

मैंने सुना है

एक समय की बात है कि एक देवदूत पृथ्वी पर मनुष्य को और उसके संसार को देखने के लिए आया, क्योंकि उसने मनुष्य के गौरव—गरिमा के बारे में बहुत सी कहानियां सुन रखीं थी और वह अपनी उत्सुकता को रोक नहीं पा रहा था।

सूरज की किरणों से आलोकित स्वर्ण मुकुट पहने पर्वत शिखरों, घने जंगलों, मदमाती डोलती मस्त हवाओं, इंद्रधनुषी रंगों की सुरम्य घाटियों, ओस चुम्बित पृथ्वी से उठती सोंधी गंध तथा भयानक और शांत विविध पशुओं और संसार के अनुपम सौंदर्य को देखकर वह अभिभूत हो गया। हर जगह कितना अधिक सौंदर्य बिखरा था। लेकिन जब देवदूत ने मनुष्य को देखा, तो वह आश्चर्य से स्तब्ध रह गया क्योंकि उसने मनुष्य के हृदय और आत्मा से अद्‌भुत गीतों और संगीत को सुन रखा था। वह मनुष्य के इस रहस्य के साथ गहरे प्रेम में पड़ गया था। शाम का धुंधलका छाने लगा, लेकिन उसने पृथ्वी पर ही ठहरने का निश्चय किया। मनुष्य और मनुष्य की धरती ने उसे इतना अधिक प्रभावित किया कि उसने छोड़ने में वह हिचकने लगा। लेकिन अंत में उसका समय समाप्त हो गया तो आपूरित नेत्रों से उसे जाना ही पड़ा। और पृथ्वी के इस साहसिक अभियान से अत्यधिक समृद्ध होकर, वह पृथ्वी में चारों ओर घूमता रहा। पर जाने से पूर्व और अपने संसार में वापस लौटने से पूर्व केवल आनंद में, उसने हममें से कुछ लोगों की सहायता करनी चाही। उसने इधर— उधर देखा और चार व्यक्ति साथ—साथ टहलोग दिखाई दिए। वह उनके पास पहुंचा और कहा— " मैं यहां प्रत्येक व्यक्ति की एक इच्छा पूरी करने के लिए आया हूं। जैसे भाग्य ही उन सभी के साथ था और वे सभी आध्यात्मिक आनंद के ही आकांक्षी थे।

उनमें से पहला बोल पड़ा— " मैंने दिव्य सत्य पाने की आकांक्षा से निरंतर कठोर तप किया—लेकिन संघर्ष, संघर्ष और संघर्ष के सिवा और कुछ भी नहीं मिला। आप मुझे आध्यात्मिक शांति दे दीजिए।"

पहले खोजी की चाह को न समझते हुए देवदूत ने कहा— " लेकिन संघर्ष करना तो जीवन का आनंद है।"

उस मनुष्य ने आग्रह करते हुए कहा— " मैं तो शांति ही चाहता हूं।"

इस प्राणी और उसकी इच्छा पूरी करते हुए देवदूत ने उस युवा को एक गाय मे बदल दिया जो दूर हरी घास के मैदान में शांति और संतोष से घास चरने लगी। थोड़ा सा परेशान होकर देवदूत दूसरे आकांक्षी की ओर मुड़ा। दूसरे व्यक्ति ने कहा— " परमात्मा ही शुद्ध और पवित्र है, लेकिन मैं ऐसा नहीं हूं। कृपया मुझे लालसा, भावों और सभी कामनाओं की अशुद्धियों से छुटकारा दिला दीजिए।" देवदूत ने पूछा— " क्या ये सभी जीवन का स्रोत नहीं हैं?"

दूसरे व्यक्ति ने आग्रह करते हुए कहा— " लेकिन मैं जीवन नहीं चाहता, मैं तो शुद्धता चाहता हूं।"

उसने तब अपने नेत्र मूंदे और उसके रूपांतरण होने की प्रतीक्षा की। पलक झपकते वह गायब हो गया और दूर मंदिर में वह अपनी पसंद के अनुसार एक शुद्ध संगमरमर की मूर्ति के रूप में प्रकट हुआ।

तब तीसरे व्यक्ति ने कहा—मुझे पूर्ण बना दीजिए कोई भी चीज कम होने से काम नहीं चलेगा।"

वह नष्ट होकर शून्य में मिल गया और कहीं भी किसी अन्य रूप में प्रकट नहीं हुआ, क्योंकि इस पृथ्वी पर कुछ भी पूर्ण नहीं है और न पूर्ण हो सकता है।

अब देवदूत चौथे व्यक्ति की ओर मुड़ा और पूछा— " आपकी क्या इच्छा है?"

उस प्रसन्न प्रमुदित व्यक्ति ने उत्तर दिया— " मेरी कोई इच्छा या कामना ही नहीं है।"

— ' सभी कामनाओं में क्या कोई भी कामना नहीं?"

— " कोई भी नहीं, सिवाय इसके कि मैं एक मनुष्य ही बना रहूं पूरी तरह जीवंत मनुष्य।"

तीन व्यक्तियों की इच्छा जानकर देवदूत का दम सा घुटने लगा था, अब वह पुन: आनंद में डोलने लगा। वह इस आनन्दित व्यक्ति को कुछ देर तक प्रेम से देखता रहा और तब वह नीचे झुका और गहरे प्रेम के साथ उसे हृदय से लगा लिया। वह चौथा व्यक्ति जीवन की गौरव गरिमा के गीत गाता, और नृत्य करते हुए जीवन के आनंद का रस लेता अपने रास्ते पर उसी तरह आगे बढ़ गया।

यह चौथा व्यक्ति ही बाउल है।

बाउल को परिभाषित करने का अन्य कोई दूसरा ढंग है ही नहीं। बाउल जीवन को अत्यधिक प्रेम करता है, उसे अपरिमित प्रेम है इस पृथ्वी से और अनन्य प्रेम समग्र से, जो कुछ भी यहां है। बाउल आदर्शवादी न होकर यथार्थवादी है, और इस धरती से जुड़ा हुआ है। बाउल, अन्य कहीं और किसी स्वर्ग की मांग नहीं करता, वह यहीं और अभी पहले ही से स्वर्ग में है। बाउल कोई खोजी नहीं है। बाउल वह है, जिसने उसे पाया है। बाउल एक सिद्ध है, एक ऐसा सिद्ध, जिसने जीवन को और जो कुछ यहां उपलब्ध है, उसे देखा है और अनुभव किया है और उस बारे में उसे खोजने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। कोई भी इस रहस्य में, जिसे जीवन कहते हैं बस शामिल हो जाना है।

वह नाचता है, गीत गाता है, खुशी मनाता है और अकारण ही परम आनंदित है।

देवदूत की यह तो आधी कहानी है, दूसरी आधी कहानी तो अभी भी शेष है। वह देवदूत स्वर्ग पहुंचा। परमात्मा ने उसे बुलाकर उससे पूछा— " तुम पृथ्वी पर क्या कर रहे थे? मेरी सृष्टि को क्या ठीक कर रहे थे?"

देवदूत ने कहा— " मुझे खेद है, लेकिन उन चारों लोगों ने कुछ चाहा था, उनकी कुछ कामनाएं थीं। मैंने उन्हें पूरा करने में उनकी कुछ सहायता की है।" परमात्मा ने कहा— " बिलकुल ठीक किया। मैं तुमसे नाराज नहीं हूं। मैं तो केवल पूछ रहा हूं। क्या तुम्हारी ऐसी कोई कामना है जिसे मैं पूरी कर दूं।"

देवदूत ने कहा— " मुझे पृथ्वी पर वापस भेजकर उस चौथे व्यक्ति जैसा बना दीजिए।"

तुम इसे अपनी भी चाह बना लो। और इस बारे में मांगने की कोई जरूरत ही नहीं है, वह पहले ही से पूरी कर दी गई है। तुम इस पृथ्वी पर एक पुरुष हो, अथवा एक स्त्री हो, परमात्मा की इस भेंट का आनंद लो। गहन अहोभाव और कृतज्ञता से गीत गाओ, उस नाच को नाचो, जो तुम्हारे अस्तित्व की गहराई में अभिव्यक्त होने की प्रतीक्षा कर रहा है। सृजनात्मक बनो। फूल की भांति खिलो।

एक बाउल में खिलावट हो रही है। एक बाउल एक बहती हुई ऊर्जा है। एक बाउल, तथाकथित साधारण धार्मिक न होकर, वास्तव में एक सच्चा धार्मिक मनुष्य है। वह संसार के विरोध में नहीं है, क्योंकि वह परमात्मा के भी विरुद्ध नहीं है। यह सब कुछ उसी की सृष्टि है, वह किसी भी चीज के विरोध में नहीं है, क्योंकि सभी कुछ परमात्मा का ही है। वह हर जगह परमात्मा का ही मंदिर पाता है। प्रत्येक उपस्थिति में ' उसीकी ' उपस्थिति ही समाई हुई है। एक बाउल, एक पगला मनुष्य है, यही ' बाउल ' शब्द का अर्थ भी है। यह संस्कृत के मूल शब्द ' बटुल ' से निकला है, जिसका अर्थ पागल होता है।

परमात्मा के नाम पर पागल ही बन जाओ। पूर्णानंद में पागल बनकर देखो और तभी तुम जानोगे कि क्या होता है एक बाउल होना। उसे परिभाषित करने का कोई उपाय नहीं है, मैं केवल कुछ संकेत दे सकता हूं उसके बारे में, उसका वर्णन करने या व्याख्या करने का भी कोई उपाय नहीं है, लेकिन मैं यहां तुम्हारे सामने मौजूद हूं—मैं एक बाउल ही हूं। तुम मुझमें झांक कर देखो, थोड़ा सा मेरा स्वाद लो, मुझे भोजन बनाकर खा जाओ, मुझे पियो यह सब मिलकर तुम्हें कोई परिभाषा दे सकते हैं। और यदि तुम वास्तव में चाहते हो, यदि वास्तव में तुम्हारी परिभाषा पाने की ही चाह है, तब एक बाउल बन जाओ। उसे जानने का अन्य कोई उपाय है ही नहीं। परमात्मा को जानने के लिए एक व्यक्ति को परमात्मा ही बनना होता है, क्योंकि तुम केवल वही जान सकते हो, जो कुछ तुम स्वयं बन गए हो। केवल अस्तित्व और इस अस्तित्व का अनुभव ही तुम्हें बुद्धत्व दे सकता है, अन्य कुछ भी नहीं।

आज इतना ही।

समाप्त